

सुशील

लेखकक परिचय :

श्री सुशील चन्द्र झा

(प्रख्यात : सुशील)

ग्राम एवं पोस्ट - दुलहा, जिला - मधुबनी

जन्म : 6 जनवरी, 1942

माता : स्व. गोदावरी देवी

पिता : स्व. सच्चिदानन्द झा

जीवन यापन : साहू जैन कं. लि. कोलकाताक बजबज शाखा मे 2004 तक कार्यरत।

गतिविधि : एहि सऽ पूर्व `घराड़ी` आ `गामवाली` उपन्यास तथा `भामती` नाटक एवं कतिपय कथा आ एक आध आलेख विभिन्न पत्रिका मे प्रकाशित।

`मैथिली मुक्तिमोर्चा` क तत्त्वावधान मे 1980 मे बिहार सरकार द्वारा मैथिली के राज्यभाषा नहि बनयबाक विरोध मे पटना मे दिसम्बर, 1980 मे जन-समूहक संग प्रदर्शन मे विशिष्ट भूमिका आ लाठी चार्ज मे ओधबाध। संप्रति मैथिली साहित्यक सेवा मे सहयोग।

वर्तमान पता : गवर्नमेंट कॉलोनी, ब्लॉक - ओ, फ्लॉट-3, सुभाष उद्यान मोड़, बजबज, कोलकाता - 700137

मो. : 98747-39164

अस्मिता

सुशील

अस्मिता

कथा संग्रह

सुशील

अस्मिता

(मैथिली कथा-संग्रह)

सुशील

संपादक :

रामलोचन ठाकुर

प्रकाशक :



मैलोरंग प्रकाशन

मैथिली लोक रंग

दिल्ली

ISBN : 978-93-82828-13-6

प्रकाशक :
मैलोरंग प्रकाशन, मैथिली लोक रंग
651, चारिम तल, अग्रवाल चैम्बर-III
26, वीर सावरकर ब्लॉक
विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली - 92
mailorang@gmail.com
011-22058240, +91 9811774106

अस्मिता (मैथिली कथा-संग्रह)

पहिल खेप : 6 जनवरी, 2016
मूल्य : ₹ 200

आवरण एवं मुद्रण :
लखनपति झा
69, बड़तल्ला स्ट्रीट, बड़ाबजार
कोलकाता - 700 007
मो. : 97481-20990, 98830-72050
Email : lakhanjha@hotmail.com

ASMITA
A Collection of Stories by **Sushil** Price : ₹ 200

विषय-सूची

आमुख

कलकत्ता मैथिली आन्दोनलक केन्द्र रहल अछि। जँ कही जे एहि आन्दोलनक शुभारंभ बंगभाषी लोकनि द्वारा भेल तऽ कोनो अत्युक्ति नहि हएत। संस्कृत पढ़बाक लेल मिथिला गेल बंगभाषी लोकनि जखन स्वदेश घुरैत छलाह तऽ विद्यापतिक गीत कें अपना कंठ मे संजोगने अबैत छलाह आ से बंगाल मे ततेक लोकप्रिय भेल तकर नकल प्रायः पश्चात् पाँच सए बर्खधरि ब्रजबुलि नामे चलैत रहल। रवीन्द्रक भानुसिंहेर पदावलीए पर जाकए एहिपर विराम लागल। विद्यापतिक एकतालिस गोट गीतक अंग्रेजी अनुवाद सर्पप्रथम ऋषि अरविन्दे कयलनि आ 1937 ई. मे पहारी सन्याल आ कानन देवी कें लऽ कए विद्यापति फिल्मक निर्माण सेहो हिनके लोकनि सँ संभव भेल। कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक, `वर्ण रत्नाकर` जँ हरप्रसाद शास्त्रीक प्रयासे उपलब्ध भेल तऽ नगेन्द्र नाथ गुप्त मिथिलाक भ्रमण कए `पदावली` संग्रह कएलनि। पश्चात् विमानबिहारी मजुमदार सेहो पदावलीक संग्रह कएलनि। बंकिम बाबू विद्यापति पर विलक्षण निबंध लिखलनि जे कॉलेज मे पढ़ाओल जाइत छल। आइ मैथिली साहित्य अकादेमी सँ संविधान धरि अपन स्थान सुरक्षित करा लेने अछि, किन्तु जँ हमर विभूति ब्रजमोहन ठाकुर प्रयास नहि कएने रहितथि आ आशुतोष बाबूक सहानुभूति नहि भेटल रहितनि एवं मैथिली कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत नहि भेल रहैत तऽ ओ कोन स्थिति मे रहैत तकर कल्पना सहजहि कएल जा सकैछ। स्वाभाविक कारणे जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन कहैत छथि जे क्रिश्चियनक घर मे जहिना बाइबल बंगालीक घर मे तहिना विद्यापति पदावली। नगेन्द्र बाबूक अनुसार बंगलाक समस्त श्रेष्ठ कवि विद्यापतिक शिष्य छथि। दिनेश चन्द्र सेन मिथिला के समस्त आर्यावर्तक गुरुस्थानीय कहैत मिथिलाक्षर कें बंगाल मे ग्रहण करबाक मादे लिखैत छथि। आ इएह बात सभ कलकत्ता प्रवासी मैथिली भाषी कें अपन भू-भाषाक उन्नति-विकासक लेल प्रयास करबाक चेतना देलकै।

कलकत्ता मे मैथिली संस्थाक शुभारंभ होइछ कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा मैथिलीक मान्यता भेटलाक पश्चात्। जहाँधरि ज्ञात अछि सर्वप्रथम मैथिली विद्वत समाजक निर्माण भेल छल, मुदा एकर सदस्य विद्वाने लोकनि छलाह। आइ सँ चालिस-पचास बर्ख पूर्व कलकत्ता आ एकर पास-पड़ोसक शहर मे प्रायः पचीसो संस्था छल जे अपन-अपन सामर्थक अनुसार काज करैत छल। सुशील जी बजबज मे काज करैत छलाह आ ओतै रहितो छलाह। जाहि जूट मिल मे ई छलाह ताहि मे प्रचुर मैथिल छलथि, मुदा किछु कें छोड़ि बाकीक नामो आइ मन नहि अछि। सुशील जीक नाम बिसरब सेहो तहिना कठिन। ई थिक हिनक विशेषता। आ से विशेषता थिक हिनक मैथिलत्त्वक। अपन भू-भाषाक चेतना, तकरा प्रति अप्रतिम प्रेम। एही प्रेमक वशीभूत भए ओ 9 दिसम्बर 1980 ई. कें मैथिली मुक्ति मोर्चाक नेतृत्त्व मे पटनाक जुलूस मे सामिल भेल छलाह आ बिहारी पुलिसक सर्वाधिक प्रहार सहने छलाह। कलकत्ताक *सम्पर्क* हिनका सम्मानित कएने छल।

सुशील जी साहित्यकार छथि, कलकत्ताक वरिष्ठ साहित्यकार। घराड़ी, गामवाली उपन्यास आ भामती नाटक प्रकाशित छनि आ तखन ई तेइस गोट कथाक संग्रह **अस्मिता**। ई अस्मिता थिक मैथिलक। एकर एक-एक कथाक पृष्ठिभूमि मे कलकत्ता मैथिली आन्दोलनक चेतना अछि, सिनेह अछि, औदार्य अछि। मानवीय संवेदना, सामाजिक सरोकारक साकार स्वरूप अछि। हिनक चिन्तनक विराटता मे संकीर्णता वा लघुताक लेसमात्रो नहि। तें गाम मे `मस्जिद` बनेबाक लेल देवकान्त अगुआइ छथि। मुदा जे हेतु सुशील जी कलकत्ता मे रहै छथि एहिठामक हड़ताल आ ताइ चलते भोलाक फिरीसानी, तकरो ओ नहि बिसरि पबैत छथि। भारतीय गणतंत्रक छोटे बाबू सन नेता चलित्तर कें केहन सम्मान करै छथि ताहि लेल `कतहु नहि` प्रत्यक्षे अछि। सहयात्री मे बंगाली महिलाक भाषा-चेतना चमत्कृत करैत अछि आ तखने मन पड़ैत छथि कविवर सीताराम झा। एकटा बंगभाषीक सभा हुनका मे अपन मातृभाषा प्रेमक चेतना-भावना कें केना जगओने छल जे तकर बाद सँ ओ मात्र मैथिलीएटा मे लिखलनि। यात्री, राजकमल, बालमुकुन्द बलियासे, `मुकुल`क कलकत्ता प्रवास मैथिली कें कते अनुप्रमाणित कएने अछि, बिन्देश्वर मंडल, देवन मंडल, उत्तमलाल मंडल, जनार्दन झा आदि केना लेखक बनला से कलकत्तेक लोक जनैछ।

मैथिलीक पहिल उपन्यास `मोहिनी मोहन` जीवनाथ मिश्र द्वारा सन् 1315 साल मे रचित भेल छल। तहिया सँ ई परम्परा अबाध रूपे चलि रहल अछि। एही परम्परार्के अग्रसारित कएनिहार यशस्वी रचनाकार छथि सुशील जी। ओ हमरा लोकनिक बीच छथि से कलकत्ता मैथिलक सौभाग्य। ई बहुत रास कथा लिखने छथि, किन्तु सभ पुस्तकाकार प्रकाशित कराएब संभव नहि। तें एहि पोथी मे मात्र तेइस गोट कथा देल गेल अछि। विभिन्न सन्दर्भक एहि कथा सभ के पढ़ि पाठक सुशील जीक चिन्तन-चेतना सँ, भावक उदात्तता सँ, भाषाक सहजता ओ अभिनवता सँ सहजहि आह्लादित होएता से विश्वास अछि। ई आवश्यको छैक जे पाठक स्वयं पढ़थि, बूझथि, चिन्ता करथि, आमुख पढ़ि से संभव नहि। तें, हम सुशील जीक स्वास्थ ओ दीर्घजीवनक कामना करैत अपन बात कें एहीठाम विराम दैत छी।

रामलोचन ठाकुर

दूटा बात

कथाकार **सुशील** अपन एक नव कथा-संग्रह `**अस्मिता**` लऽ मैथिली साहित्य भंडार कें समृद्ध करबा लेल प्रस्तुत छथि। कथा-संग्रह तेइसटा कथा मात्र मिथिला मे नहि बल्कि समस्त भारतीय समाजक, जनमानसक एकटा संघर्षशील, प्रगतिकामी चित्र प्रस्तुत कऽ रहल अछि। संगहि अछि पुरान पीढ़ी आ नव पीढ़ी मे होइत द्वंद्वक विश्लेषण जे युगधर्मी अछि। सुशील ओहि साहित्यकार मे छथि जे सभ सँ पृथक रहि जनताक साहित्य रचि रहल छथि। जनताक जीवन परिस्थिति केर ओ अपना रचना मे चित्रणे टा नहि करैत छथि, बल्कि ओकर संगो दैत छथि। हिनक रचना मे संघर्ष आ परिवर्तनक संग अपना जमीनक महक सेहो अछि।

कथा लिखबा काल एकटा रचनाकार अपना चरित्र आ स्थिति सभ सँ स्वयं जुझैत छथि, तें हुनकर संपृक्ति एतय अपेक्षाकृत अधिक साकार होइत अछि। तें बघोतियाक बाबा सन एकटा गरीब आदमी सेहो सामाजिक स्थितिकें परंपरागत विवशता, सामाजिक परिपाटी, नियति, धर्म आदि सँ पृथक निहित स्वार्थक एकटा दीर्घकालीन कुचालि एवं कुटेबक रूप मे चिन्हय लागल अछि।

आधुनिक साहित्य-रूपक वैविध्य-विस्तारक युग अछि। आइ कथा-साहित्य अपन स्वतंत्र-सत्ता आ निश्चित परंपरा बना लेलक अछि। कथाकारक चारूकातक समाज बहुत तीव्रगति सँ बदलि रहल अछि, आ कथा स्वीकार कयलक अछि नव सामाजिकताक चुनौती।

मैथिली कथा-साहित्य नव सामाजिक-नैतिक परिस्थिति कें जीवनक समग्रताक बीच नव दृष्टि सँ देखि रहल अछि। की गाम, की शहर, की गली, की बनैत बस्ती अथवा उजड़ल बाजार-हाट सभ क्षेत्र मे ओकर दृष्टि यथार्थता सँ टकरा रहल अछि। ओहि दृष्टि मे ओ देखलक जे पछिला कतेको सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, नैतिक एतय धरि जे वैयक्तिक स्थिर मान्य सत्य झूठ लागय लागल। ई परिवर्तन मात्र कथाकारेक दृष्टिक स्तर पर नहि भेल वरन पाठकोक रुचि मे भेल। ओ कल्पनाक स्थान पर अपन समसामयिक जीवन देखबाक मांग करय लागल।

अनुभूति आ संवेदनाक समर्थ लेखक सुशील जीवन आ समाजक अनेकानेक

स्तरक उद्‌घाटन कयलनि अछि। कथाक नव कला जीवनक नव संदर्भ एवं नव वास्तविकताक पूर्ण इमानदारी सँ चित्रांकन कऽ रहल अछि, एहि चित्रांकन मे विशेष बात अछि लेखकक अपन सांकेतिक प्रतिक्रिया जे सर्वथा रचना-प्रक्रियाक भीतर सँ ओकर अभिन्न अंग बनि कऽ आयल अछि, एतय लेखकक अपार संवेदनशीलता एवं परिवर्तित जीवनक असत् पक्ष आ ह्रासोन्मुखी अन्धविश्वासक प्रति कटु व्यंग्य एवं विद्रोह, एहि प्रसंगक सभ सँ महत्वपूर्ण तत्व अछि।

कथाकार सुशीलक कथा-संग्रह मे गुम्फित बघोतिया, हमर नवीनतम फोटो, प्रेम-प्रसंग, सहयात्री, मोह जे अपन होइत छैक, प्रेम ने बाड़ी उपजय, पिपनी पर नोर, पुश्त-पुश्त, एकटा कलाकारक आत्महत्या, घरमुँहा, सनकिरबा, गाम सधबा होइत अछि, अस्मिता, भोकाटा, असल बात जरिओठा, बाट तकैत सेहंता, मात्सर्य, विज्ञानक करामात, मस्जिद आदि कथा एहि दृष्टि सँ उत्कृष्ट अछि। एकर महत्वपूर्ण तत्व अछि कथा सभक परम वैविध्य।

एहि कथा संग्रह मे कतहु आ कोनो स्तर पर एकरसता आ दुर्बोधताक नामोनिशान नहि अछि। ठेठ शब्दक ठाठ बुनबा मे सिद्धहस्त कथाकार सुशील अत्यंत सरल एवं सहज भाषाक प्रयोग कऽ कथाक आकर्षण बढ़ा देलनि अछि। आशा अछि कथा संग्रह पाठक द्वारा समादृत होयत।

ताराकान्त झा

पूर्व संपादक, मिथिला समाद

प्रकाशकीय

मैलोरंग (मैथिली लोक रंग) मूलतः रंग संस्था रहितो, मिथिलाक कला, संस्कृति ओ साहित्य केन्द्रित कृति सभक प्रकाशन पछिला लगभग एक दशक सँ करैत आबि रहल अछि। मैलोरंगक प्रयास रहैत छै जे एहन कृति, जे एखन अलक्षित अछि, आ जकर ऐतिहासिक ओ दस्तावेजी महत्व छै, आ ओ कोनो कारणे प्रकाश मे नहि आबि सकल अछि, अथवा अतीत मे छपल आ आब अनुपलब्ध भऽ चुकल अछि, हर्षक संग प्रकाशित करय।

नाटक संबंधी सामग्री सभक प्रकाशन तऽ एकर मूल उद्देश्य मे सँ एक छैके। अभिप्राय ई जे नाटक, नाट्य-सिद्धांत, नाट्य-चिंतन, लोककला, लोक-संस्कृति समेत मैथिली साहित्यक विभिन्न विधाः यथा-कथा, कविता, नाटक, उपन्यास, बालसाहित्य, शोध-समीक्षा, अनुवाद आदिक प्रकाशन समय-समय कऽ समाजक सोझा प्रस्तुत करब एकर लक्ष्य अछि। अपन एहि लक्ष्य-पूर्तिक दिशा मे मैलोरंग एखन धरि दर्जनाधिक्य पोथीक प्रकाशन कऽ चुकल अछि, जाहि मे प्रमुख अछि - मैथिली लोकनाट्यक विस्तृत अध्ययन एवं विश्लेषण (महेंद्र मलंगिया) डाक-दृष्टि (मोहन भारद्वाज), ई भेटल तऽ की भेटल (तारानंद वियोगी), व्यक्तिवाचक (अशोक कुमार मोहता), माटिपरहक लोक आ सुफांटि जतरा, जे हारय से नाक कटावय (ऋषि वशिष्ठ), छुतहा घैल (महेंद्र मलंगिया), आब मानि जाउ (अनिल चंद्र ठाकुर), रूपा दीदी (श्याम चंद्र), पुलोमा (श्रीदेव), रावी सँ वागमती धरि (पंजाबी कथाक अनुवाद : वैद्यनाथ झा), सुरूजक छाहरिमे (मनोज शाण्डिल्य), महेंद्र मलंगियाक सात नाटक (सं. प्रकाश झा), महेंद्र मलंगिया : जीवन एवं सृजन (स.प्रकाश झा), अभिनय (विभूति आनन्द), खुरचनभाइक कछमच्छी (नवकृष्ण ऐहिक) आदि।

एहि क्रमक मैलोरंग प्रकाशनक टटका प्रकाशन अछि - **`अस्मिता`**। ई कथा संग्रह थिक। वरिष्ठ साहित्यकार **सुशील** जीक नव पोथी अपने लोकनिक समक्ष प्रस्तुत करैत अपार हर्ष भऽ रहल अछि। आशा अछि जे पाठक लोकनि लेखकक एहि कृतिक स्वागत करताह।

प्रकाश झा
निदेशक, मैलोरंग प्रकाशन
मैथिली लोक रंग, दिल्ली

बघोतिया

`हउए एलइ बघोतिया ! बौआ के ध`लेरे बघोतिया !` - बाबा कानैत पोता कें चुप करा रहल छथि।

`अयँ हओ बाबा, सब भकोइयाँ सँ डेरबइ हइ, आ तों बघोतिया सऽ किये डेरबइ छहक बौआ के? बघोतिया की हइ से?` लऽग मे बैसल दस - बारह सालक पोती दाइबती बाबा सँ पुछइ छनि।

`जएह भेलइ भकोइयाँ, सएह भेलइ बघोतिया। दुनू बौआ के धऽ लइ हइ` - बाबा बौआ के पुचकारैत कहइ छथिन !

आ फेर सऽ बौआ के दुलारैत डेरबऽ लगै छथि :-`सुनइ रे भकोइयाँ, अबइ रे भकोइयाँ, लऽ जो हमरा बौआ के ! सुनइ रे बघोतिया, अबइ रे बघोतिया, धऽ ले हमरा बौआ के !`

`बाबा आइ नञि मानब` हम। ई तऽ बुझलिऐ जे दुनू धऽ लइ हइ बौआ के। फरक नञि हइ तऽ दूटा नाओ किये पड़लइ? आइ से कहऽ पड़तऽ तोरा`। दाइबत्ती जिद्द धऽ लइ छइ।

बाबा असमंजस मे पड़ि जाइ छथि। हुनकर मोन काल्हि भोट खसबऽ पर छनि। एहि बेर जेना-तेना भोट खंसाबहे के छनि। एहिबेर भोट मशीन सऽ जे खसतै। जिनगी मे आइतक मात्र दू बेर भोट खसेने छथि। ओ सबेरे खा-पीकऽ सूति रहऽ चाहइ छथि। काल्हि भोरे आठे बजे सऽ भोट खसतै। एकर माने एक-दू घंटा पहिने सऽ पतियानी लगनाइ शुरु भऽ जेतइ। ओ नहा-धो, जलखइ कऽ तहन जेता।

धियापूता जोगर जतेक खिस्सा अबइ छनि बुढाके सबके सुना देने छथिन, से एकबेर नहि, कय-कय बेर। मुदा ई बघोतियाबला खेढ़ा तऽ निट्ठाहक` एकटा घटना छइ। ओहो घटनाबला समय तऽ रहइ इएह भोटक गहमा-गहमी।

मुदा, पोतीक निष्कपट आतुरताक समक्ष हुनकर आत्मा कोनो बहन्ना बनयबाक पक्ष मे नहि छनि। ओ सोचइ छथि..`कोउ नृप होहुँ हमे का हानी, चेरी छोड़ि न होयब रानी`। हमरा तऽ मतलब हय भोटक मशीन देखे सऽ। आत्मा कहै छनि.... नञि, आब नञि ! कत्तेक दिन ठकबइ हम ! दाइबती बूझऽबाली भऽ गेल हइ। तें तऽ एहन गूढ़ प्रश्न हमरा सामने मे रखलकैये। कहऽ

मे हरजे की हइ ! ओइ घटनाक कोनो लेखा-जोखा थोड़बे होतइ ! मुँहें-मुँह जतेक पीढ़ी धरि चलतै सएह एक लाख ! हमर नाओं तऽ निश्चय तीन-चारि पीढ़ी चलतइ। सबसऽ पैघ बात जे जमाना-जमाना मे फर्क हमरा आउरक अगिला पीढ़ी के अहिनती बूझऽ मे अबै हइ ! ई खिस्सा (?) लिखल थोड़बे जेतै ! ई तऽ भोटक तिलिस्म हइ, तिलिस्म।

`की भेलऽ हौ बाबा? की सोचऽ लगलहक? आइ कहऽ पड़तऽ ! नञि तऽ आइ दिन सऽ बौआ कें भकोइयाँ सऽ डेरबऽ पड़तऽ !` - पोती दृढ़ताक संग कहइ छइ, मुदा आँखि मे बाबाक डाँटक हरकंप पसरि जाइ छइ। आइकाल्हि बाबा कने डाँटऽ लागल छथिन, से अपन बयसक चलते आ दोसर, बौआ पर बढ़ैत दुलार कने पक्षपाती से बना रहल छनि।

मुदा, आइ पोतीक ज्ञान भरल जिज्ञासा आ निःछल प्रेमक समक्ष बुढ़ाक पूर्ण वात्सल्य उमड़ि पड़ै छनि...नञि, आइ नञि डँटबै एकरा। ई तऽ हमर पहिल सूदि हय ! एकरे तऽ हइ सबसऽ बेसी हक हमरा पर। बाबा तऽ इएह बनेने हय हमरा !

बाबा एकटक पोती के देखैत मुस्किया उठै छथि। पोतीक मुँह पर सऽ भय विलुप्त भऽ जाइ छइ। ओकर चेहरा चमकि उठइ छइ।

बाबा कहइ छथिन -`हँ, आइ कहबौ ओ खिस्सा। खिस्सा थोड़बे हइ से? अपने गामक घटना हइ। हम तहिया तोरा सऽ बहुत पैघ रहिऐ। इएह धतपत उनैस-बीसक। ओही बरख तोरा दाइ सऽ बियाह भेल रहै हमर। चाल पारही सबके तऽ निम्मननाहित कहे मे मोन लगतै।`

`अबै जाइ जो रे सुकना ! रे बलबीर ! सबके चाल पारही। गे बहिरी सुमतिया ? बाबा एगो निम्मन, नबे खिस्सा कहइ हइ। जल्दी सऽ अबइ जाइ जो। बोला लही सबके !` - दाइबत्तीक उमंग उमड़ि पड़इ छइ।`

बाबा औंघाएल बौआ के नीचा मे करौट भरे सुताकऽ ठोकऽ लगै छथि।

एकाएक कऽ सभ श्रोता जुटि रहल अछि। बाबा चुक्कीमाली बैसिकऽ, आ गमछा सऽ दुनू छबा जाँघ कें डाँरक संग गछारि लइ छथि। श्रोता सभ बाबाक सामने आसपास मे गोलियाकऽ बैस रहैत अछि।

`एह की जमाना रहइ ओ ! आबक लोकके विश्वासे नञि होतइ ओइ जुगक बात सब पर ! आब तऽ अपन जनमल गुदानिते नञि हइ।` - बाबा बड़बड़ा

उठै छथि।

सुननाहर सब आर लग मे ससरि अबैत अछि। क्यो-क्यो बजैत अछि - `सत्ते, जुग-जमाना हो गेलइ बाबाक खिस्सा सुनला। एकबेर जे सुनलक, बिसरबाक नाओं नञि लइ हइ।.... असल मे कहेके ढंगे हइ बाबाक बेजोड़। रे, खिसबा तऽ बहुत हइ गाम मे। मुदा, बाबाक परतर करतइ क्यो?`

`हँ-हँ, खिस्सा सटल हइ हमरा देह मे ! अबइ जो आ चाटि ले सबक्यो जीह सऽ? हबा-बियारक रस्ता छोड़िकऽ फटकी-फटकी बैसब से नञि !` - बाबा भारी-भारखमी होइ छथि। आइ बहुत दिन पर खिस्सा कहबाक मोन जे भेलनिहें, सेहो ओहि घटनाक जकर परोक्ष नायक ई अपने रहथि।

`सत्ते, तहूँ सब बाबाक देहे पर चढ़ल अबइ छीही ! गर्मी कतेक हइ से नञि बुझाइ हउ?` - बाबाक समर्थन मे दाइबती बजैत अछि।

सभक्यो कने-कने पाछू दिस घुसकि जाइत अछि।

`एकटा बात मुदा खरियारि दइ छियौ सबके। बीच मे टोकाटाकी हमरा पसिन्न नञि हय ! टोकला सऽ लड़ी टूटि जाइ हइ। हमर दिमागि आब तेना भ`कऽ काज नञि करइ हय` - बाबा सभके चेतबइ छथिन।

कने गुम भऽ फेर कहइ छथिन - `हँ, एकटा आर बात ! क्यो गोटे औंघेलए तऽ फेर हमहीं छी ! कनबोझ झारि देबउ तकर ! हमर थप्पड़ तऽ बुझले हउ सबके ?`

दोसर बात, हँ-हूँ से करऽ पड़तौ एगोटे के। अइ सऽ कहेबला के मोन लगइ हइ। एना मे बुझाइ हइ जे खिस्सा मनलगगू हइ। बुझलही तऽ सबक्यो?

नञि तऽ पाछू हमर दोख नञि दीहें तों सब ! हमर एकबोलिया सोभाव जनले होतउ?` बाबा मोन पाड़ि-पाड़िकऽ चेतबइ छथिन।

`हँ-हँ, किरिया खाइ जाही सब क्यो` - एकटा छेंटगर छँड़ा कहइ छइ।

`अइमे किरिया खाय के कोन बात हइ? कोनोकि पहिले-पहिले बाबाक खिस्सा सुनबइ हमसब? मोन के बान्हि नञि होतउ से?` दाइबती उचितवक्ता जेकाँ कहइ छइ।`

बाबा पल भरि पोती कें देखइ छथि। गर्व सँ मुँह दमकि उठइ छनि जे पोती अवस्था ज्ञाने बेसी घटेनगरि छनि। अइ खिस्साक मर्म बूझऽ मे ओकरा दोच नहि

भऽ सकै छइ। नञि सबटा, बेसी बात बूझि जेतइ।

`आरो कत्तेक गोरा के ई खिस्सा बूझल हइ। ई खिस्सा थोड़बे हइ? सत्ते म भेल हइ। रामसरूप, चरित्तर साहु, दुक्खी हजाम, फेकन मंडल सब तऽ छित्ते हइ पूछि लियही। सबगोरे जरे-जरे रहिऐ, आ खिहारिऐ बघोतिया कें।`

बाबा कनेकाल लेल चिंतन मे डूबल सन भऽ जाइ छथि, आ हठात् जोर सँ बाजि उठइ छथि - `बघोतिया !! बघोतिया !!`

सभ श्रोता सकदम, डेराएल सन भऽ जाइत अछि जे बाबा के की भऽ गेलइ।

स्थितिक अँटकर बुझैत देरी बाबा मुस्किया उठै छथि, आ सफाइ मे कहइ छथिन - `की कहियौ ! खिस्सा मोन पाड़ैत-पाड़ैत बघोतिया के खिहारऽ लगलिऐ।`...

...झूठ नञि कहबौ। असल मे हम खिस्से कहऽ जाइत रहियौ, मुदा सोह नञि रहलइ हमरा। जोर सऽ कहा गेलइ। ओ सब ओहिनती घुमइ हय अखनी मोन मे जेना काल्हिये भेल होइ।`

बेसी देरी नहिकऽ बाबा एकटा खिसबा जकाँ कहब आरम्भ करइ छथि। `बघोतिया ! बघोतिया ! बघोतिया एलै ! बघोतिया एलै ! दौड़ै जाइजा हओ लोक सब ! बघोतिया एलै !`... जहाँ कत्तौ सऽ हल्ला होइ कि `पीह ! पीह ! `समूचा गाम मे अनघोल भऽ जाइ। कुकूर सब से भूकऽ लगइ।`

`अयँ हओ बाबा। `पीह !, पीह !` लोक किये करऽ लगइ?` बीच मे टोका-टाकी नहि करबाक करार दाइबती बिसरि जाइत अछि।

बाबाक भृकुटि कने ठेढ़ भऽ जाइ छनि। दाइवती डरे सुटुकि जाइत अछि। सभक नजरि ओकर दीन-हीन दशा पर अटकि जाइ छइ। दाइबतीक प्रत्युत्पन्नमति काज कऽ जाइ छइ। ओ चुपचाप अपन दुनू कान पकड़ि लैत अछि। सभक नजरि बाबा दिस घूमि जाइ छइ।

सभक मनोभाव बाबा के बूझ` मे आबि जाइ छनि। ओ मुस्किया उठइ छथि। सोचइ छथि, एक-आध बेर एना टोकाटाकी हेबे करतै।

`हम सबटा अपने कहबौ। खाली, मोन लगाक` सुनै जाइ जो` - बाबा आगू कहऽ लगइ छथिन।

`छीतनक घरबाली तऽ साफे सनकि गेलइ बेटाक शोक मे। दुखनाक घेंट

पर चेन्ह देखियही। बाँचि गेलइ सएह एक लाख। बघोतियेक देल चेन्ह हइ...।..`

....तऽ सब गोरा नियारि नेने रहिऐ जे एगोरा जहाँ `पीह-पीह` करतै आ जे जेना सुनतइ `पीह-पीह` करतइ। एना मे जगरना से भऽ जेतइ, आ बघोतिया बच्चा के ल`कऽ भागि नञि सकतइ। आ से ठीके मे तकरा बाद बघोतिया आघात तऽ केलकइ। मुदा, बच्चा ल`कऽ नञि जा सकलइ।..

...बहुत बिकट समस्या उपस्थित भऽ गेल रहइ। दिन-राति लोक एके बघोतिया ल`कऽ उठइ आ बइसइ। निचेन सऽ सूतब सकसीहन भऽ गेल रहइ। जहाँ कनिको झपकी लगइ आ खढ़ो खरखराइ कि चेहाकऽ `पीह-पीह` करैत सब उठि जाइ आ दौड़इ ओम्हर, जेम्हर सऽ हल्ला अबैत बुझाइ। समूचा गाम मे से पसरि जाइ। आसपासक नरत्तन टोल, अछरबा आ अंदरौली तक के लोक जागि जाइ। गामक कुकूर तऽ कात जाव, चारू कातक गाम-टोलक कुकूर सब झाउँ - झाउँ कऽ उठइ। सत्ते, कओरक लाज रखबाक एहि सऽ बढ़ियाँ मौका एकरो सब कें कहिया भेटितै? मुदा बाउ सब, हमर सबहक ओहन दारून दुखक समय मे निचेन सऽ सूतऽबला के कम नञि फुराइ। कटाक्ष करइ - `इएह, भुकलौ गीदड़बा सब !` झूठ नञि कहबौ। संग-संग कचोट सेहो होइ- `नञि जानि आइ ककर कर्म फुटतै !`

सत्ते, सभक मोन छगाएले रहइ छलइ सदति।

कए-कए राति तऽ एना दू-दू, तीन-तीन बेर भऽ जाइ। जकरा सबके भगवान सुरक्षित आँगन-घर देने रहथिन, सेहो सब लाठी ल`कऽ कि खालिये हाथे दौड़इ। कान पथनहि तऽ सब पड़ल-पड़ल औंघा जाइ। बस सुनऽ के देरी रहइ। सब जहिना-तहिना दौगि जाइ। ऊँच-नीच आ जाति-पाँतिक भेद-भाव तखन पता नञि कतऽ बिला जाइ। खसऽ-पड़ऽ मे कतेक के ठोर-मुँह फुटि जाइ। पएर मे मोंच से पड़ि जाइ। दू-तीनटा बाबू-भैयाक समाङक धोती से खोंच लागि कऽ फाटि गेल रहइ। मुदा, ओसब कहलथिन - `हओ, धोती तऽ फेर किना जेतइ, मुदा मनुक्ख...?`

`....की कहियौ` - बाबाक ठोर पर मुस्की रेंगऽ लगै छनि - `बेसीकाल सब एकेठाम गोठिया जइयै। ताधरि कि बघोतिया बैसले रहितै जे आ, तों हमरा मार?`.... असल मे, तखन ककरो बुद्धि काजे नञि करइ। ....

बाबा कने विलमि जाइ छथि। सभ क्यो साँस थम्हने नजरि गड़ेने रहैत अछि।

रेबाड़ैत-रेबाड़ैत कत`-ने-कहाँ चलि जइऐ। जहन थाकि जैऐ तऽ बुझिऐ जे ककरा खिहारइ छिऐ, तऽ ककरो नञि ! बस, बिधुआएल मुँह नेने एक-दोसर के दोख दइत घुरि अबिऐ। मुदा, आश्चर्य जे अगिलो बेर खिहारब कहाँ छोड़िऐ? अइ सऽ एकटा फएदा अबस्स भेलइ जे चोरि आ सेन्ह काटब ओहि बीच साफे बन्न भऽ गेलइ। से सब सुनिकऽ कत्तेक थाह लेबही तों सब? रूकि-रूकिक`, मोन पाड़ि-पाड़िक` कहइ छियौ तऽ होइत होतउ जे फुराफुराक` कहइ छियौ। केहनो माहिर लोक बुते अतेक सालक बात सब धरधराकऽ कहल पार नञि लगतै। हमरा तऽ सबटा भोगल हय। तैयो कने दिक्कति भइये जाइ हय। बुझाइ हय जे बहुत बात छुटिये जाइ हइ। बहुत बात दोहराओ जेतइ से खियाल राखऽ पड़तौ सबके। बतला ने जइऐ कहूँ, तें रूकि-रूकिकऽ कहइ छियौ। ...सब बात कहलो तऽ पार नञि लगतइ आ कहनाइयो ठीक नञि होतइ !`

कहैत-कहैत बुढ़ा शिथिल भऽ जाइ छथि।

`... की कहियौ, बड़का समस्या भऽ गेल रहइ बघोतिया। ने पकड़ाइ, ने मारल जाइ ओ। धुर जो ! पकड़ाइ कि पड़ितै कप्पार ! केओ देखने रहइ ओकरा तहन ने ! देखऽ के कोन बात? क्यो नाओं तक नञि सुनने रहइ ताइ सऽ पहिने।`

एकटा छौंड़ाके नञि रहल जाइ छइ - `अयँ हओ बाबा, पहिने-पहिने जे बजलै तकरा सऽ नञि पुछलहक तों सब?`

`तोरा सन काबिल लोक नञि रहै पूछेबला !` - बाबाक आँखि चढ़ि जाइ छनि।

`हइ, तोहर लोल एना किये सबसबाइ हउ रे?` दाइबती डाँटइ छइ।

एकटा ढिठगर छँड़ा कें धैर्य टूटि जाइ छइ - `तहूँ तऽ बाजिए देलही, गे दाइबती !`

तेसर गोटे संचमंच भेल कहइ छइ -`सब सऽ बढ़ियाँ हमही सब जे चुप्पे छी।`

बाबा के हँसी लागि जाइ छनि।

सभ क्यो भभाक` हँसि पड़ैछ। वातावरण गुलगुला जाइ छइ ।

`बस-बस, भऽ गेलौ। हमरा टेम नञि हय। अखनिये खाय लेल बोलाहटि होतइ। सुनइ जइहें तहन खिस्सा !` बाबा बात के भरियाबइ छथि।

सभक्यो माटिक मूर्त्ति भऽ जाइछ जेना किछु भेले ने होइ।

`से की कहियौ बौआ सब ! ककरो अक्किले नञि काज करइ। सब अपना-अपना आँगनक मुँह पर कि बीच आँगन मे सुतइ। सबहक आँगन तऽ रहइ उदाम। टाट-फड़क जे रहबो करइ तऽ से पर्दा लेल मात्र। कुकूर-बिलाड़ि कत्तौ दऽ ढुकि पड़इ। बेसी घरक पुरुष-पात कमाय पुरुब भऽ गेल रहइ। सबहक चिंता - ध्यान ओम्हर ओकरे सबहक परिवार पर रहइ। ओकरे सब पर तऽ बेसी आघात होइ।.... चोर-चहरा कि आनठाम सऽ अबइ?

.... तऽ डर कत्तेक हद तक पैसि गेल रहइ तकर अंदाजे कऽ सकइ छीही तों सब। कोनो कारण सऽ बच्चा राति मे कानइ तऽ माय चिचिया उठइ - `बघोतिया! बघोतिया !`

जिदियाह नेनाकें तहिये सऽ डेराबऽ लगलइ सब बघोतिया सऽ। ई बच्चा सब डेरेबो करइ तहिना।

अतेक कहि बाबा दाइबती दिस ताकइ छथि। दाइबतीक मुँह पर संतुष्टिक भाव पसरि गेल छइ।

सुननाहर सभक उत्सुकता बढ़ल देखि बाबा खिस्साक अगिला लड़ी पकड़ै छथि :-

...गाम तऽ गाम, परोपट्टा सऽ दूर, कत्तेक दूर तक बात पसरि गेल रहइ। गाम-गमाइत, सऽ सर-कुटुम्बक जिगेसा होबऽ लगलइ। पास-पड़ोसक गाम मे से फराके आतंक पइस गेल रहइ। हमरा, सबके दिमागि मे एकटा बात मुदा घुरिआइ जे खाली अपने गाम मे बघोतिया किये अबइ हइ। आनो गाम मे तऽ बच्चा हइ। हम सब मुदा सोचिए कऽ रहि जइऐ। कक्का एतबे कहइ -`बस, सावधान रहइ जाइ जो। आइ-ने-काल्हि सबटा साफ भऽ जेतइ। अपन गाम कत्तेक जंगलाह हइ सेहो देखऽ पड़तौ। अगह-स-बिगह मे पसरल हइ गाम। कोनो बरन नञि छुटल हइ गाम मे !

एकटा बच्चा पूछि दइ छइ - `बघोतिया देखइ मे केहन रहइ से?

रे बाबू इएह रहइ रहस्यक बात। क्यो कहइ कुकूर अतेकटा। क्यो बिलाड़ि अतेकटा कारी रंगक कहइ। क्यो मजाक करइ - हमरा घबहा कुकूर अतेकटा। ककरो फुराइ -`बस, जतेकटा तोहर मोन कहइ हउ।` ले बलैया। सब अपने सऽ

फुरेबो करइ, आ आपस मे कटाउझ क` कऽ पाइनक बुलबुल्ला जकाँ अपनेआप फुटिकऽ बउक भऽ जाइ।...

मात्र चलित्तर कहइ - `नेपाल सऽ अबै हइ। तों सब जे कही, मुदा व्यास महराज अत्तेकटा हइ, मुदा कारी भ्योह। इओ बाबू, आँखि जे चमकैये ओकर लाल करजन्नी जेकाँ ! हमरा लाठिये नञि रहय। नञि तऽ तखने ओंघरा देने रहितिऐ। तेना ने आँखि चोन्हरा गेल जे की कहियौ !`

जबाब देनिहार कहिये देलकै - `गप्पी नहितन रे ! आँखि चोन्हरा गेलौ तऽ लाठी कोना मारितही?`

सभ तहन ठहक्का पाड़िकऽ हँसल रहइ। बात तऽ बढ़ि जैतइ। मुदा, ओ पड़ि गेल रहय एसगर। दम साधिकऽ चुपचाप चलि देने रहइ ओत्तऽ सऽ कने काल बाद।....

...`चलित्तर मुखियाजी ओत्त` काज करनि। हुनकर मुखबीर रहनि ओ। सभतरि ओ रहबे करइ। डरे क्यो मुँह नञि लगबइ ओकरा सऽ।

चलित्तर तऽ उठिकऽ चलि गेल रहइ। तैयो मुदा बतकटौअलि होइत रहलइ। हमर कक्का तहन कहने रहइ - `रे एहनो आइन छाँटब होइ हइ? अपना मे बैसार करइ जाइ जो। बघोतिया सऽ फरह कोना भेटतौ, तकर विचार करै जाइ जो। बात हमरा नञि बनबऽ अबै हय की?`

तर्का-तर्की आ घोंघाउजक बाद कक्काक बात मे दम बुझाएल रहै सबके। एकरा बादे एकटा झमटगर बैसार भेल रहै। बाबू-भैया सबके निहोरा कएल गेल रहइ। अच्युता बाबू आ लूटन झा सबटा संगोर केने रहथिन। बैसार सलहेस थान पर भेल रहइ। होइत हबाइत नियार भेल रहइ राति भरि घुमिकऽ पहरा देबाक। सबहक विश्वास रहइ जे एना केने बघोतिया हड़कि जेतइ।

की कहियौ ! नवछुहिया सब छड़पि कऽ आगू आएल रहइ। जेना सबके नाटकमे पार्ट भेटल होइ। ओहन उत्साहक बखान मुँह सऽ संभव नञि हइ। ओएह देखलिऐ समय जे छोट-पैघक भेद-भाव रहइ समाप्त सन बुझाएल सार्वजनिक काजमे मे। बुझाइ जे वास्तव मे देश स्वतंत्र हइ। ई सबटा सोशलिस्ट पाटीक प्रभाव रहै। ... एकबेर लोहियाजी सेहो आएल रहथिन अपना गाम।

चारि-चारि घंटाक एक-एकटा मेड़ बना-बना पहरा देब शुरु भेल रहइ।

बारह एक बजे राति तक तऽ लोक जगरने करइ। असल पीह-पीह तकराबादे बुझाइ। जहाँ साँझ पड़इ कि चोरबत्तीक इजोत भुकभुका उठइ। अइ सबसँ छगाएल रहैत मोन मे कने भरोस अबस्स जगलइ। कनेमने चैन सऽ सुतबाक पलखति से भेटलइ।

की कहियौ ! उक्कठी लोक कत्तौ रहल ताकय। फेकना के तऽ चिन्हिते छही? फेकना बड़ अगत्ती रहै नेन्ना मे। दू-तीन राति झूठे `बघोतिया! बघोतिया!` हला कऽ देलकइ। तेसर राति मे ओ पकड़ाइये गेल। एक्के झापड़ कऽ सब देने रहइ। तऽ बुझिलही जे केहन नीक मरम्मति भऽ गेल रहइ ओकर? ओ रहय चलित्तरक पाटि पर से सब जनइ। अंगरेजी दबाइ पिअबइ ने !

... से जे भगलै लाजे ओ गोहाटी से चारि बर्ख बादे आएल रहइ गाम। ओ अपने कहइ हइ जे बघोतिया धारि देलकै ओकरा। ओतेक जे हइ, से गोहाटियेक कमाइ ने ! धियापूता ओत्तइ रहइ हइ। आब अपने रहऽ लगलैए गाम पर। इएह थोड़बे दिन पहिने ओकरा दूरा पर बैसल रहियै तऽ मोन पाड़ि-पाड़िकऽ खूब बतिएलिऐ। ओहो समय भोटक रहइ। एखने सन। ओकरा लेल ई दोसर भोट हइ गाम मे। एमकी दुनू गोरा जरे-जरे भोट खसब` जेबइ। मशीन सऽ जे भोट खसतइ! मरब की जीब, आँखि सऽ देख तऽ ली कम-स-कम ! तों सब आर बहुत किछु देखबे, जीबे तऽ !`

बाबा चुप भऽ जाइ छथि जेना खिस्साक छोर ताकि रहल होथि। भोटक नाओं पर दाइबती छटपटा उठैत अछि किछु बाजऽ लेल। ओकर बाउ मना केने छनि भोट खसबऽ सऽ। मुदा, ओ मोन मसोसिकऽ रहि जाइत अछि। सामने मे बाबाक खिस्सा संग करार सऽ ओ बान्हल जे अछि ! दोसर, `घरक भेदिया लंका डाह`, कियेक बनति ओ?

`रातिकऽ पहरा तहूँ दहक हओ बाबा?` - बलीबर पुछइ छइ। बाबा ओकरा दिस ताकि गुम्मे रहइ छथि किछु सोचैत सन। फेर बजइ छथि - `तों सब बात के पकड़इ नञि छीही। हमही आ दुखरन कक्का तऽ अग्रेस रहिऐ अपना टोला सऽ ! कक्का ब्योंत देखबइ आ हम सब काज करिऐ। आह, कमाल रहइ कक्का ! ... सत्ते ! पहरूबला हिसाब-किताब सऽ कत्ते निश्चिंती आबि गेल रहइ लोक मे। आलस से घेरऽ लगलइ ! कि हठात् एक राति एकटा चिलकाउर चिचिया उठलइ - `बघोतिया लऽ गेल बच्चा के ! बघोतिया लऽ गेल बच्चा के !... मर बहि, ई की

भेलइ !..

महाप्रलय ! लगलइ जेना पोखरिक थिर-थमहन पानि मे कतौ सऽ क्यो बड़का चेप फेकने होइ - `चभ्` चभाक् !

चारूभर सऽ सब दौगि पड़लै। चिलकाउर कहलकै -`बिलाड़ि अतेकटा देखलिए हम आँगनक मुँह पर।`

दूध-माछ दुनू बाँतर भऽ गेल रहइ। कोरैला बच्चाबाली बेसी छगाएल रहैत रहइ। हमरा सबके अपना पूरा विश्वास रहइ जे माय सपनाएल हेतइ। बिलाड़िये छलइ हएत सेहो टारबला बात नञि रहइ। किये तऽ टोल मे बड़कीटा एकटा कारी बिलाड़ि रहइ। एहि घटनाक तीनिएँ - चारि दिन बाद एकटा नव-कनिञा घिघिआ उठलइ। ले बहिं ! कहाँ लोक कने निश्चिंत भेल छल, आ से किदन परि भ` गेलइ। ओ कनिञा इएह सुकनाक दाइ रहथिन।.....

....रे सुकना, तों पूछि लियही अपना दाइ के।`

`दाइ कहैत रहइ हइ से` - सुकना लजाइले सन मुदा, मुस्किआइत बजैत अछि।

`एकर दाइ थाकल-ठेहिआएल रहथिन। बाध सऽ आबिकऽ ओसारा पर एकरे बाप के पड़ले-पड़ले दूध पिआबऽ लागल रहथिन। ठेहीक चलते अलसा गेल रहथिन। बच्चा, सुकनाक बाप कुनमुना उठलइ कि ओ निन्ने मे सपना उठल राहथिन।`

सभ क्यो सुकना दिस तकैत मुस्किया उठैछ।`

सुकना लजाएले सन आकृति नेने मुस्कीक संग मूड़ी नीचा कऽ लैछ।

`सबटा तऽ आश्चर्ये रहइ। ई विश्वास अछैत जे मोन मे छगाएल बात एहि घटनाक कारण हइ, क्यो अनठाबे के पक्ष मे नञि रहइ। घटना तऽ जनीजाति आ बच्चा के ल`कऽ घटइ। की कहियौ जनी-जाति मे जतेक विश्वास जगबियै, ततबे से आर भहरिये जाइ। आब बुझइ छिऐ जे शिक्षा कतेक जरूरी हइ अपना-आउर मे।

बाध-बोन कि काज-धाज मे ककरो मोन थोड़बे लगइ? गिरहतो सब देखबे करइ! धीरे-धीरे चिन्ता समूचा गाम के, छोट सऽ ल`कऽ बाबू-भैया सबके सतब` लगलइ। ककरो काज नीक जकाँ होइ नञि। एम्हर जन-बनिहार हमसब फराके चिन्ता मे डूमल रहिऐ। काज-धंधा क्यो कोना करितै? गिरहतो सब कत्तेक आगउ बोनि कि पाइ दीतै? तैयो लाजे-पक्षे भेटिये जाइ। देबाइ-धर्माइ, भगतै खुब्बे होबऽ

लगलै। कतेक भगता उठि बैसल। सलहेस बाबा के कत्तेक-ने-कत्तेक मनता मानि देलकनि। बरहम बाबा`के छागर चढ़ऽ लगलनि। देवता-पीतर बेसी होबऽ लगलइ।... कहलथिन लूटन झा - `से जे होइतइ तऽ सरकार सेना मे भगते सबके भर्ती कऽ लीतइ। सरकारो बेबकूफे छइ।`

`मुदा, हुनका बातक मर्म क्यो बुझलकै थोड़बे? बुझबो केलैक तऽ अमल मे थोड़बे अनलकै? तहन तऽ आर से सब बेसीये होबऽ लगलै। पता नञि, ओतेक भूतो-प्रेत कतऽ सऽ बझा अनै भगतै खेल` लेल।`

`अयँ हओ बाबा, तहिना तहूँ नञि मानहक से सब?` एकटा श्रोताक ठाँइ-पठाँइ प्रश्न होइ छइ।

बाबा पकड़ा जाइ छथि। कहइ छथिन -`हमरो अकिल तेहने रहइ। कक्का सब जहन मानइ तऽ हमर कोन लेखा ! से सब सोचइ छिअइ तऽ लाजे होइ हए। शिक्षाक साफे अभाव रहइ ने अपना सबमे !

....धुर, पढ़लहबो लोक सबहक तऽ सएह हिसाब रहइ ! गाम मे तऽ सबदिन ब्राह्मणक ठट्ठ रहलइ। सबक्यो लखराम से ठानि देलकइ। महादेवक पूजा-पाठ खुब्बे भेलइ। मुदा समस्या जकथक रहलइ। रामायण आ गीता पाठ से भेलइ। जकरा जे फुराइ, से करइ।

...एकेटा आस रहइ मुखिया जी पर। सरकारी सहायताक उपाय जे सुझइ से हुनका बिना सम्भवे नञि रहइ। गाम-घर मे जे अमला-फमला रहइ से सब हँसिकऽ उड़ा दइ -`ई गीदड़-खटाँउस मारऽ सरकार थोड़बे एतइ? सरनरिया के बजाउ ताइ लेल। ई कि कोनो नव गप छइ?` - थाना तऽ साफे अनठा देलकइ।

भोटक गहमा-गहमी रहइ। मुखियाजी पटना-डिल्लीक दौड़-बड़हा मे रहथि। समाद जानि। लोको गेलनि भेंट करऽ। ओ किछु पाइ, मटिया तेल आ चोरबत्तीक मसल्ला लेल दऽ देथिन। सेहो कि पूरापूरी हमरा सबके थोड़बे भेटइ? आधा-छीधा रस्ते मे निंघटि जाइ। ई सब बहुत बाद मे हमसब बुझलिऐ। मुदा....

मुदा, एकटा आस बन्हा गेलइ अइ सऽ !

...हमसब तत्तेक ने अकच्छ भऽ गेल रहिऐ जे होअय, बरू एक साँझ भुखले रहिती आ कहुना अइ बघोतिया सऽ फरह पविती। खाएब-पीब से नञि सोहाइ ककरो। बघोतिया छोड़ि आर कथूक चर्चे कहाँ करियै हमसब !....

फेर एकटा बैसार केलिऐ हमसब। अइ टोल, ओइ टोल दू भाग मे पहरू सबके बाँटि लेलिऐ। एना मे फिरसाहिन कम बुझेलै। आपस मे स्पर्धा बढ़ि गेलइ जे देखक चाही कोन टोल मे ओ जानवर बघोतिया मारल जाइ हइ।

हमर कक्का मुदा उदास भऽ गेलइ। पुछला पर कहलकइ - `अइ सऽ आपसी मेल भहरि रहल हइ। जड़ि तऽ हइ बिचला गामक डबरा। ओइ मे तऽ बाघ-सिंघ बास करतै। जंगल तऽ गामक फाँक सबमे आ गामक काते-काते मे हइ। तकर उपाय क्यो कहाँ सोचइ हइ? आन गाम मे कि बच्चा नञि हइ? आर कतेक गाम मे तऽ जंगल हइ। से बात मुखिया जी के खुलिकऽ क्यो कहाँ कहइ हनि? अपनो गाम सऽ नम्हर-नम्हर गाम हइ दुनियाँ मे।`

हम ताइ पर कहने रहिऐ - `मुखियाजी के से आब कहल जेतनि। आखिर डबरा तऽ हुनके सबहक हनि?`

मुदा, कक्का के विश्वास नञि भेल रहइ। एकबेर मुखियाजी टारि देने रहथिन - `समय आब` दहक ने। पहिने अइ सबस` निबट` दए। ई तऽ अपना हाथक बात छइ।`

`रे बौआ सब। पैघ लोकक बात बुझियोक` अनठाब` पड़इ। उपायो तऽ नञि रहइ दोसर। मुँह ताकब आ हाथ जोड़ब, इएह तऽ दू टा जनिऐ हमसब, से सब बात मे। हमर सबहक सब बात हुनका सब लेल बुढ़ियाक फुसिये होनि। हुनके सबहक दया-धर्म पर हमर सबहक जिनगी पलइ। `

बाबा, तहूँ बाजी लेगेने रहक?` - सुकना कने ढिठगर भेल पुछइ छइ।

बाबाक ठोर कने बिहुँसल फुइट सन भऽ जाइ छनि - `झूठ नञि कहबौ। हमहू अपना भरि बड़ अगत्ती रहिऐ। पिछड़ैत जुआनी रहय। गेन से खेलिऐ। सरओक माँटि से लगइ देह मे। मिलनसार रहिऐ बड़ हम। एहन-एहन काज मे बाबू-भैया बड़ पुछइ हमरा। हमरे तऽ ठानल रहइ बाजी। सब मे जोश ठंढा होइत बाजी ठनने रहिऐ।.....

....अइ सऽ एकटा फएदा अबस्स भेलइ। बघोतियाबला भय कनेमने तह पड़ऽ लगलइ। राति-राति भरि तीन-चारि ठाम ताश फेंटाय लगलइ। कतौ खिस्से पसरि जाइ। बीच-बीच मे चोरबत्तीक भुकभुक्की मे गाम मे टहलि जइऐ। अइसऽ बेसी उपकार बाबूजान कोतबाल के भेलइ। ओ चुपचाप बैसिकऽ तशखेली देखय।

आग्रह पर खेलेबो करइ। ओकर संगतुरिया सब मजाक कऽ दइ - `बाबूजान तऽ मनबिते अइ जे भन्ने बघोतिया अबैत रहइ।`

संग लागल छँड़ा माड़ड़ि सेहो ठठ्ठा कऽ दइ। एकदिन अतत्तह भेला पर उठिकऽ बजलाइ - `तोबा ! तोबा ! तब देह काज नञि देतै !` - ओकर मुँह खसि पड़ल रहइ। किछु गोटे तोष-भरोष देलकइ तऽ ओकर मोन कने शांत भेल रहइ। ओकरा आदरक संग बइसाएल गेल रहइ।`

बाबा किछु अखियास करबाक मुद्रा मे भऽ जाइ छथि। श्रोता सभक भनभनाहटि मे अंधैर्यक अभास स्पष्ट बुझा रहल छनि।

बाबा कहइ छथिन - `बस-बस, हमरा अपने अगुताइ हय। हम ओएह आ ओतबे कहबौ जे जरूरी हउ तोरा सब लेल। बेलागि आ बेरसके बात थोड़बे कहबौ?.....से की कहियौ तोरा सबके ! बिना होशक जोश तऽ थोड़बे काल रइइ हइ ने ! चोरबत्तीक मसल्ला आ मटिया तेल समस्या बनि गेलइ। सब एक दोसर पर दोख मढ़ऽ लगलइ जे तों बेसी जरबइ छीही तऽ तों। सब अपना-अपना हाथ मे टार्च राखऽ चाहइ। मुदा, ई नञि बर्दास्त होइ जे के कोना जरबइ हइ। जहन अच्युता बाबू डटलथिन जे, जाइ काज लेल अबइ छइ, जरइ छइ। अइ लेल अनेरे मथफोरौवलि करबाक नञि छइ। तहन जाक` बात शांत भेल रहइ।

तेल तऽ जरइ बेसी तशखेली मे। बाबू-भैयाक धियापूता बेसी खेलइ। हमसब जमिकऽ कहियो कहाँ खेलिअइ? कक्का कहइ - `देख, काज तऽ अपन सबहक होइ हउ। ओकरा सबके कोन डर हइ बघोतिया - फघोतियाक? पुरखा सब कहि गेल हइ - `राजाक सामने ने हँसिते जाइ, ने कनिते जाइ, डोका जकाँ मुँह बओने जाइ।`

`आह्, कक्का सन लोक कत्त` पाबी ! हुनकर एक-एक बात् संजोगिक राखेबला होइ।`

बाबाक स्मृति मे कक्का आबि जाइ छनि, तऽ ओ किछु अन्यमनस्क भऽ जाइ छथि। एम्हर सुननाहर सभ मे फेर उकस-पाकस आरंभ भऽ जाइ छइ। बस कि बाबा कहब आरंभ कऽ दइ छथिन :-

...`इजोरिया अबइत कने निश्चिंती अपने आप चलि अबइ। मुदा, एक राति तऽ टहाटही इजोरिया मे निर्भय लालक पुतहु चिचिया उठल रहथिन। आब सोचइ जाही तों सब जे ईंटा सऽ घेरल-बेढ़ल आँगन-घर मे रहऽबलाक ई दशा

रहइ ! असल मे सबहक मोन मे, खासकऽ स्त्रीगण सबहक मोन मे बघोतिया छगा गेल रहइ, से खाहे बाबू भैयाक घर-आङन मे कि जन-बनिहारक जनीजाति मे।

तऽ उतरबारि टोल, दक्षिणबारि टोल दू टोल भऽ गेला सऽ स्पर्धा तऽ बढ़लइ मुदा, टेनामेनी सेहो आरंभ भऽ गेलइ। चलित्तर हबाउड़ बेसी लुटलकइ। पहिने पुबारि टोल फराक भऽ गेलइ। पेट्रोमेक्स जराकऽ, बैडमिंटन आ भौलीबॉल से शुरू भऽ गेलइ। देवता बेसी आ अक्षत कम, से परि भऽ गेलइ। आपसी मलीनता आबऽ लगइ। टोल-टोल आ गच्छ-गच्छकक बात उठऽ लगलइ। मुखियाजीक चलते ओकर मिजाजि सदति चढ़ले रहइ छलइ तखन बँचलइ पछबारि टोल। असल मे एकरे सब संगे चलित्तर कें टेनामेना भेल रहइ। संपत्ति मे ई टोल सबदिना औव्वल रहलैये। चलित्तर रइइ अछोप। पछबारि टोल ते मुखियाजी सऽ घृणा करइ। अच्युता बाबू खाधि भरबाक बड़ चेष्टा केलथिन। अच्युता बाबू कहलथिन -`अइ टोल मे तऽ हमर घर अछिये। आर बाँकी तीन टोल मे जमीन कीनकऽ हम घर बनाएब, आ सब टोल मे रहब।` कत्तेक पैघ बात रहइ।

उत्तरबारि टोल आ दक्षिणबारि टोल तऽ बँटल रहइ बघोतिया ल`कऽ। एम्हर दू टोल मे क्लब बनि गेला सऽ हमरा सभक टोल नाओं मात्रक क्लब रहइ। हमरा सबके पाइ रहय थोड़बै जे बराबरी करितिऐ? खाय के उपाय तऽ रहबे ने करइ ककरो ! उतरबारि टोल अर्थात् देबानजीक टोल कराहक घी कातेकात रहइ। मुदा, एकटा बात रहइ। हमरा सबहक टोलक कि उतरबारि टोलक खेलबाड़ के पछबारि टोल कि पुबारि टोल मे बेरोकटोक प्रवेश रहइ। असल मे दूइयेटा क्लब रहि गेलइ बाद मे। अइ दुनू क्लब मे मैच होबऽ लगलइ से बौरो मंगा-मंगाकऽ। तहन तऽ मैच देखहेबला होइ। के ककरा बौरो रखइ तकर उचाबर्च होइ। ई सब पाइक खेल रहै। पैरुखक लड़ाइ रहइ।

एकबेर मैच बड़ जमिकऽ भेलइ। रैयामक भलुआ आएल रहइ। पाहुन भ`कऽ। हार-जीतक फैसला नञि भेलइ। मैचक उन्माद मे राति बेसी भऽ गेलइ। सुतलिऐ देर सऽ।

भोरहरिया मे एकेबेर चित्कार भेलइ। पहरुओ सब ओइ राति सूति रहल रहइ। पता नञि, बघोतिया के सेसब पता कोना रहइ ओ आघात केलकइ। बच्चाक माय लड़लइ आ लड़ैत रहलइ अपना बच्चाक खातिर।

चित्कार पर जगरना भऽ गेलइ। लोक एलइ। देखलकइ। माय रक्षार्थ लड़ैत-

लड़ैत सदाय के लेल शरीर त्यागि देने रहइ। बच्चा निचेन सऽ ओसारा पर सुतल रहइ।

परात भेने दिशा-फरागत दिस जाइत लोकक नजरि पड़लइ खेतक एकपेरिया रस्ता पर। रक्तक बुन्न जहाँ-तहाँ खसल रहइ। क्यो-क्यो बजलइ जे बघोतिया नेपाल भागि गेलइ।

बाबा मन्हुआएल नीचाँ दिस तकैत चुप भऽ जाइ छथि। श्रोता सभ चुपचाप माँटिक मूर्त्ति बनल अछि आँखि पथने।

`एहि घटनाक दूइये दिन बाद मुखियाजी गाम आएल रहथिन। एकबार मे खबरि से छपि गेल रहइ। ओ मुजफ्फरपुर मे रहथि। खबरि पढ़ि ओ मुदा गाम आबि गेलथिन।

गाम मे ढुकला पर पहिने हमरे दूरा पड़इ। कक्का सँ बेसी बात होइन। ओ सोझे आबिकऽ अखरे सेज पर बइस गेल रहथिन। जे बात हइ, बैसते देरी बजलथिनः-

-`एकरा भगवानक लीला बूझि हमरा सबके संतोष करऽ पड़तइ, एकर ई माने नञि जे हम चुप रहबइ। एम एल ए, एम पी, कलक्टर सबकें सूचना देल गेल छइ। दू-चारि दिन मे सब आबि रहल छइ। मुआबजा सरकार जे देतइ से देबे करतइ। क्रियाकर्म मे जे लगतइ से हमर खर्च। लक्ष्मीबाइ छलइ ओ लक्ष्मीबाइ ! राष्ट्रीय पुरस्कार लेल मुख्यमंत्री कें कहल जेतनि। ई नान्हिटा वीरत्वक बात नञि छइ। लोक तऽ घुरिकऽ नहि आबि सकइ छइ। तकर उपायो तऽ नञि छइ।`

`सब चुपचाप थहाथही देने ठाढ़ रहलइ। कक्का तऽ करजोरि सोझे ठाढ़े रहलइ। मुखियाजी कतेक कहलथिन, मुदा कक्का नहिएँ बैसलइ।

`एकरा संग एकटा आर काज छइ जाहि मे सभक सहयोग आवश्यक अछि। बीच गामक डबरा आ गाम मे आ आनोठाम जे अकठ-मकठ सबसऽ जंगल भऽ गेल छइ, तकरा सबके साफ केनाइ अनिवार्य छइ। ई जंगल सब गीदड़क-बढ़ियाँ गढ़ बनि गेल छइ। ई काज हम सम्पन्न कैयेकऽ जाएब...

... की मंजूर ने?` - मुखियाजी पुछने रहथिन।

मुखियाजीक बात सपना जकाँ लागल रहइ हमरा सबके। ककरो अपना कान पर विश्वास नञि भेल रहइ। सबक्यो एक-दोसराके देखऽ लागल रहिऐ। कक्का के तऽ कना गेल रहइ। मुखियाजी बूझि गेलथिन जे अवसर गर्मेबाक नहि

छइ। कहलथिन - `काल्हिये सऽ काज शुरू हेतइ। खेनाइ-पिनाइ, जलखइ सबटा हमर खर्च। बेसी-स-बेसी लोक कें कहक आबऽ लेल। जल्दी-स-जल्दी एकरा सम्पन्न करबाक अछि। तखने हमरो चैन भेटत।`

खुशीक अंत नञि रहइ। ककरो बकारे नञि खुजइ। मुखियाजी फेर अपने कहने रहथिन - `बूझि गेलिऐ हम। काल्हि भिनसरे दुक्खी आ रघुनीक देखरेख मे काज आरंभ हेतइ।`

जाइत काल दुक्खी कक्का कें हाथ मे दू सय रूपैया दइत कहने रहथिन - `आर हम काल्हि दऽ देबऽ। तोरा माँगऽ नञि पड़तऽ।`

लरैना जे एखन तक चुप छल, बाबा सऽ पुछइ छइ - `पुरस्कार भेटबो केलइ?`

`धुर बुड़बक ! डबरा उद्धार भेलइ, आ हमसब सबटा बिसरि गेलिऐ। ओतक हमसब तहिया जनिऐ थोड़बे?

दोसर दिन भेने ठीके शुरु करबा देने रहथिन मुखियाजी। गूड़-चूरा भरि पोख खाइ सब। साँझ मे चारि बजेक बाद भात-दालि खेनाइ भेटइ। एह्, अमोटो जे खेलिऐ हमसब अछिन्नरे!`

आश्चर्य सऽ सभ एक-दोसरा कें देख` लगैत अछि।

हँ, एकटा आर बात। चाह पहिने-पहिने हम ओतइ पिलियै। आइ जकाँ चाहक चलन घरे-घरे थोड़बे रहइ? बहुत गोरा तऽ सुननहुँ नञि रहियै।`

कत्तेक गीदर; खटाँउस कोना मरलइ आ भगलै सेसब आन दिन कहियो कहबौ। सुने मे बड्ड मोन लगतौ तोरा सबके। अखनी पूरा रमाएन कहब संभव नञि हय हमरा बूते। सबटा कहबौ तऽ हप्ताभरि सऽ कम नञि लगतइ....

मुख्तसर जे बात हइ से की कहियौ तोरा सबके । चारिये पाँच दिन मे डबरा साफ भ` कऽ भराइयो गेलइ। गामक सबटा अकठ-मकठ साफ भऽ गेलइ। मुखिया जी अपने समूचा गाम घूमथिन देखऽ लेल। गाम दीयाबाती सन चिक्कन-चुनमुन भऽ गेलइ। तोरा सबके आश्चर्य लगैत होतइ। सिर्फ हमरा तीन मासक जड़ना भेल रहय। तेना ने खटै गेलइ सबक्यो जे कत्तेक के जर भऽ गेलइ। कत्तेक के चोट आ कटा-फटा गेलइ। सबटा दवाइ-बिरोंक जोगार मुदा मुखियाजी केलथिन। डबराक चलते एके टोल दूभाग मे जे बटा गेल रहइ, भरा गेला पर एके टोल भऽ गेलइ।... बाबू सब ! बुद्धि हइ बुद्धि ! तांइ गणेशक पूजा होइ हनि शुरू मे !

बाप रे, ताहि सऽ पहिने कत्तेक घुरिकऽ जाय पड़इ ! डबरा तऽ रहनि

मुखियेजी सबहक। तकरा चारिये-पाँच दिन मे भराकऽ डीह बना देलथिन। भरहे। मे हमसब अपने मोने मदति केलियनि। कोना ने करितिऐ ! बघोतिया सऽ फरह जे पेबाक रहइ !

ओही डबराबला जगह पर सुहृद पुस्तकालय बनलइ। ओतऽ `चुन्नूमुन्नू`, `बालक`, आ `आर्यावर्त` अबइ। क`ट`कऽ हम पढ़ब शुरु केने रहिऐ। पाछू तऽ धुरझार पढ़ऽ लगलिऐ।....

.... सबके बुझाइ जे वास्तवमे देश स्वतंत्र हइ। जेहन त्याग मुखियाजी देखेलथिन ताइ पर पछिला सब अपयश झपा गेलनि। अखबार मे तऽ फोटो से छपि गेलनि। सब कहऽ लगलइ - `नेताक इएह लक्षण हेबाक चाही।`

दू हप्ताक बाद पटना सऽ कोनो मंत्री से आएल रहै। तहन लोक मुखियाजीक पैरुख बुझने रहइ। कलक्टर, दरोगा, आर कत्तेक-ने-कत्तेक अमला-फमला आएल रहइ। गामक चमक-दमक पर सब दंग रहइ। ओही मे भेद खुजल रहइ जे मुखियाजी एम.एल.ए. लेल ठाढ़ भऽ रहल छथि।`

`राजनीति ओहिना नञि होइ हइ। बड़ पुरान कहबी हइ - `कूदय, छड़पय तोरे तान, ताके राखे दुनियाँ मान।` अतेक धुरफंदी आन कोनो विद्या मे नञि हइ बाउ सब !

`अयँ हओ बाबा, पुस्तकालय सब की भेलइ?` - दाइबती पुछइ छइ।

`मुखियाजी घराएनक जमीन रहनि। मुखियाजीक मरलाक बाद सब बाँटि-चुटि लइ गेलइ। सेहो कि सोझे रस्ते भेलइ? मर-मोकदमा से चललइ। दू-महला जे ठाढ़ हइ से ओही जगह पर।`

`बाबा, तों ककरा भोट देने रहक?` एगोटे पुछइ छनि।

मुखियाजी कहा पठेने रहथिन ककरो नञि जाय लेल। एक राति पहिने भोट पीछू दू टाकऽ बोनि पठबा देने रहथिन। हमरा दू गो रुपैया सेहो पठेने रहथिन।

`एमकी ककरा देबहक भोट?`

`से हम तोरे कहि दियौ?`

`रे सुकना, तोरा बड़ फुराइ हउ ने? बाबा नञि जेतइ ! भोट गिराबे ! बाबा के तकर सेहंता लगले हइ से? केहेन-केहन के तऽ गिराबहे नञि देतइ ! दाइबती सुकना कें डाँटैत बजैत अछि।

`अइबेर बहुत लोक जेतइ मशीन देखे` - सुकना ढीठ भेल फेर बजैत अछि
`अइबेर बेसी गंडगोल हेतइ। बाउ कहैत रहइ` - दाइबतीक नजरि बाबा पर छइ।

बाबा मुदा चुप छथि। सभ चुप्पे रहैत अछि। बाबा चुपचाप उठि जाइ छथि। सब संगेसंग उठि जाइछ।

दाइबती सूतल बौआ के उठा लैत अछि, आ बाबाक पाछू-पाछू दुर्खा दऽ आँगन जाइत अछि।

दोसर दिन भेने सकाले बाबा भोट खसबऽ चलि पड़इ छथि। आँगन सँ ल`कऽ बाहर तक मना कएल जा रहल छनि। मशीनी भोटक हुलास हुनका टानि रहल छनि। लालसा मिटबऽ लेल बहीर भेल चुपचाप बढ़ि रहल छथि। डेग देखि सभकें आश्चर्य लागि रहल छइ।

क्यो सुनाकऽ कहइ छइ -`देखही रौ बूढ़बा के ! एहन धाप आइ किये छइ रौ? भरिसक पाँखि भऽ गेलैये। उड़तइ आब !`

`से नञि बुझलही? दू-चारिटा बुढ़बा सब नियारलकौये मशीन देखऽ लेल भोट गिरबे जेतइ। अग्रेस इएह हइ। चलथु ने ! बेटा ओतइ हनि।` - `क्यो दोसर कहइ छइ।

`हओ बुढ़बा, हओ? एहेन जुलुम नञि करऽ हओ? लाठियो तऽ ने सम्हार मे हऽ। टी.भी. मे तऽ देखबिते हइ।` - क्यो तेसर टीपइ छइ, आ संग-संग निहोरा करइ छइ।

बुढ़बा, माने बाबा माथ पर गमछा रखने, गोल गला गंजी पहीरने, मोटगर फ्रेमक चश्मा द्वारा रस्ता देखैत आ तकरा ठेंगा सऽ थाहैत, नम्हर-नम्हर धाप दैत बढ़ि रहला अछि। हुनका सामने मे एखन मात्र भोटक मशीन छनि। ... मनुक्खक काज मशीन कोना करइ हइ ! अजूबे हइ ने !

आँगन सऽ बाहर तक ककरो बात नहि सुनलथिन तऽ पुतहु दाइबती के पाछू लगा देने छथिन कने `देखऽ लेल। माय दाइबतीक कोरा मे अपन कोरैला के दऽ देने छथिन। अपने निचेन सऽ आँगन घरक काज करती।

`हे, देखइ जाही ओम्हर दाइबत्ती के बुढ़बाक पछौड़ धेने अबैत। कोरा मे भाय कें से पजियेने हइ जेनां भोट तमाशा भऽ गेलइ। बेटाक बात नञि मानइ हइ जे, से अइ छौंड़ियाक बात सुनतै?`

आर बहुत तरहक बात आ कटाक्ष होइ छइ। बुढ़बा पर तकर असरि पड़तइ कप्पार ! ओकर जोश आर बढ़ले जाइ छइ बूथ पर जल्दी पहुँच जयबाक लेल।

इस्कूल पर छइ बूथ। दू टा पतियानी बनल छइ। बाबा पुरुषक पाँती मे ठाढ़ होइ छथि।

दाइबती बौआ कें नेने भोटक दृश्य देखऽ लेल आएल निर्दिष्ट सीमा सऽ बाहर गाछक छाँह मे लोकक आगू मे ठाढ़ि भऽ जाइत अछि। ओहो अपन नजरि चारूकात खिरबैत अछि, आ फेर बाबा पर नजरि आनि थिर भऽ जाइत अछि।

बाबा आगू ससरै छथि कि नहि दाइबती के पता नहि लगै छइ। ओ लोकक गप पर धेआन दैत अछि। भोट खसब आरंभ छइ। किछु ढिठगर लोक बीच-बीच मे घुसिया जाइ छइ ई कहैत जे ओकर लाइन पहिने सऽ छइ। ओकरा आगू-पाछूक लोक मुस्कियाकऽ रहि जाइत अछि। के बेकार मे झगड़ा करओ। कहुनाकऽ भोट खसयबाक छइ।

बाबा ओतइ ठाढ़ छथि। भोट खसब अनामति छइ।

सामने, ओसारा पर बूथबला कमराक सामने मे झंझमंझ आरंभ भऽ जाइ छइ। लोक के हटबऽ लेल पुलिस सक्रिय अछि। मामिला गंभीर सन बुझा रहल छइ।

दाइबती विचलित भऽ उठैत अछि ओ सभकें ताकि रहलि अछि जे के की बजइ छइ। ओ किछु-किछु बुझइ छइ। बेसी नहिएँ बुझइ छइ। आँखि रहि रहिकऽ बाबा पर चलि जाइ छइ। बाबा जहिनाक-तहिना ठाढ़ छथि। पाँती जकथक छइ।

बाबाक डाँड़ पिड़ाय लगै छनि। ओ बैस जाइ छथि। देखादेखी आर किछु लोक बैसि जाइत अछि। झमेला बढ़िये रहल छइ। पतियानी टूटि-टूटि जाइ छइ।

पता नहि कोना की भेलइ। पुलिस लाठी चार्ज कऽ दइ छइ। एकेबेर हुर्र भऽ जाइ छइ। लोक आन्हर भेल जेम्हर-तेम्हर भागऽ लगैत अछि। ढेप आ रोड़ा बरसि रहल छइ। आश्रुगैस सँ चारूकात अन्हार भऽ जाइ छइ।

दाइबती बौआ कें नेने बाबा दिस बढ़ि जाइत अछि।

लतखुड़दन मे बाबा खसि पड़ल छथि। आर किछु लोक, बेसीकऽ एकटा बूढ़ि आ एकटा बच्चा बेहोश पड़ल अछि।

दाइबत्ती बौआ कें ठाढ़ क`कऽ बाबाकें भरि पाँज पकड़िकऽ कानऽ लगै
अछि।

बाबाक मुँह सँ दाइबती दू-तीन बेर एतबे सुनैत अछि - `भोट! मशीन! भोट!
मशीन! भोट! मशीन!

एकटा गोली ठाढ़ बौआ के लगइ छइ।

दाइबत्ती दहाड़िकऽ चिचिया उठैत अछि - बघोतिया ! बघोतिया ! हमरा
बौआ के लऽ गेल बघोतिया!`

धुँआ मे गोलीक शब्द आ लोकक चित्कार छोड़ि आर ककर के सुनितै!
पड़ाहि लागल लोक अपना माथ पर हाथ धऽ शाहोर! शाहोर! करैत कि दाइबती
कें देखितै !



हमर नवीनतम फोटो

अपन नवीनतम फोटो एकटा पत्रिका कें पठयबाक अछि।

आलेख स्वीकृत भऽ गेल अछि। सम्पादक महोदय अविलम्ब परिचयक संग हमर नवीनतम फोटोक लेल आग्रह कयलनि अछि। मोन कने उत्फुल्ल होइत अछि। कारण, गनिये-गूथिकऽ एक-आधटा पत्रिका मे हमर आलेख फोटोक संग छपल अछि, सेहो हम अपने सँ गरजू भ`कऽ पठेने रहियै। एहि पत्रिकाक सम्पादक अपने सँ आग्रह कयलनि अछि। एतऽ `फॉरमालिटी` सँ बेसी हमर कर्त्तव्य भऽ जाइत अछि जे परिचयक संग-संग फोटो अबस्स पठाएल जाय।

स्टूडियो मे जयबा सँ पूर्व अपन सिनहरि-मुनहरि ठीक कर लेल ड्रेसिंग टेबुलक सामढ़े ठाढ़ होइ छी। दाढ़ी-मोछ बेस खुटिआएल अछि। पत्नी टोकइ छथि -`की अनेरे गाल हँसोथइ छी ? दाढ़ी बना लिअ।`

आ एतेक कहैत एक हाथ मे `सेविंग बाक्स` आ दोसर हाथ मे पानि भरल मग आनिकऽ सामने मे राखि दइ छथि।

हमरा तैयार होबऽ मे देर नहि होइत अछि।

पत्नी टोकइ छथि। -`हद करइ छी अहूँ। एहने अबढंग सिनहरि-मुनहरिवला फोटो पठेबइ? सर्ट पहिर लिअ। टाइ लगा लिअ। इहो सभ तऽ राखल-राखल सालगस्ते भऽ रहल अछि।`

हमर सोझसाझ उत्तर होइत अछि - `देखियौ, हमर परिचय हमर लेखनी देतइ, हमर फोटो नहि। फोटो तऽ मात्र `फारमलिटी` छइ। नहिंयों पठेबइ तऽ चलतइ। संपादक सँ क्षमा माँगि लेब, बस।`

`तहन एतेक लोक जे पठबइ छइ, से ओहिना?` तत्काले सोचिकऽ बजइ छथि - `कम-सँ-कम टाइ तँ बान्हि लिअ।`

`स्टूडियो मे रंग-रंगके टाइ रहइ छइ। ओतै बान्हि लेब` - हम हुनका बात कें मोजर नहि दइ छियनि। बिदा होबऽ लगइ छी, किन्तु हुनकर मुँह खसल सन छनि। मोन मे होइत अछि, हिनकर बात कें अवहेलित कएल अछि हम। मान राखऽ लेल कहइ छिअनि - `ठीक कहइ छी अहाँ। लाउ टाइ दऽ दिअ। अपना पसिन्नक रहने बढ़ियाँ रहत।`

लाल टाइ हमरा पसिन अछि। ओ सएह आनिकऽ दइ छथि। कहइ छियनि -`ओना श्वेत-श्याम मे कोनो आन रंगक महत्व नहि रहइ छइ। इएह ठीक रहतै।`

हम सबसँ लगक स्टूडियो मे पहुँचैत छी। भीतर ढूकऽ सँ पहिनहि पएर थम्हि जाइत अछि। धुर जो, केहेन ठाम चलि एलौं ! कोनो तरहक आधुनिकता देखऽ मे नहि अबैत अछि !

आगू बढ़ऽ लगइ छी तऽ बाहर मे टूल पर बैसल लोक कहैत अछि - `क्या हुआ? आइये न ! खाली है !` हम कोनो जवाब नहि दऽ चुपचाप आगू बढ़ि जाइ छी। मोने-मोने कहइ छिअइ -`ईह बूड़ि रे ! हिनको स्टूडियो मे लाइन रहतनि ! ओ तऽ भाग बूझ जे लग मे रहने तोरा स्टूडियो मे एबाक इच्छा भऽ गेल !

आब दिमाग मे एकटा बात घुरिआय लगैत अछि जे अल्ट्रा मोडर्न स्टुडियो एहि आपपास मे कतऽ छइ। काल्हि कि परसू गप्पो भेल रहइ घर मे।

कनिके आगू गेला पर एकटा टीप-टॉप स्टूडियोक सामने मे अपना कें पाबि मोन खुश होइत अछि। सर्रदऽ भीतर पइस जाइ छी।

मुदा आहिरेबा ! काउन्टर परहक लोक टेबुल पर माथ टेकने आराम कऽ रहल अछि। घूरऽ लगइ छी तऽ पता नहि कोना-ने-कोना काउन्टर परहक लोक कें आभास भऽ जाइ छइ। ओ टोकैत अछि -`आइये न प्लीज ! इंसटैंट भी यहाँ खीचा जाता है।`

`नहीं-नहीं, धोखा हो गया। आइ एम वेरी सॉरी। असल मे दूसरे स्टूडियो से फोटो `क्लेक्ट` करना है` - हम एकटा बलधकेल मुस्कीक संग ओकरा कहइ छिअइ आ स्टूडियो सँ बाहर भऽ जाइ छी।

बात बना जेबाक लेल मोन मे ग्लानि होइत अछि। सोचइ छी, एहन निर्लज्ज आचरण सँ बचबाक चाही। एकटा अति साधारण बात भेल पासपोर्ट साइजक फोटो, आ ताहि लेल एतेक आ एना करब सर्वथा अनर्गल बात थिक! पासपोर्ट साइज फोटो तऽ कतहु आ कोनो स्टूडियो मे खिचाएब सोझ बात छइ !

ठाढ़ भऽ कऽ दोसर फुटपाथ पर नजरि खिरबै छी जौं ओम्हरो कोनो नीक स्टूडियो हेतइ तऽ देखबै। हमरा चकुआइत देखि तखने एकटा दोकानदारक शब्द कान मे ठेकैत अछि। `क्या लेना है महाशय? आइये न अन्दर। अच्छा क्वालिटी मिलेगा।`

कहऽ चाहइ छिअइ -`क्या हमको मुँह नहीं है पूछने-कहने का? क्या हम इतना सेंसलेस हैं?`

मुदा, हम चुपचाप बढ़ि जाइ छी मोने-मोन अपना पर खौंझाइत - ई तऽ एकर सभक धन्धा छइ ! ककरो दोकानक सामने अनावश्यक रूपें ठाढ़ होयबाक हमर कोन अधिकार अछि ! जौं हमहूँ आइ एकटा दोकान खोलि ली तऽ एहिना विभिन्न तरहक युक्ति अपनाबऽ लए बाध्य भऽ जाएब गहिंकी के आकर्षित करऽ लेल।

आगू बढ़ि रहल छी हम। नजरि दोसरो फुट पर खिरा रहल छी। मोन मे पश्चाताप सेहो भऽ रहल अछि जे पत्नी कें संग कऽ लेने बढ़ियाँ रहैत। अपन विश्वासी लोक रहने `पोज` देबऽ काल नीक` `सजेशन` दीतय। स्टूडियोवला तऽ `प्रोफेशनल` होइत अछि। एकटा लेखकक पोज कि सभ फोटोग्राफर जनिते रहैत अछि ! एकटा बेछप हमर अपन सन `पोज` पत्नी सँ बढ़ियाँ के जानि सकैत अछि। कयबेर ओ बजितो छथि - `धुर जो, सब लेखक के एके तरहक `पोज` अबइ छइ। हाथ मे कलम पकड़ने गंभीर मुद्रा मे कतौ किछु ताकैत रहब जेना सब कालियेदास रहइ `मेघदूत लिखबाकालक मुद्रा मे।`

... ओह, बड़का भूल भेल ! हुनका अयबाक मोनो रहनि ! नहिएँ रहनि ताहि सँ की ! एकबेर कहऽ धरिक बाँकी छल। ओ तऽ पहिनहि आगुए-आगुए बिदा भऽ जैतथि। वास्तव मे हमर पछता बुद्धि अछि। हमरा बारे मे हमर पत्नीक ई धारणा शतप्रतिशत ठीक छनि।....

तऽ की घुरि चली घर ! हुनका संगक` लऽ आनी ! ओ हँसती कियेक ! फोटो लेल तऽ जोर हुनके छनि !.....

नञि नञि, ई ठीक नहि हएत ! बात-बात मे कहतीह - धुर जो, अहाँ तऽ एहने छी जे एकटा अपन फोटो नहि खिचा सकलौं।

...धुत् बेसी मीन-मेष कयने एहिना हमर काज खराप होइत अछि। मोन बान्हिकऽ हम एकटा स्टूडियो मे ढुकि जाइ छी। फोटो खिचा जाइत अछि। लगैये जेना अस्सी मोनक बोझ माथ पर सँ उतरि गेल अछि। प्रफुल्ल मोने स्टुडियो सँ बाहर होइ छी।

दोसर फुट पकड़ि घरमुँहा बिदा होइ छी। फोटो-ग्राफरक `सजेशन` आ

मंतव्य सँ आत्मविश्वास पूरापूरी अछि जे फोटो मोनमाफिक अवस्स हएत।

थोड़बे दूर आगू अयला पर चौरस्ताक कोन्ह पर `न्यू लुक` - एकटा `अल्ट्रा मोडर्न` स्टूडियोक सामने मे हम अचंभित आ पश्चाताप सँ भरल मोन नेने अछताइत-पछताइत करीब दस मिनट तक ठाढ़ रहइ छी। ...की कएल हम ! `न्यू लुक` हमरा मोन सँ कियेक उतरि गेल ! परसू आ काल्हियो एहि अल्ट्रा मोडर्न स्टूडियोक चर्चा भेल रहइ। पत्नीक् बेसी जोर रहनि। पासपोर्ट फोटोक बारे मे हमर सर्वसाधारण धारणाक कारणवश एकर सोह नहि रहल। अल्ट्रा मोडर्न सभ मे पाइयो तऽ लगइ छइ !

गुनधुन करैत मोड़ पर ठाढ़ रहइ छी। स्टूडियोक स्टैंडर्ड, चमक-दमक, प्रख्याति आकर्षित कऽ रहल अछि। धूर जो ! कतेक पाइ अबइ-जाइ छइ। बेसी तऽ अंटे-संट मे खर्च भऽ जाइत अछि। आइ ई चन्दा, तऽ काल्हि ओ चन्दा। पीबऽ - पीआबऽ मे, औपचारिकता निमाहऽ मे कतेक ने खर्च भऽ जाइत अछि। जें चालिस, तैं घपचालिस।

आ हम सोझे `न्यू लुक`क भीतर प्रवेश कऽ जाइ छी। काउन्टर पर पाइ जमा कऽ दइ छिअइ। हमर सातम नम्बर अछि।

आराम सँ सोफा पर बैसि जाइ छी। तखने पाछुए लागल एकटा सुसज्जित छौंड़ी कोल्ड ड्रींक ल`कऽ सामने मे ठाढ़ भऽ जाइत अछि। मोन गद्‌गद् भऽ जाइत अछि ...आह ! इएह भेलइ ने महानगरक शान सन स्टूडियो आ तकर परिवेश ! भीड़ो तऽ तें छइ !

कोल्ड ड्रींकक रूह-अफजा आनन्दक संग हम अपना नम्बरक प्रतीक्षा मे देवाल पर टाँगल विभिन्न पोजक छवि सभकें निंघारऽ लगइ छी। मोन विश्वास सँ भरि जाइत अछि जे हमरा लेखकीय व्यक्तित्वक निखार मे हमरा फोटोक उचित योगदान अवस्स रहतैक।

तेसर दिन भेने हम `न्यू लुक` मे पहिने जाइ छी। फोटो देखिकऽ पहिने तऽ भेल जे भूल सँ दोसरक फोटो दऽ देलक अछि। मुदा नहि, किछु तजबीज कयला सँ लकवा ग्रसित अपने सन लगैत अछि। मोन झूर भऽ जाइत अछि। मोन पड़ैत अछि कोनो कविक कविता जाहि मे कहल गेल छइ जे सुग्गाक बच्चा कोना सिमरक फूल कें नीक फल बूझि लोल मारैत अछि, आ लोल मे अबइ छइ मात्र तूर,

आ तूर।... हमर मोन खसि पड़ैत अछि अलेल खर्च ल` कऽ।

`नामी बनियाँक किदन बिकाय`- बड़बड़ाइत हम बाहर होइत छी। भारी मोनक संग पहिल स्टूडियो दिस बढ़ि जाइ छी। पएर ससरऽ सँ नासकार अछि। घुरिक` फोटो कें टेबुल पर पटकि देबाक मोन उकस-पकस कर` लगैत अछि। मुदा, पाइ तऽ लागल अछि। विश्वास भहरि गेल अछि। तथापि पएर कें घिसिअबैत बढ़ि रहल छी - जखन नामी-गामीक ई स्थिति तऽ `कुत्र गण्यो गणेश:!`

पहिलुका स्टुडियो मे प्रवेश करैत छी। बेमोने चुपचाप रसीद काउन्टर पर राखि दइ छिअइ जे आखिर पाइ तऽ किछु अगाउ एतौ लागले अछि ! नम्बर देखि हमरा सामने मे एकटा लिफाफ बढ़ा देल जाइत अछि। लिफाफे मे कने ऊपर सरकाकऽ एकटा काँपी देख लैत छी। आश्वस्त होइ छी, जे होउक, जेहने होउक, अछि धरि हमरे फोटो।

बाकी पाइ चुकतीक` चुपचाप लिफाफ जेब मे धऽ बाहर भऽ जाइ छी। तीन जोड़ तीन, अर्थात `दुनू स्टूडियोक छहटा फोटो कें जेब मे उघने टुघरल-टुघरल घर दिस ससरि रहल छी। पत्नीक अवश्यमभावी कटाक्ष सेहो तऽ पइस गेल अछि !

प्रेमा तऽ साफे अचंभित रहि जाइ छथि। फोटो सब हाथ मे ल`कऽ देखइ छथि, आ पुछइ छथि- `ककर फोटो छइ यौ? अहाँक?... छीया-छीया ! क्यो चिन्हबो नहि करत बिनु चिन्हेने!`

- अहूँ नहिं?

- धुर जो ! हमरा अतेक के चिन्हत।

- बस भऽ गेल, एतबे चाही हमरा।

फोटो सभकें नीचा मे राखि पुछइ छथि :-

-`कोन पठेबइ?`

- बिना फोटोक नञि छपतइ? अइ पत्रिकाक नियम छइ। नहि पठेनाइ अशिष्टता होयत।

- तऽ पठा दीयौ ओएह एलबमवला। बेसी गोटे तऽ अपन जुआनियेक फोटो दइ छइ।

-`देखू, हम हमही छी। हम हमही बनिकऽ रहऽ चाहइ छी। हमरा देखाँउस नहि सोहाइये` - हमर `मूड` देखि हमर पत्नी, अर्थात् प्रेमा चुप्प भऽ जाइ छथि।

कनेकाल गुमसुम रहइ छी दुनू गोटे।

`हम चाह नेने अबइ छी` - अतेक कहि पत्नी खौंझाएल सन उठि जाइ छथि। हमरा सामने मे फोटो सब पसरल अछि। हम सभटा के बड़े तजबीज सँ देखि रहल छी... बूढ़ भऽ रहल छी हम। चोटकल गाल, गर्दनि मे झुर्रीक आरम्भ, चनैल होइत माथ, काते-काते सेमार जेकाँ लटकल केश, आँखि पर झुलैत चश्मा - सभटा तऽ हमर अपने सन अछि !

मोन पड़ैत अछि, हमर जेठ बालक पछिला बेर छुट्टी मे आएल छलाह तऽ पूरा परिवारक फोटो अपना कैमरा मे बन्न क`कऽ लऽ गेल छलाह। किछु कॉपी ओ अपना छोट भाए कें लखनउ पठा देने रहथिन। फोन पर ओ अपना माय कें कहने रहथिन - `माँ, पप्पा एहन भऽ गेलथुन? हुनका खेनाइ-पिनाइ पर धेआन कियेक ने दइ छहुन?`

माय सोझेसाझ कहने रहथिन - `की सभदिन हमसब एकेरंग रहब? अहाँ कें एखन कय साल भेलए, से मोन अछि? पप्पा आब रिटायर भऽ रहल छथुन।`

प्रेमा चाह आनइ छथि। दुनू गोटे आइ चुस्की नहि लऽ रहल छी। चाह पीबि रहल छी। हमर मोन आगु-पाछु भऽ रहल अछि... की प्रेमाक बात मानि लेल जाय? हमरा मोन मानऽ आ नहि मानऽ के सबाले नहि उठैत अछि। ओ किन्नहु नहि पठबऽ देती एहि सभमे सँ। एलबम मे सँ पठा तऽ देबइ, मुदा ई सिंघ तोड़ि परड़ू मे मिझराएब नहि होएत ! प्रेमाक तर्कक सामने हम सदति बौन भऽ जाइ छी, तकर की हेतै !

ट्रिंग-ट्रिंग ! ट्रिंग-ट्रिंग !

मोबाइल हमरे बगल मे अछि।.... `हेलो!`

`दोसर छोर सँ हमर पोती बाजि रहलि अछि - `बाबा, अम-माँ-पापा- पलचू अबइ ची।`

प्रेमा कें आभास भऽ जाइ छनि। ओ हमरा हाथ सँ मोबाइल छीनि लइ छथि। ओ सभ सँ गप्प करइ छथि। ओ स्पीकर जोर कऽ देने छथिन। मोन गद्गद् भऽ जाइत अछि पौत्रीक अटपट बात सुनि। नव उत्साह सँ उद्वेलित भऽ रहल छी।

हाँइ-हाँइ सभ फोटो समेटिकऽ कात मे राखि दइ छिअइ।

मोबाइल राखि मुस्की भरल मुँह नेने प्रेमा कहइ छथि, `परसू सभक्यो रहल

अछि। आब पोती ई घुंघरलहा केश नोंचत, माँथ पर तबला बजाएत, आ चश्माक फ्रेम कतेक बेर टूटत, तकर ठेकान नहि।`

- हँ-हँ, अहाँ तऽ जेना बँचले रहब, नञि?

- तकरे आशा मे बाट ताकि रहल छी।

- हँ-हँ सएह तऽ। जाउ राखि दीयौगऽ सभटा फोटो, आ कोनो एकटा फराक कऽ लिअ जे नीक लागय। काल्हि पठा देबइ।

- हँ-हँ, आइये-काल्हि भरि समय अछि। फेर तऽ लेपटा जाएब ओकरा सब मे।

एकटा फोटो दैत प्रेमा कहइ छथि - `हे लिअ, सबटा नीके छइ। अहाँकें लोक अहाँक लेखनी सँ चिन्हत।`

भरि मुँह हँसी नेने दुनू गोटे एक दोसर कें देखइ छी। - ओ दुनू कप ल`कऽ किचेन मे चलि जाइ छथि।

सामने मे टाँगल फोटो मे हमरा कोरा मे बैसलि हमर पोती राशि हँसि रहलि अछि। मुग्ध भेल हम ओकरे सभमे हेरा जाइ छी।



प्रेम-प्रसंग

दुनू गोटे, अर्थात् हम आ हमर पत्नी खा-पीकऽ ओछाएन पर पड़ल छी, एकदम निसबद्द, निनिआक स्वागत मे प्रस्तुत। घरक भरिदिनक काजधाज सँ ओ ठेहिआयल रहिते छथि। सभदिन ओछाएन पर पड़िते फोंफ काटऽ लगइ छथि। आइ कोनो तेहेन आभास नहि भेटैत अछि। असल मे आइ हम अपने बड़ थाकल छी। ओ निन्न पड़ली कि नहि से हमरा धेआन सँ हटि जाइत अछि। आइ हम मात्र सूतऽ चाहइ छी। हुनकर चुप्पी सँ बुझाइत अछि जे ओहो निचेन सँ सूतऽ चाहै छथि।

दुनू गोटे चित्ते पड़ल छी। घर अन्हार छइ। हमसभ अन्हारे घरमे सुतबाक अभ्यस्त भऽ गेल छी। मात्र ललका `इंडिकेटर`क मैलमुँह इजोत आनेदिन जकाँ आइयो टिमटिमा रहल अछि हमरा दुनू गोटेक क्रियाकलापक एकटा मौन साक्षी जेकाँ।

आइ निनिआ रानीक बड़ कृपा छनि हमरा पर। हमहूँ हुनका कोरा मे सर्मपित भऽ जेबा लेल प्रस्तुत छी। सोभाववश हम बामा करौट घूमि जाइ छी। एहि करौटे हमरा एकलबति बढ़ियाँ निन्न होइत अछि। तखने पत्नी टोकइ छथि - `इएह भेल ने? कतेक घिरना छनि हमरा सऽ, से नहि जानि` !

हुनकर भनभनाएब पर हमर निन्न उचटऽ-उचटऽ पर भऽ जाइत अछि। मुदा, औंघीवश किछु बाजब पार नहि लगैत अछि। ई बात हुनका सँ बेसीकाल सुनैत-सुनैत अभ्यास भऽ गेल अछि। कारण, हुनको बामे करौटे सुतबाक अभ्यास छनि।

`धुर जो ! कोना अनठा दइ छथिन ! ओ फेर बजइ छथि। हम मात्र `ऊँ! ऊँ! क`कऽ फेर निन्न मे डूबि जाइ छी।

ओहो मानऽवाली नहि छथि। देह डोलबैत कहइ छथि -`ठीके सूति रहलिऐ यौ`?

हमर निन्न उचटि जाइत अछि, तथापि हम अनठा दइ छिअइ जे ओहो कहुना सूति रहथि। मुदा, धारणा भूल साबित होइत अछि। ओ कटाक्ष करइ छथि - `सूतल ने जागय। जागल कोना जागत !`

कािल्ह नहि पूछि सकइ छी?`- हम औंघाएले पुछइ छियनि।

`तुक्के पर कोनो बातक मोल होइ छइ` - हुनकर सटीक जवाब भेटैत अछि। फेर हमरा मे सटैत पढ़इ छथि - `निश्चिंत सूतय कुम्हरा, जकरा लगइ ने चोर चहरा।`

`एकर कोन तुक छइ एखन? हुनका दिस घेंट मोड़ि पुछइ छिअनि।`

- `ईहो कोनो जरूरी नहि छइ जे कोनो बात नहि रहय तऽ खाली सुतबे करी !`

- हम औंघी सँ बेहाल भेल छी, आ अहाँके ठट्ठा सुझैए?`

- रभस करऽ लेल हम ककरा लाउ? की से अरघत अहाँ कें`?

- अरे बाबा, तऽ जल्दी कहू ने? की बात अछि से?

- ऊँहुँ ! जावत तक औंघाएल रहब हमर बात अहाँ नहि बूझब।`

आब कोनो शंका नहि रहि जाइत अछि जे ओ आब मानऽवाली नहि छथि। हम चित्त भऽ जाइत छी। ओ अपने बजइ छथि -`आइ पढ़बइ नञि? खा-पीकऽ सबदिन पढ़इ-लिखइ छी, तें कहइ छी।`

`आइ अहाँकें निन्न किये नञि भऽ रहल अइ? की बात अइ से? `हम कने झुझुआइत पुछइ छियनि।

ओ किछु नञि बजइ छथि।

हम सोचऽ लगइ छी, आइ पढ़ऽ-लिखऽ लेल अतेक आग्रह कियेक भऽ रहल अछि ! इजोत मे हुनको निन्न नहि होइ छनि। कहियो-कहियो कहि-दइ छथि - `लैंप मिझाउ आब ! बड्ड राति भेलइ !`

आइ तऽ हुनका बहुत खुश होबऽ चाहइ छलनि। निश्चिंत सँ सूति रहबाक छलनि। मुदा, अपने ओ आइ हमरा उछन्नर देलनि अछि। निश्चित कोनो तेहेन बात छइ जे पचि नहि रहल छनि। मुदा आहिरेबा, ई तऽ चुप छथि!

हमरा किदन-किदन अंट-शंट बात फुराइत अछि। हम हुनका संगे तिरसठि भऽ हुनका पजिया लैत छियनि। हुनका असौकर्य बुझाइ छनि।...तऽ की हमर धारणा गलत अछि !

मुदा, तखने ओ हमरा उबारि लइ छथि -`एकटा बात पुछू? ठीक-ठीक जवाब देब ने?`

माथ मे ठनकैये - अतेक आत्मविश्वासक अभाव कियेक छनि। कोनो वस्तु

माँगि नञि रहलि छथि। पास-पड़ोसक कोनो घटना नहि कहि रहल छथि! प्रश्नक अंदाज सँ धीया-पुताक संबंध मे सेहो किछु नहि बुझा रहल अछि! हों-न-हो, बात हमरा अपने संबंध मे ने होअय !

-`की सोचऽ लगलियै`?

- `यैह जे अतेक उमेर भऽ गेल, आबो अहाँकें हमरा पर विश्वास नहि अछि? अहाँक विश्वास हम आइतक नहि जीति सकलौं।`

- `आब भेल ने फेर ओएह बात? फुसियाही बात मे ओझराकऽ फेर कोनो कहानी गढ़ऽ लगलौं आहाँ?

- पुछू ने जे पुछबाक अछि? एकेटा कियेक? जतेक बात अछि, सबटा पूछि लिअ`। सभक ठोकल जबाब आइ भेटत।

हमर औंघी आब निपत्ता भऽ गेल अछि। ओ चुप आ हमहूँ चुप। हम हुनकर प्रश्नक आशाबाटी मे छी। तैयो ओ चुप्पे छथि। पता नहि, की भेलनि। हमर जिज्ञासा बेसम्हार होबऽ लगैत अछि। हम बड़ उताहुल भऽ जाइ छी।`

ओ एकटा दीर्घ निःश्वास छोड़इ छथि। लगैत अछि, ओ दूमांगि मे फँसल छथि जे पूछथि कि नहि पूछथि। जौं पूछथि तऽ कोना पूछथि। हम हुनका दूमांगि सँ उबारऽ लेल गौं-सँ पुछइ छियनि - `की भेल? आबो अतेक सोचऽ पड़ैये हमरा सँ किछु पूछऽ लेल? हम अहाँक जीवन संगी छी से बुझबऽ पड़त?

`धुर जो ! ओहिना किछु फुरा गेल छल। हम अनेरे अहाँकें उछन्नर देलौं !` ओ बात कें अनठाबऽ चाहइ छथि।

हुनकर बात सुनि मुदा हमरा अपना विश्वास नहि होइत अछि। हुनकर कहबाक अटकर, हुनका संग अतेक वर्खक अनुभव सँ लगैत अछि जे बात कें तह देबाक ऊपरी बहन्ना कऽ रहलि छथि। एहि तरहें ओ अपना बातक महत्व कें आर बढ़ा रहलि छथि। हमहूँ सोचइ छी, बात कें एतै छोड़ि देने हुनकर अवहेलना हेतनि। हम हुनका नजरि मे दोषी भऽ सकइ छी। हुनकर बात नहि जानबाक अर्थ हएत हुनका छोट केनाइ।

हुनकर मान राखऽ लेल प्रेमपूर्वक पुछइ छियनि - `तऽ नहिएँ पूछब जे पूछऽ चाहैत रही?`

तैयो ओ चुप्पे रहइ छथि। भरिसक गुनधुन मे पड़ल छथि। हमरा छगुन्ता

लागि रहल अछि, संग-संग हँसी सेहो जे आइ तक के जिनगी मे आइये एहन बिकट प्रश्नक सामना हम करऽ जा रहल छी जकर प्रश्नकर्त्ता स्वयं अपना प्रश्नक प्रति आश्वस्त नहि छथि। घर तऽ छइ अन्हार। एहना स्थिति मे हुनका मुँहक भाव पढ़ब मोश्किल अछि। तैयो हुनकर थाह लेबऽ मे हुनकर चुप्पी आ कोनो तरहक सुगबुगाहटिक अभाव नहि - सभटा बहुत किछु कहि रहल अछि। स्थिति कें हल्लुक बनबऽ लेल बजइ छी - `आहिरेबा ! बुच्ची दाइ चुप! सी.सी. मिश्रा हारि मानि लेलनि।`

`सच-सच जवाब देब ने?` - संगे-संगे ओ पुछइ छथि।`

- `कोनो बाते नञि अहि जे अहाँ पूछब। नञि तऽ एतेक काल अहाँ मानवाली? - हम एकटा चालि चलइ छी।

- `से तऽ बुझले अछि। अहाँ हमरा बातक मोजरे कहिया देलौं जे आइ देब ?`

`हमरा प्रति अहाँ कें अतेक अविश्वास कियेक भऽ रहल अछि? आबो आहाँ हमरा आने बुझइ छी?` - हुनका प्रति हमर प्रेम आ संग-संग दया उमड़ि पड़ैत अछि।

- `से कियेक बूझब। अतेक दिन फेर निमाहलौं कोना?`

- `बात कें आब मटियबियौ नञि। हम कतेक हदरि रहल छी अहाँक बात सूनऽ लेल, से नञि बूझाइये कनिको?`

ओ अपन दहिना हाथ हमरा देह पर धऽ दइ छथि, आ बामा हाथक केहुनी कें सहारा लऽ हमरा मुँह पर झुकिकऽ कहइ छथि -`बात बुझियौ तऽ बरकीगो छइ, नञि तऽ बुढ़ियाक फूसि।`

हमरा लगैये, जेना ओ हमर अटकर लऽ रहल छथि। सोचइ छी, कोन तेहन बात भऽ सकइ छइ जे ई तहन सँ बुझौअलि बुझा रहलि छथि ! एम्हर-ओम्हर सँ मोन पाड़इ छी, सभ बात कें जोड़इ छी। कोनो ओर-छोरक पता नहि लगैत अछि। हाथ मे फुक्का अबैत अछि। बेरि-बेरि हथोड़िया दइ छी तऽ एक-आधबेर टन्ना अभरैत अछि। मुदा, एसगर बृहस्पतियो झूठ।

अन्हार घर साँपे-साँप। बात केहनो हो, कतबो महत्वक रहौ, नहि जनने तऽ किछु नहि। तेहेन ने हदमदी दऽ देने छथि जे हमरे चुप्पी तोड़ऽ पड़ैत अछि - `अहूँ बड़ बुझौअलि बुझबइ छी। एहन नव-नव आ रहस्यपूर्ण बुझौअलि तऽ नव-

नव जहिया विवाह भेल रहय, ओहू समय मे अहाँ नहि बुझौने रही। किछु बजा गेल तऽ बाजि दी अहाँ संगेसंग, आ आब फुरा रहल छी मोन मे जे की पूछल जाय्। फुराइते नञि अछि किछु जे हमरा पूछब। छइ ने सएह बात...

...आइ भरिसक दिन मे सुतलौंहएँ अहाँ?`

ओ बड प्रेमपूर्वक हमरा पंजिया लइ छथि आ पुछइ छथि - `सच, सच कहब ने?`

`पहिने पुछू तऽ ? हम जोर द` कऽ कहइ छियनि।

- हमरा छोड़ि आर कतेक गोटे सऽ अहाँ कें प्रेम भेल अछि?

क्षणभरि लेल हम हतप्रभ रहि जाइ छी। फेर संगे-संग भभाकऽ हँसी लागि जाइत अछि। हँसीक तोड़ समाप्ते नहि भऽ रहल अछि। ओ हमरा छोड़िकऽ फराक भऽ जाइ छथि, एकदम प्रभावहीन सन। हम हँसिते-हँसिते बजइ छी - `हद भऽ गेल! निन्नो कामहि केलौं तऽ फुसिआही बात लेल !`

- `एना किये हंसइ छियै यौ? लोक की कहतै जे अतेक रातिकऽ...!

- की कहतै? कहतै जे टी भी चलि रहल छइ, आर की?`

आ हँसिते-हँसिते हम बेदम भऽ जाइ छी, तथापि पुछइ छियनि - `एहन बात तऽ कए दिन भेलए। हम तऽ साफ-साफ सभटा कहने छी। अहीं नुकेने छी सभटा। ई बात तऽ हमरा पूछक चाही छल अहाँ सऽ। कहियो पुछने छी हम?

दम धरऽ लेल हम उठिकऽ बैसि जाइ छी। ओ चित्ते, आँखि मुनने भरिसक पछताइत पड़लि छथि।

- `बाप रे बाप ! तेहन ने अहाँ घुरछी लगौने रही जे आदि - अंतक पते नहि लगइ छल। चतुर्थियो राति मे आहाँ अतेक नहि सतेने रही हमरा।`

- `हम पुछबो नञि करितौं। अहीं जे ओ कोनदन पत्रिका अनने छी, नहि जानि कोन रोग ढुकल छल जे पढ़लौं। ओही मे एकटा पत्रकार एकटा महान लेखक सँ पुछइ छइ जे अपन स्त्री छोड़ि आर कतेक गोटेसँ ओकरा प्रेम छइ` - हुनकर आवाज बहुत खसल छनि।

हमरा अपना भूलक ज्ञान होइत अछि। हम हँसिकऽ हुनका बातकें हल्लुक कऽ देलियनि अछि। हुनकर मान राखऽ लेल हुनका सँ सटिकऽ पड़ि रहइ छी, आ कहइ छियनि - `प्रेम-त्रेम एलइ, भेलइ आ गेलइ। आब तऽ सभतरि अहीं छी, मात्र

अहीं। धीया-पुता बारे मे सोचू, ओ सब महानगरक रंग मे रंगल अछि। कतऽ कोन तरहक गुल खिलबैये, ताहि सऽ सावधान रहबाक अछि। कखन कोन मुहुर्त मे कोनो गर्ल फ्रेंड कें लऽ आएत आ कहत - `मम्मी, देखू हमर पसिन्न।`

`बात कें खूब्बे घुरबऽ अबैये` - ओ ओहि मुँहें घूमि जाइ छथि। हम सोचै छी बात घुमाएल सन भ` गेल। बात हल्लुक सेहो भऽ गेलै। मुदा, से तऽ हमर उद्देश्य नहि अछि।.. हम एकटा `लेम एक्सक्यूज` अर्थात् बहन्ना ताकऽ लगइ छी अपना कें बचबऽ लेल।

`छिया-छिया। ओहन प्रतिष्ठित लेखक सऽ लोक एना पुछतै ! पत्रकार सबकें किछु नञि फुराइ छइ तऽ अंट-संट प्रश्न पूछऽ लगइ छइ। पत्नी ओहि मुँहे घुरले-घुरले बजै छथि।

हमर कोनो प्रतिक्रिया नहि होइत अछि। हम जानिबूझिकऽ चुप्पे रहि जाइ छी। हमरा चुप्पी पर हुनकर उत्साह बढ़ि जाइ छनि। ओ आगू जोड़इ छथि - `लेखको केहेन ! बुझइ छलियनि जे प्रतिष्ठित छथि। ठाँइ-पठाँइ कहऽ मे कनिको दोच नहि भेलनि-`प्रेम नञि करितौं तऽ जीवितौं कोना?`

हम श्रोता बनल सुनि रहल छी। सोचइ छी, मोनसँ सभटा क्वाथ निकालि लेती तऽ मोन हल्लुक भऽ जेतनि।

ओ अपन बात आगू बढ़बै छथि - `ताइ मे बहुक स्थान सब सऽ उपरे रखने छथि। बहु बिना निमहबो नञि करत, आ तैयो कुकूर जेकाँ हुल्ल-हुल्ल करब!`

हमर बान्ह आब टूटि जाइत अछि। बजा जाइत अछि -`तऽ की ओ झूठ बजितथि? की लेखक `प्रेम नञि कऽ सकैये?`

- `हर्जे की छलै? लोक तऽ सबटा बुझिते छइ, तहन फेर कपड़ा किये पहिरैये? हमरा तऽ साफे घिरना भऽ गेल अइ लेखक सभ सऽ !`

- `हुनकर किताब सब उल्टा-पुल्टाकऽ पढ़ैत रहइ छी आहाँ।`

- अच्छा, कहूतऽ प्रेमक माने आहाँ की लगबइ छिअइ?`।

ओ आब अपना मूड मे छथि। प्रेम शब्द सुनि भड़कि जाइ छथि।

- `सब मंस्सा एकेरंग ! कतेक-ने कतेक घाटक पानि पिने रहैये, तकरा कहतै प्रेम !`

हम बात कें बढ़बऽ नहि चाहै छी, तथापि रहल नहि जाइये। गौं सँ कहइ

छियनि -`प्रेम तऽ अछि हमर सभक जिनगीक आधार।`

वस्तुतः ओ पश्चाताप सँ भरल छथि। हम हुनकर मान बढ़बऽ लेल कहइ छियनि -`आब अइ मुँहे घुमू, तहन बात बुझबै।`

`हमरा बात - तात नहि बुझबाक अछि ! सुतू चुपचाप !`

`सएह !` हमरा मुँह सँ निकलि जाइत अछि।

हमर निन्न तऽ टूटिये गेल अछि। ओ जखन बरजोरी नहि सूतऽ देलनि अछि, तऽ हम कोना सूत` देबनि? कहियोकाल कोनो बात पर ओ बिढ़नी कहि दइ छथि। आइ जखन बिढ़नी कें खोचाड़लनि अछि तऽ कने बिसबिस्सी देबाक चाही। हम अति मृदु भऽ पुछइ छियनि -`की आहाँके हमरा छोड़ि आन ककरो सँ प्रेम नहि भेल अछि?

ओ हमरा दिस घेंट मोड़ि कहइ छथि -`देखू एहन अंट-शंट बात हमरा नीक नञि लगैये !

-`नीक कि अधलाह - अहाँ जहन पुछलौहएँ तऽ हमरा कहाँ क्रोध भेलए? जहिना पुरुष-स्त्री सँ प्रेम करइ छइ, तहिना तऽ स्त्रीयो पुररुष सँ प्रेम करितेटा छइ। इएह तऽ छइ भगवानक अर्थात् प्रकृति-प्रदत्त माया। नहि तऽ दुनियाँक सृष्टि असम्भव रहितै। प्राणी मात्र मे से छइ।`

ओ चुपे रहइ छथि। लगैये, आब ओ अपन अस्त्र राखि देतीह। हम सोचऽ लगइ छी एहने शक्तिगर बात सँ ओहो हमर सामना करथि। हम तऽ कए दिन अपन कतेक रास बात कहने छियनि। हुनका विश्वास भेलनि कि नहि से वैह जानथि, मुदा हमर महिरम नहि भेल जे एकोरत्ती हुनकर प्रेम-प्रसंगक बारे मे उगलबा ली हुनका सँ।

`विवाह सऽ पहिने कयटा कथा उठल हएत। से चर्चा सुनि मोन नहि भेल रहय जे फलाँ लड़का सँ बियाह होइतय?` - हम धरि तैयो पूछिये दइ छियनि।

ओ एकबेर दीर्घ निःश्वास छोड़इ छथि, मुदा रहइ छथि चुप्पे। भरोस होइत अछि जे हमर एक-एक शब्द कें ओ पीबि रहलि छथि। हम फेर बजइ छी -`अहाँकें तऽ बुझले अछि जे राम जखन बन जाइत रहथि, आ रस्ता मे हुनका देखिकऽ जाहि-जाहि स्त्री कें मोन भेल रहइ - `अहा ! ई जौं हमर पति होइतथि! से सभ स्त्री कृष्णावतार मे गोपी भ`कऽ जन्म लेने रहइ, आ राम कृष्ण भ`कऽ । प्रवचन मे

सुननहि होएब कतौ-ने-कतौ?`

ओ आब हमरा दिस घूमि जाइ छथि - `देखू, एहन अधर्मबला बात सब नहि करू। अइ सऽ पाप होइ छइ। कृष्णक बाल मोन मे से सब रहबे नञि करनि` - ओ कने तरंगिकऽ बजइ छथि।

`ओतनीटा मे तहन ओहन दंतार हाथी, विशालकाय पहलवान आ बिकट कंस के कोना मारलनि? गोपी सभक नङटे नहाएब नीक कियेक लगलनि?`....

हँ तहन एकटा बात अबस्स छइ जे ओ ककरो संग बलात्कार नहि केलनि। इतिहास एकर साक्षी कतौ नहि अछि, तें हम कहइ छी।`

`हइ, की भऽ गेलय आइ अहाँ कें? भरि दिन पढ़ि-पढ़िकऽ इएह सब सोचइ छिअइ? नीक बात नञि फुराइये? कनिको अकिलक छूति नञि अछि जे ओ सब भगवानक लीला रहनि?` पत्नीक तरंग देखहेवला अछि। हम भीतरे-भीतरे मुस्किया रहल छी।

हम सहज रूपें बजइ छी -`हमरो सभक जिनगी एकटा लीले अछि।`

`मंस्सा सब अपने सन सबके बुझइ छइ` - आ ओ अतेक कहि गेरुआ लऽ कऽ सोफा पर सूतऽ चलि जाइ छथि।

हमहूँ संगे-संगे उठिकऽ बैसि जाइ छी, आ हुनका देखैत रहि जाइ छी... ई की भेलइ ! लाड़बो-चाड़बो केलनिहएँ अपने, आ पड़ाइतो छथि अपने। नञ-नञि, आब किछु नञि कहबनि। आब बेसी पाछू लागब उछन्नर देब हएत। भरिसक एहनेठाम कहइ छइ - `ककर हार, ककर जीत।`

असल मे हुनका विश्वास छलनि जे आइ हम अपन कोनो-ने-कोने तेहन किरदानी उगलि देबनि। ओ कहूँ बच्चाक माथ पर हाथ धरबाकऽ सप्पत खाय लेल बाध्य ने कऽ देथि। हम सुकुर मनबै छी जे सेधरि नहिएँ मोन रहलनि हुनका।

शून्य स्कोर पर आउट भेल बल्लेबाज जकाँ हम पेवीलियन मे बैसल टुकुर-टुकुर देखि रहल छी। पत्नीक स्थिति ओहि गेनबाज सन छनि जे अपन सब गेन फेकलाक बादो एकोटा वीकेट नहि लऽ सकलीह अछि। औंघी पड़ा गेल अछि। टेबुल लैंप बारि लइ छी। औंघी कें नोत देबाक ई हमर नीक ढंग अछि।

सामने मे `आस्कर वाइल्डक` उपन्यास `ए पिक्चर ऑफ डोरियन ग्रे` राखल अछि। ई तेसर बेर पढ़ि रहल छी। फ्लैप लागल पन्ना उनटबैत छी। आँखि अंटकल

अछि पन्ना पर आ धेआन चलि जाति अछि गामक खेत-खरिहान गाछी-बिरछी सभ मे चोरा-नुक्की सँ ल`कऽ महानगरक बेखर खुलापन आ स्वार्थ फेंटल मित्रता पर। बे-लगाम जुआनीक बहकब, मोनक बौऐनी कें नहि रोकि सकल रही। तैयो सभ सम्बन्ध अनर्गले तऽ नहि छल! प्रेमक अर्थ मात्र शारीरिक सम्बन्ध तऽ नहि होइ छइ। एखनो तऽ दू-तीनटा सम्बन्ध अछि। कुशल-क्षेम होइते रहैत अछि। पत्नी अपने रंग-बिरंगक खेनाइ खुअबै छथिन।

नजरि पत्नी पर चलि जाइत अछि। लैंपक उपच्छाया मे हुनकर मुखाकृति दमकि रहल छनि। नाक मे ठोप चमकि रहल छनि। पंखाक बसात पर केशक एकटा लट हुनका वामा कपोल कें सहला-सहलाकऽ गुलाबी निन्न मे डुबा देने छनि। पवित्रताक प्रबल प्रमाण माँगक सिन्नुर आ शक्तिक प्रतीक कपार पर साटल टिकुली... आह, कतेक निचेन सँ छथि ई सुतलि, घरक काज सँ फरागत भऽ संतुष्टि पाबि, बेफिक्र फोंफ कटैत !

माय-बापक बेटी, भायक हाथ मे पान-सुपारी दऽ भरदुतिया पुजनिहारि बहीन, हमर पत्नी रूप मे जिनगी भरिक हमर मीत, हमरा दुनू गोटेक संतानक प्रति अजस्र वात्सल्य प्रेमक स्रोत, आ भविष्य मे दादी-नानी सन पदबी सँ विभूषित होबऽवाली हमर पत्नी, समर्पणक प्रतिमूर्ति हमर पत्नी नीता रानी, हमर जिनगीक प्रबल पाथेय इएह छथि ने !

किताब कें मोड़िकऽ धऽ दइ छिअइ। गौं-सँ नीता लग बैसि जाइ छी। कनेकाल हुनका निंघारइ छी। हुनकर दुनू हाथ हम अपना दुनू हाथ मे लऽ लइ छी। हुनकर दुनू आँखि एकटक हमरा देखऽ लगैत अछि। हम कहइ छियनि - `चलू ओछाएन पर। हमरो औंघी लागल अछि।`

हुनका कोनो तरहक असौकर्य नहि होइ छनि।



सहयात्री

मुंबइ-हावड़ा मेल। ए.सी.-3 कोच। बर्थ नम्बर एक। हमरा सामने मे बर्थ नम्बर चारि पर हमरे सन बयस्क लोक बैसल छथि। हुनका बगल मे एकटा कमे बयसक युवक बैसल छथि। हमर स्वाभाविक जिज्ञासाक उत्तर मे भद्रलोक युवक सहित अपन संपूर्ण परिचय दऽ दइ छथि। युवक हुनकर एकमात्र जमाय छथिन। ओ हुनका गाड़ी मे बैसाबऽ आएल छथिन।

औचित्यक निर्वाह करैत हमहूँ अपन जरूरति भरिक परिचय दऽ दैत छियनि।

दुनू गोटेक गंतव्य एके अछि कोलकाता। स्वभावतः दुनू गोटे बड्ड खुश होइ छी।

`चलू बढ़िया भेल जे दुनू गोटे एके ठामक छी। ई बेहला तऽ आहाँ तारातल्ला। - हुनकर जमाय अत्तेक बाजिकऽ कने चुप होइत लगले बजै छथि - `ई गाड़िये छइ कोलकात्ताक। मुदा ताइ सऽ की !`

भद्रलोकक नजरि हमरा पर अटकि जाइ छनि।

भद्रलोकक जमाय कें प्रायः लगै छनि जे ओ बाजऽ मे किछु भूल कऽ चुकलाह अछि। भरिसक तें ओ सुधार करबाक उद्देश्य सँ ससुर दिस ताकैत फेर बजै छथि - `जे-से, मुदा अहाँक असल संगी इएह भेलाह। दुनू गोटे समवयस्क छी, आ बर्थ सेहो आमने-सामने अछि।` `आह, ईहो कोनो कहऽवला बात छइ`? - भद्रलोक संगे-संग चहकि उठइ छथि।`

एतबे मे हमर बेटा फल आ पानिक बोतल ल`कऽ अबै छथि, आ चुपचाप कंपार्टमेंटक विहंगम अँटकर लैत बजै छथि - `एखन तक पूरा खालिये छइ। भरिसक तें ए.सी. नहि चलेलकैये।`

`घबराउ जुनि। दादर मे आधा-छीधा आ मुलुंड - कल्याण मे ठसम-ठस्स भरि जेतै। हमहूँ तऽ दादर मे चढ़बाक मोन बनेने रही, मुदा जमाय नहि मानलनि।`

हमर बेटा जे हमरा बगल मे बैसि चुकल छथि, हमरा दिस ताकैत मुस्किया अठै छथि भद्रलोकक बात सुनि।

हमरो मुस्की आबि जाइत अछि।

असल मे हमर अपन इच्छा रहय मुलुंड मे चढ़बाक। मुलुंड लग मे छइ, आ दिन छइ रवि। सब आराम सँ टीशन तक जा सकैत छल अरियातऽ। दूरक यात्रा

मे दू-चारि गोटे अरियातऽ वला रहने हमरा बड़ आनन्द अबैत अछि। यात्राक आरंभ उत्साह सँ भरल लगैत रहैत अछि। यात्रा शुभेशुभ लगैत रहैत अछि। हमरा लगैत अछि, एकाकी यात्रा कें ई उदास नहि होबऽ दइ छइ। हमर ई स्थिति हमर स्त्रीयेटा बुझैत छथि। दबले मुँहें बजा गेलनि -`मुलुंडे ठीक रहितै।` कोरा मे पोती रहनि। तकरा चुमकारैत कहलथिन - ईहो तऽ आब बाबा कें अरियातऽवाली भऽ गेलै।`

`बुढ़िया तों जतेक आसान बुझै छीही, ततेक छइ नञि। गाड़ी नाओं लेल रुकइ छइ। ततेक ने भीड़ रहइ छइ जे समान चलि जेतनि कलकत्ता आ पप्पा रहि जेथुन एत्तइ।... आ पप्पा कि कोनो बास बसऽ जाइ छथुन?` बेटा सहज रूपें बाजल रहथि। तकरबाद फेर मुलुंडक चर्च नहिएँ भेलै। हम कने हेरायल सन भ` गेल छी। घर सऽ बिदा होबऽ कालक ओ दृश्य आ बातचीतक चर्च सँ।

`अरे बाबा, केतना गुमार हय ! पहले ए.सी. चालू करो। तब एसब देना।` - भद्रलोक ए.सी. चालक कें कहैत छथिन जे कि कम्बल इत्यादि उपरका बर्थ पर राखि रहल अछि।

`अब्भी चालू करेगा। बस, एकठो एही बच गिया है।` - ए.सी. चालक बजैत चलि जाइत अछि।

एहि मध्य तीस-पेंतिस बीचक दूटा दम्पत्ति पीठ पर समान लदने बगलवला दुनू बर्थ के छेक लैत अछि। ओहि मे सँ एकटा युवक पीठ पर समान लदनहि केबाड़ अलगाकऽ ए.सी. चालक कें कने रोब मे कहैत छइ -`अरे भैया, ए.सी. क्यों नहीं चालू किया? मुफ्त का पैसा देकर नहीं चढ़ा है?`

`हाँ साब, चलाता है न !` ए.सी. चालक कर्त्तव्यनिष्ठ जकाँ बजैत अछि।

क्षणभरि बितैत ए-सीक शीत बसात कंपार्टमेंट मे प्रवाहित होबऽ लगै छइ।

`अरे बाबा, बाँच गिया। डाँट कर बोला तो कैसे चालू कर दिया! हमलोग बूढ़ा है तो !` भद्रलोक खुशीक संग-संग आक्रोश व्यक्त करब नहि बिसरै छथि।

गाड़ी खूजऽ मे दू-तीन मिनट बाँकी छइ। हमर बेटा हमर पएर छूबि उतरऽ लगैत छथि। भद्रलोकक जमाय सेहो ससुरक पएर छूबि कहैत छथिन `नीक जकाँ जाएब। संगी बढ़ियाँ भेटल छथि।`

`हाँ-हाँ, ठीक हय। हम भी अच्छा संगी हय। हम किया पहले-पहले जात्रा करता हय? तोम हमरा नतनी को ठीक से रखना। बहुत रोता था आने बखत।`

बजैत-बजैत भद्रलोक उदास भऽ जाइ छथि।

लोकक आवाजाहीक चलते हमर बेटा कने विलमि गेल छथि। हमहूँ उतरऽ लेल उठैत छी तऽ बेटा मना करै छथि। तथापि मोन मानैत नहि अछि।

गाड़ीक हुंकार पर प्लेटफॉर्म पर उतरल यात्री गाड़ी मे चढ़ऽ लेल हांञि-हांञि करऽ लगैत अछि। बेटा हमरा कान लग मुँह आनि फुसफुसाइत छथि - `बुढ़बा खटखटाह बुझाइत अछि, से कने सम्हरि कऽ।`

`हँ-हँ, हम जरूरते भरि बात करब। हमरा पत्रिका आ किताब सँ फुरसति भेटत तहन ने।`

`हँ, से तऽ अहि`। हमरा बात पर बेटा पूर्णत: आश्वस्त होइ छथि।

भद्रलोकक जमाय लऽग मे आबि कऽ बजैत छथि -`बीमारी दिन सँ खिसियाह भऽ गेलथिने। कने देखबनि।`

`अहाँ निश्चिंत रहू। हम छी ने`। - हम तोष दैत गाड़ी मे चढ़ि जाइत छी।

मुलुंड मे पूरा गाड़ी ठसम-ठस भरि जाइत छइ से प्लेटफॉर्म पर चढ़ेनहारक भीड़ के देखि अंदाज करब अनर्गल नहि। चढ़नाहर सभ जेना-तेना समान भीर मे जहाँ-तहाँ राखि कऽ धीयापूता के जतइ-ततइ ठाढ़ कऽ दइ छइ। क्यो कहै छइ - `चलने, लोकल पैसेंजर क्लयाण सँ किछु बाद मे उतरि जेतै।`

`थोड़ा भी सीभिक सेन्स नहीं है ए सब मे। अरे बाबा, हमारा माथा पर बइठेगा?` - अपना लग बैस गेल एकटा बच्चा कें भद्रलोक कहैत छथिन।

`मेरा दो, तीन और पाँच नम्बर बर्थ है - `बच्चाक माय कहइ छइ। `माँ, हम अपना बर्थ पर चलि जाइ छी` - बच्चा बाङला मे कहइ छइ।

भद्रलोकक मुँह चमकि उठै छनि -`बैस-बैस एखन। हमरा कने धक्का लागि गेल तऽ बजा गेल। बिमरियाह छी हम।` आ फेर बच्चा सँ किछु-किछु पूछऽ लगै छथिन बाङला मे।

क्षणभरि पहिने सँ किछु अपन समान सभ सरियाकऽ राखऽ मे व्यस्त महिला उनटिकऽ बुढ़ा कें देखैत अछि। अपना भाषाभाषी कें पाबि कने निश्चिंत सन होइत अछि।

`कने दम धऽ लिअ` - भद्रलोकक उद्‌गार प्रस्फुटित होइ छनि।

हम महिलाकें एकटक एना देखैत जा रहल छी जेना हम एकरा कतौ देखने

छिऐ। दिमाग पर कतबो जोर दइ छी, मुदा स्मरण भटकि-भटकि जाइत अछि। ओकर केशक स्टाइल, बाजबाक छटा, मुँहक काट, देह-यष्टि, उजड़ा दुधिया गोराइ, सभटा मिलैत अछि। नहि मिलैत अछि तऽ मात्र ओकर आवाज। एकर आवाज पुरखाह छइ मुदा, ततेक मोट नहि।

बस, एतइ आबिकऽ हमर भ्रम टुटैत अछि जे एकरा नहि, बेसी उमेद एकरे सन स्त्री कें देखने छिऐ। भऽ सकैये, ओकरे जौडा ने होइ।

हम आब स्मरण शक्ति पर निर्रथक जोर देब छोड़ि दइ छी।

भद्रलोक बजैत छथि - `चलू: एकटा आर मेलक लोक भेटल। आब कोलकाता तक यात्रा ठीक रहत।

भद्र महिला कहैत छइ - `हमको तो नागपुर उतरने का।`

`अहाँके बाङला मे बाजब नीक नञि लगैये?` - भद्रलोक-टोकि दैत छथिन।

`क्षमा करब। हमरा ख्याल नहि रहल। घर मे बङले बजइ छी। हमर हसबेंड मराठी छथि। हुनको बाङला सिखा देने छियनि। महिला लजाएल सन भऽ जाइत अछि।

`जे कहियै, अपन भाषा माने अस्मिता बचाकऽ रखने छी आहाँ, सएह कि कम छइ? नेना सभ तऽ बंगाली संस्कारक अछि। बाजऽ मे कोन छइ। जतेक भाषा जानी आ बाजी, ततेक बढ़ियाँ। ई युगक माँग छइ। नञि तऽ फिसलि जाएब।`

भद्रलोकक बात पर महिला सहज अनुभव करऽ लगैत अछि। भद्रलोक पुछैत छथिन - `कोलकाता स` तऽ परिचित होयबे करब?`

`गेल तऽ छी, मुदा ओतेक परिचित नहि छी। हमर ठाकुर दा बाङलादेश सऽ सोझे नागपुर आबि गेल रहथि। ओतइ बसियो गेलाह। ... ढाका सऽ मुदा बढ़ियाँ परिचय अछि।

`कोनो बात नहि। छी तऽ बंगालिये ने। अपन पहचान बचाकऽ रखने छी, ई नान्हिटा बात नहि छइ। नहि तऽ कत्तौके नहि रहब।`

बचिया खेल करैत काल बीच-बीच मे भद्रलोक पर झुकि-झुकि जाइत अछि। महिला मना करै छइ तऽ भद्रलोक महिला कें मना करैत कहइ छथिन - `भन्ने तऽ खेलाइ छइ।`

महिला आ भद्रलोक हींग स` लऽकऽ हरदि तक के गप्प मे लागल छथि।

बच्चा दुनू आपस मे हाथ मिला-मिला कोनो खेल मे व्यस्त अछि।

हम अपना बर्थ पर खिड़की लग कोन्ह मे छबकल सन बैसल छी। बीच-बीच मे बाहर मे इजोत बुझाइत अछि तऽ ओम्हर देखऽ लगैत छी। अन्यथा दुनू बच्चाक खेल नीक लागि रहल अछि।

एहि सँ पूर्व ए.सी. बॉगीक अनुभव नहि छल। मात्र पेंट आ शर्ट पहिरने छी। पएर मे अछि चप्पल। ए.सी. देह सिहरा रहल अछि। रेलवे प्रदत चद्दरि देह पर ध` लैत छी, आ कम्बल सँ दुनू पएर झाँपि लैत छी।

`अरे बाबा, लगता हय ए.सी. पूरा खोल दिया हय ! `बेस ठंढा` लगता हय`। हमरा ओढ़ैत देखि भद्रलोक कें जना देखाउँस लगैत छनि। ओहो हमरा जकाँ हाफ शर्ट आ चप्पल पहिरने छथि। भरिसक हुनको ए.सीक पहिल अनुभव छनि।

`माँ, हमरा भूख लागलए` - महिला कें ओकर बेटी कहै छइ।

`हँ-हँ आब खेनाइ बाहर करै छी - `महिला घड़ी देखैत बजैत अछि, आ खेनाइ-पिनाइवला बैग एना खोलऽ लगैत अछि जेना भूल सुधारऽ लेल एकटा इएह उपाय बाँचल होइ। जेना बड़का अपराध ओकरा सँ भऽ गेल होइ बैग सऽ समान सभ एक-एक कऽ निकालैत-निकालैत फेर बजैत अछि - `नञि बेटा, हमरा सऽ भूल भऽ गेल। यात्रा मे एना भऽ जाइ छइ।... समयक ख्याल नञि रहल।`

`हँ सत्ते ! नेना सभकें भूख लागल हेतइ। हमही बात मे बझा देलौं अहाँकें - भद्रलोक एकटा अपराधी जकाँ बजैत छथि। महिलाक बेटा उपर बर्थ पर चढ़ि गेल अछि। ओ ओतहि सँ बजैत अछि - `माँ, हमरा एतइ दऽ दे।`

`ठीक छइ` - महिला खेनाइ भाग करऽ मे ब्यस्त भऽ जाइत अछि।

खएला-पिउलाक बाद महिला कें ओकर नम्बर दू आ पाँच बर्थ उठबऽ मे हम सहायता कऽ दैत छिऐ। ओ बेटी कें नम्बर दू पर सुता दइ छइ। ओकरा अपने नम्बर पाँच पर चढ़बाक छइ। मुदा, असमंजस मे ठाढ़ि अछि। रहि-रहिकऽ अपन कातर नजरि हमरा दुनू गोटे पर फेकैत अछि।

ओकरा तारतम्य पर हमहूँ दुनू गोटे गुनधुन मे छी।

भद्र लोक हमरा दिस तकैत बजैत छथि - `हमारा दहिना ठेहुन का चक्री निकाल दिया हय। हम उठिये नहिं सकता है।`

`कोनो बात नहि। हम चलि जाइ छी हिनका बर्थ पर` - हम महिला दिस तकैत कहैत छियनि।

`नञि-नञि, अहूँ वयस्क छी। हम चढ़ि जेबइ।` - महिला सौजन्यवश बजैत अछि। तथापि साड़ी मे रहने तारतम्य मे अछि।

`हम अहाँक असौकर्य बूझि सकैत छी` - अतेक कहैत हम अपन बिस्तर उठबऽ लगैत छी।

महिला मना करैत अछि -`है तो सब यहाँ?`

`नञि, हम बेबहार कऽ लेने छी अपन बिस्तर।`

महिला किछु नहि बजैत अछि। ओ चुपचाप अपन बिस्तर उठा लैत अछि।

`चलू, ईहो चिंता दूर भेल` - जेना ई भद्रलोकक अपन भार रहनि।

क्षणभरिक बाद सोचक मुद्रा मे ओ फेर बजैत छथि -`मनुक्खे तऽ मनुक्खक काज अबै छइ। जतेक हमसब दुख-दर्द बुझै छिऐ पृत्वी पर, से आनठाम कम्मे भेटत। पृथ्वी पर की? हम तऽ कहब जे अपनो देश मे सबठाम अतेक नहि भेटत।`

जेना किछु अतिशयोक्ति बजा गेल होनि, बात मे मोड़ आनऽ लेल पुछइ छथि -`अहाँ कय बर्ख सँ कोलकाता मे छी?`

`चौबालिस बर्ख सँ।`

`ताइतो भावता है हम आपका हिंदी मे हमारा माफिक बाङला कैसे ढुक जाता है` - ओ बिस्तर लगबैत अपना हिंदी मे चहकि उठैत छथि। फेर आगू जोड़ैत छथि - `आप भी तब पूरा बंगालिये हय। बोली मे पकड़ा जाता हय। आपका बच्चा को कोई नहीं पकड़ेगा। अभी तो देख लिया हम मुंबइ मे।`

`हम चुपचाप सुनि लैत छी। आब सभ क्यो सुतहेक सुरसार मे अछि। देखैत-देखैत बेसी लोक पड़ि रहल अछि। इजोत सभ मिझा देल जाइत छइ। मात्र नाइट रोशनी बरि रहल छइ। पढ़िते-पढ़िते सुतबाक अभ्यास एतऽ पूरा नहि भऽ सकैत अछि, से बुझा जाइत अछि।

महिला चित्ते सूतलि निन्न पड़ि गेलि अछि। उपर सँ ओकरा देखऽ मे विशेष सुविधा भऽ रहल अछि हमरा।

ओकरा गोर मुँह पर हमरा टकटक्की लागि गेल अछि। जौं ओ जागलि रहैत तऽ एना चोर जकाँ देखबाक साहस नहिएँ होइत। गौर सँ देखला पर मुँहक

गढ़नि ततेक बढ़ियाँ नहि छइ। ओ तऽ धन्यवाद देबाक चाही आधुनिक केश स्टाइल कें जे मुँहक काटक अनुरूप केश कें सजाकऽ रूप लावण्य कें आकर्षक बना लेने अछि। एकर देह - यष्टि देखि शुरुहे मे अंटकर लगा लेने छलहुँ जे ई जॉगिंग अथवा व्यायाम करैत हएत। नहि तऽ उरोज - द्वय जेना दोमइ छइ, निश्चय एक-दोसर सँ सटि सटि जइतै। ओकर बजबाक छटा तऽ पहिल झलक मे मोहित कऽ लेने छल। हँसब तऽ आर गजब के छइ। बजैत-बजैत मुस्की आबि गेला पर ओष्ठ-पल्लवक वामा कोर एना ने कने बाहर दिस खिचा जाइत छइ जे दुनू गालक डिंपल द्विगुणित शोभायमान भऽ उठैत छइ।

एखन तत्काल चाक्षुक तुष्टि लेल ओकरा मुँह - लावण्यक अवलोकन करबाक लोभ कें सीमित नहि कऽ पाबि रहल छी। सोचैत छी, दिन दुना, राति चौगुना प्रगतिशील संसार मे आबो अपना ओहिठाम एहन-एहन महिलाकें माय, दाइ-पीसी सभ कलियुगहि कहऽ सँ बाजि नहि अबैत छथि। से खाहे ईर्ष्यावश वा अपन पुरान ढर्राक चलते। नीको कें दूसब - ठेसब हमर सभक सोभाव अछि ने !

मोने-मोने सोचि रहल छी जे बर्थ अदला-बदली कयने घाटा मे नहि छी। मोन दौगि जाइत अछि भद्रलोक पर। हुनकासँ डाह जे भऽ रहल अछि।

गौं सँ मूड़ी निघुड़ाकऽ नीचा बर्थ पर देखैत छी भद्रलोक के। ओहो ओम्हरे एकटक देख रहल छथि।

हमर ईर्ष्या द्विगुणित होइत अछि। तथापि संतोष होइत अछि जे पूर्ण अवलोकन तऽ हमहीं कऽ रहल छी उपर सँ। बर्थ अदला-बदली कयने हमरा अपन अधिकार बेसी बुझाइत अछि। एक भाषा-भाषी छथि, तें की? बेबहार मे आगू हमहीं छी। आब ई महिला बंगाली रहलि कत` सऽ !

महिला पड़ले-पड़ले करौट फेरिकऽ आपादमस्तक कम्बल ओढ़ि लैत अछि।

ए.सी.क ठंडा आब बेसी बुझा रहल अछि। निंघुरि-कऽ फेर नीचा देखैत छी। भद्रलोक करौट फेर लेने छथि।

हमरा अपनो आब औंघी लागल अछि। एहिमुँहे घुमि कम्बल सँ मुँह झाँपि सूति रहैत छी।

करीब तीन बजे निन्न टूटि जाइत अछि। लघुशंका लेल पायदानक सीढ़ी सँ नीचा उतरैत छी। निवृत भऽ घुरैत छी तऽ महिला पर धेआन जाइत अछि। कम्बल डाँर सँ नीचा ससरिकऽ सतह कें छूबैत झूलि रहल छइ। गाड़ी अपना गति मे छइ।

उरोज द्वय फेर ओहिना दोमि-दोमि जाइ छइ। ओकर चुश्त तरका सलबार कम्बल साड़ी सँ अनारक्षित शरीरक सौष्ठव कें प्रदर्शित कऽ रहल छइ। हमरा धक् दऽ मोन पड़ि जाइत अछि जे एकबेर एहने स्थिति मे अपनो बेटीक देह पर ओकर चद्दरि ओढ़ा देने रहिऐ। हमरा अपने लाज भऽ जाइत अछि।

एतऽ मुदा हम नचार छी। औचित्य आ अधिकार दुनू मे सँ कोनोटा संग नहि अछि।

बस, एकटा उपाय सुझैत अछि। हम कूपेक सभ बत्ती बारि दैत छियै। उपरका बर्थबला कुड़बुड़ा उठैत अछि। बगलवला बर्थक यात्री सभ से कछमछाय लगैत अछि। भद्रलोक से जागि जाइ छथि।

जानिबुझिकऽ कने जोर सँ हम बजैत छी - `ओ ! चप्पले नञि भेटि रहल अछि।`

भद्रलोक लग्घी करऽ लेल बाहर होइ छथि। एहि कचबच पर महिला जागि जाइत अछि। ओहो निवृत होबऽ लेल बहराइत अछि।

हम अपना बर्थ पर चढ़ि जाइत छी। बैसबाक मोन होइतो अछि तऽ बिचला बर्थ पर से सम्भव नहि अछि। तें जगले पड़ल छी।

महिला आबिकऽ गुनधुन करैत ठाढ़ि अछि।

`की बात छइ?` - हम पुछैत छिऐ।

`ए.सी. फुल खोल दिया है` । बस, नापल-तौलल जवाब भेटैत अछि।

महिलाक बात सुनिते भद्रलोक भीतर ढुकैत छथि। केबाड़ अलगाकऽ ओतहि सऽ ठाढ़े-ठाढ़े चालक कें ए.सी. कम करऽ कहैत छथिन।

महिला अपन दुनू बच्चा कें देखि आश्वस्त होइत अछि, आ करौटे भरे चुपचाप कम्बल ओढ़ि निश्चिंत सँ सूति रहैत अछि।

भद्रलोक बत्ती सभ मिझा दैत छथिन।

भोरुका पहरक गुलाबी निन्न आ ताहि मे ए.सी. मे जाड़कालाक आनन्द। हमहूँ मुँह-तूँह झाँपि सुति रहैत छी।

भोर सात बजे निन्न खुजैत अछि।

महिला बिचला बर्थ खसा लेने अछि। बेटा उपरे मे छइ। बेटी छइ लग मे बैसलि। भद्रलोक कें अपना बर्थ पर बैसऽ मे असौकर्य छनि, तें महिलाक बर्थ पर

बैसल छथि।

महिला डायनिंग टेबुल पर पाव रोटीक टुकड़ी सभ सजेने मक्खन लगा रहलि अछि।

`गुड मॉर्निंग अंकल ! जल्दी जाउ वाश बेसिन। हमर नाश्ता रेडी अछि।`

हम चुपचाप फुर्ती देखबैत छी।

ओकरा आग्रह कें अस्वीकार करब हमरा सँ सम्भव नहि अछि। तथापि औचित्यक निर्वाह करैत, `अंकल` शब्दक मान-मर्यादा कें राखऽ लेल चाहक पाइ हमहीं दैत छिऐ। एहि मे भद्रलोकक पूर्ण समर्थन हमरा भेटैत अछि।

`एकटा बात पुछू? ओना ई हमर धृष्टता हएत....`

महिला मुस्किआइत उत्सुकतापूर्ण नजरि सँ हमरा देखऽ लगैत अछि। हम कने बिचलित सन भऽ जाइत छी। पुछियौ तऽ कोना पुछियौ। आब संकोचक चलते हम कने हतप्रभ सन भऽ जाइत छी।

हमर असमंजस ओ पकड़ि लैत अछि। मुस्किआइत पुछैत अछि - `इएह ने जे हमरा सन महिला कें कत्तौ देखने छियै? अहाँक घूरब पर इएह शंकायुक्त प्रश्न हमरा मोन मे अछि।`

हम अबाक रहि जाइत छी।

`पाकिस्तानक बेगम साहिबा। आइकाल्हि टी.भी. पर खूब आबि रहल छइ` - हमरा जेना ओ उबारि लैत अछि।

महिला आगू बजैत अछि - `मात्र आवाज मे कने फर्क बुझाएत। कत्तेक लोक पूछि देने छथि। पास-पड़ोस मे तऽ हमर `बेगम साहिबा` नाओं धऽ लेने अछि। मुदा, आर बहुत चीज मे मेल नहि भेटत।... भाग्य सर्वोपरि छइ ने ?`

`गलत नहि बूझी तऽ हम कहऽ चाहब जे अहाँ मे कलाकारक सभटा गुण समाहित अछि। जयप्रदा आ मुनमुन सेन माय बनलाक बादो नामी कलाकार भेलीहए।... अहाँ नाटक केने छी?

महिला मुस्किआइत एकक्षण लेल शून्य मे तकैत अछि। फेर हमरा दिस देखैत बजैत अछि - `खुब्बे केने छी नाटक।`..

`आब छोड़ि देलिऐ की?`

`कहियोकाल कऽ लैत छिऐ।`

`सिनेमा मे ब्रेक लेबाक प्रयास नहि केलिऐ?`

`घृणा अबैये एहन ब्रेक सऽ।`

`नीक केलौं ! बिपासा बासु आ राखी सावंत तऽ नहिएँ बनी` - भद्रलोक टपकि पड़ै छथि।

क्षणिक विश्राम सन चुप्पी पसरि जाइत छइ। लगपासक सभ कान देने अछि।

`असल बात तऽ पुछनाइये बिसरि गेलौं। हमरा मोनक बात अहाँ कोना बुझलिऐ?` हमर जिज्ञासा निंघटल नहि अछि।

`अहाँ पहिल लोक थोड़बे छी? पास-पड़ोसक लोक हमर नाओं `बेगम साहिबा` धऽ लेने अछि, पाकिस्तानक बेगम साहिबा।`

क्षणिक चुप्पी फेर पसरि जाइ छइ।

महिला फेर अपने बजैत अछि -`हम काल्हिये अहाँक आँखिमे आ मुँह पर से पढ़ि नेने रही। अहाँक साहस बढ़बऽ लेल हम नाश्ता लेल तें सप्रेम बेरि-बेरि आग्रह कयलहुँ अछि। अहाँक पत्रिका सभ आ किताब देखि हमरा आत्मविश्वास भऽ गेल छल जे अहाँ गुणग्राही लोक छी। अहाँ अपन जिज्ञासा अपने संगे ल` कऽ चलि जइतौं तऽ हमरा बड्ड कचोट होइत। प्राय: अहूँ कें पश्चाताप किछु दिन तक, नहि तऽ कम-स-कम कोलकाता तक अवस्स खिहारैत। आब तऽ निश्चय हल्लुक मोने हम सब अपना-अपना गंतव्य पर जा सकब। आकि नञि?`

`हँ, से तऽ छइ। दुनू दिस एकेरंग। एहन सुखद यात्रा कहूँ बिसरवला होइ?` हम मुस्की पसारैत अपन समर्थन कें आर बेसी विश्वसनीय बनबैत छी।

एकरत्ती लेल फेर हम सभ चुप रहैत छी।

भद्रलोक टुकुर-टुकुर ताकि रहल छथि। प्राय: ओ अपना कें फराक सन अनुभव कऽ रहल छथि। हम टोकि दैत छियनि - `दादा, अहाँ तऽ साफे चुप भऽ गेलिऐ?`

`श्रोता मे रहऽ दीअ हमरा। नीक लागि रहल अछि। दूटा कलाकार कोना गप करै छइ, से अनुभव आइ भऽ रहल अछि।`

महिलाक मुँह पर गर्वक अनुभूति मुस्कीक संग छिटकि जाइ छइ। हमरा किंतु भद्रलोकक बात मे कटाक्षक आभास होइत अछि।

महिलाक बेटा उपरका बर्थ सँ पुछइ छइ - `नागपुर कखन एतइ माँ?`

`बस, आब पहुँचहेवला छी हम सब। समान आब सरिया लइ छी`। हमरा अपना बर्थ पर धेआन जाइत अछि। ओछाएन सभ समेटिकऽ बर्थ खसा दइ छिऐ। भद्रलोक अपना भरि हमर सहायता करइ छथि।

हम दुनू गोटे हुनका बर्थ पर बैस रहैत छी।

महिलाक बेटा नीचा बर्थ पर उतरि जाइत अछि।

आब गाड़ी नागपुर टीसन मे ढुकहेवला छइ। महिला अपन समान ठीकठाक करऽ मे लागलि अछि।

गाड़ी टीसन पर रुकैत छइ।

`कोलकाता तक अहाँक अभाव बड़ खटकत` - हम कहैत छिऐ।

`हमरा अपने बड्ड मोन पड़ब अहाँ सब। पिता सदृश स्नेह भेटल आहाँ सबसँ। यात्रा मे एहन सुखद स्थिति कम्मे बनै छइ।`

भीतरे-भीतरे हम लजा जाइत छी। भद्रलोकक नजरि से झूकि जाइ छनि। भलेही एके क्षण लेल, मुदा हम दुनू गोटे अपना कें कत्तौ-ने-कत्तौ कलुषित अनुभव करइ छी।

ओकरा उतरऽ मे सहायता करबा लेल बरजोरी ओकर एटैची हम उठा लइ छिऐ।

प्लेटफॉर्म पर ओकर भाय ठाढ़ छइ। महिला हुनका सऽ परिचय करबैत अछि, आ अपन कार्ड दैत कहैत अछि - `अहाँ तऽ फेर लगले मुम्बइ आबि रहल छी ने? हम बड्ड खुशी होएब जौं अहाँ मुम्बइ अयला पर हमरा सूचित करी।`

ओ हाथ जोड़ि प्रमाम करैत अछि आ दुनू बच्चा हाथ हिलाक`-`टा-टा`।`

भद्रलोक एखनो तक चुपचाप मन्हुआएल बैसल छथि। टोकबाक उद्देश्य सँ - गप आरंभ करैत छी। नवांगुतुक सभ अपना मे गप करैत समान सभ कें ठीक-ठाक करऽ मे लागल अछि।

भद्रलोक कें टोकितो छियनि तऽ कहैत छथि -`माथ भारी लागि रहल अछि। हम आराम करऽ चाहब।`

आ ओ अपना बर्थ पर पसरि जाइत छथि पोन घुमाक।`

नवांगतुक यात्री मे सँ दू गोटे हमरा बर्थ पर बैसि रहैत अछि।

`की मोन बेसी खराब बुझाइये`? भद्रलोक कें हम फेर टोकैत छियनि। हुनका पर जेना कोनो असरिये नहि पड़ैत छनि।

`धुर जो!.... हम अपना बर्थ नम्बर एक पर खिड़की सँ सटल कोन्ह मे दुबकल बैसल छी। बेटाक बात मोन पड़ैत अछि। `पप्पा, कने ठीक सऽ गप्प करब। बुढ़बा खिसियाह बुझाइये।`

गाड़ी अपन गति पकड़ि लेने छइ।

हम एकटा पत्रिका `लफ्ज` पढ़ऽ लगैत छी। भद्रलोकक जमायक बात रहि-रहिकऽ मोन मे आबि रहल अछि।

बीच-बीच मे पत्रिका सँ नर्जारि हटाकऽ भद्रलोक दिस देखि लैत छी।

ओ ओहि मुँहें पड़ल छथि। गाड़ी सर्र-सर्र निकलैत भागि रहल छइ। पत्रिका मे अतेक शीघ्र मोन ढुकब सम्भव नहि भऽ रहल अछि। आँखि अपने- आप मुना जाइत अछि। बेगम साहिबा मुस्किआइत जे सामने मे बैसलि गप्प कऽ रहलि छथि।



मोह जे अपन होइत छैक

``की गाड़ी मे चढ़बै?`` एकटा कुली पुछैत अछि। ओकरा प्रश्नक जवाब नहि दऽ हम दोसर दिस मुँह घुमा लैत छी।

सोचने छलहुँ, एक रातिक बात रहत आ सामानमे मात्र एकटा छोटछीन ब्रीफकेस। तें लटकि-फटकिकऽ सेहो जा सकैत छी। कोन कहलकै जे एगोटे लेल अतेक चिन्ता ! के करओ दौड़-बरहा अतेक ! ओहो होयत कि नहि। जँ होयबो करत तऽ बिना दान-दक्षिणा के कोनो कल्याण नहि।

किन्तु, लोकक ठसम-ठस्स भीड़ देखिकऽ हम सोचमे पड़ि जाइत छी। वास्तवमे गाड़ीमे एकसरे चढ़ि जयबाक हमर जीबट घाम बनि पघिलऽ लगैत अछि।

एकटा कुली कनेक दूर पर ठाढ़ भेल हमरे दिस ताकि रहल अछि। प्राय: हमर स्थितिक अँटकर ओ लगा लेने अछि। ओ चिक्कन जकाँ जनैत अछि जे हमरा सन `अप-टू-डेट` लोक एहन भीड़मे गाड़ीक पौदान लग सेहो नहि पहुँच सकैत अछि। ओकरा ईहो नीक जकाँ आभास भऽ गेल छैक जे हमरा गाड़ीमे चढ़बऽ लेल कोनो हमर लोक वा मित्र नहि आयल अछि।

एक मोन होइत अछि जे घूरि जाइ। आइ शनि दिन थिकैक। आजुक दिन भीड़ रहिते छैक। काल्हि अतेक भीड़ नहि रहतैक। मुदा, दुर्गा-पूजामे तऽ सभ दिन भीड़ रहबे करतैक ! दोसर बात, छुट्टी मात्र एके हप्ताक अछि, हुनकर पत्र आयल अछि जे काल्हि ओ हमर बाट ताकैत रहतीह। ओ अतेक धरि लिखने छथि जे ओ हमर भानस-भात सेहो क`कऽ रखने रहतीह। नञि, जयबाक अछि तँ आइये जायब ! हम निश्चय कऽ लैत छी।

गाम जयबाक उत्साह मोनकें उद्वेलित कऽ दैत अछि। किन्तु ई भीड़ !... हारिकऽ ठेहिआयल मनुक्ख जेकाँ कुली दिस ठिकिया कऽ देखै छिऐक। हमरा सन लोकसँ ओकरा सभ दिन भेंट होइत हेतइ। ओकरा दिस हमर ताकब सऽ ओ हमरा मन:स्थितिक अन्दाज लऽ लैत अछि। सटिकऽ लगमे आबि कहैत अछि - `बेकार मे अहाँकें गाड़ी छूटि जायत। हम अहाँकें कातक `सीट पर बैसा देब। चारि गो लागत।``

- ``नहि हौ ! बड भेलै चारि टा।``

- ``कोन बेसी भेलै? होटलमे पेटो नहि भरतै।`` ओकर सटीक तर्क छैक।

हम तैयो ढीठ होइत किछु कम करयवाक आशा मे कहैत छिऐक - ``तैयो बड्ड भेलै हौ ! कोनो कि तों एकटा हमरे चढ़यबऽ?``

आ नागरजू होइत कहैत अछि - ``तखन जाउ, अपनेसँ चढ़ि लिअ।``

लोकक भीड़, घर जयबाक लालसा आ चारिटा टाकाक मोह।.. धूत्, बड्ड भेलै चारि टा ! चारि टा मे तऽ रस्ता कटि जायत।... किन्तु, ई भीड़ ! बाप रे ! ककर मजाल छै जे एसगरे....! ओ से हमर बाट तकैत रहती काल्हि !... धत्तेरी के! जखन कमाइते छी तँ कोन कहलकै जे चारि टा टाका। कत्तेक अबैत-जाइत रहै छै। रूपैया तऽ हाथक मैल थिकैक !

गामक मोहक समक्ष चारिटा टाका नगण्य बुझाइत अछि। कुली सेहो राजी-खुशीसँ कातमे सीट पर बैसा देबाक विश्वास दैत अछि !

जँ-जँ गाड़ीक प्लेटफारम पर लगबाक समय लगिचायल जाइत छैक, हमर हृदय आर धुकधुकाय लगैत अछि। हमरा देखल अछि, एहन घटना जे कुली सभ एहन भीड़मे मनुक्खकें नोनक बोड़ा जकाँ कम्पार्टमेंटक भीतर धकेलि दैत छैक। सिमीटक बोड़ा जकाँ फेकि दैत छैक। लोककें जे एहन भीड़क सामना, खासकऽ दुर्गापूजाक समय हावड़ा टीशन पर नहि कयने अछि, विश्वास नहि भऽ सकैत छैक। हमरा अपनो विश्वास नहि भेल रहय ओहि दिन। लागल रहय, जेना ओ दृश्य हमरा लए एकटा सूनल खिस्सा छल। एहन सपना जकर सम्बन्ध हमरा जिनगीक कोनो क्रियाकलापसँ ताधरि नहि छलैक। की लोक एहन कल्पनो कऽ सकैत अछि? मुदा, एहन संभावना कतेक घटनाक सम्बन्धमे कतेक लोकसँ सुनि चुकलहुँ छलहुँ। आ तें अपन आँखि पर विश्वास करऽ पड़ैत अछि। एहने तऽ होइ छइ बिना आरक्षणक यात्रा।

हमरा सुनल अछि जे एहि स्टेशन पर कोना एकटा कुली एकटा स्त्रीगण कें भीतर ठेलि देने रहैक। एकदम नग्न भऽ गेल छलि ओ। किछु लोककें कने हँसबाक मौका भेटल रहैक। एहन लोक पर बहुतकें तामस भेल रहैक। किन्तु लोक, अपनामे अपस्याँत छल। गाम जाय लेल बेहाल छल। कियो मजाक कयने रहैक - गाम धरि पहुँचिए जेतइ कहुना।``

तें आइ ओ हमरो ठेलि देत। सिमीटक बोरा जकाँ माल गाड़ी मे गेटि देत। .... हमर अन्तःकरण कलपि जाइत अछि।

``हौ, तों सभ बड़ बज्जति करै छहक। कहाँदन इज्जति उतारि लैत छहक

चढ़बऽ काल मे?`` हमरा आब भीड़क डर ओतेक नहि भऽ रहल अछि जतेक कि कुलीक, माने ओकरा बेबहारक। प्रतिबाद करबाक सोह कहाँ रहै छइ ककरो। सभक धेआन जान-माल पर रहइ छइ।

``बाबू, अहाँ कनिको नहि घबराउ। हम कनेको बुझहो नहि देब। हमर बहुत लोक बारे हीआँ।`` मातृभाषा मे बाजिकऽ अपनत्व जगबैत अछि। मजबूरी मे ओकरा पर विश्वास कऽ लेबऽ पड़ैत अछि। करेज मजबूत कऽ लेबऽ पड़ैत अछि।

गाड़ी लगैत छैक। कुली हमर ``ब्रीफकेस`` ल`कऽ एकटा कम्पार्टमेंट दिस भगैत अछि। हमहूँ ओकर पछौड़ धयने अपस्याँत भऽ जाइत छी। ओ हमर ब्रीफकेस एकटा कम्पार्टमेंटमे फेकि दैत अछि। अपना सामानक मोहमे हम कम्पार्टमेंट मे मुड़ियारी दैत छी, आ पुनः चेष्टा करैत छी ओहि मे घुसियेबाक। तखने बुझाइत अछि जेना क्यो हमरा पाछूसँ बरजोरी ठेलि रहल अछि।

हमरा प्रतिकारक कुलीपर कोनोटा प्रभाव नहि पड़ैत छैक। एतेक कहैत-``तखन घर कोना जेबह? ओ हमरा एक्के बेरमे भीतर धकेलि दैत अछि।

अपन होश सम्हारबाक बाद सामानक चिंता होइत अछि। एकटा दोसर कुली हमर `ब्रीफकेस` ल`कऽ एकटा सीट पर बैसल अछि। कहुनाकऽ दम धरैत `सीट पर` बैसि जाइत छी। मोन तऽ लोहछल अछि कुलीक आचरण पर, मुदा आब घर पहुँचि जयबाक आशामे सभटा बिसरि जाय पड़ैत अछि। एहि बेर गाम पर बहुत लोक सँ भेंट भऽ जायत। एहि सुखद कल्पना मात्रसँ लगैत अछि जेना हम अपना गाम पहुँचि गेल छी। ठेहुन आ केहुनी फुटबाक दर्द कम बुझाइत अछि।

-``अच्छा जल्दी करऽ...! हमरा जल्दी हय !`` ओ कुली हमर क्षणिक काल्पनिक आनन्दकें छीनि लैत अछि। ओकरा दाबीसँ लगैत अछि जेना हम ओकर कर्ज खयने होइऐक। लगैत अछि, जेना ओ हमर बड़का उपकार कयने होअय मगनी मे।

तामस कें घोंटि जाय पड़ैत अछि, आ ओकरा चारिटा टाका दऽ दैत छिऐक।

रूपैया ल`कऽ मुस्किआइत ओ कहैत अछि - ``आब जाउ निश्चिन्तसँ घर।`` हमहूँ छिअइ दरभंगिया। मुदा, की करियौ बौआ। पेट कहाँ धऽ अबियौ! अपनत्व जनब` लेल विशुद्ध मैथिली मे बजैत अछि।

चकित छी हम जे मात्र संसर्ग सँ कतेक भाषा सीख लेने अछि ! मैथिल

होअओ कि आनभाषी, हम मात्र सुनि लइ छी।`ओकर बात सूनि मन मसोसिकऽ रहि जाय पड़ैत अछि। कइये की सकैत छिअइ हम। मोनकें मना लैत छी जे गर्ज तऽ हमरे छल ने !

ओह्, प्राण नहि रहत एहि गर्म मे ! एतेक कतऽ सँ अयलै। सुआइत देशक एहन हालति छैक ! नोनक बोड़ा जकाँ लोक गस्सल अछि।... किन्तु...किन्तु एहि गस्सल लोकमे तऽ हमहूँ एकटा छी ! अतेक जनसंख्या मे तँ हमहूँ एकटा छी ! एना सोचब हमर भूल अछि !... अपना पर क्रोध होइते अछि। संग-संग ग्लानि सेहो होइत अछि।

बापरे ! केदन पएर पीचि देलक !... तऽ हम कतऽ ठाढ़ होउ?...। एके डपटान पर सिट्टीपिट्टी गुम्म !

कोनो बुझनुक लोकक उपदेश -``रातिए भरिक तऽ बात अछि। फेर कि ककरोसँ भेंट होयत?``

-``हेयौ। जगह भेटि गेल अछि तँ बड्ड फुराइये, नहि?``

- ``अहाँकें क्यो मना कयने छल? हाथ-पयर तँ अहूँक सोझे अछि।`` महाक हल्ला बजरैत अछि। धक्कम-धुक्का आ गारिक फुलझड़ीक संग। मुदा, एहि भीड़मे एक-दोसर धरि पहुँचबाक रस्ता तक नहि छइ। मारिपीट तें नहि भऽ पबै छइ।

लोकपर लोक ओंगठल अछि। ककरो कथूक ठेकान नहि। सीटक नीचाँमे कतेक ओंघरा गेल अछि। मात्र भरि रातिक माजरा छैक। अंगा, धोती मैल भ` जेतै तकर आहि नहि। गाम गेलापर फेर सऽ साफ भऽ जेतइ। सभकें सभकिछु वर्दास्त छैक आइ राति भरि। मुदा, सभकें गाम जयबाक छैक जे ओकर अप्पन छैक। जतऽ ओकर मोन टाङल रहैत छैक राति-दिन। जाहि माया-मोहकें अक्षुण्ण रखबाक हेतु ओ घर, अप्पन घर त्यागि देने अछि। ओतऽ ओकरा जयबाक छैक कोनो सूरति मे।

बैसबा मे समंजस भऽ गेला पर तमाकुलक जूम-पर-जूम आ तकर आग्रह-पर-आग्रह स्टेशन अयला पर कातमे बैसल लोक द्वारा चाह-पान भितरका लोककें बढ़ा देनाइ मे सहजता, अर्थात राति भरिक हेतु मोने-मोन एकटा समझौता, घर जयबाक उत्साहमे आब सभ क्यो एक भऽ गेल अछि। सभक मोन आब गामेपर छैक। ... हम तँ काल्हि दस बजे गाम पर रहब।... हमरो जँ जानकी पकड़ा गेल तँ

आठ-नौ बजे धरि पुरना गेल रहब गामपर। दरभंगा सँ दूर लोक सभकें कने दिक्कत छै। बसक कोनो ठीक नहि रहै छै।... की अहाँक रोडपर टैक्सी नहि चलैए?... अर्थात आब गाम पहुँचबाक चिन्ता।

हमहूँ प्लान बना लैत छी जे पाइये ने बेसी लागत। टैक्सीये सँ गाम चल जायब। किन्तु.... !

किन्तु एके सप्ताहमे आपस सेहो अयबाक अछि। सोचऽ लगैत छी अपना पर, अपना पेटपर। कोनो कविक कल्पना जे दुनू कात पीठे रहितैक, प्रायः एहि तप्त खण्डहरक प्रचण्ड ज्वालासँ उठल होयतैक ! मोनमे होइत अछि जे हमहूँ कतेक आन लोक जकाँ गामक लगपासमे नोकरी करितहुँ !

कोना लगैत रहैत छैक गामसँ आबऽ काल ! पयर नहि उठैत रहैत छैक ! कतेक अन्तर होइत छैक गाम जयबा काल आ गाम सँ अयबा-कालमे!

आबऽकाल पयर धरतीमे रोपा गेल रहत। किन्तु, मायक बात -`रे तोहर ई डल ! जैं हमर बेटा तै पाँचो आङुर मुँह मे जाइ छौ। तों जहन कमयबे तऽ बुझ ब्बही।... ई सोचि जे अतेक टा परिवारक आसरा एकटा हमहीं छिऐक, करेज पर पत्थर राखि डेग आगू बढ़ाबऽ पड़ैत अछि। संसारक देखादेखी संतोष कऽ लेब पड़ैत अछि जे हमरा जेकाँ घरही आर कतेक कमासुत परदेश मे रहैत छैक।

`सीट` पर चुक्कीमली बैसल-बैसल हाथ-पयर टटाय लगैत अछि। पयर लग बैसल छौंड़ाकें अपना सीटपर बैसाकऽ हम अपने ठाढ़ भऽ जाइत छी। मोन कने हल्लुक बुझाइत अछि।

लग्घी करबाक मोन होइत अछि। मुदा जायब कोना ओम्हर ! पयर रोपक जगह नहि छैक।

-``हेयौ, कने जाय दीय हमरा। बड़ जोर लग्घी लागल अछि।``

-``राति भरि रोकि नहि होइए?`` ठोकल जबाब भेटैत अछि।

पित्ते तँ होइत अछि जे ओकर मुँह खखोड़ि ली; किन्तु क्यो तेसरे कहैत छैक -``लग्घी-पैखाना लोक कोना रोकतै?... चलि जाउ कहुना कऽ ठेलकऽ।``

हमरा बल भेटैत अछि। कहुना कऽ आगू बढ़ैत छी।

मुदा आहिरेबा ! पेशाबघर सेहो ठस्सम-ठस्स छैक ! - अगबे मौगी !... लग्घीसँ छटपटा रहल छी। बुझाइत अछि जेना पेन्टमे लग्घी भऽ जायत।

किंतु ओकरा सभ लेल धनिसन। निरुपाय हम गरजि उठै छी -`एक तऽ तों

सब बिना टिकट कें चलबही, आ दोसर लोकक पैखाना-लग्घी सेहो रोकबही, नञि?`

अतेक कहि हम ओकरा सभक बीच ठेलि-ठालिकऽ पैसऽ लगइ छी कि एक-दूटा मौगी बाहर होयबाक प्रयास करैत अछि। मुदा, बाहर हेतै कत्त? एम्हर हमर लग्घी बेसम्हार भऽ रहल अछि। हमर बामा हाथ पेंटक अग्रभाम कें कसियाकऽ पकड़ि लैत अछि।

हमर एहन परिस्थिति देखि एकटा अधबयसू कहुनाकऽ डोलैत बजैत अछि - जाय ने दही गे छौंड़ी सब ! देखइ ने छीही पेंट पकरने हइ से? अखने देहे पर कऽ देत्तौ तऽ बुझियही।`

कहुनाकऽ हम पेन तक पहुँचै छी तऽ वैह अधबयसू बजैत अछि :- `ओइ मुँह घुमि कें कऽ लू। हमसब एन्नी मुँह कऽ लइ छी। `लग्घी सँ छटपटाइत हम एकटा आर समझौता करऽ लेल प्रस्तुत भऽ जाइ छी, आ ओकर सभक पीठ पर अपन पीठ अटकाकऽ निर्लज्ज भऽ ठाढ़े-ठाढ़े लग्घी कऽ लैत छी।

हम जखन लग्घी क`कऽ आपस होबऽ लगै छी तऽ ओ अधबयसू कहैत अछि -`बाबू टिकस हमरो आउर के हइ। गामक मोह बूझल नञि हय?`

हमर पएर अनायास ठमकि जाइत अछि। ओतऽ बैसल, ठाढ़ नोनक बोड़ा जेकाँ ठसल लोकक मुखाकृति पढ़ऽ लगै छी। सभक मुँह पर लिखल भेंटैत अछि ओकरा सभक गामक नाओं। किछु दिन लेल सभ जा रहल अछि अपना माँटि पर, जत्तऽ ओकर लोक-वेद छइ। जतऽ ओकर ममता आ वात्सल्य स्नेह ओकर प्रतीक्षा कऽ रहल छइ। जकरा लेल ई सभ बंगाल ओगरने अछि। सभ लेल कोन-ने-कोन अधापन करऽ कलकत्ता तक ठेकि गेल अछि। ओहि स्नेह आ प्रेम कें अनामति राखऽ लेल, सभ किछु सहऽ लेल सहर्ष प्रस्तुत अछि।

हमरा एना ठाढ़ देखि वैह अधबयसू टोकैत अछि -बउआ, की सोचऽ लगलियै? भरि राति अहिना चलतै। आरो लोक लाइन मे हइ। जाउ सीट पर।`

धेआन मे अबैत अछि, वास्तव मे आर लोक औतइ लग्घी करऽ। हम सम्हरि-सम्हरिकऽ पएर रखैत अपना जगह दिस बढ़ऽ लगैत छी।



प्रेम ने बाड़ी उपजय...

`कोना मोन पड़लौं हम?`

अयँ, के बजलै ! कोम्हर सँ ककरा लेल बजलै ! केहेन अनुरोध-विरोध छइ!

असमंजस मे क्यो नहि छल। रहबे कियेक करतै? क्यो सुनलक, क्यो नहि सुनलक। जे सुनलक से मात्र सुनलक, नहि तऽ निष्प्रयोजनीय बुझलक। तेना भ`कऽ कहाँ ककरो धेआन आकर्षित भेलै ! हेबे कियेक करितै ! सभ अपने मे व्यस्त छल, व्यस्त रहऽ चाहैत छल।

जेनाकि हमरे प्रतीक्षा कऽ रहलि होअय। ओ दुर्खाक बहरान दिसक मुँह पर ठाढ़ि रहय। ओकर शब्द सुनैत देरी हमर दुनू पएर धरती मे गड़ि गेल। हम अवाक् आ ओ मुस्किआइत चुप एक-दोसर कें देखैत। शब्द ने लगीच सँ छलै, ने दूर सँ। बड़ सतर्की सँ जेना हमरा कान मे कहल गेल छलै। मिसरी सन मधुर, कमल सन मृदु आ सौम्म, आ गुलाब जल सँ सिक्त। भोरहरिया मे स्वतः झहरल सिङरहारक चारि टा फूल। कोना मोन पड़लौ हम? आ हम चारू फूल लोढ़ि लेलौं।

मुस्की सँ भरल मुँह मे कालगेट टूथ पाउडरक मॉडल सन उज्जर-झकझक दाड़िमक बीआक पाँतीक संग हमरा पर ठहरल ओकर निर्निमेष द्वय चक्षु पल्लव। दप-दप उज्जर वस्त्रावरण आ कान्ह तक छपटल केश-राशि, आ नाक पर चढ़ल रजत कमानी मे गोल-गोल शीशावला चश्मा। अप्राकृतिक किछू कहाँ लगै ! दंभक आभास तऽ लेश मात्र नहि रहै। हाथ मे तिरंगा थम्हा दियौ तऽ अनमन भारत माताक छवि, आ हाथ मे वीणा द`कऽ झील मे हंस पर बैसा दियौ तऽ साक्षात सरस्वतीक प्रतिरूपक समक्ष हम ठाढ़ रही।

कहाँ चाभ बाँसक करची सन ओ पातर-छितर देह, आ कतऽ भरल-पुरल आ रोलल-सोंटल ई देह-यष्टि, कोन अनभिज्ञ लोक कें ई बुझेतै जे माय बनि चुकलि अछि ! संचमंच बैसऽवाली नहि छलि, तें माय-बाप कह` लगलै बुलनी। बस, इएह नाओं पड़ि गेलै, आ से रहिये गेलै। बुलनी आ बुलिया, बुलिया आ बुलनी। दुलार आ अनुराग सँ कहियो काल टपकैत `बूली छऽ हय? हय बुलो ! - ओकरा नेहाल कऽ दइ। शब्दक एहि पोलराइजेन मे ओ बुलनी संज्ञा पर थिर भऽ

गेलि अछि।

तत्काल हिसाब करब मोश्किल छल जे कय बर्ख पर एक दोसर कें देखि रहल छलौं।

`भैया, आबो नञि चिन्हलियै?`

पहिल बेर तऽ मात्र कर्ण गोचर भेल छल। एहि बेर श्रवण-चक्षु दुनू इन्द्री सँ अनुभव केलौं। दोसरो बेर चारू फूल उपरे सँ उपर लोकैत असौकर्य नहि भेल। ओकर मुँहक रोहानी अनामति रहै - आतुर आ उत्साहित रहब ओकर जन्मी गुण छइ। गाम अबै छलौं तऽ सुनै छलियै। जिज्ञासा रहैत छल। पता लगै छल... बुलिया एहन भऽ गेलै, ओहन भऽ गेलै। धुर-जो, ओ बुलिया आब धएले छइ? चिन्हबो नहि करबै? बात-बिचार ततेक ने सुन्दर भऽ गेलैये जे...। देखबै तऽ लागत जे कोनो पैघ घरक बेटी छइ।

`धुर जो, बूलो तऽ हइ ! नञि चिन्हलियै बौआ? सएह बुझियौ ! एके संगे खेलाइ-धुपाइ, धियापुता रही तऽ अहाँक बाबू पइसो देथिन` -सिमरीवाली अर्थात बूलोक माय आबिकऽ ओकरा बगल मे ठाढ़ि भऽ गेल रहथिंन। हम मुस्किआइत आगू बढ़ि गेलौं। रस्ता स्वतः भेटि गेल छल। ओहि दुर्खाबला घर मे हम ठाढ़ भऽ गेलौं। चार बला टटौ घर। टाट भीतर सँ सुरुचिपूर्ण डिजाइन मे लेबल आ ढेउरल रहै। मिथिला आर्टक चित्र पाड़ल रहै। किछु कैलेंडर आ फोटो टाँगल रहै। एक कात सँ सुसज्जित चौकी आ तकरा बगल मे दूटा कुर्सी राखल छलै। घरक एक कोन्ह मे ढोलक, हरमुनियाँ, क्लारियोनेट, सहनाइ आ कतेक तरहक साज-बाज सजाकऽ राखल रहै। अपना भाय सभकें सभटा कीनि देने छइ। अपनो गीत गाब` जनैत अछि।

मोन खुश भऽ गेल। हम अपने सँ एकटा कुर्सी कने आगू खीचि कऽ बैस रहलौं। नजरि घुमाघुमाकऽ घर कें देखऽ लगलौं।

`गय बूलो बियनि लबै, ता हौंक दइ छियनि। घामे-पसेने बैआ नहा गेल छथिन`। सिमरीबाली बजलथिन।

बियनि ओतै चौकिये पर रहै। बुलौ हौंकऽ लागलि। हम ओकरा हाथ सँ बियनि लेबऽ लगलियै तऽ हाथ छीपैत बाजलि -`की हम एतबो जोगरक नञि छी?` माय दिस ताकैत फेर बाजलि -`कहैत कोनादन लगैये। कने चाह-ताह नञि हेतइ? कोनो सुरसार नञि देखइ छिअइ? देखै नञि छीही? हमरा सऽ नञि बजबाक

सप्पत खाकऽ आयल छथिन भैया। पता नञि, कोन गुनधुन मोन मे चलि रहल छनि से।`

`नञि बूलो, से बात नञि छइ। खुशीक उद्वेग मे शब्द आ ढंग दुनू बिसरि गेल छी। जतेक सुनै छलौं ताइ सँ बेसिये देखि रहल छी। आँगन मे पएर दीते देरी माय कहलकि -`बड्ड बेर पर पहुँचल छह। अइबेर बूलो सऽ भेंट भऽ जेतऽ। काल्हियेतऽ अपना आँगन आएल रहै। जतेक जाइ नञि, ततेक तोहर आ कनिञाक चर्च करै। तोरे अबाइ दऽ सुनि रहि गेलैये। आब एतै सऽ गाड़ी पकड़ऽ दरभंगा जेतै। एके बेर मे माय बाजि गेल रहय`।

बूलो बियनि हौंकैत रहलि। टकटकी - नजरि सँ हमरा देखैत रहलि। हमर एक-एक शब्द कें पीबैत रहलि आँखि कान आ हृदयसँ। ओकर मोन अपना दिस बाँटऽ लेल हम कहलिऐ -`भौजी सेहो एलथुन्हें।`

`अयँ सत्ते ! काकी से कहाँ कहलनि? ई तऽ हमर भाग अछि !` ओ चेहाइत-चहकैत बाजलि। कय बर्ख पहिनेक बूलो मोन पड़ि गेल। उत्साहित होइत फेर बाजलि -`गय माय सुनै छएँ? भौजी सेहो एलथिन्हें। माय कें एम्हरे अबैत देखि ओकरा रहल नञि भेलै।

`की कहू बौआ ! आब तऽ गामे मे सब सुविधा भेल जाइ हइ, बूलो तेहेन ने चूल्हि डिल्ली सऽ नेने एलै परुकाँ जे तड़फड़वला काज ओही पर कऽ लइ छियै` - कने उच्च सुनबाक कारणे सिमरीवाली बेटीक बात नहि सुनलथिन। तें ओ अपने बात बजली।

`गय बहिरी ! तों सुनलही नञि? भौजी सेहो एलथिन्हें !-`एहिबेर बूलो कने जोर सँ बाजलि छलि।

`सत्ते बौआ?` - सिमरीवाली आनन्दित होइत हमरा पुछलनि।

- एबाक बिचार नञि रहनि। बाप दुखित छनि। एक्के रिजर्वेशन पर कहुनाकऽ चलि एलियै दुनू गोटे।

- नीक केलौं। हुनका देखला हमरो बहुते दिन भऽ गेल। बड्ड लोकसारि छथिन।

- अच्छा, छोड़ आब ई सब। हम जाइ छी भैया संगे।

- धुर जो, कतेक समय लगतै जे...।

सिमरीवाली कहैत-कहैत चुप भऽ गेली आ नजरि बेटी पर अंटकि गेलनि।

- मुँह किये ताकऽ लगलही? की बात हइ गे माय?

सिमरीवाली तहन निधोख बजली -`बौआ अपना घरक किछु नहि खेने छथिन आइ तक।`

`तहूँ हद केलएँ माय। दुनियाँ कहाँ सँ कहाँ भागि गेलै। चाह तऽ पीबिए लेथुन तोरा घरे मे तोरे बनाएल।`-बूलो माय कें देखैत बाजलि।

`हँ, से तऽ सत्ते। से सब आब भोट तक छइ। बंगाल मे तऽ एकेटा जाति छइ बंगाली`। - हम बूलोक समर्थन केलियै।

`से एतुक्का लोक बुझै तहन ने`! - बूलो उदास होइत बाजलि।

से सब तऽ हम अपने डिल्ली मे देख एलियैए। एक्के ठीआँ काज करै हइ। खाइतो-सुतितो हइ जरे-जरे। बरनेमा आब धएले हइ?` - कहिकऽ सिमरीवाली आँगन चलि गेल रहथि।

`एकटा बात पुछू भैया?` एकरत्ती बिलमैत फेर पुछलकि -`सत्-सत् कहब ने?

आ दोसर कुर्सी खीचिकऽ हमरा सामने मे कने निघुड़ैत सन पोज मे बैसिक` फेर पुछलकि -`हम मोन पड़ैत रही अहाँ कें?... सत्-सत् बाजब !`

- माय नहि मानलकि तऽ जलखै करऽ पड़ल। हम तऽ सूनिते आबऽ लागल रही। डर भऽ गेल जे काल्हिये जहन तोहर गाड़ी छउ तऽ कोन ठीक। पहिने भइये आबी।

- भौजी कें हमरा दऽ बूझल छनि?

- तोरा सऽ भेंट कर` लेल आतुर छथुन। ... सब बात कहने छियनि।

करीब पाँच बर्खक एकटा बच्चा एलै आ बूलो सँ लेपटाकऽ आ चोराकऽ तरेतरे हमरा देखऽ लागल।

-`बौआ, मामा के गोर लगियनु। ई छथि सब सँ पैघ पढ़ुआ मामा।` हमरा दिस तकैत बूलो बाजलि -`ई छइ छोटका। जेठका काल्हि बापे संगे दरभंगा एतै। ओ सात किलास मे छइ अइबेर।`

सिमरीवाली कोनो काज सँ एहि घर एलथिन, आअबिते, अकचकाइत बाजऽ लगलथिन -`जा ! जा ! साड़ी खराप कऽ देलकै से नञि देखै छीही? नञि जानि के कत्तऽ जामुन दऽ दइ छइ !`

- देखलियै हम। ओकरा एखन ज्ञाने कतेक हइ !

`चल बौआ, मुँह धो दइ छियौ` - सिमरीवाली ओकर डेंग ध` लऽ गेलथिन।

एकरत्ती लेल दुनू गोटे चुप रहलौं। हमही चुप्पी तोड़ैत पुछलियै - बूलो, मोन पड़ै छउ गोटरस, सुर्रा, सलहेस थान, भालसरी फूल गाँथब तों कतेक जामुन खुआबए हमरा से सब बिसरि गेलही?

बूलो मुस्कियाकऽ रहि गेलि। ओकर नजरि बगल मे टाट पर अंटकि गेलै। हम अपने नेनपनक ओहि निःछल अवस्थाक, क्रीड़ास्थल पर पहुँच गेलौं। बड़ मनोयोग सऽ स्मृतिक ओ पन्ना सभ उंटाबऽ लगलौं। पन्ना सभ तऽ वैह रहै जे हम दुनू गोटे मिलिकऽ लिखिने छी, आ चित्र सभ पाड़ने छी। किछु चित्र सभ आइयो ओहिना मोन अछि जेना आइये एखने पाड़ल गेलैये।

मैनाक बच्चा सिलोरिया रे, दू गो जामुन खसो।
लली खसेबे तऽ मारबौ रे, दू गो कारी खसो।।

- हे गय बूलो, आइ नञि देबएँ जामुन?

- तों किताब दइ छएँ पढ़ऽलेल? आब नञि देबौ। तोहर चलाकी बुझै छियौ।

- तों मंगलए कहिया से?

- हम तऽ अछोप छियै। तों अपने सऽ दीतय, तहन ने?

- हमरा माय कें तोहर माय रुपैया दइ छइ तऽ खूट मे बान्हि लइ छइ !

बड़का-बड़का बरक पात पर हम आ बूलो जामुन खाइ आ गप्प करी।

- बाप रे, तों तऽ छुआ गेलही रे ! हमर ऐंठ खा लेलही। हमर माय हमरा मारत ! - हम ओकर जामुन लूझि लिअइ तऽ कहय।

- अखन हमर उपनाएन थोड़बे भेलैये? हमहूँ अखन अछोपे छियै।

- रे सोमना,तों तऽ चुगिला भऽ गेलही !

- तोहर तऽ जेना द`ढ़े छउ। हम चुगिला, तों चुगिली।

- सत्ते रे?

- जो ने, पानि मे मुँह देख ने आ।

- बस फुटि पड़ै हँसीक फुहारा। सितार झंकृत भऽ उठै। ताल देबऽ लगै मृदंगक थाप हमर हंसी।

हमरा दुनू गोटेक `क्लाइमेक्स`वला पन्ना जकरा कि हम नहि बिसरि

सकलियैये, तऽ ओ कोना बिसरतै !

झिझिरकोना झिझिरकोना कोन कोना जाउ ?

बेल तर मारलक बबूर तर जाउ !

एकदिन कुठाम मे लागि गेलै। ओ छटपटा गेलि छलि। कतबो अपना कें थाम्हऽ चाहने छलि, तैयो कना गेल रहै। खेल तहने उसरि गेल रहै। बूलो नहि, तऽ झिझिरकोना नहि। दुनू हाथे छाती दबेने दरबज्जाक कोन्ह दिस घूमिकऽ हिचुकि-हिचुकि कऽ कानऽ लागलि छलि। हमरा अकबक किछु नहि फुरा रहल छल। बूलो कें टोकबाक साहस हमरा नहिएँ भेल छल। ताहि मे सभ हमरे नाओ बाजइ - `सोमना तऽ मारलकैये। आब ओकर खेल कट्टिस कऽ दे !`

बूलो चुपचाप पोखरिक भीड़ पर बैसि रहलि छलि। हम दूर सँ ओकरा जाकऽ देखैत ठाढ़े रहल रही। कनेकाल बाद ओ घूमिकऽ तकने छलि। हमरा छोड़ि तखन आर क्यो नहि रहै ओतऽ। ओ चुपचाप पोखरि मे झिटका फेकऽ लागल छलि। हमर साहस बढ़ि गेल छल। हम गौं सँ जाकऽ चुपचाप ओकरा पाछू मे ठाढ़ भऽ गेल रही। बीच-बीच मे ओ बगल सँ किछु-किछु ल` कऽ शांत-स्थिर जल सतह पर उपद्रव मचा दैत छलि - `चुभ् !` `चुभ् !`

एक बिन्दु सँ बृत्त बनब आरंभ होइ आ क्रमशः पैघ होइत-होइत विलिन भऽ जाइ। ओ फेर बैसलि-बैसलि झिटका अथवा जे किछु हाथ मे अबै छलै, ताहि सँ पानि पर हलचल मचा दैत छलि। प्रायः ओ अपना भीतर मे उठल स्पंदन कें एही तरहे अक्षुण राखऽ चाहैत छलि। एकटा प्रकंपित अणु पासक अणु कें स्थिर कोना रहऽ दितै? ओकर तखुनका जिद्द देखहेवला रहइ। शान्त-स्थिर सतह सँ जेना ओकरा डाह भऽ गेल रहै।

हम ओकरा पाछू मे ठाढ़ रहियै से ओ अपना ढंग सँ अटकारि लेने छलि। मुदा, तैयो अनभिज्ञताक रंग-ढंग अपनेने रहलि छलि। अगल-बगल मे तेहन किछु फेकऽवला नहि रहल रहै। ओ दूर-दूर तक हथोड़िया देबऽ लागलि छलि। एहि स्थिति सँ उबारऽ लेल हम ओकरा बगल मे बैसि गेल रहियै। तथापि ओ धनिसन बनलि रहलि, आ जल सतह पर हिलकोर मचबऽ लेल किछु तकैत रहलि।

- बूलो तोरा बुझाइ छउ जे हम जानिकऽ मारलियौ?

ओ हमरा दिस तकने छलि, आ तकिते रहि गेलि छलि। हमरा आँखि मे,

मुँह मे, मोन मे आ हृदय मे जेना किछु हथोड़ऽ लागलि छलि।

- बूलो हमरा सऽ भूल भऽ गेल। भारी-स-भारी भूलक क्षमा होइ छइ। आब हम कहियो झिझिरकोना नञि खेलबै।

पानि मे अंतिम झिटका फेकैत ओ बाजलि छलि - `अइ मे झिझिरकोनाक कोन दोख हइ? ई तऽ छूबेवला खेले हइ। हमसब नञि खेलबै तऽ संसार सऽ खेल उठि जेतै?`

आइयो ओहिना मोने अछि हमरा जे नोरक सुखाएल टघार ओकरा गाल पर ओहिना रहै। हम जहिना कहने रहियै - `जो घाट पर मुँह धो ले गऽ` - तहिना बूलो हमर बात मानि लेने छलि।

चोरीवला कोनो बात रहबे नहि करइ। ओकरा माय कें से सब पता लागि गेल रहै। तखने बेसी मिलब-जुलब बरनेमा भऽ गेल रहै। बर्ख बीतैत-बीतैत ओकर गौना करा देल गेल रहै। हम मैट्रिक पास क`कऽ आगू पढ़ऽ लेल बाहर चलि गेल रही।

आइ अतेक बर्खक बाद बूलो सँ भेंट भेला पर अर्थक नव-नव पर्त सभ अपने आप खुजैत गेल। निश्चित रूपें आभास भेल रहय जे ओहो ओही पन्ना सभ कें उंटाबऽ मे हेरा गेलि छलि। ताहि सँ उबारऽ लेल हम टोकि देलियै -`बूलो, जेबही नै भौजी सँ भेंट करऽ?

ओ चेहा उठलि। निर्निमेष क्षणभरि हमरा देखलकि आँखि सऽ ढबकल नोर पोछलकि आ उठैत बाजलि - `हँ-हँ,चलू ने।` आबाज भड़भड़ा गेल रहइ।

सिमरीवाली जेना सुनिते रहथिन, तखने आबि गेलथिन -`साड़ी बदलि ले ने?`

भैयो आँगन लेल पाग-डोपटा? भौजी बुझथिन ढहलेल छी हम, सएह ने?` बूलो कहलकै।

मुस्किआइत, हमरा दिस ओ तकलकि आ आगू-आगू बिदा भऽ गेलि। हम बूलोक बच्चा कें कोरा मे लऽ नेने रहियै।

●●●

पिपनी पर नोर

हम आ` हमर मीत शर्माजी बेसी काल भोर खनकऽ नदी कातमे घूमऽ चलि अबै छी। एहि उपनगरीय क्षेत्रमे एहि उद्देश्य लेल ई सभसँ उपयुक्त स्थान छइ। एत`-स-ओत` धरि आगू-पाछू जेम्हर मोन होअए, घूमि लिअ। जगह-जगह पार्क आ` बैसबाक जगह सभ बना देल गेल छइ। नदी किछेर मे जुआरि-भाटा सँ पाटल काटि पर हरियर दूभिक कालीन जमल-पसरल भेटत। जहाँ-तहाँ बैसल चोंचमे-चोंच मिलौने मुस्किआइत, हँसैत आ` गम्भीर चिन्तनमे डूबल जोड़ी सभकें देखि लिअ। एक-आध जोड़ीक कहिओ-कहिओ अश्रु-पूरित नेत्र सेहो देखऽमे आबि जाएत। अर्थात् सुख-दुख दुनूक स्वतंत्र अभिव्यक्तिक नियामक शांत स्थल सेहो अछि ई।

हमरा दुनू गोटेक ई नियम अहिना नहि बनि गेल अछि। दुनू गोटेक डाक्टर एक्के छथि। हुनका बिचारे ब्लड शूगरकें काबूमे रखबाक लेल आधुनिक चिकित्सा पद्धतिमे ई बहुत उपयोगी उपाय साबित भऽ रहल छइ। हम आ हमर मीत, दुनू गोटे ब्लड शूगरक रोगी छी। डॉक्टर एकटा आर बहुत सुन्दर बात कहने छथि जे आन उपचार एवं नियम निष्ठाक संग कम-सँ-कम दस मील प्रतिदिन घुमने एक-डेढ़ बर्खक बाद दबाइ छोड़` पड़ि सकैत अछि। एहि बातक असरि दुनू गोटे पर बहुत पड़ल। मीत छथि बड़ आसकती लोक। देहकें लारब-चारब सभसँ कठिनाह काज बुझाइत छनि। दुइयो डेग रिक्शे सँ चलै छथि। मुदा, हमर आग्रह आ संग हुनका बाध्य कऽ देलकनि। हमरो तऽ एकटा संगी जरुरी छल। हमरा लेल तें आर पंजबहि पएर। बतिआइत-सतिआइत दुनू गोटेक रस्ता आ समय अबूह नहि लगैत अछि। ओना हगामा लोक हुगली कातमे घुमनाइ सँ ल`कें व्यायाम, जौंगिंग आ रामदेव बाबाक अनुलोम-विलोम, कपाल-भाति आ अन्य योगासनमे संलग्न रहैत अछि। किंतु, शर्माजी सन मीत संगमे रहने बात किछु आर रहैत अछि।

हमरा टोलक पएरा आ गंगा कातक रस्ताक मिलाने पर पहिल दिन हम बामा हाथ दिस घुमले रही कि मीत धुकचुकाइत परोक्ष रूपें मना कएने रहथि` ओम्हरे चलबै की?`

फेर मोनमे की भेलनि, से पता नहि। बेसी तारतम्य मे नहि ओझरा वामे दिस आगू बढ़ैत बाजल रहथि -`अच्छा चलू। कोम्हरो चलू। टहलबासँ प्रयोजन

अछि।`

एहि बातकें तखने बिसरि गेलिऐ। बातो तऽ तेहन कोनो रहै नहि।

डॉक्टरक बातकें गीरह बान्हि प्रायः बेसी काल दुनू गोटे संगे-संगे घूमऽ जाइ छी। मुदा, दस मील घूमब सम्भव नहि भेल शुरू मे। छह-सात मील मुदा पुरा दिऐ दुनू साँझ मिलाकऽ। किछुए दिनक बाद मीत खनहन मोने बजला -`आइ तहन भऽ चलय दस मील`।

`आह् ! अहूमे मीन-मेष ! डॉक्टरो तँ बूझत जे हम सब मात्र दबाइये फाँकऽमे विश्वास नहि रखै छी।`

`हँ-हँ, देखिऐ तऽ अजमा कऽ। मीतक उत्साह द्विगुणित भऽ उठलनि। `धुत, किये ने हेतै ! हम तऽ पनरह-पनरह मील तक घुमने छी`। हमर बेधड़क उत्साहवर्धक समर्थन झूठक सहारा लेब` मे। आगू-पाछू नहि सोचने छल। पाछू जहन अख्यास भेल तऽ सोचलिऐ। सन्तोष भेल जे एहन झूठक सहारा लेबा मे लाभ छोड़ि हानि नहि छइ। एतसँ जहाँ धरि जाइ छी, चारि बेर नित्यप्रति से जोशमे ठीक आठ बेर भऽ गेलै। हम कहलिअनि, - `मीत, किछु साँझो लेल छोड़बै ने?`

हमरा सभक घरमे सभ सूतिकें उठिते छइ सात-साढ़े सात बजेक बादे। तें घर पहुँचबाक चिंता आने दिन जकाँ छल। कियेक तँ हमरे सभ पर नित्यप्रतिक जिम्मा रहैत अछि। तीमन-तरकारी, दूध-माछ आ` घरक फरमाइसक अगरम-बगरम कीनब-बेसाहब। नहि तँ ऑफिस आ स्कूलक रूटिन गड़बड़ा जेतै ने। एम्हरेसँ घुरैत काल से सब कीन लै छी दुनू गोटे। अवकाश प्राप्त समयक सदुपयोग सहभागिताक संग करबामे धेआन रहैत अछि।

हँ-हँ चलू। बूझि गेलिऐ आब। अगिला रविसँ दस मील भोरेमे पुरा देबै। रवि दिनक कि होली-डेके दिन धियापूताक हाथ-बाट रहै छै। निफिकिर रहब।` मीत कहलनि।

अगिला रविकें बेसुरतामे आर बेसी चला गेल। तें बिचला बैसार पर तहिना बैसियो रहिलियै बेसी काल दुनू गोटे। थाकि जे गेल रहिऐ बेसी, से उठबाक मोने नहि भेल। एतबे मे एकटा बूढ़ा छँड़ी टेकैत हमरे सभ दिस टुघरल अबैत सन बुझाइ पड़ला। ओ दूरे सँ बजला, `आइ पकड़ा गेलौं शर्मा जी। बड्ड छिटकल घुरै छी। हम केहन लस्सा छी, से बूझबै आइ।`

`देह मे सक छइ नहि, आ बोलीमे टेसी केहेन` ! हमरा मुँहसँ तत्क्षण निकलि गेल।

तामे ओ हमरा सभ लग पहुँच गेल छलाह। ओकरा स्वागत मे शर्माजी उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेल रहथि। ओ बूढ़ा कने ठिकिया कऽ हमरा देखैत बीचमे बैसबाक उपक्रम कएलनि तऽ हम कात दिस डोलैत जगह बना देलियनि। बैसते-बैसते ओ बजला -`हमरा बारे मे तहन अहाँ नञि जनै छी। एहन ठेसी नहि रहैत तऽ डी.आइ. जी रैंक तक पहुँचब सपने रहि जाइत। रोब जमबऽ मे अबाजक बड महत्व छइ। आ` ताइमे पुलिस विभागमे? सब गुण अछैत बोली रहत पठरू सन मेमिआइत तँ सब गुण गोबर ! की यौ शर्मा जी?`

हम तऽ लाजे गड़ि गेल रही जे अपना भरि तऽ हम नहुँएँ सँ बजलिऐ, मुदा बूढ़ाक कान सिक्स-बाइ-सिक्स छनि से की पता?

बूढ़ा मुदा हमर मन:स्थिति बूझि गेला। हमरा लजाएल सन देखि कहलनि - `कोनो बात नञि। एना भऽ जाइ छइ। कम की बेसी बात टीपब मनुक्खक सोभाव छइ। हमरा तकर कनिको दुख नहि अछि। हम केहन लोक छी से शर्माजी जनै छथि। हिनका सँ बड़ पुरान परिचय अछि। हम रही एहि थानाक प्रभारी, आ` शर्माजी, ओ जे बम्मा देखइ छिऐ ठाढ़, ओही फैक्ट्रीमे एडमिनिस्ट्रेटिव इंचार्ज छलाह। आब तँ दुनू गोटे दोस्तियारे जकाँ छी।`

ओ कने गुम भऽ गेला, आ फेर कहऽ लगला, `हम बड़ कुलषित लोक छी। साओन-भादवक मेघ जकाँ उमड़ि-घुमड़िकऽ हमर कृत्य सब सता रहल अछि। उपकारो केनहिं छिऐ लोकक। मुदा, विश्वास हेतै ककरो? ई लाइने तेहने छइ। वर्दी पहिर लिअतऽ राक्षस, उतारि लिअतऽ मनुक्ख। लोक विश्वास कैये लेत तऽ हमरा मुक्ति भेटि जाएत? नहि ने? मुदा, तैयो सज्जन लोक पाबि मोन हल्लुक कऽ लइ छी। थोड़बो काल लेल आत्माकें सन्तोष भेटि जाइत अछि। कने काल लेल जीवन सँ मोह भऽ जाइत अछि।...पइसा ! हा पइसा !` परिवार ! हा परिवार ! मात्र एतबेटा जिनगी होइ छइ? अतेक ज्ञान होइत-होइत बस टन्न`!

ओ फेर गुम्म भऽ गेला। हमरा लागल जेना बेसिये बजा गेलनि हमरा सन अपरिचित लोक लग। तें तकर पश्चाताप छनि, अथवा एकर काट सोचि रहल छथि। ई बात सोचिते रही कि शर्माजी तँ सबटा कहनहि हेता?`- ओ बेलागि भऽ

पुछिए देलनि। हमरा झन्नदऽ माथमे उठल। हम विस्मित भऽ गेलौं।

`नञि, नञि ! बस आइये अखने जतबे सुनलौं, बस ततबे। जानबा-सुनबाक रूचि तँ परिचिते लोकक बारेमे रहै छइ ने?` हमर सहज जवाब तत्काले हुनका भेटलनि।

`हँ, से तँ अहाँक बाजबे सँ साफ अछि। तें कने खुलऽमे हमरो असौकर्य नञि भेल। शर्माजी पर कय दिन नजरि पड़ै छल। संगमे देखि होइ छल जे आहाँ गेस्ट छिअनि। तें अनेरे बाधा देब ठीक नहि बुझाइ छल। मुदा, आइ मोनमे पक्का भऽ गेल जे अहाँ गेस्ट किन्नहु नहि भऽ सकै छिअनि। ककरा समय आइ-काल्हि छइ जे अतेक-अतेक दिन पहुनाइ करत। आन दिन आहाँ सब बैसतो कहाँ छलौं अतेक काल एतऽ। एक दिन तऽ जाबत अपना गेट सँ निकली-निकली, अहाँ सब नदारद। सभ सँ पैघ कारण तँ ई जे अहाँ सब बड्ड सकाले निकलै छी। हम तँ सुतिये कऽ उठै छी आठ बजेक बाद। आहाँसब पकड़ाइ छलौं नञि। अच्छा चलू हमरा घर। नौ बजि रहल छइ। हमरा दबाइ लेबाक समय सेहो भऽ गेल। चाह बनि रहल अछि। कहि आएल छिऐ।`

अतेक बाजि कऽ डी.आइ.जी साहेब ठाढ़ भऽ गेला। शर्माजी संगे लागल ठाढ़ भऽ हमरा दिस तकलनि। आब आगू-पाछू सोचऽ लेल बाट कहाँ बाँचल छल हमरा लेल।

डी.आइ.जी. साहेब छड़ी टेकैत डेग आगू बढ़ा देने छलाह। अगल-बगल आ आगू-पाछू होइत हम दुनू गोटे हुनकर संग देबऽ लगलिअनि चुपचाप। डी.आइ.जी. साहेबक छँड़ीक मृदु ठक्-ठक् चुप्पी कें मुदा खटकऽ नहि दैत छल। अंदाज इएह लागल जे छँड़ीक गोरामे लागल रबड़क टोपी खिआ गेल छनि। नहि तँ कतबो पक्का रस्ता किये ने होइ, छड़ीक क्वालिटी देखि ठकठकाएब सम्भव नहि भए सकै छलइ।

गेटक भीतरमे प्रवेश कऽ डी.आइ.डी. साहेब हमरा दिस उनटि कऽ देखलनि। हम तखन गेटक बाहरे कने दूरी बनबैत टुघड़ैत सन रही। हम अपना गतिकें कने आर मद्धिम बना देलिऐ।

सीढ़ी पर दऽ उपर चढ़ैत काल ओ दुनू गोटे अगल-बगल भऽ कें पएर उठबैत एना बुझएला जेना लतमारा सभ कें गनिगनि चढ़ि रहल होथि। देखादेखी

हमहूँ कने पछुआएले सन हुनकर सभक गनती कें जाँच करैत सन डेग उठबऽ लगलौं। कारण, सीढ़ीक चकरैयो तऽ ततबे रहै। कहबीयो छइ - `राजाक बगल मे चलब खतराक घंटी होइ छइ।`

सामने हॉलमे पैसिते नजरि पड़ल सोफा पर बैसलि यौवन सँ परिपूर्ण करीब तीस-बत्तीसक औन-पौनक जिनगीक सभ तरहक अर्थ प्रदान करबाक क्षमता राखऽवाली युवती पर। हमरा देखिते ठाढ़ि भए गेलि ओ। हम बिल्कुल नव लोक जे रहिऐ ओकरा लेल। ओकर स्मित-सिक्त ओष्ठ- पल्लव किंचित विगलित भऽ गेलै से मात्र शिष्टतावश। डी.आइ.जी, साहेब सँ ओकर आँखि मिलिते ओकरा मुखाकृति पर एकटा अभिभावकक डाँट पसरैत देरी नहि भेलै- `घड़ी देखियौ तऽ? की अहाँ कें अपना दबाइ खेबाक चाँकि नहि हेबाक चाही?`

डी.आइ.जी. साहेबक मुँह मुस्कीक संग खुजि गेलनि, `अरे एक आध दिन सऽ फर्क नञि पड़ै छइ। शर्माजी सन प्रिय लोक कतऽ पाबी। ई बेचारे से एकटा नीक लोक भेट गेला। हमर सौभाग्य। ईहो हमरा लेल दबाइये छथि ने!`

हम शर्माजी दिस तकलिअनि। ओहो हमरा देखलनि।

डी.आइ.जी. साहेब अपना आराम कुर्सीपर बैसि गेला। हमरा सभकें ठाढ़े देखि बजला, `एना किए शर्माजी? अहाँ तँ नव लोक नञि छी?`

हमरा दिस तकैत अपना बामा कातक सोफा पर बैसबाक संकेत केलनि। हम आ` शर्माजी ओहि पर बैसि रहलौं।

युवती तीनटा गिलास मे पानि ध`कऽ लगले फेर तीनटा ट्रे मे सैंडविच सेहो अनलकै।

`अहाँक नाओं की भेल श्रीमान?`

`वेदप्रकाश।`

`वाह ! की सुन्दर ! अहाँक माय-बाप निश्चय सुसंस्कृत रहल होयताह। ओ लोकनि छथि तँ?`

`नञि। गोलोकबासी भऽ गेल छथि।`

`वेदप्रकाश जी, हम दिन-दिन बिसरभोर भेल जाइ छी...।`

`ताहू मे सन्देह`-एकदम निःशब्द हमर दुनू ठोर कने उपर-नीचा भऽ उठल।

`किछु कहलिऐ अहाँ? बाजू ने ! बाजू ने !`

`नञि-नञि, कने अन्यमनस्क भए गेल रही।`

`कोनो संकोच नञि करब। अपने घर छइ।`

`नञि नञि, अपने बजियौ।`

`हँ, तऽ हम जे कहैत रही जे परिचयक आरम्भ तँ नाञे सँ होइ छै ने? से पुछब हमरा आब प्रयोजनीय बुझाएल अछि। ओमहर सामनेमे देबाल पर देखियौ ओ दुनू फोटो। हमर बेटा-पुतहु छथि। दुनू छथि एम.डी.। एकटा पोता आ` एकटा पोती, से अछि। कोरा-काँख लेब ककरा कहइ छइ, से सेहन्ता लगले अछि। कोरैला बच्चा कोरामे कोना पैखाना-पेशाब क`दइ छइ से सुख नहि बुझलिऐ। अपन सभ किछु छनि। अपन नर्सिंग होम, से छनि। हम एतऽ आन डाक्टरसँ देखबै छी।`

कहैत-कहैत हतप्रभ भए गेला डी.आइ.जी. साहेब। फोटो पर सँ नजरि ससरि गेलनि। हमरा दिस ताकऽ लगला। आ भीतरक शेष क्वाथ निकालऽ लगला। -`हमरो संग तऽ मजबूरी छल। हमरो बेटा ब्रती भऽ गेल छल। `ब्रती`क अर्थ बुझिते हेबै? हम अपना व्रतीकें बचा लेलौं। पूरा परिवारकें एक तरह सँ बचा लेलौं। ई अपराध भेलै? माया-ममताक जड़ि परिवारे होइ छै ने? अपन-आन बूझब-सीखब लोक एतै सऽ जनैये ने?`

ओ कने फेर चुप भऽ गेला। भीतरक क्षोभ मुँहपर पसरि गेलनि। हमरा बगलमे शर्माजी सोफा पर पाछू भरे ओङठिकऽ पसरल आँखि मुनने औंघाएल सन बुझाइ छलाह।

`शर्माजी, राति निन्न नहि भेल की?` - डी.आइ.जी. साहेब पुछलथिन।

`आइ तीने बजे निन्न टूटि गेल। फेर निन्नो कहाँ भेल`! - शर्माजी सोझ होइत बजला, आ` फेर हमरा देखलनि जेना कहऽ चाहैत रहथि - एहन झूठ, झूठक श्रेणीमे नहि अबै छै। ई बुढ़बा जे कहैऐ सुनि लिअ चुपचाप।

`हमरो बेसी राति निन्न उचटि जाइये। अहाँ कें तऽ सभटा बुझले अछि शर्माजी ! हिनको किछु-किछु कहि दिअनि। सज्जन लोककें कहने बड़ संतोष होइत अछि। ...

.... हँ तँ वेदप्रकाशजी, एहि जन्मक फल हमरा अही जन्ममे भेटि रहल अछि। ई नान्हिटा बात नञि छइ। अगिला जन्म लेल रखबे किये करू?... वेदप्रकाश जी, अहाँकें पुनर्जन्ममे विश्वास अछि?

एहन अप्रत्याशित प्रश्न पर हम कने सकपका तँ गेलौं, मुदा तैयो अपनाकें सम्हारलौं तँ तत्काले प्रत्युत्पन्नमति संग देलक - `कोनो नियामक धारणा नहि पोसने छी। ओना पाप जे करय, से ने सोचय ई सब।`

हमर ई बात हुनका नीक जकाँ छुलकनि, ताहिमे मिसिओ भरि सन्देह नहि। ओ बकर-बकर सामनेमे नीचा उतरैत सीढ़ी दिस ताकए लगला, आ हम टुकुर-टुकुर हुनका दिस जे, जे घड़ी ने जएबाक आदेश भेटि जाए। कहबी छै, `सड़लो भुन्ना, रहुक दुन्ना` से भय समा गेल हमरा मे।

शर्माजी हमरा बगलमे निश्चिन्त भऽ आँखि मुनने आराम फरमा रहल छला। हमर आशंका बढ़ि रहल छल।

डी.आइ.डी. साहेब मुदा फेर सहज रूपें कहब आरम्भ कएलनि तऽ प्रकृतिस्थ भेलौं।

`छोड़ू एहि सबकें। एकर सभक निर्णय ने भेलैए, ने हेतै। ई सब मनुक्खक दिमागिक प्रपंच छै। सबटा ठकहरा बुद्धि। हम तँ एतबे बुझलिऐ जे जिनगी बौआएब छोड़ि किछु नहि छइ। चार्वाक तऽ कहने छथि - `ऋणं कृत्वा घृतं पीवेत्।`

...श्रीमान् अहाँ महाश्वेताक `1084क माँ` पढ़ने छी?... नहि ने? ठीके नहि पढ़ने होएब। एकबेर अवस्स पढ़ब। शर्माजी पढ़ने छथि। हमही देने रहिअनि किताब। इच्छा होअए तँ अहूँ लऽ जा सकैछी। अहाँ घुरा देब पोथी, से विश्वास अछि। दूटा एहिनामे `पर हस्ते गता-गता` भऽ गेल`। ई तेसर प्रति अछि। धृष्ठता लेल माफ करब।`

कहैत-कहैत आराम कुर्सी पर ओङठि गेला, आ` उपर छत दिस ताकऽ लगला। आरामक स्थितिमे सोचब कि मोन पाड़ब सुविधाजनक रहतनि तेहने सन स्थिति हमरा बुझाएल। हम किछु आर सुनबा लेल उत्सुक भए गेलौं। आ तें हमर नजरि हुनका परसँ एम्हर-ओम्हर नहि भेल।

डी.आइ.जी. साहेब बड़बड़ाइत सन, मुदा स्पष्ट शब्दमे, बाजऽ लगला:-

`एकछेहा न्यू ब्लड ! स्कूल-कॉलेजक छात्र सब। बारह-तेरह सऽ ल`कऽ वाइस-तेइसक भीतरे नवछुहिया सभकें जंगल मे छोड़ि देने रहियै ! गाड़ीसँ उतरि कें सब नारा देने रहै, `वंदे मातरम्!` वंदे मातरम! पता नहि, की भेलै तकरा बाद !`

हमरा भेल आँखि ढबक`-ढबक` पर आबि गेल छनि। दुनू आँखिक दुनू भीतरका कोर रूमाल सऽ पोछलनि। मुदा, ओ अपने बजला - : किछु दिन सऽ आँखि कचिया जाइये। डाक्टरो सब नञि बुझइ छइ।`

एकेरत्ती मे मुदा नोर रोकल नहि भेलनि। डी.आइ.जी. साहेब दुनू हाथे मुँह झाँपि बच्चा जकाँ फफकऽ लगला। `भेल ने? हम तँ जखने नव लोक अहाँ संगे देखलौं तँ मोन छगा गेल छल। अहाँ कें कहने व्रती सब घुरि एतै? सब व्रतीक माइक नोर कहिआ ने सुखा गेलै1। युवती कॉफीक ट्रे सजौने हॉलमे पइसैत बजलै।

सेंटर टेबुल पर ट्रे रखैत काल नजरि सैंडविचक ट्रे पर पड़लै तऽ अकचका उठलि - `ज्जा:। सबटा सेरा गेलै !`

`रहऽ दही। हम सब एहने खा लेब`। डी.आइ.जी. साहेब कहलथिन, तऽ ओ चोट्टहि सीढ़ी सँ उतरि गेलि।

`की कहू श्रीमान् ! एकरो भाए पढ़ैत रहै कॉलेजमे। एकरा सब कें चिन्हितो कहाँ रिहऐ तहिआ ! चिन्हतो रहितिऐ तँ कोन फर्क पड़ऽवला रहै ! अपन विवेक साथ दइ तऽ देशक पुलिस विभाग रामराज्य बना सकैये ! दुनू माइ-धी कें लए आएल छिए। दुनू नीचाँमे रहै छै। एकर व्याह करयबाक अछि। प्रायश्चित तँ अपना भरि करबे करब। की श्रीमान्, ई उचित कि अनुचित? लोक हमर बात बुझओ कि नहि बुझओ। आकि नञि?`

ओ अपन पिपनी पोछलनि आ जेना हठात् मोन पड़ल होनि, अपन प्लेट उठबैत बजला - `आउ, हम सब नाश्ता करी पहिने।`

हम आ मीत अपन-अपन प्लेट उठा लेलौं। मीतक लेल तँ रेहल-खेहल रहनि। हमर हाथ मुदा थरथरा उठल। मरकौर जकाँ सैंडविच गीरऽ लगलौं। सेराएल कॉफी चिरैता सन लागल।

नाश्ता करैत काल कोनो गप्प नहि भेलै। मुदा, डी.आइ.जीक लारैत मुँहसँ चभर-चभर शब्द सुनऽ मे अबैत रहलै। चम्मचक टनटन-खटखट ताल मिलबैत रहलै समर्थनमे। बुझाइ जेना कतेक ने-कतेक दिनक भूखल छला ओ।

बिदा होबय काल ओ `1084क माँ` धरा देलनि। हमरा ई पोथी पढ़ल अछि। तथापि लऽ लेलौं जे स्मृतिकें नव कऽ लेब।

रस्तापर थोड़े दूर चलि अएलौं तऽ मितभाषी मीत कहऽ लगला - `बेटा-

पुतहु लग रहै छइ एकर बहु। सप्पत खाक` गेल छइ। चूड़ी फोड़ि लेने छइ। सिन्नुर से नहि करै छइ।`

एहि छौंड़ियाक ब्याह कय बर्खसँ करबै छइ। असल नकेल तँ छोड़िया छइ। इएह अढ़ाइ-तीन मास पहिने अपने भर्ती छलै अस्पतालमे। समाद आएल तऽ लाजे-पक्षे जाए पड़ल रहए देखऽ लेल। अपने कहलक जे बाथरूम मे खसि पड़ल रहए। भगवाने जानथि !`

छौंड़ियाक देहदशा देखबे केलिए? नीचामे बुढ़बाक जिमखाना छइ। उपयोग मुदा करै छइ छौंड़िया। आब तऽ ओकर मितबा से आबऽ लगलैये। हिनका छटपटेने हेतनि की ? बुझाइए घर लिखा लेने छइ छौंड़िया।`

कनिको जान-पहचानक लोकर्के घोरि-घोरि कऽ कहै छइ। तें कि लोक विश्वास कए लेतै? जतेक अहाँके कहलकए, ततेक सभकें थोड़बे कहै छइ? घरमे तँ टपहे नहि दइ छइ ककरो। एकरे दुआरे एम्हर आबय सँ छीह कटैत रहै छी हम। लोक हमरो कनखिएने रहैत अछि।`

मीत चुप भए गेला। कने दूर तक चुप्पे रहलौं दुनू गोटे।

डी.आइ.जी.क अरण्य रोदन पर अपन भाए अखिलेशक स्मृति-शेष जे बाँचल छल से एक बेर जोर मारलक। मीत सँ चर्च करबाक इच्छा भेल जे एकरे प्रभारी कालमे तऽ हमर भाए जे गुम भेल, से गुम्मे रहि गेल। मुदा नहि, स्मृतिक अतल-तलमे सूतल अखिलेशकें उछन्नर देब नञि अरघल।`

मीत दिस किताब बढ़बैत कहलियनि- `लिअ, अहीं घुरा देबै। हम पढ़ने छी कयबेर।`

`चलू, ईहो ठीके रहत। हमहूँ ककरो अनके दुआरा पठेबै। काल्हि सँ पाछुए दिस घूमऽ चलब। ओना सुनबे केलियैए जे आठक बादे उठैये ओ सूतिकऽ।`

दुनू मीतक घर समीप आबि गेल छल। अपना-अपना घर दिस दुनू मीतक डेग अपनहि सँ उठि गेल।



पुश्त... पुश्त... पुश्त

रामायण उंटऽले छोड़ि ओ आइयो घूमिकऽ ओसाराक कनगी पर बैसि रहै छथि। प्राय: अहिना ओ बैसल रहै छथि बेसीकाल खाम्ह सँ ओङठि एकटा पएर नीचा लटका, आ दोसर पएरक ठेहुन मोड़ि तरबा ओसाराक कनगी पर रोपने अकास दिस टकटकी लगा कऽ देखैत। घरवला रहै छथिन तऽ बतिआइत-सतिआइत, आलाप-बिलाप करैत, एक-दोसराकें उलहन-उपराग दैत, अपना भाग्यकें कोसैत समय कोना कोनदने ससरि जाइ छनि, पता नहि चलै छनि।

गाम धेलनि तऽ शुरूमे रमन-चमन सन लगलनि। मुदा, थोड़बे दिनमे खाली समयक परिधि बढऽ लगलनि, आ से बढ़िते गेलनि। समय काटब पहाड़ भए गेलनि। सुन्न समयकें भरऽ लेल घरक काज-धाजमे अनावश्यक लुरू-खुरू करऽ लगलीह। नौरिनक काजमे दखल-देहानी देबऽ लगलीह। दू गोटेक भानसक मोजरे की छइ ! डोका मे रान्हू आ सितुआ मे खाउ।

घरवलाके आशंका भेलनि। कहूँ लेबऽके देबऽ नहि पड़ि जाइन। ओ भाषा-टीकावला मोटगर रामायण आ गीता आनि देलथिन। गीता तेना भ`कऽ दिमागि मे नहि ढुकलनि। ओना किछु श्लोक सभ याद भऽ गेल छनि। गीता बन्न क`कऽ राखि देने छथि।

बस, रामायण अपना लेलनि। बेरु पहरकऽ रामयण पसारऽ लगलीह। पड़ोसिन सभ आबऽ लगलथिन। भीड़ बढ़िते गेलनि। मोन खूब लागऽ लगलनि। परसाद आ धूपकाठीक खर्च-बर्च नहि बुझाइन। मान-प्रतिष्ठा पाछू लागि गेलनि। जगतारनि देवी आ रामायण, रामायण आ जगतारनि देवी - बच्चा-बच्चाक ठोर पर आबि गेलै।

थोड़बे दिनमे रामायण सऽ बेसी जगतारनि देवी स्वयं बड़ाइक पात्र बनि गेलीह... एहन भाग भगवान सबके देथुन। राम-लछुमनक जोड़ा दुनू बेकतीकें राजगद्दी दऽ देने छनि !

से सब शुरु मे जगतारनि देवी कें नीक लगलनि। दुनू बेटाक बड़ाइ आ अपना दुनू बेकतीक प्रशंसा अधलाह कोना लगितनि? जिनगीमे आर चाहबे की करी? केओ भीतरमे पइस कए थोड़बे देखऽ जाइ छै?

मुदा, गूड़क मारि धोकरिये जनैत अछि। धोखो-धाखी सँ आभास जगतारनि

देवी ककरो नहि होबए देलथिन। औपचारिकता निमाहैत सोझसाझ ढंगमे उल्लसित होइत कहथिन - आशीर्वाद दियौ अहाँ सब। संगे रहऽ कहै छथि बेटा सभ। मुदा, ई चामक गद्दी नहि छुटैये। अरजल चीज कोना छोड़ि दियौ!`

`बहीन, हमसब तऽ हिनकर आशीर्वाद लेबऽ अबै छी जे हिनके सन भाग सबहक होइ`। केओ किछु कहथिन तऽ पाछू लागल आर कतेक संबोधन सँ कतेक स्वर समर्थन मे चहचहा उठै - `सत्ते, हमरा सबकें तऽ नैन सुख लगैये।`

`सबहक मनोरथ राम पुरबइ छथिन` - जगतारनि देवीक नेत्र सँ नोर ढबकऽ-ढबकऽ पर भए जानि तऽ आँचरसँ पोछि लेथि। देखार ने भए जानि तें चौपाइ पढ़िते रहि जाथि। लोकक उपस्थितिक अख्यास होइन तँ तत्काल पढ़ल चोपाइक अर्थ कहऽ लगथिन, से उगाहल प्रेम-भाव सँ। अपना तऽ बुझेबे करनि, श्रोताक मुँह पढ़ि आर नियामक भए जाथि जे ओ आइ जमि नहि रहल छथि।

किछु दिन अहिना चललै। आस्ते-आस्ते मौगियाही, अदखोइ-बदखोइ बेसी होबऽ लगलै। ककरा घर मे दालि मे कतेक नून पड़ै छइ, से सब उघारऽ मे सब लागि गेलि। मुहाँ-ठुठ्ठी तक आरम्भ भए गेलै। एक-दू दिन जगतारनि देवीकें बीचमे पड़ि कए शांत करऽ पड़लनि।

जगतारनि देवी बहन्ना बना-बना बीच-बीच मे रामायण बन्न राखऽ लगलीह। भीड़ पतराय लगलै। जगतारनि देवी फेर सँ एकहारि भऽ गेलीह।

आब ओ वक्ता आ श्रोता दुनू अपने रहै छथि। कहियो काल इच्छुक पड़ोसिन टघरि अबै छथिन। शिष्टतावश बुलनिहारि लोकनि संयोग सँ चलि अबै छनि, तऽ किछु स्त्रीगण सामाजिक लाजे-पक्षे अपनापन देखब` जूमि जाइ छनि। किछु स्त्रीगण भरमा बचब` लेल बूझू तऽ हुलकी देबऽ चलि अबै छनि।

प्रायः नित्तह रामायण खोलि कऽ बैसइ छथि। मोटामोटी सभटा कथा-उपकथा याद भए गेल छनि। बैसि तऽ जाइ छथि, मुदा मोन भटकए लगै छनि। अपना जिनगीक रामायणक पन्ना सभ उनटऽ लगै छनि। कतौ कोनो प्रसंग मे मोन ओझ ारा जाइ छनि। जिनगी मे बेसी टन्ना खाइत रहलीह अछि। फुक्का सेहो कम नहि भेटल छनि। इएह टन्ना आ फुक्का खाइत-खाइत जिनगी मे अतेक जोड़लनि अछि। अपना भरि जिनगी कें सार्थक बनौलनि अछि। आब सभटा अछैत फुक्का-फुक्का लागि रहल छनि।

आइ फेर रामायण कें उंटऽले छोड़ि कए घुरिकऽ ओसाराक कनगी पर

कोन क्षणमे बैसि रहै छथि, से सोह नहि रहै छनि।

ओ अतीतक अतल तल मे डूबि जाइ छथि सामने मे टकटकी लगओने देखैत। की देखि रहलि छथि ओ सामने अकास मे? किछु तेहेन देखऽ मे कहाँ अबै छै ! कियेक ने छइ? अवस्स छइ। बहुत किछु छै।... नील अकास, सुरुजक खहरैत किरिन, गाछ-बिरिछ, मिश्रित-अमिश्रित शब्द सभ, एम्हर-ओम्हर उड़ैत चिड़ै सभ। आँगन मे फुदकैत बगड़ा आ चिड़ै-चुनमुनी सभ। पोसुआ बिलाड़ि आ चार पर कुचरैत कौआ। मात्र देखऽ-देखऽ मे फर्क छइ। अपना जरूरतिये भरि ने क्यो देखत।

ठीक सामने विस्तृत अकासमे परित्यक्त दू टा कृशकाय मेघ मुँहमे मुँह भिड़ौने एकाकार भए धरिया सन पातर आ टेढ़ डरीर पाड़ैत कोनो कृष्णवर्णीय कर्मकांडीक गरमे उत्तरीय जेकाँ लटकि गेल अछि, मुदा जिजीविषा ओतऽ अटकऽ नै देतनि। आँगनक बाद रस्ताक ठीक ओहिकात अपने गाछीक धूर पर कने छोट-पैघ अपन रोपल दूटा शीशोक गाछ, एक-दोसर दिस कने झूकल सन चुपचाप ठाढ़ अछि। बीच-बीच मे सिहकी पर एक-दोसरक नोर पोछऽ लेल, दुख-दर्द बाँटऽ लेल, घेंटा-जोड़ी पर उतरि जाइत अछि। हुनकर गाछी कतेक भरल-पुरल छनि, से कि नान्हिटा उपलब्धि छनि? बस, शेष जिनगीक इएहटा संतोष तऽ छनि पाथेय रूप मे।

जगतारनि देवीक भाव-भंगिमाक ई अंटकर सहज रूपें केओ लगा सकैत अछि, जे हुनकर धेआन एखन ओतहि केन्द्रित भऽ सकै छनि।

`सूरज बाबू छी यौ? सूरज बाबू ऽऽऽ ! यौ सूरज बाबूऽऽ !

जगतारनि देवी उबिया कए उपर आबि जाइ छथि। शब्द अकानै छथि, आ भटकि जाइ छथि। उठि कए आँगनक मुँह पर अबै छथि। टाटक भूर बाटे हुलकी मारै छथि। केओ देखऽ मे नहि अबै छनि। मुँह पर कने बाहर दिस आबि कए एम्हर-ओम्हर देखइ छथि।... धुर जो अनठेकानिएं ककर नाओ कहबनि ! बड़बड़ाइत आँगन धूरि अबै छथि।

बाढ़नि ल`कऽ घर मे ढुकै छथि। घर बहारि कए ओसारा बहारैत आँगनमे उतरै छथि। ठाढ़ भऽकऽ डाँर सोझ करऽ लगै छथि। देहमे आब ने सल्ल छनि, ने मोन मे उत्साह। फेर सँ आँगन सोहारब शुरू करै छथि - नहुएँ-नहुएँ नब बहुआसिन

जेकाँ बाहरब शुरू करै छथि। यद्यपि आँचरक फेंट आब तेना नहि बान्हइ छथि। पएर मे रूनझुन पायल पहिरब कहिया ने छोड़ि देलनि। पहुँची पर चूड़ी अछैत खनकै नहि छनि। आ गीत गुन-गुनाएब बिसरला तँ जुग-जमाना भऽ गेलनि। की आब मोन नहि पड़ैत हेतनि.. सर बिनु सरसिज, सरसिज बिनु सर, किअ सरसिज बिनु सुरे... सखी हे बड़ मोर दैव विरोधी - जेकि ओ सूरज बाबूक नव प्रवासी जिनगी मे कहियो आँगन बहारैत काल गुनगुनाइत छलीह, तऽ सासु टोकि देने रहथिन - `बहुआसिन, रस्ता कातक घर अइ। ससुर सुनता तऽ बताह भए जेता !

से सब मोन मे अबिते सोचैत-सोचैत ठाढ़ भऽ जाइ छथि। अतीतक ओ बात सभ मोन पड़ैत कल्पना सन लागि रहल छनि। आश्चर्य लागि रहल छनि सेसब एहि युगक समक्ष।.. धुर जो ! आबक कोन पुतहु एहन सुख सासु के देतइ।

म्याउँ ! म्याउँ ! - बिलाड़िक बच्चा पएर सँ नुरिआय लगै छनि। काँव ! काँव !... आँगन मे उतरिकऽ कौआ कुचरऽ लगै छै।

`हँ बूझल अइ सबके बेर भऽ गेलौ। देखै नै छँए जे हाथ लागल अइ?` फेर बहारय लेल निहुरै छथि।

आँगन बहारि अबै छथि। फेर भरि जाइ छनि। बसातक झोंक अबै छै। बाहरन-सोहरन छिड़िया जाइ छनि। मोन लोहछि जाइ छनि। बाढ़नि नेने असोथकित भेलि ठाढ़ि भए जाइ छथि। धेआन मे अबै छनि जे ओ बसातक उंटा दिस बहारि रहलि छथि। मोने-मोने हँसइ छथि। तमसाइतो छथि।...ठीके, अकाजक भऽ गेलौं!

जहाँ फेर सँ बहारऽ लेल निहुंरै छथि कि बिलाड़िक दुनू बच्चा बाढ़निक छोर पकड़ि कऽ खेलाय लगै छनि।

`देख, हमर मोन नै खौझो !`

दुनू नै मानै छनि। दुनू आर अगरा-अगरा कऽ खेलाय लगैत अछि।

`झँटिया देबौ, नै तऽ भाग एतऽ सऽ।`

आ लात सँ दुनू कें ठेलि दै छथिन। दुनू एकबेर हुनकर मुँह देखै छनि आ म्याउँ ! म्याउँ करैत माय लग चलि जाइत अछि। जगतारनि देवी देखि रहलि छथि। दुनू बच्चा माय संग लेपटा रहल अछि। नैन सुख भीतर हृदय मे उतरि जाइ छनि। हाथ मे बाढ़नि नेने ठाढ़ि भेल आत्मविभोर भए जाइ छथि।

सूरज बाबू चुपचाप आँगन मे प्रवेश करै छथि। चुपचाप हुनका देखऽ लगै

छथि। झमारल मुँह देखि तत्काल टोकबाक साहस नहि होइ छनि। पुछबा पर जबावो नहि दऽ सकै छथिन। दिन-दिन खिसियाह जे भेल जा रहल छथिन ओ।

सूरज बाबू अबइ छथि, आ छत्ता कें कनगी लगा कऽ ठाढ़ करै छथि। छत्ता ससरि कऽ नीचामे खसि पड़ै छनि। उठाकऽ पूर्ववत अंटकाबइ छथि। मुदा, फेरो ससरि ओरियानी मे खसि पड़ै छनि।... धुर जो, रह खसले !

जगतारनि देवी हाँइ-हाँइ बाहरन-सोहरन छितनी मे उठा कए एकात मे राखि दै छथिन। ओ एक लोटा पानि आनि कए घरवलाकें दै छथिन।

गटाक् ! गटाक् !... हाथ-पएर बिन धोनहि सूरज बाबू ओसाराक कनगी पर बइस लोटा मुँह मे लगा लइ छथि। जगतारनि देवी कें बूझ मे देरी नहि होइ छनि जे घरवला बड्ड पिआसल छथिन। चुपचाप सामनेक खाम्ह सँ लगाकऽ छत्ताक मकुआ बत्ती मे फंसै दै छथिन, आ ओतहि ठाढ़ कएल पीढ़ी आनिकऽ दै छथिन। सूरज बाबू पीढ़ी पोन तरमे घुसका लै छथि।

जगतारनि देवी एक लोटा पानि फेर आनि कऽ दै छथिन। बैसले-बैसले सूरज बाबू बरनी नाओं लेल हाथ-पएर धोइ छथि। मुँह पोछि लै छथि, आ निचेन सऽ खाम्ह सँ ओङठि कऽ बैस रहइ छथि। नजरि सामने मे झुलैत छत्ता पर जाइ छनि। विद्रुप मुस्की ठोर पर रेंगऽ लगै छनि... अयँ सबदिन हमहूँ तँ छत्ता अहिना टाँगि दइ छिऐ ! पीढ़ियो लेब मोन नै रहल ! ओह, अइ डाकदरक दबाइ ओफ्फा नै करैये !`

डॉक्टरो की करतै ! असल बात रोगी कहइ तहन ने ! दुनू बेकती घरेमे बनवासीक जिनगी बितबै छी। ई उमेर छै धियापूता सऽ फराक रहयवला ! हम सब तऽ धियापूताक गरऽक घेघ भऽ गेल छियनि। अरजियो देने छियनि, आ आब ओगरियो दै छियनि। ई सब की कहियौ डाक्टर के !

जगतारनि देवी छितनी उठा कऽ बाड़ी मे धऽ अबै छथि, आ ल`ग मे आबि कए पुछै छथिन - `सबटा दूध तँ छिछियाहा सब पी गेल। नेबोवला दीअ?`

`हमरा तँ नेबोएबला नीक लगैये। मानै छिऐ बेसी, तकरे फल अइ।`

`चूरा सेहो भुजने छी। दीअ?`

`कने मैदान दिस सँ भऽ अबै छी।`

`केओ आएल रहय कने पहिने। बाजब नै चिन्हलऐ।`

`हँ, भेटल छल सब। की शहर, की गाम। चंदा, चंदा, चंदा ! जे बान्हि देत से देबहे पड़त। हमरा बड्ड आमदनी अइ कहाँदन ! नाओ ऊँच, कान बुच्च!

दुनू गोटे किछु सोचैत चुपचाप शून्यमे ताकऽ लगै छथि।

`ऑटो सँ अबितौं, नै तऽ रिक्शा कए लीतौं। रिक्सा सऽ घर तक पहुँचा जाइत। बेटा सुनता तँ अहू लेल बताह भऽ जेता।`

`हेता तऽ हेता ! एकबेर फोन करबाक तऽ फुरसतिये नै होइ छनि ! महापात्र जकाँ डबा टंगने छथि।`

`अपन सक्के की अइ?

`अहाँक तँ कोनो ठेकाने ने अइ। हम जहाँ कनिओ बाजू कि खटदऽ बेटा सबहक पक्ष लऽ लइ छी।`

`अहाँ अपने कोन कम छी? केओ बेटाक बड़ाइ करैये तँ मोन केहन गदगद भए जाइये? ढरैत देरी नै होइये। दू सए सऽ कम आइयो नहिएँ देने हेबै?

सूरज बाबू चुप रहै छथि। चुपचाप बाड़ीक कोनटा दिस देख` लगै छथि। दूटा बगड़ा चोंचमे-चोंच मिला कए लड़ि लैत अछि। फराक भए जाइत अछि। आ फेर संग भ`कऽ चिक्कन-चुनमुन आँगन मे किछु ताकैत आगू बढ़ि जाइत अछि।

सूरज बाबू मुस्किया उठइ छथि -`सब जीवक सोभाव एकेरंग। ने लड़ैत देरी, ने सलाह होइत देरी`।

`देखियौ हमरा धेआने नञि रहल। पानि खदबदाइ छै। बैसू। हम चाह नेने अबै छी।` - जगतारनि देवी उठि जाइ छथि।

दुनू बगड़ा फुर्र दए गोरहन्नीक एकचारी मे बिला जाइत अछि। सूरज बाबू के फेर मुस्की आबि जाइ छनि।

बताह जकाँ एसगरे किये मुस्किआइ छिऐ यौ? - दोसर ओसारा पर चाह बनबैत जगतारनि देवी ओतै सँ पूछै छथिन।

`अहाँ कें संदेह की भेल, से पहिने कहू तऽ?`

`संदेह किये हैत? केओ देखत तँ बताह बूझत।`

`हमरा तँ एतबे सँ संतोष अइ जे कम-सँ-कम अहाँ से नै बुझै छी।`

`हमर बाजबे नै सोहाइये अहाँकें ! सबमे कटाक्ष !`

अइ बेर सूरज बाबू चूप रहै छथि। जगतारनि देवी चाह ल`कऽ अबै छथि,

आ चाह दऽ सामनेक खाम्ह सँ ओङठि कऽ बैसि रहै छथि।

`बुझै छिऐ जे प्रेसर बढ़ि जाइये। तहन अतेक दूर पएरे एबा मे कोन तुक छइ?`

`डॉकदर अपने प्रेसर सऽ नै मरैत तँ बुझितिऐ।`

`धूर जो ! के जीतत अहाँ सऽ !`

`हमरा तऽ कहै छी, आ अपने जे नौरिन हटा कए दिन-राति खटैत रहै छी, ताहू लेल तऽ बेटा सब कहिते छथि।` सूरज बाबू एक घोंट चाह पीबि कए कहै छथिन।

`तैयो तँ बुझियौ। हम तऽ आङन-घर मे उठइ-बैसइ छी। किछु हेबो करत तऽ एतै पड़ल रहब। अहाँक रस्ता-घाट मे के देखत? नौरिन रहने तँ हम लोथ भऽ जाइ छी। समय आर पहाड़ भऽ जाइये।`

`अनका ठकबै। कहू जे खर्चा बर्दास्त नै होइये।`

`दाइ-गे-दाइ, कतय नुकाउ ! अनका दुस्स, मंगरैल ठुस्स ! जखने ढुकल रही आङन मे तऽ बूझऽ मे आबि गेल रहय हमरा। मोन तऽ भेल रहय जे अयना देखा दी। पनरह रुपैया लेल जान कें जान नहि बूझब !`

सूरज बाबू चुप रहै छथि। चाहक ई घोंट ठोंठ सँ उतारि लै छथि।

`बुझाइये, चाह अहाँ जोगर नहि भेल। चिन्नी तऽ जानिये कए कम देलिऐ-ए। फेरो बना दीअ?`

`अहाँ तऽ बमो हाथे छूबि दै छिऐ तऽ अपूर्व भऽ जाइ छै।`

एहिबेर सूरज बाबू चटकार ल`कऽ चाह सुरकै छथि - आह! एहेन कत्तए पाबी !

जगतारनि देवीक मुँह पर उल्लासक लाली छिटकि अबै छनि। ओ बजै छथि -`मोन सँ बनबै तहन ने। पानि कें खदबदा कऽ फूटऽ दै, आ चाह द` कऽ उतारि लइ। चारि-पाँच मिनट लेल झाँपि दै। आ तकराबाद दूध, चीनी दऽ बनबै कप मे। तहन देखियौ चाहक मजा।`

सूरज बाबू कहै छथिन -`सब सासु कें पुतहूए पर फबै छइ। एकदिन ओहो सासु बनती।` सूरज बाबू सहज रूपें कहै छथिन।

`देखिअनि तऽ पुतहु कें मिनट नै लगनि चाह बनाबऽ मे। कने इन्होर भेल

कि सब चीज मिला देथिन।` - जगतारनि सगर्व बाजि जाइ छथि।

`गामक पानियो तेहने होइ छै` - सूरज बाबू टोनै छथिन।

`हँ कियै ने ! गाम तँ गामे होइ छै। रिटायर हैब तँ गाम मे खूब मोन लागत। एना रहब ! ई करब ! ओ करब ! आब बुझै छिऐ ने? - गामक नाओं सुनिते जगतारनि देवी भड़कि जाइ छथि।

सूरज बाबू पर कोनो असरि नहि पड़ै छनि। सूरज बाबू अपन खाली कप दुनू गोटेक बीच मे रखै छथि। जगतारनि देवी कहै छथिन - अपने तँ जहाँ-तहाँ घूमि अबै छी। हमरा आङन-घर काटऽ दौड़ैए। चलू दऽ आउग` हमरा धियापूता लग !`

- अतेक भेलाक बादो? सप्पत खा कऽ ने आएल रही?

- तैयो ओकरा सबसँ मोन नै टूटैये?`

- ओइ दिन सरजुगक बात सुनबे केलिऐ? बेटा तऽ बेटा, पोता-पोती `बुढ़बा-बुढ़िया` नाओं धऽ लेने छइ। आब सएह टा बाँकी अइ।`

जगतारनि देवीक आँखि नोरा जाइ छनि। आँचर सँ नोर पोछैत पुछै छथिन - डॉक्टर की कहलक?

- गएले गीत दोहरा देलक। खाउ पीबू आ साँझ-प्रात टहलू। फेर ढढर लिख देलकए। एकर दवाइ नइ करबै। आब होमियोपैथी कराएब।

- कोना बुझै छिऐ जे फैदा नै करैये?

- देह अइ हमर, आ बूझबै आहाँ?

- भरि दिन बैसल-बैसल सतरंज खेलेबै। साँझ-प्रात टहलबै नै, तऽ हएत नै? आब गेन खेलऽ चाहबै से कोना हएत?

- होमियोपैथीवला जड़ि सँ छोड़ा दै छै।

- हँ, ईहो सुनै छिऐ जे पाइ कम लगै छै।

- से - जे पाइये सँ सबटा होइतै तँ करोड़पति सब नै मरितै।... ओसब मोनक चिकित्सा पर बेसी जोर दै छै। मोन सबल रहने रोग भागि जाइ छै।

- फेर ओएह बात? अखने ने अपने बजलौंहएँ जे सबटा उघि कए नै लए जाएब? अपने अरजने छी, अपने जिरतिया बनलं छी। ककर डर होइये? -सभठाम सँ मारिपीट कऽ भगा रहल छै। अंत मे इएह काज देतै। अपन डीह-डाबर छै, से

कोना बिलहा दियौ?

- नः। एहन कर्म नै करए लोक जे धियापूता के पढ़ाबय। महींसे चरबैत आ लग मे रहैत तऽ ई सब नै देखऽ पड़ैत। सऽख लगले रहि गेल जे धियापूता आङन मे खेलाइत आ नैन जुड़ाइत ! बजैत-बजैत कुहेस फाटऽ लगै छनि।

- बर्ख मे बेराबेरी कम-सँ-कम एक बेर क` तऽ दुनू भाइ सपरिवार आबिए जाइये।

- हँ कियै ने ! शीत चाटि लै छी। पिआस मेटा जाइये।

जगतारनि देवीक आँखि सँ भट-भट नोर खसऽ लगै छनि। बकौर लागि जाइ छनि। स्थितिकें हल्लुक बनबऽ लेल सूरज बाबू कहै छथिन - `जकर सबहक धियापूता नै पढ़लकै, तकरा सबकें देखियौ। घर-घर सब परदेसिये भऽ गेल छै। उपायो तऽ नै छै।

दुनू गोटे कनेकाल चुप रहै छथि। जगतारनि देवी शून्य मे ताकऽ लगै छथि।

बूझल अइ अहाँ कें? - सूरजबाबू पत्नीक धेआन अपना दिस खीचै छथि आ आगू कहै छथिन - जापान मे बाप कें कोनो तेहन जरूरति रहै छै तँ फोन पर पूछि कऽ जाइ छै भेंट करऽ। तहिना बेटो करै छै। अहिना बिनु कहने कोनो बाप गेलै बेटाक घर, कियेक तँ बेटा कें देखना आ पोता संग खेलयला बहुत दिन भऽ गेल रहै बुढ़बा कें। जनै छिऐ?` सूरजबाबू पत्नीक आँखि मे देखैत कहै छथिन - `बेटा कें तऽ पहिने बापक बात पर हँसी लगलै, आ फेर कष्ट भेलै जे ओकर बाप कोन जुगक लोक छै। छै ने मिलैत किछु ओहने सन बात जे अभिमन्यु कें देखऽ अर्जुन स्वर्ग गेल रहथिन?`

जगतारनि देवी बकर-बकर घरवलाक मुँह ताकि रहलि छथि। सूरज बाबू कें संतोष होइ छनि जे हुनका बातक असरि पत्नी पर पड़ि रहल छनि। ओ एकटा प्रसंग मोन पाड़ै छथिन -`अहाँकें तऽ मोने अछि जे बीरूक कान्ह पर स्नेह सँ हाथ धऽ देने रहिअनि किछु कहऽ लेल, तऽ हमर हाथ कोना हटा देने रहथि? अहाँ हमर मुँहें देखैत रहि गेल रही !`

जगतारनि देवीक आँखि फेर नोरा जाइ छनि। कहै छथिन -`एहनो बात कियो बिसरै छै ! ओहिना मोन अइ सबटा।`

`हमरो सबहक तऽ बापे रहथि। जुग-जुगमे फर्क सदाय सँ भेलैये, मुदा एना नै।

`ओहिना मोन अइ जे अहाँक बाबू बेसीकाल अहाँक कान्हे पर हाथ धऽ कय अहाँ संग गप करथि, आ कतेक निचेन सँ प्रफुल्लित भऽ हुनकर बात सुनियनि अहाँ। पलभरि चुप भऽ उल्लसित होइत आगू कहै छथिन - सहमति कि असहमति मे जे किछु अहाँ कहियनि तऽ ओ सुनथि, आ मोन गदगद भऽ जाइन।`

अतीतक ओहि क्षणमे सूरज बाबू एकरत्ती लेल हेरा जाइ छथि।

बिलाड़ि अपना बच्चा सभक संग जगतारनि देवीक पएर सँ लेपटाय लगै छनि। कौआ से आङन मे उतरि कए कुचरऽ लगै छै।

`देखै छिऐ, ईहो दुनू बच्चा नम्हर भऽ जेतै तँ मायक संग छोड़ि देतै। ई जे कौआ अहि ने, बच्चा जहाँ उड़ाँत भेलै कि खोंता मे ढूकऽ नहि देतै। आहाँ एना बूझियौ जे बच्चा सब अपने नै एतै।`

जगतारनि देवी चुप रहै छथि। नजरि शून्यमे लटकि जाइ छनि।

सूरज बाबू लोटा लऽ चुपचाप पोखरि दिस बिदा होइ छथि।।

- काँव ! काँव !

- रे बाउ हमरा के समाद पठाओत ! सब अपने मे लेपित छै !

- म्याउँ ! म्याउँ !

- हँ बूझलियौ। भूख लगलौये।

जगतारनि देवी उठि जाइ छथि। भनसा घर दिस घूरऽ लगै छथि तँ नजरि सामने शीशोक फुनगी पर चलि जाइ छनि। पांडुरोगी सन सुस्त-पिरछौह किरिन ओतए लटकल अछि। बूझऽ मे नहि अबै छनि जे ओ हँसि रहल छै कि कानि रहल छै।

जगतारनि देवी मुँह फेरि कए भनसा घरमे ढूकि जाइ छथि।



एकटा कलाकारक आत्महत्या

पलंगक सामनेवला देबाल पर ओ की देखैत रहै छथि से जग्गू बाबू अपनेटा बुझै छथि। रहस्यमय बात तऽ छैहे जे मात्र हुनकेटा एहन कोन वस्तु देखाइ पड़ि रहल छनि जे टुकुर-टुकुर ओतै कतौ नजरि गड़ौने रहइ छथि।

शुरू मे तऽ सभकें डर भऽ गेलै। बेटी आ नौरिन शिखा तऽ मनोविज्ञानी चिकित्सक के पास लऽ जेबाक बात तक नियारि लेलकनि। सभक विचार सँ सहमत रहितो पत्नी फराके सोचलथिन - `एकेबेर एना तऽ कहियो नहि भेल छथिन ! आरो बात बेबहार मे तऽ ठीके छथिन ! खेनाइ-पिनाइ, पढ़नाइ-लिखनाइ सभटा पहिनहि सन छनि ! कोनो आर परिवर्त्तन देखऽ मे नहि आबि रहल अछि ! की एकेटा बात लऽ विक्षिप्त भऽ गेलथिन ! नञि, हमरा विश्वास नहि होइये !`

ओ तें सभकें बुझा देलथिन - `एकसुराह तऽ सभदिनक छथिन। देखै नै छहुन, जावतधरि लिखनाइ-संपन्न नहि होइ छनि, लग्घी-पैखाना पर्यंत बिसरि जाइ छथिन। हेतनि कोनो सुरि लागि गेल। तहन हँ, एक्केबेर एना हमहूँ नहि देखने छियनि कहियो। टोकाटाकी बेसी नहि करहुन।.... ठीके छथिन।`

एक तऽ ई घर छइ पुरान, दोसर, कय बर्ख सऽ ढेउरल नहि गेलैये। मरम्मतिक तऽ बाते छोड़ू। एहि सऽ पहिलुका भाड़ेदार जायकाल कील-कांटी पर्यंत उखाड़ि कऽ देबाल कें निर्ममता पूर्वक क्षत-विक्षत क`कऽ चलि गेल छइ। एकर साफ अर्थ छइ जे मकान मालिक संग ओकरा या तऽ पटरी नहि बैसइ, अथवा ओ कंजूसीक आरि परहक लोक छल। देबालक खोधल-खाधल स्वरूप कें सीमिट सऽ भरिकऽ मालिक घरक प्रति अपनत्व आ ममत्व कें स्वार्थ तक सीमित रखने अछि। ई विचित्र छोट-पैघ पलास्तर सभ वारबेरियन युगक शोषणग्रस्त कोनो गुलामक शरीर पर कत्तोक निर्मम चेन्ह सन लगै छइ, जे निश्चित रूपें अमानवीय निष्ठुरताक विरोध मे ओकर दुर्दम्य साहस एवं संघर्षक प्रमाणस्वरूप विद्यमान छइ।

देबाल पर विद्यमान ई चेन्ह सभ केहन की भावना हुनका मोन मे उद्वेलित कऽ रहल छनि से ओ मात्र अपने बुझै छथि। मुदा घरक लोक लेखे ओ दिन-दिन सठिया रहल छथि।

जहिया सँ ओ एहि घर मे अयलाह अछि, कुर्सी कि पलंग पर बइसल, ठाढ़े ठाढ़े तमाकुल चुनबैत कि कोनो लुरू-खुरू मे लागल रहितो हुनकर धेआन सामने

देबाल पर चलिएटा जाइ छनि। ओना धेआन चारूकातक देबाल पर गेल छनि आ जखन-तखन जाइत रहै छनि। मुदा सामनेवला देबाल सऽ सम्मोहन जकाँ भऽ गेल छनि। कखनो कोनो स्थिति मे ई देबाल आपाततः आकर्षित करइ छनि। एहि कोठली मे रहऽ कें अर्थ भऽ गेल छनि एहि देबाल कें देखब आ देखैत रहब। अन्य आवश्यक काज मे बाझल रहितो ई देबाल एको आध बेर धेआन बाँटियेटा लइ छनि। सत्ते ई देबाले एकसुराह बना देलकनि अछि।

रहैत-सहैत कहियोकऽ स्त्री बड़बड़ा उठइ छथिन -नहि जानि की छइ एहि चितकाबर देबाल मे। घर ढेउराबऽ के कोनो उचाबर्चे नहि देखै छियनि। एना चुक्कीमाली बैसलो कोना होइ छनि ! बुढ़ेबूढ़े की-ने-की हिस्सक लगेने जा रहल छथिन। सभदिन लोक बुझलकनि ढहलेल, आ आब कहतनि बताह!..`

मुदा, जग्गू बाबू अस्सब भऽ गेल छथि।

`... लगै छथि केहन कार्टुन सन, कोनो खेत मे बैसल पैखाना फिरैत ! भाग मनबइ छी जे पुतहु आ धीयापूता लग मे नहि छनि` - स्त्री खौंझा उठै छथिन।

मुदा, जग्गू बाबू छथि जे अपना मे हेराएल छथि।

`... सुनि लिअ, आइ हमहू नून-रोटी नहि खुएलौं तऽ हमर नाओं नहि!`

`अहूँ बेर परहक भदबा छी। आह् ! केहन सुन्दर तऽ आइडिया आएल अछि। आहाँ हाथक नूनो रोटी कम सोअदगर थोड़बे होइ छइ? ओएह आइडिया दैत अछि।` - जग्गू बाबू बाजऽ लेल बाध्य होइतो बेलागि नहि होइ छथि।

स्त्री पर मुदा हुनकर मोलयमा असरि नहि करै छनि। ओ अपने ताल मे छथिन -`फिदा हुसैनक फोटो टंगने की हएत? ओकरा तऽ करोड़क-करोड़ भेटै छइ। ओकरा तऽ माधुरी पुछै छइ ! एवार्ड-पर-एवार्ड भेटइ छइ।`

`अतेक आ एना जे लोक सोचऽ लगै तऽ संसार नहि चलतै। फिदा हुसैन ई सोचिकऽ चित्रकारी नहि आरंभ कयने हेतै जे ओकरा करोड़क-करोड़ भेटतै। ओकरा गुरु सभके क्यो नहि पुछै छइ। गुणबत्ता तक नहि जानै छइ।` - एके साँस मे जग्गू बाबू बाजि जाइ छथि।

स्त्रीकें किछु नहि फुराइ छनि। ... `धुर जाउ ! आहाँक बातक घुरछी बूझल अइ। झूठफूस कें पाड़ैत रहब आ अपने निंघारैत रहब !` जग्गू बाबू फेर सँ अपना खियाल मे डूबऽ लगै छथि।

`अहाँक तर्क मे के सकत?`-पत्नी बाजिकऽ तमतमाइत चलि जाइ छथिन।

जागेश्वर झा अर्थात कोलकाताक अपना समाज मे परिचित जग्गू बाबू संप्रति एतऽ समय बितबऽ लेल बाध्य छथि। नोकरीक पूरापूरी उनचालिस बर्ख कोलकाता मे गुदस्त केलनि ! ओतऽ अपन घर-द्वारि छनि। बेटा सभ अपना-अपना दुनिया मे लागि गेल छनि। बांचल छनि एकमात्र बेटी। ओकरा नोकरीक जोगार एतऽ मुंबइ मे बैसलै। बेटी कें एसगर छोड़थिन कोना? छथि तऽ मैथिल संस्कारक। तें गर्ल्स होस्टल कि पेइंग गेस्टक चर्चे नहि होअय। बेटियो ताही मोन-मिजाजिक छथिन। पारिवारिक जिनगी बेटीकें अपनो नीक लगै छनि।

दुनू बेकती मे सऽ किनको एतऽ मोन नहि लगै छनि। जग्गू बाबू अपने तऽ दू-तीन मास पर कोलकाताक टहलान मारि अबै छथि। मुदा, बेचारी पत्नी लेल से सम्भव नहि भऽ पबै छनि। बेटी कें एसगर छोड़िकऽ नहि जा सकै छथि। बेटीक हाथ पीयर होबऽ तक गाम, कोलकाता आ मुंबइ तक मगहिया डोमक जिनगी जीबऽ लेल बाध्य छथि दुनू बेकती।

एहिबेर मुदा पत्नी कें अबसर भेटल छनि। बेटी कें एक मासक पओना छुट्टी भेटल छनि। दुनू माइ-धी कोलकाता गेल छथि।

जग्गू बाबू सेहो जा सकै छलाह। मुदा, ओ इएह अयलाह अछि। दोसर, घर से ढेउरेनाइ परमावश्यक छनि। अपने नहि रहने से सम्भव छनि नहि।

कहऽ लेल एखन घर मे एसगरे छथि। मुदा शिखा के लगाकऽ दू गोटेक पूरापूरी खर्च छनि। परिवार नहियों रहने वातावरण तेहनेसन बुझाइत रहै छनि।

ई नौरिन शिखा अछि बंगलादेशक। जातिक अछि मिञाइन। नाओं रखने अछि शिखा, आ अपना कें कहैत अछि भारतीय। पश्चिम बंगाल मे कोनो अबंधी-संबंधी संग जोगार बैसाकऽ ओतुके अतापता बनबा लेने अछि। मुंबइ मे बेसी बांग्लादेशीय महिलाक संख्या पुरुष सऽ वेशी छइ। सब अहिना छद्म रूप मे रहैत अछि। कारण, अबिते-अबिते नौरिनक काज भेटबाक उमेद रहितेटा छइ। शिखाक ई काजक दोसर घर छइ। हिनका सभ संगे ई रितिया गेलि अछि। जेनाकि ओकर भाय-भाउज बजैत रहै छइ, सिखा लेल ओ सभ घर-वर देखि रहल छइ। ताधरि शिखा हिनके घर मे काज करति। एहन घर भाग्ये सऽ भेटतै से माय-भाउजक विश्वास जमि गेल छइ।

एहि परिवार मे जखन शिखा नवे छलि तऽ जग्गू बाबू कें अहिना बजा गेल रहनि - `तोहर बाजबाक टान तऽ बांग्लादेशी सन छउ।`

शिखा बाजलि तऽ किछु नहि, मुदा, कातरि नजरि सँ जग्गू बाबूक मुँह टुकुर-टुकुर तकैत रहल छलि।

`कोनो बात नहि। ओहिना कहि देलियौ। हमहूँ तऽ बंगालिये छी। हमरा बाजब सँ तों हमरा पकड़िये लेने हेबए। हमरा धीयापूता कें मुदा नहिएँ पकड़ि सकै छीही। जो-जो, जल्दी सऽ चाह बना। हम कने बाहर जाएब` - ओकर खसल मुँह देखिकऽ जग्गू बाबू अपन भूल सुधारऽ लेल आत्मीयता देखौने रहथिन। फेर आगू जोड़ने रहथिन - `एकटा तोंही तऽ एहन नहि छएँ।` मुंबइ मे भरल छइ तोरा सन लोक। ई बात सरकार तक कें बूझल छइ।` तकरबाद एहन सन चर्च नहि भेलैये घर मे आइतक। जग्गू बाबू लेखे पत्नी आइतक नहि बूझि सकलथिन जे शिखा मिञाइन अछि। बेटी धरि बूझि गेल छनि, मुदा, चुप अछि मायक पोसल संस्कार कें देखिकऽ।

घरक भानस-भात सँ ल`कऽ काकी माँक पूजापाठक सभ ओरियान-पात मे शिखा बिना निमहऽवला नहि रहै छनि। कयदिन तऽ शंख से फूकि दइ छनि। काकी माँ अर्थात जग्गू बाबूक पत्नी कहै छथिन - `तोरे नीक जकाँ फूकल होइ छौ। हमर तऽ दम्मे उखड़ऽ लगैये।`

काकी माँ कहि गेल छथिन - `देख गे छौंड़िया, हम तोरे पर घर छोड़िकऽ जा रहल छी। पहिने पूजा-पाठ तहन कोनो काज। हिनकर कोन ठीक। कहियो एकटा अगरबत्ती तक नहि देखेथिन। धर्म-कर्म बुझबे कहिया केलथिन !` संप्रति शिखे सभटा सम्हारने छनि।

एक तरह सँ अपनाभरि जग्गू बाबू स्वतंत्र जिनगी बिता रहल छथि। पत्नीक हुरकुच्ची सँ जे बाँचल छथि एखन ! निचेन सऽ देवालक अवलोकन, मनन आ तत्तसंबंधी मोन मे विचार-विमर्श मे सुविधा भऽ रहल छनि। टोक-चाल तऽ ईहो करिते छनि, मुदा व्यवधान नहि होइ छनि। समय आ परिस्थितिक ज्ञान छइ एकरा।

`काकी माँ आबि रहल छथि से बूझल अहि कि नहि? घर कहिया ढेउरेबै? आब हुनकर फोन एतनि तऽ हम झूठ नहि बाजब !`

शिखा पुछै छनि, आ संगे-संग चेतबितो छनि, से जग्गू बाबू नीक जेकाँ

बुझइ छथि। मुदा, जग्गू बाबू चुक्कीमाली बैसल हाथ मे तमाकुल चुनबैत सामने देबाल पर ठिकियाकऽ देखि रहल छथि। शिखाक शब्द पर हुनकर धेआन आकर्षित नहि भेलनि अछि, से नहि। बेपरवाह छथि ओकरा मे अपन विश्वास पर।

शिखा फेर बजैत अछि - `हमर बात अहाँ अहिना दोसर कानदऽ निकालि दइ छिऐ! एहिबेर शिखा कने खिसिया गेल अछि, तऽ आबाज सेहो कने जोर भऽ गेल छइ।

जग्गू बाबू एहिबेर ओकरा दिस देखै छथिन, मुदा फेर अपना मे डूबि जाइ छथि। बात-बेबहार मे बेटी सऽ कम थोड़बे छनि ! ढिठगरि सेहो ओ भऽ गेलि छनि अपने बेटी सन।

`हम बताहि जकाँ बड़बड़ा लइ छी, अहाँ सएह बुझै छिऐ, नञि? घर केहन लगैये देखऽ मे से नहि सुझैये? काकी माँ आबिये रहल छथि। अपने बुझबै। काकी माँ संग दुर्रथ करऽ मे तऽ अहाँकें नीके लगैये !... तः, पहिलुका भाड़ादारो केहन रहै ! कत्तेकदाम रहल हेतै कील-काँटी सभक ! ई मकानो मालिक अजीबे लोक छइ ! घर तऽ आखिर ओकरे छइ। कने ढेउरा दीतै तऽ कोन तेहन बात रहै ! बरू खर्चा हमरे सभसँ ल`लीत ! काकी-माँ से कहनहुँ रहथिन, मुदा ओ सरधुआ सुनबे नञि करइ छइ ! आइ-काल्हि करैत-करैत अंठा रहल छइ। थम्ह ! आबऽ दही दीदी के ! मलिकौती देखबै छियौ !`

शिखा ठाढ़े-ठाढ़ बाजिकऽ मोन हल्लुक कऽ लैत अछि। जग्गू बाबू तैयो प्रभावहीन भेल अपना धुनिमे रमल छथि।

अयँ, एना सुतल छथिन ! अनठाएल सन तऽ साफे नञि बुझाइ छथि ! आँखि तक नञि मिरमिराइ छनि ! आब हमहीं सबटा सहि लेब। सुनै छलिऐ, लेखक-कलाकार एकांतवासी होइ छइ, आइ प्रत्यक्ष भऽ गेल।

मुदा, आइ शिखा उत्सुक भऽ उठैये। ओकरो आइ मोन भऽ जाइ छइ देबाल पर किछु, माने जग्गू बाबू जे किछु देखि रहल छथि कि ताकि रहल छथि से ताकबाक, ओहि रहस्यक पता लगयबाक।

जग्गू बाबूक नजरि कें ठेकनाकऽ, हुनका मे कने सटले सन बैसिकऽ, ओतहि ठिकियाबऽ लगैये जत` हुनकर नजरि नम्हर सन सीमिट कएल जगह पर केन्द्रित छनि। ओहो ओतहि नजरि गड़ा दैत अछि।

ओकरा लेल तऽ से एकटा विचित्र-सन चोथरल आकार मात्र छइ। चारूभर जहाँतहाँ सँ सीमिटक बहकल आकार सभ बनि गेल छइ। ई मकान मालिकक कृपण निर्देश आ मिस्त्रीक करनीक संग ओकरा साधल हाथक कमाल छइ जे सीमिट क्षतिग्रस्त जगह सँ बेसी खर्च नहिएँ जेकाँ भेल छइ। मुदा, तैयो करनी मे लागल-भीरल मसाला चारूभर छिटकिक` विचित्र आकृतिक जन्म दऽ देने छइ जे मात्र इच्छुकक गहिंकी नजरि सँ पकड़ा सकैत अछि।

ओऽऽ ! सुआइत ! बुढ़हा कें अवस्स किछु भेटलनिहएँ एहि बिच्छू-काँकोड़ सन आकृति मे ! शिखा कें जेना अपनो किछु भेटबाक उमेद भऽ जाइ छइ।

शिखा अन्य देबाल सभ पर देखैत अछि। छोट-पैघ सभ प्लास्तर पर कंजूसीक प्रमाण प्रत्यक्ष छइ। पछिला देबाल पर तऽ एकटा मनुक्खक कटल मूड़ी सन आकृति बनि गेल छइ। आँखि बना देला पर से टुकुर-टुकुर ताक` लगतै ! कोन्ह दिस चट्ट उखड़ि गेला सँ एकटा आलिंगनबद्ध जोड़ी सन बुझा रहल छइ, जे मात्र रंग-टीपक बाट ताकि रहल छइ।

शिखा उनटिकऽ पूछै छनि -`एम्हरो एहि देबाल सभ पर किछु आकार-प्रकार सभ छइ जे बूझऽ मे अबै छइ। मुदा, अहाँ जतऽ नजरि गड़ौने छी, से मात्र अहींटा बुझै छिऐ। झूठे के गूड़-चाउर खाइत रहै छी। बिहाड़ि मे उखड़ल गाछक जड़ि मे की भेटत?`

एहि बेर जेना शिखाक बात धेआन सँ सुनने होथि, जग्गू बाबू प्रफुल्ल मोने शिखा कें देखै छथि, आ मुस्कियाकऽ रहि जाइ छथि।

अहाँकें बूझब हमरा बशक नहि अछि। काकी माँ कहि गेल छथि मोन पाड़ऽ लेल, तें हमरा भुकनी लागल अछि। आब नहिएँ कहब से बुझि लिअ ! शिखा बाजिकऽ चलि जाइत अछि जेना अपने बेटी बाजिकऽ चलि गेलि होनि।

ओकर साधिकार बाजब पर जग्गू बाबूक मोन गदगद भऽ जाइ छनि जे बेटीक अभाव ई खटकऽ नहि दइ छनि। ओकरा जाइत जे ओ देखऽ लगै छथि से ओम्हरे टकटकी लगौने देख रहल छथि जेना ओ ओतै-कत्तौ ठाढ़ि होअय। संदेह नहि जे बेटीक बहुत ढाठी एकरा मे आबि गेल छइ।

किचेन मे जोर-जोर सँ खटर-खटर आरंभ भऽ जाइ छइ। जग्गू बाबू कें लेल ई संकेत यथेष्ट छनि। शिखा खिसिया गेलि छइ ताहि मे संदेह नहि। आइ जौं

पत्नी कि बेटी रहितनि तऽ कि मात्र एतबे तक सीमित रहितनि !

जग्गूबाबू अनिवार्यतः साकांक्ष होइ छथि।

शिखा भनसा घर सँ हुलकी मारिकऽ हिनका देख लैत अछि।

जग्गू बाबू कें तकर अर्थ बूझ` मे आबि जाइ छनि।

ओ एतहि सऽ बजै छथि -`जएह छइ, सएह बना ले एखन।`

`छुच्छे दालि-भात घोंटल हएत? दीअ पाइ जाइ छी हम बजार !`

करीब दू दिन सँ सामनेबला देबाल पर बनल आकृति मे जगू बाबूक दृष्टि साकार होबऽ लेल आफन तोड़ने छनि। हिनकर विभिन्न ब्रशक सहज स्पर्शक अभाव मे से जीवंत नहि भऽ पाबि रहल छइ। आइ मोन भेल छनि आलमारी सऽ रंगक सरबा सभ आ ब्रशक बंडिल निकालि एहि काज कें संपन्न कइयेटा लेताह। मुदा एकटा भय, बस एखने मोन मे पइस गेलनि अछि।

आ से भय शिखा छनि।

शिखा एखन अपना काकी माँक अनुपस्थिति मे बेसी जब्बर भऽ गेलि अछि। रंग-टीप करऽ मे निश्चय रोकटोक करतनि। अपना ढंगक अनाबश्यक तर्क-वितर्क करतनि। एना मे सभ गुड़ गोबर भऽ जेतनि।

एहन निश्चिंती काज लेल रातुक एकांत सन उपयुक्त समय आर कखन भऽ सकतनि ?

जग्गू बाबू उठि जाइ छथि आ पुछै छथिन -`लबै झोड़ा-झपटा ! हमरा घरक बेटी डाँटी कें हरसट्ठे बजार जाइत देखलही कहियो?`

शिखा झोरा दइ छनि। ओकर मुँह खुशी सँ दमकि रहल छइ। जग्गू बाबू बाहर जाय लगै छथि तऽ शिखा कहै छनि - `देखि-सुनिकऽ लेब माँछ। दाम-ताम करबै। ओजन से देखबै ठीक सऽ।`

जग्गू बाबूक मुँह मुस्की सँ भरि जाइ छनि। झोड़ा नुरियबैत बाहर होइ छथि। बजबे की करताह। बेटी, पत्नी आ किछु दिन सऽ शिखा एहनसन शिक्षा दैते रहै छनि। `भ्यू होल` सऽ चिन्हियेकऽ घर खोलिहें-`बाहर भऽ अतेक कहिकऽ चलि जाइ छथि।

दोसर दिन भोरे घर मे प्रवेश करिते शिखा कें चकविदोर लागि जाइ छइ। विभिन्न आकृति सभ मुखरित भऽ उठल छइ। चारूकातक देबाल पर नजरि खिरबैत

अछि, आ आबिकऽ सामने बला देबाल पर अटकि जाइत अछि। जग्गू बाबू चुपचाप ठाढ़ छथि।

`तऽ इएह भेटल अहाँकें एहि देबाल मे? सत्ते, अहूँ विचित्र लोक छी। की-की ने अलाय-बलाय सुझैत रहैये अहाँके। काकी माँ कें सोहेतनि तहन ने?

`तोरा केहन लगलौ से कह।`

`हमरा लेल कोन अछि। आइ एतऽ काल्हि ओतऽ। काकी माँ कें नीक लागनि से कनिको धेआन नहि रहल आहाँ कें। हुनका तऽ भगवानक फोटो चाहियनि।`

पाछू मे राखल कुर्सी पर जग्गू बाबू बैस रहै छथि। जग्गू बाबूक सामने सँ हटिकऽ शिखा हुनका बगल मे आबिकऽ ठाढ़ि भऽ जाइत अछि।

`हँ, आब भेलैने। एतऽ सऽ देख मे साफ लगै छइ - `शिखा बजैत अछि। दुनू गोटे चुप छथि। दुनूक नजरि सामने देबाल पर अटकल छनि।

`शिखा?`

`ऊँऽ!`

`बूझऽ मे किछु एलौ चोथरल-चाथरल प्लास्तर मे?

`हँ, थोड़-बहुत।`

`तैयो बुझियै?`

साफे तऽ छइ जे एकटा लाल घोड़ा खसैत-पड़ैत भागि रहल छइ, आ... !

`घोड़ा नहि, घोड़ी`-जग्गू बाबू बीचहि मे बाजि उठै छथि।

शिखा सहमि जाइत अछि। नजरि सामने पेंटिंग पर अटकल छइ।

`हँ तहन आगू?`

....आ सबार पाछू भरे खसि रहल छइ। ओकर टोपी हवा मे उड़िया रहल छइ। ठीक ताहि सऽ उपर मे एकटा बुढ़ियाक आँखि सऽ भटभट नोर टपकि रहल छइ। पाछू मे, कने फटकी मे एकटा लड़की लाजे मूड़ी गोतने बैसल छइ। कने दूर पर लोकक भीढ़ उमड़ि पड़ल छइ। आश्चर्य, लज्जा, घृणा आ क्रोधक सम्मिलित अभिव्यक्ति भीड़क मुँह पर स्पष्ट छइ। भीड़ तमतमाएल छइ।`

एकलखति बजैत-बजैत शिखा चुप भऽ जाइछ।

शिखा सभ माने मे सचेष्ट अछि, से अटकर पहिने सऽ जग्गू बाबू कें छनि।

मुदा ओकर अभिव्यक्ति आइ चकित कऽ देने छनि। शिखा जाय लगैये तऽ जग्गू बाबू टोकै छथिन - `शिखा एकरत्ती !`

शिखा ठाढ़ि भऽ जाइछ।

मोन मे आबि जाइ छनि अपन भूल सुधार करबाक बात - `शिखा, हमर बात फूसि लागि सकै छउ, मुदा ई सत्य छइ। जहिया हम बड़ नेना रही तऽ देखियै जे जमीदारी ठाठ-बाटक गाम मे बेसी लोक घोड़िये राखय। ओ बात आइयो हमरा मोन मे जमल अछि। एतऽ घोड़ा-घोड़ी, किछु भऽ सकै छइ।` मुदा, कहऽ लेल उद्दत भइयोकऽ कहल पार नहि लगै छनि जे उपयुक्त तऽ घोड़ीये छइ।

चुप्पी पसरऽ लगै छइ। तारतम्य के असह्य बना देबऽ सँ पूर्वहिं शिखा टघरि जाइछ।

जग्गू बाबू आँखि मुनने चुपचाप बैसल सोच मे डूबल छथि। मुँहक आभा सँ साफ झलकि रहल छनि जे कोनो सफाइ बइमानी हेतनि। शिखाक लुप्तप्राय स्वाभाविक वात्सल्य चपलता पर लज्जित आ चिंतित भऽ उठल छथि। स्पष्टतः अपना कें कलुषित एवं घृणित अनुभव कऽ रहल छथि। कुर्सी मे धसल चलि जा रहल छथि। पश्चाताप छनि जे कागत पर एकरा पारने ठीके रहितनि।

दोसर दिन भेने घर मे ढुकिते शिखा अवाक रहि जाइत अछि।

सभटा पेंटिंग पोतल छइ।

शिखाक आँखि डबडबा जाइ छइ। जग्गू बाबू सँ नजरि मिलिते अपन मूड़ी हुनका छाती मे नुकाकऽ कनैत-कनैत बजैत अछि - `अहाँ कलाकार नहि, हत्यारा छी ! दुनियाँ संग अहाँ अपना कें किये सानि-बाटि देलिऐ? ओ सवार आहाँ छोड़ि क्यो भऽ सकैये ! अहाँ तऽ अपवाद छी, अपवादो मे अपवाद !`

अश्रुपूरित नेत्र सँ जग्गू बाबू शिखाक माथ पर हाथ फेर रहल छथि। शिखा सिसकि रहलि अछि।

`जो, चाह बनोगऽ`। बाहर जयबाक अछि पोताइबला लोक ठीक करऽ। शिखा कें फराक करैत कहै छथिन।

`नहि, पहिने कहू जे ई कलाकृति बनाकऽ कहिया देब। नहि तऽ अहाँक घर एखने छोड़िकऽ जा रहल छी।`

`ई कोनो नव बात तऽ नहि छइ। आइ ने काल्हि तोरा जयबाक छौहे।

कुमारि बेटी कें लोक कतेक दिन घर मे रखतै? हमरा तऽ तोरा काकी-माँक डर होइये।`

`एकटा बात खुलासा करै छी हम। ओ तऽ इएह बुझै छथि जे अँहीं दुनू बाप-बेटी हमर जाति-धर्म नही बुझने छी। दोसर, विश्वासे पर ने छोड़िकऽ गेल छथि हमरा अहाँ लग?

जग्गू बाबू शून्य मे ताकि रहल छथि।

...आहाँ पर हुनका बड़ गर्व छनि। कहैत रहै छथि - `हिनका पाएब हमर पूर्व जन्मक तपस्याक फल अछि। पाइ तऽ हाथक मैल होइ छइ।`

जग्गू बाबू चुप छथि।

शिखा नोर पोछैत स्थूल गतिएँ भनसा घर दिस जाइत अछि।

जग्गू बाबू ओकरा जाइत देखि रहल छथि। विश्वास जागि रहल छनि जे ओकरा मे ओकर स्वाभाविक गति फिरऽ मे समय नहि लगतै।



घरमुँहा

एसगरुआक जिनगी आ ताहि मे छुट्टीक दिन - ओकरा घर काटऽ दौड़ै छइ। भरि दिन औनाएल-टौआएल सन लागऽ लगै छइ। कोना ने होउ। सभदिन परिवार तऽ संगे रहलै।

कतेक पढ़त आ की-की पढ़त? छुट्टी दिन ई करब ओ करब, आ सभटा कऽ लेब। की-की आ कतेक ने सोचि लैत अछि ओ छुट्टी दिनक लेल, जेना ओ एकटा दिन कतेक-ने-कतेक घंटाक होइत होइ। ओहि दिनक एक पल जेना एक घंटाक होइत होइ जेनाकि ब्रह्माक एक दिन एक हजार बर्खक होइ छनि।

पढ़ऽसँ मोन भरि जाइ छइ तऽ लिखऽ लगैत अछि। लिखऽ सँ मोन आजीज भऽ जाइ छइ तऽ टी.भी ऑन करैत अछि। सभ सीरियलक एके बात। दृश्य बदलैत चलू। शब्द कें आगु-पाछू समावेश क`कऽ वार्तालाप जोड़ैत रहू। रेलक डिब्बा जकाँ जोड़ैत रहू। बस, कथा बढ़ैत रहै छइ। सिरियल आ सिनेमा बनि जाइ छइ। घर मे टी.भी. छइ तऽ समय बितबऽ लेल लोक देखबे करत। ओना ओ आब अपना कें मात्र समाचार तक सीमित रखने अछि।

ओ टी.भी ऑफ क`कऽ उठि जाइत अछि। पेंट पहिरैत अछि। उपर सँ बूशर्ट धऽ लैत अछि, आ अएनाक सामने मे ठाढ़ भऽ जाइत अछि बाबरी फेरऽ लेल। तीन-चारि बेर एम्हर सँ ओम्हर ककबा फेरैत अछि। अपन सन स्टाइल भऽ जाइ छइ। नम्हर केश राखऽ मे यैह तऽ सुविधा छइ जे बेसी सीट-साट नहि करऽ पड़ै छइ ओकरा। बिनु अएनो के ओ केश फेर लैत अछि।

बूशर्टक बटन लगबैत, चप्पल मे पएर घुसियेबाक चेष्टा मे चप्पल कें पएर सँ घिसिअबैत, घरक मुँह तक चलि अबैत अछि। ओकरा कोनो धड़फड़ी नहि छइ। कतौ कोनो तेहन जरूरति नहि छइ। समयक कोनो पाबन्दी नहि छइ। तथापि, ओ एना निकलैत अछि जेना किछु मोन पड़ि गेल होइ कोनो तेहन अति आवश्यक काज। असल मे घर सऽ उबिया जाइत अछि ओ।

गेट मे ताला लगबैत अछि, आ निकलि जाइत अछि धर्मतल्ला दिस।

एक समय मे ओ धर्मतल्ला शब्द सुनिते खौंझा जाइत छल। तर्क-वितर्क कऽ लैत छल। तहिया `एसप्लेनेड` आ `धर्मतल्ला`क अर्थ मे कोनो सामंजस्य देखऽ मे नहि अबै। कहाँ घुमवा-फिरबाक, मटरगश्ती करबाक ऐलफैल रमना

`एसप्लेनेड`, आ कहाँ धर्मक स्थान `धर्मतल्ला।` आफिसक थकावटि उतारऽ लेल ओकरा लेल धर्मतल्ला आ विक्टोरिया ठीक रहइ छइ।

ओना ओकरा कोनो तेहन धड़फड़ी नहि रहइ छइ। लोक सँ बचैत कि रगड़ा खाइत चलब आदति भऽ गेल छइ। धक्का दैत आ खाइत आस्ते-आस्ते बढ़ि रहल अछि। ओ हद-सँ-हद बिड़ला प्लेनेटेरियम तक जाएत, आ अही रस्ते घर घूरि आएत। मोन हेतइ तऽ कनेकाल विक्टोरिया मे बइस रहत।

घूमऽ-फिरऽ लेल कि मोन बहटाबऽ लेल, सेहो साँझखनकऽ माने रविके साँझकऽ, जे कि ओकर अपन दिन रहै छइ, अर्थात छुट्टीक दिन, ओ बेसी काल एम्हरे चलि अबैत अछि। ओकरा डेरा सँ धर्मतल्ला ततेक दूरो नहि छइ। लगक आन-आन पार्कक तुलना मे दूर छैहो तऽ एतऽ सन उन्मुक्त ऐल-फइल ओहि अट्टालिका वेष्ठित पार्क सभ मे भेटब मोश्किल छइ। धर्मतल्लाक बसात मे औनाय नहि पड़ै छइ। समुद्री बसात विक्टोरिया दिस सँ अबैत रहै छइ आ मैदानक खट्टा, मिट्ठ, तीत आ कसाइन, जूही-चंपाक मोहक गंध मे फेटल देसी-विदेशी नुनछराइन गन्ह आ वाहन-धूम्र कें अपना संग उघने-उघने महानगरक कंकरीटक जंगल मे बिलहैत-बिलहैत कतऽ-ने-कहाँ लुप्त होइत रहैत अछि। एहि अनवरत प्रक्रियाक चलते साँस लेबऽ मे असौकर्य नहि बुझांइ छइ। तें धर्मतल्ला ओकरा नीक लगै छइ।

ओ नहुँएँ-नहुँएँ चौरंगी के नापि रहल अछि। मैदान दिस सँ अबैत सिहकी ओकरा मोन प्राण कें भरि रहल छइ। मोन हल्लुक होबऽ लगइ छइ।

हगामा लोक एक दोसरक विपरीत दिशा मे भागि रहल अछि। पएर जहाँ उठलै कि तरक दरी जेना अपने मोने पाछू मुँहे खसकि जाइ छइ। फुटपाथ अपने मोने ससरल जाइ छइ। लोकक गंतव्य समीप भेल जाइ छइ। धक्का लगै छइ लगौक, तकर परवाहि ककरो नहि छइ। सभ बेगरतीत अछि। सभ अपस्यांत अछि। काज सँ घुरैत लोक हड्डा सँ खुजल बड़द भेल अछि। अपन क्यो अंतरंग भेटियो गेलै तऽ बस एतबे `की यौ कुशल ने? अच्छा हेतै बाद मे गप्प।`

साँझखनकऽ चौरंगी मे आरो लोक होइत अछि। घुमनाहरक भीड़, केनदोन-करऽबला लोक, आ` `लाइफ एनज्वाय` करऽबला सेठ सभ। जेहन लोक, तेहन मोन बहटेबाक साधन एहि एरिया मे छइ। बस, मात्र गेंठक मजगूती देखऽ पड़ैत छइ। मोन-मिजाजि मे उत्साह राखऽ पड़ै छइ।... पाइ फेकू, तमाशा देखू।

अयँ ई कत्तऽ!... ओ चकित अछि। फेर अपना बुद्धि पर हँसियो लगै छइ।... धुत् ! जहिना एतऽ हम, तहिना लोक, आ तहिना ईहो। ई कला, साहित्य आ व्यापारक नगर कलकत्ता छइ, कलकत्ता ! देश के सभ्यता सिखबऽ बला प्रथम शहर आ नगर। ओकरा कंप्लेक्सक छइ ताहि सँ की? एक-दोसर कें मुँह सँ चिन्हैत अछि, ताहि सँ की? ओकरा एहन घटिया स्तर पर नहि सोचबाक चाही !

बेकारक माथापच्ची नहि कऽ एक-एक जड़ीब गनैत अपना चालि मे ससरऽ लगैत अछि। चौरंगीक चमक-दमक देखैत बढ़ि रहल अछि।

मन जो भये दस-बीस।.... एना मनेलासँ कहूँ मोन मानै ! कनडेरिये कि तऽरे आँखिये, आ फेर बीच-बीच मे पूर्णरूपेण ओ, ओकर आँखि ओकर पछौड़ नहि छोड़ै छइ। दुनूक चालि एके रंग नापल तौलल ठीक आगू-पाछू भऽ रहल छइ।

ओ छौंड़ी उनटिकऽ ताकइ छइ। एहि बेरक ताकब मे ओकरा एकटा अपन अर्थ भेटै छइ। जेना ओ पूछि रहलि होइ - ``हमर पछौड़ किये धेने छी? अपन रस्ता नापू।` ओकर मोन खसि पड़ै छइ।

ओकर कम्पलेक्स आ ओत` ओकर प्रतिष्ठा छइ। ओ सदति मुड़ी गोतने चलैत अछि। अर्थात कोनो छौड़ी की स्त्रीगण दिस मूड़ी उठाक` नहि देखैत अछि। ई छौड़ी तऽ प्रगल्भ अछिये। ई कखनो किछु क`-करा सकैत अछि... ओ ब्यग्र भऽ उठैत अछि।

ओ चट दऽ बगलियाकँऽ ओकरा सँ आगू बढ़ि जाइत अछि। थोड़ेक दूर झटकारिकऽ चलैत अछि जखन विश्वास भऽ जाइ छइ जे ओ आब बहुत पाछू छूटि गेल हेतै, अथवा कतौ-कोम्हरो अपना काज सँ चलि गेलि हेतै, तऽ फेर ओ अपना चालि मे आबि जाइत अछि।

मोनक जिज्ञासा धैर्य कें तोड़ि दइ छइ। उनटिकऽ पाछू देखैत अछि। ठीक ओकरा पाछुए लागलि छइ ओ। एकरा ओ पुछै छइ - `कने रस्ता देब?`

अप्रत्याशित प्रश्न पर ओकर दुनू कनपट्टी गरमा जाइ छइ.. सन्नऽ! सन्नऽ! सन्नऽ !

बेसी मीन-मेष नहि कऽ ओ एकात भऽ जाइत अछि। ओ अगुआ जाइ छइ। डेग नापऽ लगै छइ, एक, दू, तीन, चारि पाँच....।

दुनू बढ़ि रहल अछि आगू-पाछू। एकटा खीचि रहल छइ। दोसर ठेल रहल

छइ। एकर जिज्ञासा उद्वेग मे बदलि जाइ छइ। जहाँ लोक बीच मे अबै छइ कि झटदऽ बगलियाकऽ ओकरा पाछू मे भऽ जाइत अछि। ओकर पछौड़ धेने चलैत आब नीक लगै छइ। ओ उत्कंठित भऽ उठैत अछि।... देखक चाही ई कतऽ जाइये!

ओ एकरा उनटिकऽ देखै छइ।

अयँ, मुस्कियाएल कियेक ! नञि, हमरा धोखा भेलय। लिपिस्टीकक लाली आ सामनेक ऊगल उज्जर-उज्जर दंत-पंक्ति सँ हमरा धोखा भेलय। मानि लेल जाय जे वास्तव मे ओ मुस्कियै छलै तऽ एकरा की कहल जाय - आग्रह कि तिरस्कार ! ओकर तारतम्य आर ओझरा जाइ छइ।

ओ अपना विचार मे, अनिर्णयक विचार मे उबडुब करऽ लगैत अछि। एकटा लोकक धक्का लगै छइ तऽ ओ अपना गुनधुन सँ बाहर अबैत अछि। सामने मे ओ नहिऽ छइ। ओ कतौ नदारद भऽ गेलि छइ - एकदम सँ छू-मंतर।

अँटकर सँ बामा कातक पार्क दिस मुड़ि जाइत अछि। पार्कक कोनोटा बेंच खाली नहि छइ। जोड़ा लागल सभ अछि। एक आधटा ओकरे सन एकहारि टौआ रहल अछि।

ओ नजरि खिरेने पार्क मे एम्हर-ओम्हर घुरैत अछि। पता नहि, ओ कोन बिहड़ि मे सन्हिया गेलै। गैंचा माछ हाथ सँ छिहलिकऽ पाँक मे धसि गेलै। गांथऽबला कोंती ओकरा पास मे नहि छइ, ने कहियो रखलक, आ ने राखऽ चाहैत अछि। अपन मारल माँछ सोअदगर होइ छइ से सुनल छइ ओकरा। ओ साहसहीन अछि। ओ सभ्य समाजक लोक अछि। सभ्य लोक देह मे थाल नहि लगबैत अछि। गैंचा माँछ तऽ थाले मे भेटतै ने।

एकटा कोल्ड ड्रींक ल`कऽ ओ सब्जी पर बैसि जाइत अछि। दू घोंट गड़किकऽ बोतल कात मे ध`कऽ चारूकात चकुआ-चकुआ देखैत अछि, आ हेरैत रहि जाइत अछि। आँखि थाकि जाइ छइ। माँथ भरिया जाइ छइ।...धुर, जाव चुल्हि मे ! मुँह मराबओग` कतौ !

बोतलक सोह होइ छइ। सभटा गैस निकलि गेल छइ - ने ठंढा ने गर्म ।

ओ उठैत अछि। दोकान तक अबैत अछि। बोतल बक्सा मे धऽ दइ छइ आ चकुआ-चकुआ चारूकात देखैत अछि। दोकानदार ओकरा ठिकियबैत एकटा पाँच टाकाक सिक्का साममने मे ध` दइ छइ।

ओ सोह-बिहिन चलि दैत अछि।

बस मात्र चारि-पाँच डेग बढ़ल हएत कि ओकरा कान मे ठेकै छइ - `बेचारा!`

आ` तकरा बाद खिलखिल हँसीक फुहारा ओकर पछौड़ धऽ लइ छइ।

एस.टी.डी.लाइन पर पत्नी कें कहैत अछि -`अहाँक हँसी सुनला बहुत दिन भ` गेल - दू मास सँ उपर। कने हँसियौ ने !`

पत्नी हँसिते-हँसिते कहै छथिन - `बस, दुइये मास मे?`

`बस हम पहुँच गेलौं आहाकें आनऽ लेल, सएह बूझि लिअ। अपना रान्हल सँ अछौंह कहाँ होइए। आर सब बढ़ियाँ तऽ? ... अच्छा रखइ छी, मुदा आहाँ तैयार रहू। बुझू तऽ हम पहुँच गेलौं।`

ओ गाम जयबाक तैयारीक बात सोचैत आगू बढ़ि जाइत अछि अपना कंप्लेक्स दिस।



सनकिरबा

`वास्तव मे बड्ड अक्खज होइये ईसब। ने गोली मारऽ मे दरेग, ने मरऽके डर।`एकबार मे `अक्षरधाम` पर आतंकबादी द्वारा आक्रमणक समाचार पढ़ैत-पढ़ैत हमरा मुँह सँ निकलि जाइत अछि।

चाउर सँ अकटा बीछैत पत्नी बजै छथि - `बहरिया सऽ सकी, घरबैया सऽ हारी` - से नञि बुझल अइ? सएह परि छइ अइ देशक।`

`चाह बनाउ। हम अबै छी बाथरूम सऽ`-अतेक बजैत हम उठि जाइ छी।

फर्रऽऽऽ ! फर्रऽऽऽ! फटाक !

हम ठाढ़े-ठाढ़े लग्घी करबाक सुरसार जहाँ करिते छी कि फर्र-फर्र शब्द गोचर होइत अछि। आ जाबत हम सम्हरी-सम्हरी ताबत मे कतऽ-ने-कोम्हर सँ एकटा बेस जुआएल सनकिरबा हमरा बामा कान पर झपट्टा मारैत अछि। मुदा, तेंहिना हमर बामा हाथ चोट्टहि स्वचालित यंत्र जकाँ सनकिरबा कें झपटिकऽ फेकि दइ छइ। ओ देबाल सऽ ठोकर खाइत पैखानाक पेन मे खसि पड़ैत अछि। पहिने तऽ हमरा होइत अछि जे ओ मरि गेलै। मुदा तखने ओकर सूढ़ डोलैत सन बुझाइत अछि। हम कने तजबीज सँ देखै छिऐ। हमरा गहिंकी नजरि सँ ओ पकड़ा जाइत अछि। ओकर गोल-गोल बिल्लौरी सन चमकैत आँखि घुरमैत सन लगैत अछि। तहन हमरा कनिको संदेह नहि रहि जाइत अछि जे ओकर सूढ़-द्वय डोलि नहि रहल छइ, बल्कि ओ अपने सँ डोला रहल अछि। अर्थात ओ अपना अंटेना द्वारा हमर गतिविधिक अंटकर लऽ रहल अछि। एकर साफ अर्थ छइ जे ओ मरल नहि अछि। वास्तव मे ओ दम धऽ रहल अछि। चोट तऽ कम नहि लागल छइ ओकरा, तें सगबगाइतो नहि अछि। भऽ सकैये, हमरा अंदाजि ने रहल होअय चुपचाप ओ।

ओना देखी तऽ सनकिरबा कें अपन करनीक फल भेटि गेल छइ। तथापि मोन मे संतोष नहि होइत अछि। एखनो तक हमर बामा हाथ बमे कान कें सहला रहल अछि, आ नजरि अंटकल अछि पेन मे घात लगाकऽ मृतप्राय पड़ल सन सनकिरबा पर। संग-संग हम सोचि रहल छी कोनो एहन ढंग सँ ओकरा आर कड़गर दंड देबाक। जौं-जौं हम ओकरा देखैत जा रहल छी, हमर मोन तहिना आर घृणा सँ भरल जा रहल अछि.... एह्, केहन जुआएल अछि ! सरबा अछि कोना पड़ल ढेंग जकाँ !

हमर लग्घी जे कनेकाल सँ थम्हल छल - नञि-नञि, जकरा हम रोकने छी तकर आभास फेर सँ होइत अछि। नेनपनक एकटा अकट्ठीपन फुरा जाइत अछि। प्रतिशोधक कड़गर उपाय मोन मे चमकि उठैत अछि।...मरऽ के तऽ एकरा छैहे, मुदा तड़पि-तड़पिकऽ !

... आ हम अपन लग्घी ओकरा दिस मोड़ि दइ छिऐ, से सटीक ओकरा मुँह लग। अपन तीरंदाजी प्रहार पर हमरा गर्व होइत अछि।

हमर तरकीब सफल रहैत अछि। ओ छिहलिकऽ मोरी मे खसि पड़ैत अछि। हम बड़ खुश होइ छी। अपना सफलता पर आनन्द होइत अछि। .. जाथु सरबे ! मरथुगऽ आब मोरी मे ! आएल छलाहए हमरा पर आघात करऽ!

लग्घी कयलाक बाद नियमतः एक मग पानि ढारि दइ छिऐ नियामक होबऽ लेल जे पाइप मे कत्तौ लटकल-फटकल नहि रहि जाय, आर दू मग पानि ढारि दइ छिऐ। पानिक धारक चोट पर निश्चित रूपें ससरिकऽ नीचा सेप्टिक-टंकी मे खसि पड़त से अपना विश्वास भऽ जाइत अछि। अर्थात टंकी मे खसि पड़बाक माने भेलै ओकर मृत्यु। आ सएह तऽ चाहै छी हम। एहि सँ बढ़िकऽ प्रतिकार भइये की सकै छैइ ! मरओगऽ तड़पि-तड़पिकऽ ओहि मे !

हमरा अपना सफलता पर गर्व होइत अछि। गर्वोल्लास मे हम क्षणभरि निर्निमेष मोरी दिस देखैत ठाढ़ रहैत छी। ओकर कोनो अतापता नहि बुझाइत अछि।

कयबेर मुँह पर आ आँखि मे पानि झोंकइ छी। मुदा, मोन प्रपन्न नहि होइत अछि। सनकिरबाक झटका सँ उत्पन्न झुरझुरी आब फेर बूझऽ मे आबि रहल अछि। घृणा सँ भरल झुरझुरी समूचा देह मे पसरैत सन लगैत अछि। कान कें कयबेर मलि-मलि कऽ धोइ छी। मुदा, असरि उंटा होबऽ लगैत अछि। झुरझुरी बाहर होयबाक बजाय जेना आर भीतरे मे पइसैत सन लगैत अछि।

बदला लऽ लेबाक संतुष्टिक संग वासिंग बेसीन मे हाथ-मुँह धोअ जाइत छी। कयबेर हाथ-मुँह धोइ छी।

हम कने खिसिआएल सन भेल कान कें रगड़ि-रगड़िकऽ धोअ लगै छी।... मुदा अहिरेबा ! उंटे कान आर लहरऽ लगैत अछि।

आब झुरझुरी तऽ बिला गेल अछि। धेआन आब कानक लहरब पर केन्द्रित भऽ जाइत अछि। बेसीनक अयना मे कान के निंघारै छी। कान एकदम लाल टरेस सिनुरिया आम सन भऽ गेल अछि।... `धुर जो ! करऽ गेलौं कुगति, भऽ गेल बिहति !`... हम अपने मोने ब़ड़बड़ा उठै छी।

हमर पित्त फेर सँ सनकिरबाक गन्ह पर आंट होबऽ लगैत अछि। हम तऽ अपना भरि ओकरा समाप्त कैये देने छिऐ, तथापि फेर असंतोष जागऽ लगैत अछि। होइत अछि, जौं मृत्यो सऽ भारी कोनो दंड सनकिरबा लेल होइतै तऽ हम ओकरा दऽ दितिऐ।

हम तत्काल चुरुके-चुरुके कान पर पानि देबऽ लगै छी। लहरब कने कम होइत अछि। मुदा, तकरा अनुपात मे झुरझुरी आ घृणा फेर बढ़ऽ लगैत अछि। रहि-रहिकऽ देह भुलकऽ लगैत अछि, से सनकिरबा सँ बेसी ओकरा द्वारा आघातक समय मे ओकरा देह सँ निःसृत बिषाइन गन्हक अनुभूतिक स्मरण सँ। ओकर ओ गन्ह जेना नाक मे जमि गेल होअय, मोन पड़िते ओकिआय-ओकिआय पर भऽ जाइ छी। लगैत अछि, सभटा पूरा मे बैसि गेल अछि। बुझाइत अछि, ओकर ओ गन्ह जेना बाथरूम मे जमकि गेल छइ, आ आस्ते-आस्ते एकटा हमरे नाकक रस्ता द`कऽ भीतर मे पैसबाक निर्णय कऽ लेने अछि। तें तऽ कहल गेल छइ - शत्रु कें छोटकऽ नहि बूझी। भलेही हमरा नजरि मे ओ किछु नहि अछि, मुदा तेंकि ओ अपन रक्षार्थ, अपन सामर्थ आ ब्योंतक उपयोग नहि करत।

आब हम जल्दी बाहर निकलि जाय चाहैत छी। नहि तऽ घुरमा लागि जाएत। हाँहि-हाँहि नरमे हाथे साँची सँ कान कें पोछैत बाहर होबऽ लगैत छी कि नजरि पेन दिस चलि जाइत अछि। मोरीक मुँह पर केश सन पातर दूटा सूढ़ लबलबाइत सन बुझाइत अछि। नियामक होबऽ लेल ल`ग मे जाकऽ देखै छिऐ। सनकिरबाक थुथुन देखबा मे अबैत अछि। ओ प्रान-प्रान सँ उपर अयबाक चेष्टा कऽ रहल अछि!

बाप रे, एहन अक्खज नञि देखल कत्तौ !... हमर पित्त तऽ बुझू तुबरीक चिनगी जकाँ भड़िककऽ अकास ठेकि जाइत अछि।

हमर नजरि पड़ि जाइत अछि पानि सँ भरल बाल्टीन पर। ने हमरा किछु हेराइये, ने फुराइये। चोट्टहि भरलो बाल्टीन पानि पाइप मे ढारि दइ छिऐ। तैयो एतबे सँ संतोष नहि होइत अछि। बाल्टीन नल तर मे लगाकऽ कल खोलि दइ छिऐ।

पत्नी बाहर सँ चिकरै छथि - `तहन सऽ की करै छिऐ यो? बुझाइये, टंकी खालिये क`कऽ छोड़बै आइ !`

पत्नीक सभ बात ने तऽ सुनऽ मे होइत अछि, ने तऽ बूझ मे अबैत अछि। पानिक झरझर शब्द पर हुनकर आधा-छीधा बात सुनबा मे अबैत अछि। मुदा, अंतिम बात जे ओ चिकरिकऽ बजै छथि, से सुनबा मे अबैत अछि। पानिक अनर्गल

जियान होयबाक हुनकर चिंता स्वभाविक छनि। ओ बाहर मे हमरा पर बड़बड़ा रहलि छथि। हमरा एखन सनकिरबा पर पित्त चढ़ल अछि। हम जवाब नहि दइ छियनि।

हम दहिना हाथे भरलाहा बाल्टीन उठा लइ छी, आ बमा पएरे खलियहबा बाल्टीन भरऽ लेल कल तर मे ठेल दइ छिऐ।

गड़-गड़ाक ! गड़ गड़ाक !

बाल्टिन कें छाती तक उठाकऽ पानिक चोटगर धार सोझे पाइप मे देबऽ लगै छिऐ। दोसरो बाल्टिन तहिना ढारि दइ छिऐ।

आब मिसियोभरि संदेह नहि रहि जाइत अछि जे ओ नहि मरल होएत।

पत्नी बाथरूमक केबाड़ पीटऽ लगै छथि - `यौ, तहन सऽ सब पानि किये बहेने जाइ छियै? चाह से सेराकऽ पानि भऽ गेल।`

हम अहूबेर चुप्पे रहैत छी। बास्तव मे, सनकिरबा पर हमर तामस आ ओकरा समाप्त कऽ देबाक हमर अपन जिद्दक समक्ष किछु सुझिये नहि रहल अछि। तथापि, आब सनकिरबा किन्नहुँ नहि बाँचि सकैत अछि, एहि नियामक धारणाक संग हम हाँहि-हाँहि बेसीन मे हाथ-मुँह धोकऽ केबाड़ फोलि बाहर भऽ जाइत छी।

चोट्टहि पत्नी पुछै छथि - `कोन कीर्त करै छलौंहएँ तहन सऽ?

संतोष आ खुशी हमरा मुँह पर चमकि रहल अछि। मुस्किआइत कहै छियनि - `एकटा आतंकबादी जत्थाक सरगना के पारघाट लगाकऽ आबि रहल छी। पहिने गरमा-गरम चाह पिआउ, तहन हमरा बाँहिक पूजा करू।`

जेनाकि सत्ते हम युद्ध सँ जीतिकऽ घुरल होइ, श्रांत-क्लांत किंतु संतोष सँ भरल मोने सोफा पर धम्म दऽ बैसि जाइत छी। दुनू पएर सामने सेंटर टेबुल पर पसारिकऽ आँखि मुनि पसरि जाइत छी पाछु भरे ओङठिक।`

पत्नी चाह अनै छथि तऽ पुछै छियनि - `कय फुटक चाह अछि?`

`जे दइ छी, से चुपचाप पीबू` - ओ हमर चाहक कप राखि अपन कप ल`कऽ बैसि जाइ छथि। ओ रूष्ट छथि ताहि मे कोनो संदेह नहि। पानिक चिन्ता जे भऽ गेलनिहें। तथापि उत्सुकताक झलक हुनका मुँह पर स्पष्ट देखबा मे आबि रहल अछि। जिज्ञासाक इच्छा रहितो ओ पुछती नहि से बुझा जाइत अछि। जौं से नहि रहितै तऽ लग मे नहि बैसितथि।

बड़ निश्चिंत सँ दू - बेर चाह सुड़ुकिकऽ पत्नीक उत्सुकता सँ बेसी अपने उताहुल भऽ सनकिरबा दऽ कहऽ लगै छियनि। हमर एक-एक शब्द पीबि रहलि छथि, सोआदि रहलि छथि, मुदा हुनकर मुद्रा देखऽ मे लगैत अछि जेना हुनका लेल धनिसन। ओ चुपचाप शांत भेलि सुनि रहलि छथि। बीच-बीच मे मुस्किया उठै छथि। कखनो-कखनो हमरा दिस ताकबाक भंगिमा सऽ प्रत्यक्ष बुझना जाइछ जे चाहक चुस्की सँ बेसी आनन्द ओ हमरा बात मे लऽ रहलि छथि। एक-दू बेर देखबा मे अबैत अछि जे चाहक घोंट लैत काल हुनकर टकटकी हमरे मुँह पर अटकल छनि। हमर खेढ़ा सुनैत-सुनैत बीच-बीच मे अपन हँसी रोकबाक हेतु दुनू ओष्ठ पल्लव कें भीतर मुँह मे मोड़ि-मोड़ि लइ छथि। हमर मोन तहन बिकछाक` कहऽ मे आर लागऽ लगैत अछि। तें एकटा खिसबा जकाँ आर गढ़ि-गढ़िकऽ कहऽ लगै छियनि।

पत्नीक चाह पहिनहि निंघटि जाइ छनि। हमर चाह बुझूतऽ पड़ले रहि जाइत अछि। खेढ़ा शेष क`कऽ बाँचल चाह ठण्ढा शरबत जकाँ उठाकऽ पीबि जाइत छी।

पत्नी हठात् भभाकऽ हँसि पड़ै छथि। हँसैत-हँसैत बेसम्हार भऽ जाइ छथि। हँसीक तोर तम्हिये नहि रहल छनि।

हम अपरतीब सन भेल हुनका देख रहल छी।

एसगर अपने मोने कत्तेक हँसती तें हँसऽ दइ छियनि। हँसीक तोर कम होइ छनि तऽ हँसिते-हँसिते बजैत छथि - `वाह, कमाल केलौं आहाँ! एकटा सैनिक अफसर भ`कऽ एकटा सनकिरबा कें नहि मारि सकलौं? सेप्टीक टैंक तऽ ओकर सुरक्षित अड्डा छइ। आ ओ सरधुआ ! ओ तऽ कतौ पाइपे मे सुटकल हएत।`

हुनकर बात सुनि हमर अक्किले गुम्म भऽ जाइत अछि। हमरा बिधुआएल देखि ओ सहमि जाइ छथि। मोलयमा देबाक उद्देश्य सँ अपना बात मे आगू जोड़ै छथि - `बड़ अस्सब होइये ओ। कनिके काल मे उपर पेन मे चलि आएत आ जहाँ पाँखि सुखेलै की फर्रऽदऽ उड़िकऽ उपर भऽ जाएत।`

हम चुप्पे रहैत छी। हमरा गुमसुम्मी पर तत्काल हमर एसगरे छोड़ि ओहि घर चलि जाइ छथि। हम टी.भी. `आन` करैत छी। चैनल पर समाचार आबि रहल छइ जे मंत्रीमंडल तीनू सेनाध्यक्ष कें सुरक्षा सम्बन्धी निर्णय लेबाक लेल स्वतंत्र कऽ देलकैये।

हमरा अपना कान पर विश्वास नहि होइत अछि। होइत अछि, जौं ई बात

सत्ते छइ, तऽ की एहि मे कोनो राजनीति नहि भऽ सकै छइ? की कोनो नव दाओ-पेंच नहि भऽ सकइ छइ एहिमे !

घरक मुँह पर सँ पत्नी सोर पाड़ै छथि - `कने एम्हर आएब?`

हुनका हाथ मे बेगन स्प्रेक फ्लीट छनि। हुनकर पाछू लागल हम बाथरूम जाइ छी। आँगुर सँ `पेन` दिस देखबैत पुछै छथि - `ओ की छइ?`

सनकिरबा पेनक कात मे चुपचाप पड़ल सूढ़ लबलबा रहल अछि। ताड़मतोड़ पाँच छह बेर फ्लीट करै छथिन। देखिते-देखिते ओ चितपट भऽ जाइत अछि।

चमकैत मुँह नेने एकटक ताकऽ लगै छथि जेना ओ पुछैत होथि -की आबो कहब बाँहिक पूजा करऽ लेल? पति छी, से तऽ करिते आबि रहल छी।`

फेर ओ कहै छथि - `देखलियै, इएह छइ एकर पारघाट लगेबाक ढंग।`

हम जबाब देबऽ चाहैत छियनि - हमरा मे जे सन्हिआएल अछि ताहि सऽ आहाँ मुक्त छी, आ तें सफल सेहो। मुदा, से कहल नहि होइत अछि। सत्ते, कहबी बेजाय नहि छइ - `अपन हारल आ बहुक मारल` - हमर स्थिति तेहने सन भऽ गेल अछि।

दुनू गोटे एक-दोसर कें देखि मुस्किया उठै छी।

`चलू बैसूग`। अइबेर हम अपना मोन सँ कॉफी नेने अबै छी। मुस्किआइत आ अतेक बजैत फ्लीट यथास्थान राख` जाइ छथि।

हम घर मे आबिकऽ सोफा पर बैस जाइ छी। अपना बुद्धि आ सोच पर भीतरे-भीतरे खौंझा उठै छी। सेनाक कैडर होयबाक गर्व जेना चूर-चूर भऽ रहल अछि।

`सामने सेंटर टेबुल पर राखल` बिभाजित भारत` पर नजरि जाइत अछि। हाथ मे किताब लऽ लइ छी। किताब कें धेआन सऽ देखै छी। पत्नी पर गर्व होइत अछि हुनकर पढ़बाक रूचि देखिक।` किताब तऽ आनिकऽ हमहीं देने छियनि। किन्तु, हम अपने नहि पढ़ि सकलौंहएँ आइ तक। किताब पढ़ब समाप्त करऽ मे कम्मे बाँचल छनि से फ्लैप सँ बुझना जाइत अछि।

●●●

गाम सधबा होइत अछि

प्रिय बंधु,

तोहर पत्र भेटल। हमरा अतिशय खुशी भऽ रहल अछि जे तों निधोख हमरा सँ, भलेहीं किछु धखाइते, हमरे बारे मे पूछि देलएँ अछि। हमरा-तोरा बीच मे जे प्रगाढ़ प्रेमक सेतु अछि, से आइ धरि निमहैत आबि रहल अछि। एकरा हम अपना जिनगीक पैघ उपलब्धि मानै छी। तकर खास कारण भरिसक इएह ने होइक जे हम दुनू गोटे एक दोसरक बिरोधी बात, कि कोनो तेहन आपत्तिजनक बात आइ धरि पेट मे सड़ा नहि सकलहुँ अछि। आपस मे विचार-विमर्श क` लइ छी हम तों। वास्तव मे, मानवीय दुर्बलताक कारण तत्काल कोनो तेहेन बात हमरा दुनू गोटे कें सुनऽ मे अधलाह लागि जाइत अछि। असल मे से दुनू गोटेक संबंध कें आर मधुर बना दैत अछि। स्पष्टतः हम-तों प्रत्यक्ष रूपें आपस मे बातचीत क`कऽ एक-दोसर सँ खाँटी बात जानि लेबाक अभ्यस्त भऽ गेल छी। बाद मे दुनू गोटे कें तकर संतोष होइत अछि। विश्वासक कड़ी आर मजगूत भऽ जाइत अछि। हमर-तोहर मोन-प्राण एक-दोसरक प्रति आर साफ भऽ जाइत अछि। अतः एना मे निःसंकोच आस्था हमरा तोरा संबंध कें अक्षुण बना देने अछि।

जे बात तों हमरा सँ आइ जानऽ चाहैत छएँ, हमरा मोन मे रहि-रहिकऽ औना रहल अछि, हृदय कें कचोटैत रहैत अछि। सभसँ दुखद स्थिति एकांतक ओ क्षण होइत अछि जखन कि ओ बात, जकरा हम एकटा घटना बुझइ छियै, अनेरे मानस पटल पर उभरि अबैत अछि, आ ओहि परिस्थितिक निछोड़ सभ जगजियार होबऽ लगैत अछि। हम तखन सोनिते-सोनिताम भऽ जाइ छी। हमर अंतरात्मा सिहड़ि उठैत अछि। मोन मे ग्लानि होबऽ लगैत अछि, जेना हम कोनो कुकर्म क`कऽ आएल होइ। अनकर खिधांस सुनऽ मे, करऽ मे, लोकके कतेक दीब लगै छइ ! पता नहि, अतेक विवेकहीन होबऽ मे लोक कें गौरवक अनुभव कियेक होइ छइ।

हमरा बारे मे कतेक छोट-पैघ बात जानल छउ। कलम कें सुन्न बूझि हमर जऽन सोबरतिया भरि फाँफड़ आम तोड़ि लेलकै, आ हम ओकरा टोकऽ के बजाय आर लओत भऽ गेल रही। मोने हेतौ कतेक कोसने रहय तों हमरा ताहि लेल? आ आब जाहिबेर आमक मास मे तोरा संग गाम पर भेंट होइत अछि, तोरा ओ घटना

मोन पड़िते छउ, आ तों से चर्च कऽ खूब हँसइ छएँ। हमरा परम कातर आ लजकोटर बुझिए कऽ ने ?

कहबी छइ, `जे रोगिया मन भावे, से बैदा फरमाबए`। आंतरिक इच्छा छल कोनो तेहन लोक कें ओहि घटनाक मादे कहिकऽ किछुओ हद तक मोन हल्लुक कऽ लितौं। तों रहि-रहिकऽ मोन पड़ै छलएँ, मुदा, चिट्ठी लिखिकऽ कहबाक बिचार मोन मे नहि अबैत छल। जौं से बिचार एबो करैत तऽ प्रायः नहि लिखि सकितियौ। कारण, एना क`कऽ अपना पक्ष मे सफाइ देबाक हमर उद्देश्य नहि रहितय, ने एखनो अछि। तों की बुझितयँ से दिगर बात छइ, मुदा, हम अपना कें क्षमा नहि कऽ सकितौं। एहि मादे अपने सँ चिट्ठी लिखबाक शायद अर्थ होइतै अपन सफाइ देब। अपना दिस सँ सफाइ देबाक स्थिति मे बात आर ओझरा सकै छलै। लोकक धारणा हमरा विरोध मे आर पक्का भऽ जैतइ। कियेक तऽ सफाइ देबाक सोझसाझ माने होइ छइ अपन दोख नुकाएब। बेसी-सँ-बेसी झूठ जोड़ब। ओना पक्ष-विपक्षबला बात सेहो एतऽ नहि छै। ने तऽ मामिला मोकदमा हेतइ तकर, आ ने पर-पंचैती। मुदा हमर बंधु बशिष्ठ, एतेक तऽ तोरा मानहि पड़तौ जे सामाजिक प्राणी होयबाक नाते नैतिक स्तर पर अपन माथ उँच क`कऽ राखबाक चेष्टा अबस्स रहैत अछि।

हमरा लेल ई कतेक सौभाग्यक बात अछि जे तों अपने सँ ताहि मादे चर्च केलएँ अछि। अतेक तँ निश्चय जे हमरा-तोरा बीच मे प्रगाढ़ संबंध अछि, सएह देखि तोरा क्यो-क्यो कहने हेतौ, आ से स्वाभाविक छइ। ओना आरंभ मे दबले मुँहें, आक्षेपे सँ अपन सन बनिकऽ एक-दू गोटे हमरा कहिये देने रहथि - जयबीर बाबू, गाम मे एहन बैदाइ नञि चलइ छइ। शहरे धेने रहब तऽ पाइयो हएत, आ जशो भेटत।`

लोकक मुँहक भाव, सभक हमरा दिस ताकबाक भंगिमा, हमरा देखिकऽ आ फुसफुसाकऽ गप्प करब, कनखी-मटकी आ हमरा दिस इंगित करब, हमरा तत्काल ग्लानि सँ भरि दैत छल। वास्तव मे पश्चाताप होइ छल जे कोन पाप केलौं जे गामक सेवा करबाक भूत हमरा पर सवार भऽ गेल। किछु लोक जे हमरा सँ भरि मुँह गप्प करैत छलाह, से सब बरनी नाओं लेल टोकऽ लागल छलाह। बहटाबऽ सन गप्प क`कऽ ताकऽ लागल छलाह। तो आब अपने सँ अंटकर लगा सकै छएँ जे हमर केहेन दुरूह स्थिति भऽ गेल रहय। हम तोरा जिज्ञासाक उत्तर मे अपन दृढ़

संकल्प कें दोहरबैत-तेहरबैत कहने छलियौ जे अवकाश-प्राप्तिक बाद गामे मे रहब, आ गामक किछु उपकार जौं भऽ सकतै हमरा सँ तऽ से अबस्स करबै। गामक प्रति हमर आकर्षण आ मोह तोरा बुझले छउ। छुट्टी ने गाम जाइ छलौं तऽ एक-दुबेर निश्चित रूप सँ हप्ता दू-हप्ताक छुट्टी बढ़ा लैत छलहुँ। पहिल छुट्टी शेष होइत-होइत जखन समान सभ बान्ह लगै छलौं तऽ काकी पुछथिन माय सऽ - `की, सत्ते बौआ चलि जेथिन काल्हि?` माय मुस्किआइत कहितै - `देखैत ने रहियौ। कय बेर एखन बन्हेतै, आ कयबेर खुजतै।`

तोरा तँ सभटा देखले छउ जे आब गाम मे नाओं लेल सभ साधन (?) मुख्य मे सड़क, बिजली आ अस्पताल भऽ गेल छइ। ई स्कूल तऽ बहुत पहिनहि सऽ छइ। जेनातेना आवागमनक साधन भऽ गेल छइ। बिजलीक झुकल गाछ पर लटकल खाम्ह सभ, आ ताहि सँ झुलैत तार इजोत देबाक दंभ भरिये रहल छइ। बात रहलै इस्कूलक, तकर चर्च कयनाइ अपमानजक बुझाइत अछि। एकटा होमियोपैथ होयबाक नाते हमर धेआन आर्कार्षित कयलक गामक अस्पताल। बरनी सप्पत खाय लेल डॉक्टर कहियो काल आबि जाइ छइ। ओना नर्स अपन बाल-बच्चाक संग रहैत अछि। ओएह अछि अस्पतालक डाक्टर, नर्स, कम्पाउन्डर आ सभ किछु। एकरा सँ बस मात्र एकटा लाभ छइ गाम कें जे प्रसूति कें उचित परामर्श भेटि जाइ छइ, आ मास मे एक-आध बेर किछु टेबलेट आबि जाइ छइ। जे लोक पहिने पहुँचैत अछि, तकरा भेटि जाइ छइ। अहू मे वार्ड सदस्य आ ढिठगर लोकक प्रभुता रहितेटा छइ।

साधारण सँ साधारण बीमारी कें गरीब-निरीह लोक अनठबैत-अनठबैत क्रौंनिक रोग बना लैत अछि। तोरा आइडिया छौहे जे क्रौंनिक रोगक निदान होमियोपैथी मे सभ सँ बढ़ियाँ छैक। एकटा होमियोपैथ होयबाक नाते ई हमरा लेल एकटा शुभ-संयोग छल गाम मे रहबाक एकटा अनमना।

तऽ भेलइ एना जे हम उत्साहित भऽ अपन बैदाइ आरंभ कऽ देने रहियै। हमरा दरबज्जा पर हमर बोर्ड झुलैत देखि कूटकाट होबऽ लागल रहै, से हमरा कान मे आबऽ लागल रहय। मुदा, हम ताहि पर धेआने नहि दिअइ। शुरु मे तँ लोक मात्र आजमाबऽ लेल अबै। मुदा, किछु लोक मे जखन दबाइ असरि केलकइ तँ लोकक संख्या बढ़ऽ लागल रहै। अपना दिससऽ कीनकऽ देब संभव छल नहि। `पानिबला दबाइ`तऽ नामी भऽ गेल छइ गाम मे। नाओं लिखिकऽ देबऽ लगलियै,

आ संग-संग बिचार दऽ दियै दबाइ मधुबनी कि दरभंगा सँ मंगा लेबाक लेल। तोरा तऽ जनले छउ जे पासक बजार मे एकटा टुटपुजिया होमियो हॉल छइ। ओकरा ओतऽ एकतऽ सब दबाइ भेटै नहि छइ, ने दबाइ तेहन काजे करइ छइ। एहना स्थिति मे हम अपना पेशेंट कें केहन सलाह दितियै से तो सोचि सकइ छएँ। रमाशंकर बाबू आबो तक एन.सी. घोषक पुरना पोथी रखने छथि। वैह एकटा किताब पढ़ि-पढ़िकऽ दबाइ दइ छथिन।

असल दिक्कति छल हमरा स्त्रीगण-रोगी कें ल`कऽ जकरा सभ सँ किछु तेहन विशेष बात ने तऽ हम पुछबाक साहस कऽ सकैत छलौं। ने ओ रोगी परिवेशगत संस्कारक चलते, कि अशिक्षाबश अथवा प्राकृतिक लाजबश धखाइतो संकेत तक नहि दऽ सकै छलि। ककरो घरबला किछु कहितो छल तऽ से उटपटांग होइ छलै। तोरा तँ जनले छउ रोगीक मनोदशा जानब एहि पद्धतिक आधार छइ। तथापि किछु क्रौंनिक रोगी सुधरऽ लागल रहै। स्त्रीगण, बच्चा आ बृद्ध रोगीक संख्या बेसी बढ़ऽ लागल रहै। हमर खर्च निकलऽ लागल छल।

एही क्रममे प्रवीरक माय आबऽ लागल रहथिन। हुनका संग हमर नजदीकी परिचय, जे कि तोरे कारण सँ अछि, हमरा असौकर्य मे धऽ देने छल। हम हुनका टारऽ लागल रहियनि, वास्तवमे बदनामीक भय बहटाबऽ लागल रहियनि। मुदा, ओ कतऽ सँ मानबाली ! हम एकदिन खाइत रही कि तखने ओ हमरा पितिआइन संगे जुमि गेल रहथिन। आब तँ हमरा किछु-ने-किछु करबाक छल।

जे से, समय निकालि कऽ हम हुनका आँगन पहुँचल रही। हुनकर व्यथा हमरा झकझोरि देने छल। कहबी कतेक सत्य छइ - `मरैत की ने करय!

ओ अपन दुख खोलिकऽ कहलनि। हमर जतेक जिज्ञासा छल, तकर यथार्थ उत्तर देबऽकाल हुनक मुँह पर कनिको संकोच नहि देखलियनि। हम हुनकर साहस देखि क्षुब्ध रही। एकटक हुनका देखऽ लागल रही। तऽ ओ कहने रहथि डाकदरो-बैद तऽ भगवाने होइ छइ। भगावन सँ कोन लाज !

`मुदा, हम तऽ हुनका मुँह पढ़ैत सोचऽ लागल रही-समाज आ लोक रहबे करतै। जौं नहि रहतीह तँ प्रबीरक माय जे मरणासन्न अवस्था मे पहुँचि गेल रहथि। हुनकर मेधा, बातचीतक ढंग हमरा क्षुब्ध क` देने रहय।... एहन आर कतेक अनपढ़-असूर्यमपश्या हेतीह घर-आँगन मे दुबकल-दबाएल ! तकरा बाद हम अपना कें क्षमा नहि कऽ सकल रही।

बहुत बर्ख पूर्व ओ पोखरिक दाउर पर छिहलिकऽ खसि पड़ल रहथिन। तत्काल चिकित्सा सँ लाभ अबस्स भऽ गेल रहनि। नेनपन मे न्यूमुनियाँ से भेल रहनि। जेनातेना वैद्य दुख छोड़ा देने रहनि। तकर असरि रहबे करनि। एहि दुनू कें आधार मानि हम अपन चिकित्सा आरंभ कऽ देने रहियै। पथ-परहेजक संग-संग ओ दबाइ आरंभ कऽ देने रहथि। सभटा समयक चरित्र। हुनका आराम होबऽ लगलनि। ओ हमर परम भक्त भऽ गेलीह, स्वभावतः संपर्क बढ़ऽ लागल। नोत-पिहानी होबऽ लगलै। लोकक आँखि मे काँट गड़ऽ लगलै।

किछुए मासक बाद प्रवीरक माय हमर कम्पाउन्डर जेकाँ भऽ गेल छलीह। आब हमरा स्त्रीगण रोगी कें चिकित्सा करऽ मे असुविधा नहि छल। मुदा, पाछू मे कतेक-ने-कतेक गल्ल-गुल्ल होबऽ लागल छलै ! एहि सभसँ जहिना हम बेखबर रही तहिना प्रवीरक माय सेहो।

नेना-बालक प्रवीर कें क्यो-क्यो कटाक्ष कऽ दइ। से एकदिन अहिना ओ अपना माय सँ पुछि बैसलै तकर माने।

पाछू नियामक पता लागल जे बजार परहक होमियो हॉल बला आ रमाशंकर बाबू खढ़ पर आगि ध`कऽ फूकऽ मे लागल रहथि। अतेक सत्य रहितो एकटा कहबी हमरा फेर मोन पड़ैत अछि - `अपने उढ़रल जाइ तऽ विधि विधाता उढ़ारने जाय।` कहबाक तात्पर्य जे ई दू-गोटे नहियो रहितथि तऽ लोक-प्रदत्त पुरस्कार(?) हमरा भेटबै करैत। एकटा असल बात तोरा सँ हम चोरबऽ नहि चाहै छी। तोरो से जानल छउ। तों जनिते छहुन प्रवीरक मायक मुस्कियाकऽ बाजब। से तऽ हुनकर जन्मी गुण छनि। ताहि मे दबाइ-विरोक बाद देखऽ मे नीक भऽ गेलथिने। से आर जुल्म ढाहऽ लगलैये। मुदा प्रश्न उठै छइ जे, से गुण नहियों रहने लोक अपना सोभाव सँ बाज अबैत? मुदा सभसँ ओ जीबटक काज केलनि जे ओ अडिग रहलीह। बेटा संग देलकनि। हुनकर घरबला जेकि प्रत्येक मास मे एकबेर दरमाहा ल`कऽ पटना सँ चलि अबै छथिन, लोक कें सुना कऽ बजलथिन - `बनियाँ कें घेघ, गहिंकी कें उद्वेग।` केहनो अछि तऽ हमर स्त्री अछि। लोक अपना-अपना छाती पर हाथ ध`कऽ बाजओ ! प्रवीरक माय तँ एतऽ तक कहलथिन - `मर तोरीके ! क्यो छुपारे खाइये, हम देखारे खाइ छी। जे दूरि करऽ पर लागल अछि, से सुनि लिअओ जे हमरा बाजहो अबैये !`

कतेक लिखियौ आ कहाँतक लिखियौ? तोरा अपने सभटा पता लागल

हेतौ। की तोरा बुझाइ छउ जे गामक लोक आ परिवेश जकथक छइ? जे परिवर्तन देखऽ मे अबै छइ, तकरा हम मात्र एकटा टाटक बुझै छी जे अगराही मेहक धनछुहा लोक कें नीक लगै छइ, से तहिना जेना हाड़ चिबबैत कुकूर अपना मुँहक रस कें हाड़क रस बुझैत अछि। ई तऽ अदौकाल सऽ आबि रहल छइ आ रहतइ।

जे-से, हम पलायन नहि कएल अछि। प्रबीर सँ ओकर माय लिखबओलनि अछि। पत्र मे तोहर चर्च सेहो छउ। आब तऽ हमर स्त्री सेहो संगे-संगे रहतीह। तीर्थाटन जकाँ दुनू गोटे साल मे एक-दू बेर बेटा-बेटी लग घूमि लेल करब। मुदा, एकटा बात जे आरंभ मे एना भऽ गेने नीके भेल। आब तऽ हम अपन मिशन पर, हँ-हँ मिशन पर निधोख आगू बढ़ि सकब, से हमर आत्मा गबाही दऽ रहल अछि। कारण, गाम अगराही मेंहक धनछूहा सँ कात अबस्स रहऽ चाहैत अछि। लोकक अंतरात्मा हमरा संग अछि। तोरा तऽ सभ जानल छउ। तैयो तों हमरा सँ जानऽ चाहैत रहय। गाम बड्ड आकर्षित कऽ रहल अछि। गाम तऽ गामे होइ छइ-सभकिछु अपनसन।

एकटा बात किन्तु सत्य छइ जे गामक सुख-दुख कें भोगि चुकल अछि से गाम मे रहऽ चाहत। नीक-अधलाह सभटा अपने सन होइ छइ। कहबी कतेक दीब छइ जे सधबाक हाथ मे चुड़ी होइ छइ, तें खनखनेबे करतै।

गौडा-घरुआक प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष आग्रह पर आग्रह आबि रहल अछि। एहि सँ बढ़िकऽ बड़का सम्मान हमरा लेल की भ` सकैत अछि ! प्रिय बंधु? ओतबे नहि, ईहो भनक लागल अछि जे प्रवीरक माय निर्विवाद वार्ड सदस्य मनोनित कएल गेलीह अछि। देखा-देखी दूटा आर महिला ठाढ़ भेलीह अछि पंचायत चुनाव मे।

बस, तत्काल एतबे।

तोहर जयवीर।



अस्मिता

ओ सोचैत आबि रहलि अछि जे ओ अपन समस्या, माने अपना वार्डक समस्या बैसार मे राखति।

बैसार तऽ ओहिना अर्थात पुरने ढर्रा पर होइत आबि रहल छइ। मुदा, ओकर सोचल, सोचले रहि जाइ छइ। कोनो महिला सदस्य घोंघ नहि खोलै छइ। ओहो आने सदस्य जेकाँ, माने आने महिला सदस्य जेकाँ हस्ताक्षर क`कऽ चलि अबैत अछि। काज तऽ करइ छइ ओकर घरबला ने।

मुदा, आइ मीनाक्षी डटल अछि। आइ ओ खुलिकऽ बाजति। ओकरा अपना वार्डक चिंता छइ। ओ अपन दायित्व निमाहऽ चाहैत अछि। ओ चुपचाप नहि बैसति। मात्र अउँठाछाप बनिकऽ नहि रहि सकैत अछि। कम-स-कम बाजि तऽ सकैत अछि।

एक बर्ख सँ बेसी भऽ गेलै चुनाव कें। सभ सदस्य एक दोसर कें भीतर सँ चिन्हि गेल अछि। महिला सदस्य सब स्वभाववश आर बेसी तरहें एक-दोसर कें चीन्हि गेलि अछि। सभ हीलिमिलि गेलि अछि। महिला सदस्य सभमे मीनाक्षी सभसँ प्रमुख अछि। ओकर धाख छइ। ओ निर्विरोध चुनल गेलि अछि।

ओ निर्विरोध चुनल गेलि अछि से नान्हिटाक बात नहि छइ, ने तऽ ओकरा लेल, ने पंचायत लेल। समूचा गाम कें, सभ महिला सदस्य कें ओकरा पर गौरव छइ, कियेक तऽ एकेटा वैह निर्विरोध चुनाकऽ गेलि अछि। आ छैहो ताहि जोगरक।

ओ पढ़लि-लिखलि अछि। किछु पढ़ऽ-लिखऽ लेल ओकरा अनका पर निर्भर नञि करऽ पड़ै छइ। बहुत कें ओकरे पर निर्भर करऽ पड़ै छइ। दिल्ली मे छह बर्ख रहिकऽ आयलि अछि। ओकर संपर्क नीक लोक सभ सँ छलै ओतऽ। महिला समितिक सदस्य सेहो छलि ओ। बाजऽ-भूकऽ मे ओकर धाख छूटल छइ। ओ आब दृढ़ अछि जे आँखि मुनिकऽ ओ दस्तखत नहि करति।

ओकरा वार्ड सँ चुनाव लड़ऽ लेल तीन-चारिटा आर पढ़लि-लिखलि जनाना उनमुनाएल रहै। क्यो मुदा खुलिकऽ सामने मे नहि आबि सकलै। एगोटे कें परिवार बिरोध कऽ देने रहै, तऽ दोसर कें ओकर पति कल्ला नहि अलगाबऽ देलकै। तेसर बड़ डेरबूह निकललै। ओ सामाजिक गरिमा(?) आ परिवारक गौरवक समक्ष झुकि गेलि रहइ, मुदा से भय सँ।

तैयो एकटा प्रतिद्वंदी अखाड़ा मे कूदि गेलि रहइ। वास्तव मे ओ अपने सऽ नहि कूदल रहइ। ओकर श्वसुर ठेलि देने रहइ लड़ऽ लेल। मुदा गौङा विरोध कऽ देने रहइ तत्काल। ओकर श्वसुर अपने मुखिया लेल ठाढ़ रहथिन। एकेटा परिवार सँ दू-दू टा जगह नहि हथिया सकैत अछि क्यो, से गौङाक निर्णय रहइ। भारतक संविधान एतऽ व्यर्थ भऽ गेल रहइ जखन गामक महत्वे नहि तऽ पंचायती चुनाव ढकोसला हेतै। सरकारी अमलाक तर्क बहुत अब्बल भऽ गेल रहइ।

मुखियाजी कें मोन मसोसिकऽ पुतहु कें हटबऽ पड़ल रहनि। बुझू तऽ झूकऽ पड़ल रहनि। अपने कोना ने लड़ितथि? मीनाक्षीकें समर्थनक आशीर्वाद तें कयने रहथिन। मीनाक्षीक मैदान साफ कऽ देने रहथिन।

मीनाक्षी धीयापुता कें खानगी पढ़बैत अछि। ओकर ख्याति नीक छइ। टोलक सबल पक्ष ओकरा संग रहै। तैं ओ साहस कयलकि। आ मीनाक्षी निर्विरोध चुनलि गेलि अछि। सभ बैसार मे ओ नियारिकऽ अबैत अछि किछु कहऽ लेल। ओ अपन समस्या अपना ढंग सँ राखऽ चाहैत अछि। ओकर समस्या ओकरा वार्डक समस्या छइ। समूचा गामक समस्या छइ। असल मे देखल जाय तऽ समूचा मिथिलाक समस्या छइ।

ओ सभ जनाना सदस्यक मुँह ताकि कऽ रहि जाइत अछि। ककरो मुँह पर तेहन भाव नहि देखै छइ। सभ `बकोध्यानं` देने बात सुनैत रहै छइ। सभके कहलो जाइ छइ बाजऽ लेल। पूछल जाइ छइ किछु कहऽ लेल, अपन बिचार राखऽ लेल। वास्तव मे एना पूछिक, कहिकऽ छुतिया छोड़ाएल जाइ छइ। ककरो साहस नहि देल जाइ छइ। बेसी तऽ लजाएले चुप्पी साधि लैत अछि। मरौत तर मे मुस्किआइत मूड़ी घुमा लैत अछि। एगोटे बजिते अछि तऽ एतबे आ एहने सन - `अहाँ सभ कि अधलाह कहबै? हमसब सब मे राजी छी।` समर्थन मे सभ हाथ उठा दैत अछि।

जनाना भऽ कऽ एतबे बजनाइ पर बाहबाही भेटि जाइ छइ। सभ कृतार्थ होइत अछि।

ओ अपनो कहाँ बजैत छलि ! अपना दोख कें ओ चिन्हि गेलि अछि। सभके धड़फड़ी रहै छइ। जल्दी-सँ-जल्दी बैसार होइ, तकर प्रतीक्षा रहै छइ। बैसार शेष भेला पर हाँइ-हाँइ दस्तखत क`कऽ सभ घर बिदा होइत अछि। घरबलाक प्रताड़नाक डर से रहइ छइ। घरक काज-धाजक चिंता रहइ छइ। बस, छुतिया छोड़बऽ सब अबैये। दस्तखत क`कऽ उपस्थितिक प्रमाण देबऽ अबैये। आब आगू बुझतै सभक

घरबला।

... की ओ अपनो ओहि मे शामिल नहि अछि !.... मीनाक्षी सोचैत अछि। सभ बैसार मे घुमा-फिराकऽ ओतबे बात होइ छइ। बात की होइ छइ कप्पार ! मात्र सीकी चिरौअलि होइ छइ। मौनी, बिरहड़ा, पौती आ धुथड़ी बुनल जाइ छइ। सड़क, राशन, मटिया तेल, चीनीक `डीलरसीप`, बेघर के घरक आश्वासन, आ नव-नव मे एखन दूर-भाषक बात होइ छइ। सरकारी लोनक बात उठै छइ। आ अंत मे खुशामदी सभक माध्यम सँ मुखियाजीक पाइ खर्च कराकऽ चाह-पान, सिंघाड़ा-चौपक सोआद मे शेष होइ छइ।

आब तऽ सभ बैसार मे सभ अबितो नहि अछि। अनुपस्थित सदस्य सभसँ घर पर जाकऽ दस्तखत करा लेल जाइ छइ। क्षद्म रूपें ई दायित्व मुखियाजी दिससँ एकटा सदस्य लऽ लेने अछि। कोढ़िया चाहय हऽ। सभ जनाना सदस्य खुश अछि... सत्ते मुखिया जी नीक लोक छथिन ! खुआबहे-पिआब` मे हुनकर कत्तेक खर्च भऽ जाइ छनि।

आब मीनाक्षी के नहि अरघै छइ से सब।... ओ अपनो कम दोषी नहि अछि! ओ अपनो कतेक बैसार मे जाय सँ अनठा देने अछि। क्यो तऽ आगू हेतै! ओ ककरा कहतै आ कोना कहतै ! ओ अपने कियेक ने अगुआइत अछि ! मात्र दस्तखत करऽ लेल ओ चुनल गेल अछि ! नञि, ओ आगू बढ़ति ! ओकरा अगुएने आरो के साहस हेतै !

ओकर अस्मिता जागि जाइ छइ। ओ खुशामदी आशीर्वादक मोहताज नहि रहऽ चाहैत अछि। मीनाक्षी महिला सदस्य सभक अंटकर लैत अछि। सभक मोन मे प्राय:एकरंगक धारणा छइ। मुदा, आगू आबऽ सँ सभ डेराइत अछि। जे अगुआय चाहैत अछि, तकरा मे तेहन ऊहि नहि छइ। सभ मीनाक्षी कें आगू होबऽ कहै छइ। ओकर समर्थन मे सभ आत्मा सऽ बचनबद्ध होइत अछि। अनिवार्य परिस्थिति कें छोड़ि सभ बैसार मे उपस्थित रहबाक सभक्यो एकजुट होइत अछि। विचार-विमर्शक अभ्यंतर मीनाक्षी कें प्रतिबद्धताक झलक ओकरा सभ मे साफ-साफ देखऽ मे अबै छइ।

आ मीनाक्षीक आत्मविश्वास आर सबल भऽ जाइ छइ। बात किछु-ने-किछु गुलगुला गेल छइ। ई बैसार विशिष्ट हेतै से अटकर लोक लगबैत अछि। किछु गौडा लोक तें जमा भऽ गेल अछि। मुखियाजी लेल ई फुसियाहीक गप्प

छनि। हुनकर चेला-चपाटी एकरा हँसिकऽ उड़ा दैत अछि।

मीनाक्षी अबैत अछि। ठाढ़ भ`कऽ देखैत अछि। सभ जनाना सदस्य बाहरे मे गोठिआएल गाछ तर मे बैसलि अछि।

`दीदी, हमसब अँही लेल बैसल छीयै। संगे-संग जेबै सब गोटे `मिटिंग` मे। आइ हमहूँ सब बजबै। बौक बनने काज नञि चलतै` - एगोटे मीनाक्षी के कहैत ओकरा तक चलि अबैत अछि।

मीनाक्षी हाथक संकेत सँ ओकरा सभके चुप करैत अछि, आ आगू पंचायत घर दिस बढ़ि जाइत अछि। सभगोटे ओकर पछोर धेने उत्साहित मोनक संग चलि दैत अछि। आने बैसार जकाँ सभ बात होइ छइ। अंत मे एकटा पुरुष सदस्य जे मुखियाजीक असल चेला अछि, चाह-सिंघाड़ा लेल एगोटे कें पठाकऽ महिला सदस्य सभसँ पुछै छइ - `अहाँसब क्यो किछु कहबै?`

मीनाक्षी कें एही क्षणक प्रतीक्षा छलइ। ओ उठैत अछि। सभकें आश्चर्य लगै छइ... अँय, ई की ! वास्तव मे जे सुनने रहियै, से ठीके छइ !

सभक नजरि मुखियाजी पर जाइ छइ। मुखियाजी मुँह पर हाथ राखि सामने टेबुल पर नजरि अँटकेने छथि। बीच-बीच मे मीनाक्षी कें देखि लइ छथि। आब सभ एकटक मीनाक्षी कें देखऽ लगैत अछि।

मीनाक्षी आरंभ करैत अछि :-

माननीय मुखियाजी, बी.डी.ओ साहेब, सदस्य लोकनि आ उपस्थित सज्जन लोकनि ! सरकार सभ क्षेत्र मे स्त्रीकें सुरक्षित केलकैये। पंचायत मे आरक्षण देखिये रहल छियै। बर्ख भरि सँ बेसिये भऽ रहल अछि अहाँ सभकें देखैत, सुनैत आ सभसँ बेसी अहाँ सभक सम्पर्क सँ सीखैत। आब हमरा सभकें विश्वास भऽ गेल अछि जे हमसब अपन-अपन उत्तरदायित्व निमाहि सकब। अपना-अपना वार्डक काज हमसब सम्हारि ली तऽ काज सहजहिं आगू दनदनाइत रहतै। ककरो कोनो शिकाइत नहि रहतै।

आब देखियौ हमरे वार्ड मे। दू गोटे के बीस-बीस हजार टाका मंजूर भेलैये। ओहिदिन बी.डी.ओ ऑफिस मे गेल रही तऽ पता लागल। हमर दस्तखतक जरूरति रहै से हम कऽ देलियै। एहनो लोक अछि हमरा वार्ड मे जे अनका दरब्जजा पर समय बितबैत अछि। बरिसात मे ओकर लोकवेद बैसकऽ समय काटै छइ।...

...आखिर मुखियाजी एसगर की-की करता? सभ बात हुनका बुझलो कोना रहतनि? प्रतिष्ठित लोक सऽ बात करबाक साहस सभकें नहि होइ छइ। सभ हुनकर धाख करै छनि। किछु लोक हुनका असलियत तक पहुँचहो नहि दइ छनि। ....

...जे सदस्य बैसार मे उपस्थित नहि भऽ पबै छथि, हुनकर सभक दस्तखत घरे-घरे जाकऽ लेबाक प्रथा हमरा नीक नहि बुझाइत अछि। कारण, एना मे हमसब अहदी भेल जा रहल छी। हमसब अपना कर्तव्य सँ च्यूत भऽ रहल छी।

....हमरालोकनि किछुए बात पर सभ बैसार मे घमर्थन करै छी। आरो गुरूत्वपूर्ण समस्या सभ छइ। मास्टर सब एक तऽ स्कूल मे अबिते नहि छथि। अबैत छथि तऽ टेबुल पर दुनू पएर पसारि सुतैत छथि। कहऽ नहि पड़त जे गरीब लेल सरकारी स्कूल छोड़ि आर विकल्प नहि छइ। ओकर सभक नेना नढ़ेर भेल जा रहल छइ।`

एगोटे उठिकऽ बजैत अछि - `ई तऽ सरकारी काज छइ।`

क्षणभरिक चुप्पीक बाद मीनाक्षा बजैत अछि - `गामक पोखरि सभ मे कुंभी सड़ि रहल छइ। महामारी पसरबाक डर छइ।`

`पोखरियो सब आब सरकारी छइ` - वैह लोक चट दऽ ठाढ़ भऽ बजैत अछि।

अहूबेर कोनो प्रतिक्रिया नहि होइ छइ। बी.डी.ओ साहेबक नजरि झुकि जाइ छनि। बुझाइ छइ, मुखियाजी निन्न पड़ि गेल छथि।

मीनाक्षी अपन बात आगू बढ़बैत अछि -`हमरा लोकनि आदर्श गामक चर्चा करैत रहै छी। सरकार स्वास्थ्य पर खर्च करैत अछि। गामक चारूकातक बान्ह आ पक्की सड़क सेहो घिनाएल रहैत अछि। सुलभ शौचालयक बेबस्था पर विचार होयबाक चाही। सोचला सँ महत्व कम नञि बुझाएत।`

ओएह लोक हँसैत-बजैत अछि - `ईहो तऽ सरकारिये काज छइ। बान्ह-सड़क घिनबै के छइ?`

एहिबेर एकटा जनाना सदस्य कें नहि रहल जाइ छइ। ओ मुँहतोड़ जबाब दइ छइ - `भाइ साहेब, हमर बहीन अर्थात अहाँक स्त्री कें आब सरकारे सँ पूछिकऽ बच्चा हेतनि, नञि? की ओ बान्ह पर नञि जाइ छथि?

हँसीक झरना फूटि पड़ै छइ।... `वाह, वाह ! अइबेर कड़गर जबाब भेटलै ! तखन सँ बड्ड अलर-बलर बजै छलए ई !`

लोकक वाहवाही आ हँसी थम्हबाक नाओं नहि लऽ रहल छइ। लेकक मोन मे दबल बात सभ मुँह सँ बल्ल-बल्ल निकलऽ लगै छइ। वातावरण अनघोल भऽ जाइ छइ। आनन्दक लहरि हिलकोर लेबऽ लगै छइ।

मुखियाजी उठिकऽ चलि दइ छथि। बी.डी.ओ साहेब तहन कियेक रहता बैसल? हुनकर सभक पछौर धेने किछु आर सदस्य निकलि जाइत अछि। रहि जाइत अछि जनाना सदस्य सभ आ एकटा पुरुष सदस्य। किछु गोटा ओसारा पर घुमिफिरि रहल अछि।

मीनाक्षी तरहत्थी पर मूड़ी झुकौने सामने नीचा फर्शपर ताकैत मूर्तिवत बैसलि अछि।

ओ रुकल पुरुष सदस्य ओकरा लग मे जाकऽ आस्ते सँ टोकै छइ - `दीदी!`

मीनाक्षी ओकरा दिस ताकैत अछि।

`दीदी, बैसार उसरि गेलै। हमहूँ ठप्पा बनिकऽ नञि रहबै।` ओ बजैत अछि।

मीनाक्षी ओकरा टुकुर-टुकुर देखैत जा रहल अछि। ओ सदस्य फेर कहै छइ - `विश्वास करू दीदी ! आइ अहाँ आँखि खोलि देलियै सबहक। पहिने क्यो एकेगोटे आगू होइ छइ । पाछू उनटिकऽ तकबै तऽ धरोहि लागल लोक अहींक पाछू-पाछू रहत। हमर ई हाथ प्रतीक्षा कऽ रहल अछि अगिला रक्षाबन्धनक।`

मीनाक्षी उठिकऽ ठाढ़ि भऽ जाइत अछि। ओकरा मुँहक रोहानी चमकि उठै छइ। दुनू ठोरक बीच मुस्की रेंगऽ लगै छइ।

आ ढबकि पड़ै छइ दुनू आँखि सँ स्नेह आ विश्वासक एक-एकटा बुन्न। भविष्यक आशंका सँ विमुक्त मीनाक्षी सदस्य सभक संग आगू बढ़ि जाइत अछि।

●●●

भोकाटा

खर्रऽ किर्रऽ! खर्रऽ किर्रऽ !

ओ कखन सऽ ने घाट पर बैसलि बरतन-बासन माजि रहलि अछि। सभ दिन ड्यूटी जाय सँ पहिने जलखै क`कऽ छोट-पैघ अलमुनियाँक छिपली आ` चिनियाँ माटिक कप-प्लेट ल`कऽ अबैत अछि। अपने चूल्हिक छाउर आ पोखरिक किछेर सँ नोचल दूभि सँ बरतन-बासन माजि लैत अछि।

ई ओकर नित्यप्रतिक काज छै। ई ओकर बान्हल समय छै। क्यो घड़ी मिलाक` देखि सकैत अछि। बड़ बहुत तँ चारि-पाँच मिनटक फर्क पड़ि सकै छै। बस, आयलि आ गेलि। ने बासन माँजैत देरी, ने पड़ाइत देरी - ``आयल पानि गेल पानि, बाटे बिलायल पानि`। क्यो देखलकै, क्यो नहि देखलकै। किछु गोटेक लेल तऽ ओ घड़ीक काज करैत अछि। जहाँ ओ घाट पर आयलि कि किछु गोटे बाहर जेबाक तैयारी मे लागि जाइत अछि।

टीशन बड़ लग मे छै। बुझू तँ टीशने पर ओकर घर छै। ओसारा पर बैसले-बैसले प्लेटफार्म ओहिना देखाइ दै छै। गाड़ी अयबाक सूचना जहाँ भेलै कि केश सीटब शुरु क` दैत अछि आ खिड़की बाटे देखैत रहैत अछि टीशन दिस। ई अंतिम टीशन छइ। गाड़ी एतइ सँ घुरि जेतइ, गाड़ीक धमक सुनैत देरी बैग कनहा मे लटका कऽ विदा भऽ जाइत अछि। बासन माज` काल कहियो-कहियो ओ कतहु हेरा जाइत अछि। समयक सोह नहि रहै छै। गाड़ी चलबाक एनाउन्समेंट कि गाड़ीक पहियाक धड़धड़ ओकरा धेयान कें भंग करबा मे व्यर्थ साबित भ` जाइ छइ। एना मे कतेक दिन अगिला लोकल ट्रेन पकड़` पड़ै छै। ओ तऽ रच्छ कहू जे मालिकक कृपादृष्टि छइ एकरा पर, नहि तऽ कहिया ने नोकरी चलि गेल रहितै।

आइ फेर ओ कतहु हेरा गेलि अछि। एम्हर ओकर हाथ बासन कें एक-एक क` चमकाबऽ मे व्यस्त छै, आ ओम्हर दुनू आँखि पोखरिक ओहि कात सरकारी कालोनी सँ सटल नारिकेरक गाछ सभक फुनगीक झुंड पर अँटकल छै। ओत` एकटा गुड्डी नारिकेरक छज्जाक एकटा पात मे ओझारयल लटकल अछि। कखनो-कखनो बसातक सिहकी पर डोलऽ लगै छै, ओकर नजरि गुड्डी पर ठमकि गेल छै। व्यवधान कतहु नहि छै। ने तँ दुनू हाथक क्रियाकलाप मे, ने दुनू आँखिक निर्निमेष देखब मे। दुनू सधल हाथक शह पर छाउर आ दुभिक रगड़ पाबि बासन तालबद्ध

लय मे खर्रऽ किर्रऽ! खर्रऽ किर्रऽ! शब्द उत्पन्न क` मजा-मजा कऽ जना अपने मोने एकठाम जमा भ` रहल अछि, आ ओम्हर दुनू आँखि सामने मे जमल छइ। लगै छै, ओ बड़ मनोयोग सँ किछु पढ़ि रहल अछि ओत`। प्रायः अविस्मरणीय अतीतक पन्ना सभ ओतहि लटकि गेल छै, जकरा सभ कें समेटि-सहेजि क` राखि लेबऽ चाहैत अछि।

किछुए क्षण मे बासन माजबाक ध्वनिक बीचक अंतराल बढ़` लगै छै। अंतराल क्रमशः बढ़ैत-बढ़ैत पूर्ण विराम पर आबि जाइ छै। आँखि जेना उपर गुड्डी सँ सटि गेल होइ। अनवरत टकटकी लगौने देखि रहलि अछि ओ। दूर सँ देखने एखन सावित्री अनमन कोनो चित्रकारक मॉडल सन लागि रहलि अछि। जेनाकि चित्रकार निर्देश देने होइ -`बस बस, अहिना कनेकाल आर !`

गुड्डी बीच-बीच मे दोमि जाइ छइ। बसातक नामो-निशान नहि छै, तथापि ओ हिड़ला झूलऽ लगैत अछि। आस लेबऽ लगैत अछि,.. मुदा ई तऽ ओकर आस भइए ने सकै छै ! आब एहि दुर्दशा सऽ फेर कोन दुर्गतिक स्थिति मे जायति ओ, तकर कल्पना मात्र सँ प्रकम्पित भऽ उठैत अछि ! पहिने लटाइक सहारा रहै। ओकर इशारा पाबि उन्मुक्त आकाश मे नाच` लागय - एम्हर सँ ओम्हर ! नीचा सऽउपर पेंग मार` लागय।

सावित्री गाम पर गाछी मे हिड़ला झुलने अछि। पेंग मारने अछि। गीत गाबक सख रहै, मुदा गीतक अर्थ कहाँ बुझै तहिया। आँखि मुनि आस लेने अछि। गीत गुनगुनायलि अछि -`सखि हे हमर दुखक नहि ओर`। एक बेर बर्रे खियाक` टूटि गेल रहै। खसलि रहय धब्ब द`। संजोग जे हिड़ला एके हाथ ऊँच रहै। ओ खसब एकटा फराक अनुभव देने रहै। ओ मात्र क्षणिक स्थूल चोट रहै। ओ चोट, ओ गीत अपन सन सुख-दुख दै। आबो तऽ ओ डोलि रहलि अछि दिन-राति, मुदा ओ आस आब कहाँ लगै छइ।

भोकाटा ! भोकाटा ! ... नहि जानि कोना छौंड़ा सभक लग्गा आ डंटा सँ बाँचि गेल ! नारिकेरक गाछ ततेक नम्हरो नहि छै! भरिसक नजरि नहि पड़लै कोनो छौंड़ाक, एकरा कटि क` खस` काल मे ! कहाँ-कत सँ उड़िया क` आयल हएत ! फेर उड़िया क` कतहु चलि जायत ! कोनो गाछ पर -आम, बबूर, बैर आ आन-नारिकेरक गाछ पर लटकि जायत ! अहिना उड़ियाइत आ बसातक झोंक

खाइत अपन अस्तित्व हेरा लेत ! हुगलीक पानि मे खसि पड़त, अथवा कात मे बालुकाराशि पर पर्यटक सभक पयर तऽर मे दबाइत-दबाइत ज्वारिक संग बहि जायत ! आ कोन ठेकान, अहू पोखरि मे खसि क` गलि सकैत अछि।... लटाइ सँ कटल गुड्डी बेचारा !

सावित्री कतेक ने बेलना बेलने अछि। नौरिनक काज सँ ल`कऽ चटकल, एफ.सी.आइ. आ चाहक गोदाम धरि नापि चुकलि अछि। सभ ठाम एके बात। वैह गड़ैत नजरि, ओहने व्यवहार। थोड़ेक दिन पर्यटक रेला मे नीक लगलै। ओ भागैत रहलि। पड़ाइत रहलि। एहि कोन सँ ओहि कोन झिझिरकोना खेलाइत रहलि। बेमोने छुआइत रहलि। आब कहुना कऽ थिर-थिम्हन भेलि अछि।

निर्मल प्रमाणिक छथि लोकल स्तर पर पार्टीक धखगर लोक ! ओ अपना `पुतुलधर` मे एकरा राखि लेलथिन। एकर मनोयोग आ तत्परता सँ एकर मुरूत सभ बाजऽ लगै छइ, हँसऽ लगै छै। कथा कह` लगै छइ। पार्टी अबै छै। एकर मुरुत सभ कें उचंगि लै छै। एकर बड़ाइ करैत निर्मल बाबू अघाइ नहि छथि। आकर्षणक सूत्र मजगूत होब` लगलै। एक मास, दू मास, तीन मास - बन्हन गसाइत गेलै। सावित्री विधवा जिनगीसऽ बाहर खिचाइत गेलि। निर्मल बाबूक सभ सँ बेसी विश्वासी भऽ गेलि। सावित्री परोक्ष किंतु जिनगीक एकटा पाथेय भेटि गेलनि निर्मल बाबू कें। सावित्री एक टा खुट्टा सँ बन्हा गेलि। ई सोंगर टूट` बला नहि रहलै। बापक सावित्री, माय आ सखी-बहिनपाक शविया, पतिक सब्बो रानी कें आब निर्मल बाबूक मुँह सँ मात्र `सब्बो` सुनैत अधलाह नहि लगै छै। ओना, भीतर सँ कृतार्थो नहि होइत अछि। आँखि-मुँह चमकाब`वाली सभ सँ बाँचि गेलि।

एम्हर किछु दिन सँ निर्मल बाबूक बात मोन मे हौंड़ि रहल छइ। अनठाब` चाहैत अछि, मुदा आर जोर सँ से आफन तोड़` लगै छै। निर्मल बाबू अपने दिस सँ कहियो कहने रहथिन मंतोरक `जॉब` लेल। सावित्री कहियो, कखनो अपना इच्छानुसार मंतोर कें आनि सकैत अछि। ओकरा लेल `जॉब` सुरक्षित छै। यैह दू-तीन दिन पहिने निर्मल बाबू कहलखिनहें - `देख सब्बो, सभ कें हबा-बसात लगै छै। आब जौं यूनियन बनि गेलैये, तखन हम बेबस भ` जायब। नाहक मे फिरसाहिन होब` पड़त बाद मे। सभ सँ पैघ बात ई छै जे तोरा क्यो देखऽ नहि चाहै छौ एतऽ। निर्मल बाबूक बात मे दम छै। ओ अपनो देखिए रहलि अछि जे यूनियन गठनक

गोलैसी शुरू भऽ गेल छै। निर्मल बाबू कहुना दबाकऽ रखने छथि। हुनकर तीर कतऽ लगतै से ओ स्पष्ट देखि रहलि अछि।

`बेटी के अतेक पढ़ायब, ई बनायब, ओ बनायब। बेटा-बेटी, दुनू अपने संतान होइ छै। एकरे मनुक्ख बना देबै, सैह एक लाख।`... लगै छै, जेना घरबला संग बैसलि एखनो ओ सैह सभ बतिया रहलि अछि। मुदा, पति आब रहलै कहाँ ! आशा-आकांक्षा कहिया ने भहरि गेलै। इएह तऽ जिनगी छै - छने मे छनाक् ! आँखि सँ दू टा मोती दुनू गाल पर द` छहलि क` नीचाँ खसि पड़ै छै। खसिकऽ फूटि पड़ै छइ। छहोछित भऽ बिला जाइ छइ।

`माय, की तकै छही उपर? दोसरो गाड़ी छुटि जेतौ !`

`अयँ !` शांत-स्थिर जलराशि पर किछु खसै छै - चुभ् ! जलक सतह पर हिलकोर उठै छै। सावित्री पानि पर छता जाइत अछि। मंतोर भीर पर ठाढ़ि छइ।

`चल जल्दी कर। नहि तँ ईहो गड़ी छूटि जेतौ।`

`हँ-हँ, चलै छी।` तैयो बेटी कें एकटक देखिए रहलि अछि।

`एना की तकै छही गे हमरा दिस? मामा जे देने रहथिन परुकाँ पूजा मे सएह तऽ छइ ई सलवार-समीज। नीक नञि लगै छै?`

सावित्री की बजितय। ओकरा लागि रहल छै, जेना आइ पहिल बेर बेटी कें देखि रहलि अछि। आइ मंतोर ओकरा अपने आँखि मे गड़ि रहल छै। मोनहि-मोन बड़बड़ा उठैत अछि। -`धुर, बज्जर खसौ अइ आँखि मे !` थुकथुका क` बासन धोअ` लगैत अछि।

गाड़ी अयबाक `एनाउन्समेंट` भ` गेल छै। लगले गाड़ीक घड़घड़ाहटि सुनाइ दै छइ। मंतोर आगुए-आगुए बिदा भऽ सोझे गाड़ी मे चढ़ि जाइ छै। लगै छै आइ वैह अपना माय कें कतहु लऽ जा रहलि अछि। सावित्रीक मोन आबो आगु-पाछू कऽ रहल छै। एखनो मंतोर कें घुरा देबऽ चाहैत अछि।

गाड़ी खुजि जाइ छै।

तखने ओकर दोसर मोन कहै छइ - अतेक तऽ सोचलें। घूमि-फिरि कऽ एके बात पर आब` पड़ै छउ। एतऽ बेटी लग मे रहतौ सोझा मे। एहि सँ नीक आर की छइ संभव?` मुँह पर संतोष पसरि जाइ छइ। ओकर धेयान पसेंजर सभक गप्प पर चलि जाइ छइ। - `बेटा लेल कतेक चेष्टा केलौं अपना फैक्ट्री मे, मुदा नहि

भेलै। मनेजर आ लेबर अफसर धेयाने नहि दैये। यूनियनक नेता सेहो समझा-बुझा क` कटि जाइये। पढ़ाइयो-लिखाइयो कऽ कोनो लाभ नहि भेल। एहि सँ नीक जे मूर्ख रहैत तँ केहनो काज करऽ मे संकोच नहि होइतै।`

सावित्री निःश्वास छोड़ैत अछि। ओकरा मुँह सँ निकलि पड़ै छै - `सरधुआ ई ट्रेन बैलगाड़ी जकाँ किऐ चलै छै ! लगपासक किछु लोकक नजरि सावित्री दिस उठि जाइ छै।

सावित्री लजा जाइत अछि।



असल बात जड़िअओठा

प्रिय महोदय,

अहाँ हमरा लिखइ छी एकटा उत्कृष्ट रचना पठबऽ लेल। बड़ असमंजस मे धऽ देलहुँ अहाँ हमरा। उत्कृष्ट कि निकृष्ट से समय-समय कें बात छइ। कियेक तऽ कहबी कोनो बेजाय नहि छइ - `राग, पागड़ी भात कभी-कभी बन जात` । जे - से, मुदा एखन निकृष्टो कथा लिखबाक `मूड` मे हम नहि छी। हम कि क्यो नीके लेल चेष्टा करैत अछि। हम एखन कथा लिखब कप्पार ! एतऽ सभ क्यो हमरा फँसा देने छथि हमरे एसगरुआ पंच मानि कऽ। मुदा, से हमरा बुत्ता सँ बाहरक बात अछि। अपने मोने तऽ नीक-अधलाह, उचित-अनुचित, उत्कृष्ट कि निकृष्ट सभ सोचैत अछि आ अपने मोने बुझितो अछि। मुदा, मान्य ओएह होइ छइ जे लोक मानि लिअय। कियेक लोक हमरा पंच मानि देलक, से घटना नहि जनने हमर परिस्थिति आहाँ नहि बुझब।

बात एना छइ। हमरा गाम मे एकटा बड़ प्रतिष्ठित शिक्षक छथि श्यामसुन्दर लाल दास। बेचारे बड़ योग्य आ निविष्ट लोक छथि। बड्ड-बहुत तऽ बहत्तरि-तिहत्तरिक आसपासक बयस हेतनि। छथि ओना पेंशनभोगी, मुदा से मात्र कहऽ लेल। अवकाश प्राप्त करबाक समय मे दरमहे कतेक रहनि जे अहगर कऽ पेंशन भेटतनि। बस इएह छनि वित्तीय आसरा। ओना अल्लू-भाँटा घराड़ी पर नाओं लेल भऽ जाइ छनि। जहन देहे छनि दुनू बेकतीक बुढ़ारिक तँ उपजेतनि के? तैयो कोनो विधि सँ किछु-ने-किछु सप्पत खाय लेल अपना खेतक दू-चारि सेर लबान करऽ लेल भेटि जाइ छनि। ओना छथि लालाजी। पेशा मास्टरीक कयलनि। खुरपी पकड़नाइ की आब संभव हेतनि? संस्कार मे तऽ भेटल छनि हाथ मे कलम-कागत।

संतानक नाओं पर दूटा बेटी आ पछता एकटा बेटा छनि। जेना कि मास्टर साहेबक बात-बिचार सँ बुझना जाइ छइ, ओ दुटा बेटिये तक सीमित रहितथि। बेटा-बेटी मे ओ भेद मानिते नहि छथिन। तथापि ओहो तऽ मनुक्खे छथि। बुढ़ारीक एकटा सहारा(?) आबि गेलनि। आबि नहि गेलनि, भेटि गेलनि, सएह बुझू। यैह चारि-पाँच बर्ख पहिने बियाह-दान करा देलथिन। ओ परिवार ल`कऽ दिल्लिये मे रहै छनि। ओकरा अपनासँ उबारा हेतै तहन ने देतनि ! ओना आइ काल्हुक जमानाक अनुसार धियापुताकें बचिते कहाँ छइ।

कहियो काल क्यो बातचीतक अभ्यंतर पुछिये दइ छनि - `मास्साहेब, ठीके

रघुनंदन किछु नञि पठबैये?`

मास्टर साहेबक सोझसाझ एकटा जबाब रहइ छनि - `अपन भार उठा लेने छथि, सएह कि कम छइ ? हमरा-तोरा जकाँ रहने गुजारा नञि छइ दिल्ली मे। हम तऽ आँखि सऽ देखि आयल छिअइ।`

ई तऽ नव गप्प नहि छइ जे समाज मे सभ तरहक लोक रहैत अछि। से लोक कें संतोष थोड़बे होइ छइ? शिष्टाचार निमाहैत आ अपन सन बनिकऽ पूछियो दइ छनि आ संगे-संगे कहियो दइ छनि - `एना नहि कहियौ मास्टर साहेब ! आबो आहाँक आरामक चिंता हुनका हेबाक चाहियनि।`

मुदा, मास्टर साहेबक अथाह सहिष्णुता मे एहन बात कोना आ` कतऽ हेरा जाइ छइ, तकर अंटकर हुनकर एहि जबाब सँ लगैत छैक - `हँ, से तऽ ठीक छह तोहर सबहक सोचब। लोक साल गनिकऽ मोने मे बूढ़ होबऽ लगैये। फेर अपन देह देखबैत कहै छथिन - `देखऽ तऽ हम सत्तरि बर्खक लगइ छी?`

आब लोक आगू की कहतनि आ की पुछतनि? सभ चुप्प भऽ जाइत अछि। वास्तव मे चुप्प होबऽ लेल लोक बाध्य भऽ जाइत अछि। मास्टर साहेब तहन अपना कें पकड़ाएल सन बूझऽ लगै छथि। आ` आगू जोड़ि दइ छथिन - `चलिते-फिरिते उठि जाइ, सएह चाहै छी। मुदा, सेहो तऽ बड्ड पुण्यक बात छइ हओ !`

तऽ समय काटऽ लेल, मोन बहटाबऽ लेल आ` संग-संग दू पाइ जोगार करऽ लेल दलान पर खानगी पढ़बै छथि। अपना विचार सँ तऽ गनिकऽ दसटा विद्यार्थी कें पढ़बऽ चाहैत रहथि ओ। एखनो सएह चाहइ छथि। बेसी विद्यार्थी नहि सम्हरै छनि। मुदा गौङाक आस्था आ श्रद्धा हुनका विवश कऽ देने छनि। हुनकर दलान छोटकी पाठशाला भऽ गेल छनि, से दूनू उखड़ा। गौङाक धारणा छैक, जाहि बच्चाक पोन पर मास्टर साहेबक एको करची लागि जाइ छइ, तकर तकदीर चमकि जाइ छइ। आब की मारथिन ओ। डंटितो नहि छथिन तेना भ`कऽ । हुनका प्रति धारणा आब मात्र कहबी बनिकऽ रहि गेल छइ। तथापि दलान गनगनाइत रहइ छनि।

घटना सुनल-सुनाएल अछि। अर्थात् हम प्रत्यक्ष गबाह नहि छी। विश्वास करब आब अहाँ लोकनि पर निर्भर करैत अछि। हमर आत्मा मुदा गवाही दऽ रहल अछि, से सुनला सँ सबा सोलह आना सत्य लागत। देखियौ ने, मास्टर साहेब सब बात अपने स्वीकारे टा नहि करै छथिन, बल्कि दृढ़ता संग जिज्ञासु कें कहितो छथिन। यो महराज ! एतऽ तक जे मुँह लुसफुसाइत रहै छनि जिज्ञासुके कहऽ लेल। आश्चर्य तऽ ई छइ जे टेप रेकर्ड जकाँ इच्छुक, मुदा ग्राह्य पात्र कें सुना दइ

छथिन। विश्वास आ अविश्वासक बात तऽ हम एहि दुआरे उठाएल अछि जे मास्टर साहेब आ अहाँ लोकनिक बीच मे हम छी। जहाँ तक हमर बात अछि, हम ने तऽ गंगा नहाकऽ, ने तऽ गायक दूध सँ अपना कें धोकऽ बजै छी। ने तऽ सांसद आ विधायक जकाँ गीता पर हाथ ध`कऽ सप्पत खा`कऽ कहइ छी। ई सब केनहुँ कि क्यो सत्य भऽ सकैत अछि? तहन हमर आत्मा फुसियाही बातक गवाही नहि दैत अछि, से तऽ हम ताल ठोकिकऽ कहब। तें छी हम एकहारि। असल मे इएह अछि हमर पाथेय आ बेछप परिचय। तें लोक हमरा ढहलेल बुझैत अछि।

यैह पाँच-छह दिन पहिनेक घटना छइ। भेलै एना जे एकटा विद्यार्थी छह-सात दिन अनुपस्थित रहलाक बाद पढ़ऽ एलै। मास्टर साहेब पुछलथिन - `की रे ! ई अप्पन घर भऽ गेलौ? जखन जेना मोन होइ छउ, चलि अबै छएँ?, जो तों, भाग एतऽ सऽ !`

ओ विद्यार्थी सलहेसक मूर्त्ति जकाँ ठाढ़ रहल चुपचाप। `की भेलौ रे? आइ तोहर कोनो बहन्ना नञि चलतौ। मास मे दस दिन गैरहाजिर रहिते छएँ तों। आइ ई, तऽ काल्हि ओ। जो गाम मे मास्टरक कमी नञि छइ` - मास्टर साहेब बहुत तमसा गेल रहथिन। ओ तैयो मुदा ठकबक भेल ठाढ़े रहलै।

मास्टर साहेब फेर बजलथिन - `रे ! की कहलियौ हम? तोहर माय-बाप की बूझि लेलकौ जे हम पाइ लेल पढ़ौनी करै छी? जो घर, आ बजाकऽ लबै गार्जियन कें! नञि तऽ देख अपन रस्ता`- मास्टर साहेबक आस्था हुमकारि उठल रहनि।`

ओ छँड़ा तऽ हतप्रभ भइये गेल छल, संग-संग आँखिक पिपनी नेप सँ भीजि गेलै। सोचलक जे आब कोनो उपाय नहि बाँचल अछि। ओम्हर घरो मे प्रताड़ना भऽ सकै छइ। बाबू दोसर मास्टर लग धरा देथिन पढ़लेल, से मुदा ओ चाहैत नहि छल।

ओ तहन वामा हाथे आँखि पोछैत डेराइते-डेराइते बाजल रहै - `हमरा माय कें बौआ भेलैये। दीदी कहलकै, घरे पर रहऽ लेल। बाबू काज पर सऽ काल्हि साँझ मे एलै।`

ओऽऽ ! से बात छउ ! - बेचारे मास्टर साहेब कें ठकमूड़ी लागि गेलनि। ओरिआनीक कियारी मे लागल फूलक गाछ सभ पर जे नजरि अंटकलनि, से हटबे नहि करनि।

चलित्तर मास्टर साहेब कें तमाकुल खुआबऽ लेल बैसि गेल रहय। ओ तमाकुल दैत टोकलकनि - `तकतियान नहि भऽ रहल अइ गाछ सबहक।`

`हँ रौ, सखे टा अइ सएह टा। की करियौ। सब बनचेढ़ भेल जाइ छइ।` मास्टर साहेब एतेक कहि तमाकुल मुँह मे लेलनि। चलित्तर बिदा भऽ गेल ! मास्टर साहेबक धेआन गिरिधर पर गेलनि। ओकरा बजेलथिन- `रे गिरिधर! एम्हर अबै लग मे।`

लग मे आबऽ सँ डेराय लागल। ओ फेर कहलथिन - `अबै ने ! किछु नञि कहबौ।`

लग मे एलनि तऽ बड़ सिनेह सँ पुछलथिन - `कय भाइ छएं तों?`

- पाँच भाइ।

- की-की नाओं छउ भाए सबहक?

- मुरलीधर, वंशीधर, चक्रधर, धनुर्धर।

- आ तों गिरिधर। वाह, पाँच पांडव छएँ तों सब। छठम आबि गेलौ। सातमो आठमो एबे करतौ। सुन, एकटा कर। आइयो तों छुट्टी मनो। काल्हि सँ अबिहें। मुदा, एकटा काज करऽ पड़तौ। बाबू कें कहिहएँ `धर` लगाकऽ आब नाओं नहि राखऽ लेल। `धर` के जगह पर `पकड़` लगाकऽ नाओं रखने बौआय नहि पड़तौ बाप कें नाओं राखऽ लेल।`

गिरिधर की बजितय? ओकरा अर्थो लगलै कि नञि, पता नहि?

मास्टर साहेब फरिछाबैत कहलथिन - `एना बुझही। मुरलीपकड़, बंशीपकड़, गिरिपकड़, चक्रपकड़ आ धनुरपकड़। आब बुझलही त?`

गिरिधर कें हँसी लागि गेलइ। मास्टर साहेब कें अपनो भभाकऽ हँसी लागि गेल रहनि। संग-संग विद्यार्थियो सभ हँसि देलकै।

कनेकाल बाद मास्टर साहेब मुस्किया कऽ `बाजल रहथिन - `फुटबॉल टीम, क्रिकेट टीम गाम मे तऽ नहिएँ बनल। एकरा घर मे मुदा बनि जेतै। बाप बनतै `रेफरी` आ `अंपायर`। जीब तऽ की-की ने देखब। एकर सबहक नाओं `गिनिज बुक` मे लिखा जेतै।`

दोसर दिन भेने गिरिधर पढ़ऽ नहि आएल तऽ बाप पुछलथिन। ओ सभ वृतांत कहि सुनौलक बाप के।

बस, यैह आ एतबे बात छै महराज। मुदा तकर परिणाम की कहू। बेचारे मास्टर साहेब आफत मोल लऽ लेलनि। गिरिधरक बाप आ हुनकर किछु अनेरुआ समर्थक जे सभ कि अगराही मेहक धनछुआ अछि, एकर सभक काजे छइ आगि लेसिकऽ धधरा तापब आ टीक मे टीक जोड़ब, बेचारे पर टूटि पड़लनि।

`.... अयँ एहनो भेलैये ! बनियाँ कें घेघ आ गहिंकी के उद्वेग ! ककर कें

प्रतिपाल कऽ दइ छइ? मास्टर साहेब कें टीसनक पाइ नञि भेटइ छनि जे एहेन एहेन बिख छोडै छथि? अपना एक्केटा बेटा आ दूटा बेटी छनि, तऽ अनकर कियारीक लाल-गुलाब सब देखिकऽ देखजर लगै छनि ! अपन बेटा पुछितो नञि छनि त` दुष्टे फुराइ छनि बैसल-बैसल ! बेटा-पुतहु बारे मे एना बजैत कनिको लाज नहि भेलनि ! हमरा फुटबॉल टीम कें खाय लेल इएह देता की?`... बुझू तऽ समूचा गाम जुटि गेलै नौ-दस बजैत-बजैत। मास्टर साहेबक मोनक बात तऽ नहि कहब, मुदा टस्स-स-मस्स नहि भेला, ओ सभटा सुनैत रहलाह, आ मुस्किआइत सहैत रहला। भरिसक तुलसीदासक पाँती मोन पड़ि गेल रहनि - `बूंद अघात्त सहहिं गीरि कैसे, खल के बचन संत सह जैसे।`

गामक लोक तऽ बिना पाइक तमाशा देखैत रहल। फुसफुसाकऽ टोकारे दैत रहल। अंत मे लोक कें असह्य भऽ गेलै तऽ गिरिधरक बाप कें समझा-बुझ ाकऽ लऽ गेलइ ओकरा घर दिस।

असल मे गिरिधरक बाप छथिन सुधंग लोक। भेदक बात छइ जे गाम मे किछु आर गोटे खानगी पढ़ौनीक वृत्ति अपनेने छथि। गिरिधरक बाप एकरे सभक बात मे आबि गेल रहथि।

आर जे-से, मास्टर साहेब पढ़ौनी छोड़ने छथि। विद्यार्थी सभ अबैत छनि आ घुरिकऽ चलि जाइत अछि। मास्टर साहेब मुदा एकदम प्रकृतिस्थ छथि। हमरा गौंआक भाषा मे हमही ओहन `पंच` छी जे मास्टर साहेब कें मना सकैत छी। ओम्हर ओ चंडाल चौखड़ीक लोक, खानगी शिक्षक लोकनि नित नव-नव भड़कौअलि बात छोड़ि रहल अछि।

जे-से, हम ता विद्यार्थी सभ कें मास्टरे साहेब ओतऽ सम्हारब शुरु कऽ देने छिअइ। आब तऽ बुझिये गेल हेबइ असल बात जड़िअओठा? विश्वास अछि, मास्टर साहेबक मोन डोलतनि। मुदा, हम तऽ किछु लोकक नजरि पर चढ़िये गेलियै ने?

मोन थिर भेला पर किछु नीक-बेजाय पठा सकब से विश्वास अछि।

तत्काल क्षमा प्रार्थी छी।



बाट ताकैत एकटा सेहंता

तिरपित चुपचाप नार आ घास मिलाकऽ कुट्टी काटि रहल अछि - छप्! छप्! छप् !

एकचारी मे बैसल ओकर बेटा पाठ घोखि रहल छै।

भोर-साँझ तिरपित एकचारी मे बेटा कें बैसा दैत अछि पढ़ऽ लेल, आ अपने अंगनै मे कोनो-ने-कोनो काज मे जुटि जाइत अछि। ओ सोचैत आबि रहल अछि रमनू कें खानगी पढ़यबाक बात मुदा, पार नहि लागि रहल छै। एकटा महींस रखने अछि, आ किछु खेत बटाइ पर ल` लैत अछि। कहुना गुजर भऽ जाइ छै।

आब महींस राखऽबला समय नहि छै। जकरा अपना गाछी-बिरछी नहि छै, तकरा लेल तऽ आर जानक जपाल छै माल-जाल। लोक बड़द राखब बिसरि रहल अछि। ट्रैक्टरक जमाना आबि गेल छै। थ्रैशरक कमाल खरिहानक इज्जति कें मिटा रहल छै। जकरा सभक दरबज्जा पर चारि-चारिटा बड़द बान्हल रहै छलै, ओतऽ आब ट्रेक्टर शान बघारि रहल छै। दलानक अगनै मे मेह नहि गाड़ल जाइ छै। ओकर अस्मिता थ्रेशर लूटि लेने छै। कन्यागत आ वरागत इएह सब देखि संबंध जोड़बा लेल जोड़-तोड़ करैत अछि। लोक गाछी-बिरछी कें आरि-धूर दऽ घेरि-बेढ़ि रहल अछि। गाछी-बिरछी मे घास रखबाक प्रवृत्ति लोक मे आबि गेल छै। घास राखी पर लगयबाक प्रचलन भऽ गेलैये। जकरा माल-जाल नहि छै, घास राखी पर बेचब नियम बना लेने अछि।

आब तिरपित बान्ह पर घास नहि छीलैत अछि। महींस कें ल`कऽ ओतऽ नहि टहलैत अछि। कात-करौट मे कनेमने घास उगै छै। जानिबूझिकऽ तिरपित ओ घास नहि छीलैत अछि। ओहि घास सऽ किछु होना-जोना नहि छै। उंटे बान्ह ढहि जेतै।

की बान्ह आब रहि गेल छै? एकटा ओकरा बचेने बान्ह बचतै? आवागमनक साधन लोक बेगरतावश बढ़ा रहल अछि। लोक आधुनिक भऽ रहल अछि। लोक सुकुमार भऽ गेल अछि। बेसी लोक लेल समयक महत्व बढ़ि रहल छै। मुंबइ, दिल्ली, कोलकाता, राँची आ धनबाद सँ लोक सोझें गाम नहि तऽ दरभंगा तक चलि अबैत अछि। आ फेर ओतऽ सँ बस पकड़िकऽ सोझे गाम, नहि तऽ आस पासक कोनो बजार वा मोड़। आ फेर ओतऽ सँ ऑटो, जीप वा रिक्शा पकड़िकऽ

गाम। संग मे सामान रहै छै, परिवार रहै छै। सवारी केनाइ जरुरी भऽ जाइ छै। दिन-राति ऑटो, जीप आ मारूती हड़हड़ाइत रहै छै। मोटर साइकिलक तऽ हिसाबे नहि छै, तऽ साइकिल कें के पुछैये। बान्ह आब बान्ह नहि, पलड़िकऽ सड़क भऽ रहल छइ। तिरपित बाध दिस चलि जाइत अछि। परता खेत मे घास छिलि लैत अछि। घास लेल ककरो गाछी राखी पर ल` लैत अछि। आधा घास अपन होइ छै, आ आधाक दाम देबऽ पड़ै छै। जरूरति भरि घास कटैत जाइत अछि, आ पाछू सऽ नव घास उगैत रहै छइ। तीन खेप तऽ नियामक रूपे घास कटैत अछि।

पढ़ैत-पढ़ैत रमनू रुकि जाइत अछि। एम्हर तिरपितक हाथ संगे-संगे थम्हि जाइ छै। बेटा दिस पलभरि देखैत अछि, आ चिकरैत अछि -`की भेलौ रे? चुप किये भेलएँ तों?`

`बाबू बुजुर्ग माने की होइ छै?` - रमनू पुछै छै। बुजुर्ग माने होइ छै बूढ़ से नञि बुझै छीही? सदिखन तऽ लोक बजै छै` । - तिरपित कने गुमान सँ भरि जाइत अछि जे ओ रमनू कें बहुत किछु सहायता कऽ दै छइ।

रमनू पढ़ऽ लगैत अछि। तिरपितक आँखि नीचा मशीन पर झुकि जाइ छै। बामा हाथे नार-घास कें भिड़ियाकऽ बढ़बऽ लगैत अछि।

तखने फेर रमनूक पढ़ब बन्न भऽ जाइ छै। तिरपित हाथ बारि ओम्हर तकैत अछि। रमनू किताब सब उंटा-पुंटा रहल अछि।

तिरपित आश्वस्त भऽ पूर्ववत कुट्टी काटऽ लगैत अछि। रमनू चुपचाप किताब मे आँखि गड़ौने अछि।

`की भेलौ रे? औंघी लगै छौ?` - तिरपित बेटा कें डँटैत अछि।

`मुँह दुखा जाइये तऽ मनेमने पढ़ै छियै` - रमनू डेराएले कागत-पेंसिल निकालैत अछि।

`तों हमरा महींसक चरबाह बूझि लेलएँ, नञि? पढ़, नञि तऽ कनबोझ झाड़ि देबौ ! रे लोक दिल्ली-बम्बइ जाइ छै, से सेहन्ता नञि होइ छौ?` तिरपित अइ बेर बेसी तरंगि गेल अछि।

`बेटा दिस तकैत-तकैत ओ सोचऽ लगैत अछि - की हमरो रमनू एकदिन शहरूआ नञि हेतै ! जेना लोक सब कमा-कमाकऽ अबै छै ! संग मे कनिया रहै छै ! धियापुता रहै छै, आ रहै छै सामान सब !`

`बाबू कुसियार भदै छै कि रब्बी?` - रमनूक प्रश्न पर तिरपितक धेआन भग्न होइ छै।

बेटाक प्रश्न सुनि तिरपित चकरा जाइत अछि। ...आइ तऽ हमर अक्किले गुम्म कऽ देलक छौंड़ा ! कुसियार तऽ सालो भरि खेते मे रहै छै !`

`रे ई तोरा किताब मे छौ?` तिरपित के बेटा पर विश्वास नहि होइ छै।

`चारि-चारिटा उदाहरण पुछै छै रब्बी आ भदैक।` कुसियार के कथी लिखियौ` - रमनू रोड़गर भऽ बजैत अछि।

`ओ ऽऽ! से बात छै !... अच्छा, कुसियार छोड़ि आर कोनो लिखि दही तिरपित के फुरा जाइ छै।

तिरपित कें तमाकुल खयबाक तलब जगै छै। डाँर सँ डिब्बी निकालैत अछि। तरहथी पर मोन माफिक चून-तमाकुल राखि डिब्बी फेर डाँर मे खोंसैत अछि। तमाकुल रगड़ब शुरु करैत अछि आ नजरि आगू शून्य मे गड़ल छै। ओ कुसियारक श्रेणी ताकि रहल अछि। सोचैत-सोचैत तमाकुल रगड़ब बन्न भऽ जाइ छइ। हमहूँ तऽ खेतिये-बारी मे लागल रहै छी ! एहन बात तऽ कहियो धेआने मे नहि आएल। अपन निरक्षरता पर तकदीर आ गार्जियन कें कोसैत अछि।

.टनऽ टनऽ ! टनऽ टनऽ !`

सुक्खा मास्टर साहेब अर्थात् सुखचन्द्र मिश्र साइकिल सऽ इस्कूल जा रहल छथि। ओ आन गामक स्कूल मे अध्यापक छथि। सभदिन ओ अही समय पर निकलै छथि।

`मास्साहेब ! कुसियार रब्बी छै की भदै?` - तिरपित सुक्खा मास्टर कें देखिकऽ पुछैत, हुनका लग तुरंत पहुँचि जाइत अछि।`

ने तऽ रब्बी छै ने भदै। एकरा `कैश-क्रॉप` कहै छै - सुक्खा मास्टर कहैत पैडिल पर जोर मारै छथि। तिरपित हैंडिल पकड़ि लै छनि।

`मास्साहेब बुजुर्ग माने कि होइ छै?` - तिरपित फेर पुछै छनि।

सुक्खा मास्टर साइकिल पर सँ उतरि जाइ छथि। रमनू कें सोर पाड़ै छथिन। ओ डेराएले अबैत अछि।

`रे, तों ई सब मास्टर सऽ किये ने पुछै छीही? फेर जे एहन शिकाइत सुनलियौ तऽ फेर हमही छी !`

सुक्खा मास्टर डँटै छथिन आ साइकिल पर चढ़ि आगू बढ़ि जाइ छथि।

`रे सुनलही, मास्साहेब की कहलथिन से?` तिरपित मशीन लग बैसैत बेटा सँ पुछैत अछि।

रमनू चुप अछि।

- रे नञि सुनलही तों? `केश-कोप` ककरा कहै छै?

...जो आइ मास्टर के पुछियही। तों तऽ पुछितो नञि हेबही मास्टर सऽ। रोड़गर बन नञि तऽ झाम गुड़बए हमरे जेकाँ ! हमरा बापक जमाना किछु आर रहइ। हम धरि तोरा पढ़ेबौ।`

`मास्साहेब सब कहाँ अबै छै से। जे सब अबै छै, से सब बैसकऽ गप्प करै छै। नञि तऽ टेबुल पर टाँग पसारिकऽ सूति रहै छै।

ठहर, आइये टीशन धराइये दइ छियौ। सुक्खे मास्टर ठीक रहतौ। दरखास देने छिऐ दोसर महींस लेल।`

`तिरपितक धेआन मुट्ठी मे तमाकुल पर जाइ छइ। हँहि-हँसि दू बेर रगड़िकऽ झारैत अछि, आ ठोर मे ढूसि लैत अछि, आ बजैत अछि -`ठहर, देखै छिऐ तेहेन ने मुखिया भेलैये जे सबके भेंट करबै छियनि। इस्कूल मे सूत` अबै छथि सरबे सब, नञि ! अखने तऽ मुखिया एम्हरे एत्तै।`

तिरपित बाँचल नार-घास कें समेटिकऽ भिड़िया लैत अछि, आ कुट्टी काटऽ लगैत अछि।

तखने मुखिया आबि जाइ छै। संग मे आर किछु लोक छै। सेसब वार्ड मेम्बर छै। वार्ड मेम्बर काल्हि कहने रहै तिरपित के जे आइ मुखिया एतै गाम घूमऽ। मुखिया कम्मे भोट सँ जीतल अछि। अपन प्रख्याति बढ़ा रहल अछि। सुनल जाइ छै, अगिला विधानसभा भोट मे ठाढ़ होयबाक सुरसार कऽ रहल अछि।

तिरपित ठाढ़ भऽ हाथ जोड़ि अभिवादन करै छै। हँहि-हँहि गमछा सऽ चौकी झाड़ैत अछि। चौकी पर समटल राखल ओछाएन कें ओछबैत अछि, आ रमनू कें पठबै छै आँगन चाह दऽ कहऽ लेल।

मुखिया रमनू के रोकि लै छै, आ कहै छै - `तिरपित बाबू, अहाँ कहलौं तऽ हमसब बैसलौं आ चाहो पीलौं। सबसँ पैघ अहाँक प्रेम-भाव भेटलए हमरा। हम तऽ कहऽ एलौंहएं जे अहाँक महींसक दरखास्त मंजूर भऽ गेल अछि।`

तिरपितक मुँह मुस्की सँ भरि जाइ छै।

मुखिया आगू बजैत अछि -`सड़क पक्की करा रहल छी। बिजली आबिये गेल अछि। फोन बुझू तऽ जे दिन ने आबि गेल।` - मुखिया सगर्व बजैत अछि।

`सरकार कने इस्कूल पर सेहो धेआन दीयौ। मास्टर सब अबिते नञि छै। जे अबै छै, से सुतहे अबै छइ। हमर सबहक धियापुता फेर कोना पढ़तै?` तिरपित निधोक बाजि जाइत अछि।

`ई सब सरकारी कारबार छै। तथापि हम अहाँकें हतोत्साह नञि करब। मात्र अपने गामक इस्कूल मे थोड़बे एना छै? सरकारो चिंतित छइ। समूचा देशक इएह हाल छै।` - मुखिया कहैत आगू बढ़ि जाइत अछि।

रमनू तिरपित के कहइ छै - `बाबू, ओ जे नमघोड़हा रहै ने? ओएह छै हमरा इस्कूलक हेडमास्टर। ओ तऽ एक्के-दू दिन अबै छै इस्कूल मे।`

तिरपित कनेकाल सोचैत ठाढ़ रहैत अछि। नजरि महींस पर जाइ छइ। महींस ओकरे दिस टुकुर-टुकुर ताकि रहल छै।

`अच्छा, जो आब नहो-खोगऽ। इस्कूलक बेर भऽ गेलौ।` - अतेक बजैत तिरपित महींस कें सानी बोझ` जाइत अछि।



मात्सर्य

सात मास पर मील खुजि रहल छइ। मैनेजमेंट एक हजार टाका प्रत्येक श्रमिक कें अगाउ देबाक बेवस्था केलकैए। बाँटऽ मे सुविधा लेल पनसय टकियाक प्रबंध भेल छैक।

पाँच-सयक दूटा कड़कड़ौआ नोट रामलाल दिस बाबू बढ़ा दै छइ। राम लाल रुपैया हाथमे लैत अछि, मुदा गनैत नहि अछि। सामने मे तऽ गनिकऽ देबे केलकैए बाबू, सेहो मात्र दूटा नोट। तें फेरसऽ गनब जरुरी नहि बुझैत अछि। पतियानीसँ फराक भऽ टाका कें मोड़ऽ लगैत अछि जेबीमे राखऽ लेल, मुदा मात्सर्य होइत छैक मोड़ैत।

टाकाकें देखैत अछि। निंघारैत अछि आ ब्योंत सोचैत अछि। ओकरा तर्कमे आबि जाइ छै। दुनू कोरकें आस्तेसँ एकरंग मिलाकऽ सटा लैत अछि। उपरका भाग, अर्थात नोटक बिचला भागकें एना मोड़ैत अछि जाहिसँ टाकामे भाँज नहि पड़इ। नरमे हाथे गौं-सँ टाकाक मोड़लाहा भागकें उपरका जेबीमे उपर दिसकऽ रखैत अछि।

तखने क्यो टोकै छै -`की हौ रामलाल भाइ, नोट बाकसे मे रहतऽ?`

रामलालक मुस्की भरल मुँहसँ संग-संग बहराइ छै -` जतबे काल, ततबे काल। बड मात्सर्य लगैए हौ एकरा मोड़ैत।`

`ठीके कहइ छहक हौ। मुदा सोचइ-छिअइ जे एखने तऽ बजारमे उड़िया जेतै। अतेक माया-मोह देखेने कोन लाभ`। - ओ लोक बजैत अछि। क्यो तेसर टीपैत छैक - `ताइमे छओ मास पर नोट देखि रहल छिअइ, सेहो एकदम टटका-तहदर्ज।

एकर सभक गप्प सुनैत क्यो मुस्किआइत कूट करइ छइ `-हँ-हँ, घरेमे राखऽ लेल कम्पनी एडवांस देलकैये ! हौ, रुपैया तऽ होइ छइ वेश्या। दसे दिनमे दस हाथक रगड़ पड़िते साठि सालक बुढ़िया जकाँ झोखड़ि जेतइ`।

सभक मुँह पर चौअनियाँ मुस्कीक संग आनन्दक लहरि हिलकोर लेबऽ लगै छै।

रामलाल घरमे आबिकऽ ठाढ़े-ठाढ़े आस्तेसँ नोट निकालैत अछि। तजबीत

करैत अछि। नोटमे भाँज नहि पड़ल छैक। पयर लटकाकऽ चौकी पर बैसि जाइत अछि। नोटकें गनैत अछि - एक, दू आ तीन ! ... अँय ई की ! तीन टा नोट ! एहन भइये नञि सकै छै !

ओ कए बेर टाकाकें गनि जाइत अछि। वास्तवमे तीन टा नोट छैक।

बाबू एहन गलती नहि कऽ सकैत अछि। ओ चकित अछि।... दिन-राति तँ इएह छइ काज ओकर !....

ओ गनियो रहल अछि, आ सोचियो रहल अछि।

जे-से, ओकरा हाथमे तीन टा कड़कड़ौआ नोट छैक, से ओ आश्वस्त होइत अछि। मोन उत्फुल्ल भऽ जाइत छैक।

बामा हाथक चुटकी मे तीनू नोटकें ताशक पत्ती जकाँ उपरका भागकें छितराकऽ रखने दहिना हाथक आँगुरसँ तीन-चारि बेर गनैत अछि।

एकदम चमचम करैत नोट सभकें निंघारैत-निंघारैत मोन बढ़ि जाइत छैक... ओह धोखेसँ सही, चारिमो जे तेसरे जकाँ सटल रहितैक !

तखने क्यो भीतर सँ धिकारि उठैत छैक - भाग जे बाबू बेख्याल भऽ गेल रहैक तोरा रुपैया दैत काल। अनेतक पाइ लेल तोरा एना नहि सोचबाक चाही।

रामलाल भीतरे-भीतर ग्लानिसँ भरि जाइत अछि। ओ बेसियाहा नोट घुरा देबाक मादे सोचैत अछि। टाका तऽ निश्चय शॉट हेतैक। बाबूक दरमाहामे सऽ कटि जेतै। बाबूओ सभ तऽ गरीबे होइत अछि। सभ बाबूकें थोड़बे लहइ छै घपचाब` लेल। आर तऽ जे-से, सभ बाबू चोरो नहि होइत अछि !

रामलालकें बाबू पर दया आबि जाइत छैक। ओ विदा होबऽ लगैत अछि। ताला-कुंजी लैत अछि घर बन्न करऽ लेल। घरक मुँह तक अबैत अछि। पयर ठमकि जाइत छैक। दोसर मोन कहैत छैक... कोन एहन धड़फड़ी छह ! कने वादेमे कि काल्हियो घुरायल जा सकइ छै। बड़ छटपटिया छएँ तों !

ओ चुपचाप फेर पयर लटकाकऽ चौकी पर बैसि जाइत अछि। मोनकें बसमे करैत अछि -`आह एहन टाका कोना घुरा देबै ! आयल लक्ष्मीकें कोना दुत्कारि देबै ! जिनगीमे आइये लक्ष्मीकें एहेन कृपा भेलनिहें हमरा पर !`

ओ फेरसँ नोट सभकें निघारैत अछि। थूक लगाकऽ रगड़ि-रगड़िकऽ गनैत अछि। तैयो किछु संदेह रहि जाइत छैक। तें तीनू नोटकें तीन ठाम रखैत अछि।

तीनूक सीरियल नम्बर एकलखति छैक। आब ओकरा कोनो तरहक सन्देह नहि रहि जाइत छैक। हजार नहि, डेढ़ हजार, अर्थात पाँच सय उपछा रुपैया ओकरा पासमे छैक।

बिन्दुजीक भजन-संग्रह `मोहन-मोहिनी` ओकरा लगमे छैक। जरूरति भरिक टाका निकालिकऽ आर टाका अहीमे रखैत अछि। `मोहन-मोहिनी` बाकस सँ निकालैत अछि। तीनू नोटकें तहियाकऽ राखऽ लगैत अछि कि मोनमे होइ छइ -`ई किताब बहुत पुरान भऽ गेल छैक। ओहिमे नव टाका राखब ठीक नहि। ओकरा मोन पड़ैत छैक जे पाइ-कौड़ीक हिसाब राखऽ लेल एकटा एक्सरसाइज `बुक` छैक ओकरा लग मे से तऽ नबे छइ। से बाकस सँ निकालैत अछि। ताकिकऽ मोन माफिक एकदम साफ-तहदर्ज दूटा पन्ना फाड़ैत अछि। चौकी पर राखल तीनू-नोट बसात पर कने फराक-फराक भऽ गेल छैक। तीनूक कोन फड़फड़ा उठैत छैक। जँ ओहि पर घड़ी नहि राखल रहितैक तँ उड़िया गेल रहितैक। रामलाल सोचैत अछि -`शुरु मे चिड़ैक बच्चा अहिना उड़ब सिखइ छइ। ...एकरा सऽ बेसी उड़ब यथार्थ मे के जानत ! मोन उड़ितो छइ तऽ यथार्थ मे एकरे आधार पर।

कागजमे तहियबैत काल लगैत छैक जेना रामलाल टाकाकें कहैत होइक - तोरा एतेक जल्दी कोना उड़ऽ देबौ !

बाकस बन्न क`कऽ एक गिलास पानि गटाक्-गटाक् कऽ पीबि जाइत अछि। पलथी मारिकऽ चौकी पर बैसि जाइत अछि, आ तमाकुल खोंटऽ लगैत अछि। ओकरा अपने आश्चर्य लगैत छइ जे पहिने-पहिने तऽ नव नोट नहि देखलक अछि ओ। पाँच सयक नोट पहिने-पहिने तऽ नहि एलैये ओकरा जेबीमे। कड़कड़ौआ तहदर्ज नोट कय बेर जेबीमे ठूसि लेने अछि। सभसँ पैघ बात छैक जे - ई नोट सभ ओकरा बाकसमे कतेक क्षण आ कतेक दिन रहतै। दोसर बात रहलै उपछा पाँच सयक ! एहिसँ की होना-जाना छैक !...एतबे मे उबडुब करऽ लगलौं हम ! जौं हजार-लाख एतइ तखन?

बगलबला सामनेमे ठाढ़ भऽ कऽ तमाकुल मंगैत छैक तँ ओकर सोचब भंग होइत छैक। ओकरा तमाकुल दऽ अपनो ठोर मे ठुसैत अछि, आ कुर्ता खुट्टीमे टाँगि लोटा-गमछा लऽ स्नान कर बिदा होइत अछि। कल पर ततेक भीड़ एखन नहि छैक। एखन मात्र दूटा छौंड़ा नहा रहल अछि।

रामलाल जगहक प्रतीक्षामे ठाढ़ भऽ जाइत अछि। बड़क छाँह तरमे ताशक अड्डा जमल छइ। ओतऽ सँ क्यो बजैत अछि -`पंडीजी कें नहाय दही रे छौंड़ा सब!`

रामलाल लेल कने जगह बनि जाइत छैक। ओ ओतनी जगहमे घुसियाकऽ नहाय लगैत अछि।

आइ रामलाल कौआ नहान नहाइत अछि। क्यो ठट्ठा करैत छैक - `आइ तऽ ढेको नहि भीजलऽ रामलाल?`

तखने क्यो दोसर टीपैत छइ :-`जनौ सेहो सुखायले हनि पंडीजीक। सिरिफ हजार रुपैया पर पंडी जी?`

नहि हो, पनरह सय - रामलालक मुँह सँ निकलऽ लगैत छैक, मुदा चेति जाइत अछि। सम्हरैत बजैत अछि `कहियो-कहियो मंत्र-स्नान जरूरी भऽ जाइत छैक। भानस सेहो करबाक अछि।`

हाँहि-हाँहि कपड़ा फेरिकऽ मंत्र पढ़ैत बढ़ि जाइत अछि, आ सोचैत जा रहल अछि... आइ बजरंग बली ओकरा मुँह पर ठाढ़ भऽ गेलथिन, नहि तँ आइ अपनेसँ ओ अपन भंडाभोड़ करऽ जा रहल छल। नाहकमे ओ पकड़ल जाइत। बदनामी जे होइतै से फराक, ओकर तर्क क्यो नहि मानितै। कतेक तरहक' प्रश्न ठाढ़ भऽ जैतइ। ई तऽ नियामक छैक जे रुपैया शॉट हेबे करतै। क्यो कहबे करितै जे हम एना-एना बाजल रहियै। ककरा मुँह पर ओ लगाम दितैक? सभ कहितैक - बुझ ाहक हौ ! रामलाल सेहो तेहने छइ ! नेत-धर्म दुनियाँसँ उठि गेलैक !

रामलाल भीतरसँ काँपि जाइत अछि। घर मे अबिते आँखि मूनि, करजोरि बजरंगबलीक फोटोक सामनेमे ठाढ़ भऽ जाइत अछि -`हे संकटमोचन! अँहीं तऽ छी हमर रक्षक !`

आँखि मूनि आराधना करैत काल ओकरा आभास होइत छैक जे ओ खसऽ लेल अपनेसँ खाधि खुनि रहल अछि। ओ अनावश्यक अलाय-बलाय सोचि रहल अछि। टाका ओकरा पास पहिनहि सँ छैक ! कयबेर तऽ सुनइ छिअइ जे बाबू सब अपने जानिये-बूझिकऽ शॉट देखा दइ छइ। साहेब सभक सांठगांठ से रहै छइ।

ओ सामान्य स्थितिमे आबि भानस-भातमे लागि जाइत अछि। एकटा भजन बिन्दुजीक गुनगुनाय लगैत अछि - `यदि नाथ का नाम दयानिधि है, तो दया ओ

करेंगे कभी-न-कभी।`

तरकारी चढ़ल छैक आ ओ आँटा सानि रहल अछि। मोन ओम्हर नहि जाइक तें किछु बाजियो रहल अछि। तरकारी खदबदा उठै छइ। तरकारीमे पानि ढारैत अछि, आ आँटाकें प्रेम सँ सानऽ लगैत अछि, आ बड़बड़ा रहल अछि - `बढ़ियाँ जेकाँ सनने रोटी फुलैत छैक, आ फूलल रोटी खायमे सोअदगर होइत छैक। आ आँटा सानब?... आँटा सानब तँ ओकरा कहैत छैक, जौं कौआ लोल मारै तँ सटले रहि जाइ। ओ उड़ऽ लेल छटपटाय लागय`।

तरकारी उतारि रोटी सेदऽ लगैत अछि। सभ रोटी आइ एकरंग नहि भऽ रहल छैक। कोनो फुलैत छैक, कोनो जरि जाइत छैक। दू-चारि टा अधकचाह रहि जाइत छैक।

निचेनसँ खाय लेल बैसैत अछि। आस्ते-आस्ते कौर मुँहमे रखैत अछि। कय दिन एहन खेनाइ आधा-छीधा खाकऽ उठि गेल अछि। आइ एत` बहु रहितै तऽ ओकरा पर थारी फेक देने रहितै। ...धुत्, बेजाय नञि खेबइ तऽ नीक सोआद बुझबै कोना !

मुदा, आइ देखनाहरकें लागि सकैत छैक जे रामलाल कें बड़ सोआद भेटि रहल छैक। मुदा, मुँह तऽ बाझल छैक खाय मे। एसगर मोन फेर ओही सभसँ ओझ ारा गेल छैक। सोआद तऽ बिला गेल छइ।

ओकर धेयान पेमेंट पर चलि गेल छैक। बाबू गड्डीसँ नोट निकालनहि रहै कि तामे लेबर साहेब आबिकऽ बाबूक कान मे किछु कहऽ लागल रहैक। बाबू बेसुर्ता भऽ गेल रहैक। ओ दोसर बेर रुपैया नहि गनि सोझे रामलाल दिस बढ़ा देने रहैक।

रामलालकें फेर बाबू पर दया आबि जाइत छैक। ओ सोचैत अछि, उपछा नोट घुरा देतइ ओ। एहन अनेतक पाइ ओ नहि राखत। एहन पाइ नहि पचै छैक। कोनो-ने-कोनो बाए एहन रुपैया खर्च भइये जाइत छैक।

किछु बर्ख पूर्वक एकटा दृश्य ओकरा सामने मे आबि जाइत छैक। एकटा श्रमिककें एकटा सोनाक चेनबला घड़ी भेटल रहैक जे ओ लेबर ऑफिसमे जमा कऽ देने रहैक। फैक्ट्रीक मैनेजर ओहि श्रमिक कें इनाम तऽ देनहि रहैक। संग-संग एक ढाकी बाजल रहै ओकरा नेत पर। गर्वसँ ओहि श्रमिकक छाती फूलि

उठल रहैक।

रामलालक सोझाँ ओ दृश्य ओहिना छैक। आब रामलाल ओहि श्रमिकक स्थान पर अपनाकें देखि रहल अछि। नोटिस बोर्ड पर रामलालक बारेमे सूचना टाँगि देल गेल छैक। सभ उचकि-उचकिकऽ पढ़ि रह अछि। मैनेजर ओकरा सँ हाथ मिला रहल छैक। कैमराक फ्लैस चमकि उठैत छैक। ओकर अपन नजदीकी बंधु-बान्धव सब ओकरा घेरने तरह-तरहसँ ओकर बड़ाइ करैत ओकरा क्वार्टर तक अबैत छैक।

...किछुए दिनक बाद मैनेजर संग हाथ मिलबैत ओकर फोटो ओकरा घरमे टँगा जाइत छैक। कहियोकाल क्यो उपर मोने कि भीतरक मोने फोटो देखि बड़ाइ करितो छैक, तँ ओ एहन ने मुँह बना लैत अछि जाहिसँ स्पष्ट बुझना जइत छैक जे ओकरा लेल तकर ओतेक महत्व नहि छैक।

सोचैत-सोचैत रामलाल कखन खाकऽ ऐंठ-काँठ फेरैत अछि, थारी-बाटी आ मुँह-हाथ धोइत अछि से सोह ओकरा नहि रहैत छैक। ओ तऽ बगलबला चलि अबैत छैक तऽ ओ तत्काल एहि दुनियाँमे घुरि आबऽ लेल बाध्य भऽ जाइत अछि।

दुनू गोटे आरामसँ चौकी पर बैसि जाइत अछि। बगलबला तमाकुल रगडऽ लगैत छैक आ अपने मोने बजैत छइ। गेल रही कने मण्डप दिस। चर्चा होइत रहैक जे बाबू फेरो गड़बड़ केलकैए रुपैया बाँटऽ मे ! रुपैया फेर `शॉट` भेलैए।

दुनू चुप्प रहैत अछि।

बगलबला फेर बजैत छैक -`हमरा नइ विश्वास होइए। बाबू जरूर घपला कयने हेतैक।` एकौ हप्ता सुनइ छहक जे शॅट नञि भेलैये?`

रामलाल चुप्पे रहैत अछि।

`बाबूक घर देखनहि हेबहक? सत्ते, चोर-विद्या सभसँ पैघ विद्या छैक। हम तऽ बजरंगबलीकें कहैत छियनि जे ठीके मे बेसी पेंमेंट भऽ गेल होइ। हम लड्डू चढ़ायब अहाँकें ! बाबू डकैत अछि, डकैत! लेबर साहेब आ ओ दुनू सार-बहनोइ अछि !` बगलबला एकलखति बाजि रहल अछि। ओ उठिकऽ थूक फेकऽ जाइत अछि।

आबिकऽ ओ रामलालक सामने मे बैसि जाइत अछि -`अरबो खरबोक घोटाला होइ छै। मर, एकटाक जाँच सम्पन्नो नहि होइ छै कि दोसर तहलका मचि जाइत छैक। हौ, जकरा बेसी भेटल हेतै से देतनि बंगौड़ सती ले? कने सोचहक ने? पाँच सयक नोट, आ ताहुमे मात्र दूटा। हौ, गरीब-दुखिया लेल क्यो नहि ! सत्ते,- बजरंगबली कें देखैत - `ईहो नहि। ई सबटा माया छइ,- उपरबलाक नाटक।`

बगलबला उठैत कहैत छैक - `तहूँ आराम करऽ आब। हमरा बैसले नहि जाइए खाक।`

ओ घरक मुँह पर सँ फेर घुरि अबैत अछि :- अँय हौ, मनेजरक बेटाक घड़ी पौनिहारकें इनाम भेटलइ आ तकरा बाद कतेक ने चीज जमा भेलइ लेबर औफिसमे ! एकबेर तकराबाद हमहीं एकटा मनीबैग देने रहियै लेबर साहेबकें, ... रुपैया रहैक ओहिमे। हमर मति मारल गेल रहय। झूठ नञि कहलिय हम ! कय गोटे रहय संगमे। हम तें बाध्य भऽ गेल रही जमा करबा सऽ। हओ, चोर-बनोल आ साहेब-सुब्बा लेल कोन दया-धर्म? ओइ मनीबैग मे सात हजार, रुपैया रहइ। से बात गुलगुला गेल रहइ। मुदा, कोनो उचावर्च नञि सुनि साहस क`कऽ लेबर साहेब कें पुछने रहियै तऽ कहलक जे ओकरे खसि पड़ल रहइ। बुझलहक की? हमरा इनाम मे दस टकिया दैत रहय। किन्नहु नञि लेलिऐ तऽ बरजोरी जेबी मे ध` देलक।

बगलबला एकबेर फेर थूक फेकैत अछि आ पुछइ छैक -`तों किछु नहि बजै छह? भरिसक औंघायल छह तों, अच्छा, सूतऽ आब।`

आ ओ बाहर भऽ जाइत अछि।

रामलाल पड़ल-पड़ल सोचैत अछि। वास्तवमे हजार-लाख आइ ओकरा एना भेटल रहितैक तँ ओ बताह भऽ गेल रहितय। नेत-धर्म निमाहैत-निमाहैत तँ पेट पर आफद भऽ गेल अछि। ओकर मोन गवाही दैत छैक -`ईह बुड़ि रे। ईमानदारीक ठीका इएह नेने छथि ! पाँच सयक बात तों करइ छें? कम्पनीक पाँच लाख तोरा पाँच रूपैयाक बरोबरि छैक !

आब रामलाल गमछा सँ मुँह झाँपि सुतबाक प्रयास करैत अछि।

साँझखन बजार लेल निकलैत अछि। रामलालकें कय गोटेसँ टोकाचाली होइत छैक। एक-आध सँ गप्पो-सप्प होइत छैक। सभक गप्प अकानैत अछि। गप्पक अटकर लैत अछि। प्रायः सभठाम मील मे सात महीनाक तालाबंदी आ

गुजरातमे भूकम्प समस्या पर चर्च भऽ रहल छैक।

संयोगसँ सामने मे पेमेंट बाबू अबैत देखाइ पड़ि जाइत छैक। रामलालकें धुकधुकी पैसि जाइत छैक। पासमे पहुँचैत देरी क्यो पुछि दैत छैक - `सुनऽ मे आयल अछि जे रुपैया, `शॉट` भऽ गेलैए?

`ई कोनो नव बात थोड़बे छै? एकटा लोक कतेक आ की-की देखतै? पाँच लाखक पेमेंट एवरेज एक डिपाटमेंटक रहै। अढ़ाइ हजार कोनो बेसी शॉर्ट नहि भेलइ`-बाबू स्वाभाविक रूपें बाजि जाइत अछि।

बाबूक नजरि रामलाल पर पड़ैत छैक। रामलाल सहमले बाबूकें नमस्कार करैत छैक। बाबू मुस्किआइत कहैत छैक। `रामलालकें कोन छइ। बंदीयो मे पुजापाठ चलले हेतै। की हौ रामलाल?`

रामलाल मुस्किया कऽ रहि जाइत अछि। बाबू आगाँ बढ़ि जाइत अछि। `अयँ, अढ़ाइ हजारक शॉट ! रामलाल कें चान्ह आब` लगइ छइ। मुदा, सम्हारि जाइत अछि। ढकमूड़ी सन लागल स्थिर भऽ जाइत अछि। क्यो पाछू सँ ओकरा कान्ह छूबैत टोकइ छइ - `किछु बिसरि गेलहक कीनब?` रामलाल बनाबटी मुस्की दैत ओकरे संगे चलि दैत अछि। आब रामलाल कें सामान्य होबऽ मे देर नहि लगैत छैक।



विज्ञापनक करामात

हमरा `रोज` अगरबत्ती किनबाक अछि। `रोज` अगरबत्ती माने गुलाब फूलक सुच्चा सुगंधिबला अगरबत्ती।

बहुत दिन पर, प्रायः दू बर्खक बाद आइ हमरा घर मे भगवानक पूजा भऽ रहल अछि। घरक लोक मे तें उत्साह बेसी छइ। अइ ल`कऽ धियापूता मे चहल-पहल बेसी भेनाइ प्रकृति कें अनुरूपे छइ। सभक हार्दिक इच्छा सँ भऽ रहल छइ। तें आयोजन सेहो अपना भरि बढ़ि-चढ़िकऽ भऽ रहल छइ। सामर्थ भरि छोट-सँ-छोट उपयोगी वस्तुक विशिष्टता पर धेआन राखल जा रहल छइ।

हमरा गुलाब फूलक सुगंधिबला धुपकाठी किनबाक भार देल गेल अछि। ई कोनो काज नहि भेलइ। अहीठाम कोलोनीक गेट पर भेटइ छइ, से जतेक आ जेहेन ली। कयबेर तऽ हम जाइ छी भोर सँ ल`कऽ रातिक एगारह बजेक भीतर मे, से बेगरते कि ओहिना ढहनाइत घर मे बैसारी समयक भार सँ हल्लुक होबऽ लेल। हमरा बुझा जाइत अछि `मिक्स्ड` गंधबला अर्थात जाहि मे जुही, चंपा, चमेली, रजनीगंधा, केवड़ा, नागचंपा कि कोनो आन फूलक सुगंधि मिलाएल होइ, से नहि किनबाक अछि। कहबाक तात्पर्य जे अगबे गुलाब फूलक सुगंधिबला धुपकाठी किनबाक अछि। ई बात हमरा भोर सँ कयबेर कहल गेल अछि। हम बिसरभोर भेल जा रहल छी, से घरक सदस्यक धारणा बनि गेल छइ।

हमरा संतान सभ मे सबसँ छोट अछि हमर बेटी। हम बदनाम छी जे हम बेटी कें बेसी मानइ छिअइ। लोक कहइ छइ जे कोरपोछुआ के माय-बाप बेसी मानिते छइ। ठीके मे बात सच छइ। बेटीक बिरझलो बात हमरा अधलाह कहाँ लगैत अछि ! आ तें ओ हमरा संगे कने बेसी मुँहफट भऽ गेलि अछि। आ से जौं छैहे तऽ हमर बेसी खेयालो ओकरे रहइ छइ।

ओ कने मुस्किआइत कहैये - `पप्पा ! लिख लिअ, नञि तऽ नाओं मोन नञि रहत। लेबल देख लेबइ। अगबे गुलाब सेंटबला अगरबत्ती बहुत बर्ख सँ घर मे नहि एलैये।`

उतरऽकाल दोसर सीढ़ीक पहिल पौदान पर पएर रखिते छी कि बेटीक निर्देश भरल शब्द खिहारैत अछि - `बैस नञि रहबै कत्तौ? पंडीजी जे घड़ी ने आबि

गेलथिन !`

एकरत्ती लेल ठमकल हमर डेग बीच-बीच मे एक-एक पौदान छोड़ि-छोड़ि नम्हर-नम्हर धाप देबऽ लगैत अछि। हम खसऽ-खसऽ पर भऽ जाइ छी। मुदा, रेलिंग पर ससरैत हमर हाथ फेबीकल जकाँ सटि जाइत अछि। तैयो केहुनी मे चोट लागिये जाइत अछि।

गेट पर एतऽ-स-ओतऽ धरि दू -बगली दोकाने-दोकान गोबरछत्ता जकाँ पसरल छइ। बेसी संख्या छइ `भेराइटी` दोकानक। तकरबाद दोसर स्थान पर अछि मोदीखाना। फलक दोकान से देखले दिन मे बढ़िकऽ चारिटा भऽ गेलैये। ईहो सभ बूझू त` मीनी भेराइटी` दोकान अछि। दैनिक प्रयोजनक बहुत किछु ईहो सभ रखैत अछि। पानक दोकान शुरुए सऽ छइ।

पहिल दोकानमे अगरबत्तीक पैकेट देखिते हम भड़कऽभड़क- पर भऽ जाइ छी कि स्थानक औचित्य हमर लगाम कसि दैत अछि। हम मुस्किआइत कहइ छिअइ -`रोज` मंगलौंहे हम। ई तऽ घरो मे अछि।`

गुलाब मे एत` `मुस्तफा` चलइ छइ`-दोकानदार पैकेट नोकर दिस फेकैत आन गंहिंकी दिस घुमि जाइत अछि।

अघाएल बक के पोठी तीत, नञि हओ ! बिसरि गेलहक ओ दिन जहिया नव-नव दोकान खोलने रहऽ?.... हम मोनेमोन कहैत आ झूर चित् नेने बाहर आबि जाइ छी जे पाइ भेने अहिना आँखि मोटा जाइ छइ।

अगिला दोकानदार तऽ एक बोझ अगरबत्ती काउन्टर पर उझिल दैत अछि -`लिअऽ, अपन बीछ लिअ।`

हम जे फरिछाकऽ कहऽ लगलिऐ, से ओ एकेबेर एक बोझ पटकि दैत अछि। गहिंकीक भीड़ लागल छइ, तैं ओ एना करैत अछि। हमरा तैयो अधलाह लगैत अछि। हम एक-एक पैकेट देखि-देखिकऽ कात कयने जाइ छी।`मुस्तफा` अगरबत्ती के कतियबैत देखि दोकानदार कें नहि रहल जाइ छइ -`इएह तऽ छइ गुलाब बला। बुझाइये, टी.भी. मे `रोज`क प्रचार देखलिऐए की?`

`टी.भी. हम बेसी कहाँ देखइ छी।` - हम कहइ छिअइ।

`घर मे तऽ सब देखते हएत` - दोकानदार सटीक जबाब दैत अछि।

`अच्छा, कने आनो ठाम देखइ छिअइ।` अतेक बजैत हम बाहर भऽ

जाइ छी।

हम एक-एककऽ सभ दोकान मे जाइ छी। गुलाबक नाओं मुँह सऽ निकलैत देरी सभ सामने मे मुस्तफा अगरबत्ती पटकि दैत अछि। बाहर मे फुटपाथ पर ठाढ़ भ`कऽ सोचऽ लगइ छी हो-न-हो, बेटी गुलाबक जगह मे `रोज` ने कहने होअय़। ओकर दोखे की छइ अइ मे। ई तऽ जमानाक बात छइ। अंग्रेजी अबौ कि-नञि अबौ, स्टाइल तऽ अंगरेजियेबला रहइ छइ। फेर मोन मे होइत अछि पहिने `रोज` ताकि लइ छी। नहि भेटत तऽ `मुस्तफा` कतऽ जेता। अंत मे ओएह कीनि लेब। आइ फेर बहन्ने सही। मुदा नञि,...

... मुदा नञि, कतेक दिनक बाद पूजा भऽ रहल छइ। सभक उत्साह कनी-कनी लेल भहरि जेतइ।

अगिला दोकान पर `मुस्तफा अगरबत्ती` दोकानदारक हाथ मे देखिते हम जहाँ मना करइ छिअइ कि ओ कहैत अछि -`बेस छी अहूँ ! रोज चाही ने? कनी नजरि सऽ देखियौ?`

पैकेटक उपर एहने-एहने लाल गुलाबक चित्र अंकित छइ। हम एना निंघारइ छी जेना पहिल बेर देख रहल होइ। दोकानदारक संतुष्टि लेल दू चारि बेर उंटा-पुंटा लइ छी। ठिकिया-ठिक्रियाकऽ देख लइ छी। चुपचाप पैकेट काउंटर पर राखि विदा होइत छी कि दोकानदारक कटाक्ष उछटि पड़ैये -`जाउ, अहाँ लेल स्पेशल बनल हेतइ !`

जबाब-देबाक मोन होइत अछि, मुदा झगड़ा भऽ जयबाक आशंका सँ पित्त घोंटिकऽ मोन के मनबैत `-तोंही रह नम्हर` - घुरि जाइ छी।

बाहर मे ठाढ़ भ`कऽ एकबेर फेर सँ सोचइ छी। मोन पाड़ै छी.. बेटी तऽ कहने छलि `रोज` कहबै पप्पा - `रोज`। अपने कोनो दोकानदार दऽ देत। एखन एकर खूब नाम छइ।`... न्नः अत्तेक अलूरि हमर बेटी नञि अछि ! ठीके कहइये ओ जे हमरा आब किछु नञि मोन रहैये। ओ तऽ `मुस्तफा`मना केने अछि। `मुस्तफा` तऽ घरो मे छइ....।

आ हम दृढ़ विश्वासक संगे `रोज` लेल अगिला दोकान दिस बढ़ि जाइ छी। दोकानदार `स्वीट सेंट ऑफ रोजेज`क छह-सातटा पैकेट सामने मे राखि दैत अछि, आ प्रेम सँ कहैत अछि -`बहुत दिन पर आइ अहाँ एकटा गहिंकी ई अगरबत्ती

मंगलौंहएँ। आब क्वालिटीक ज्ञान लोक मे छैहे कहाँ।`

हम दाम पूछि दै छिअए तऽ उत्तर भेटैत अछि -`सात टाका।` सुनैत देरी हमर विश्वास भहरि जाइत अछि। मोन पड़ि जाइत अछि बेटीक बात -`रोजक` फिक्स्ड दाम छइ दस रुपैया, से धेआन मे राखब।`

हमरा फुरा जाइत अछि। प्रोलभनक चारा हम पेकइ छिअइ -`एकटा जराकऽ देखा सकइ छी? हम पाँचटा लेब।`

`हमहूँ तऽ किनियेकऽ अनइ छी। ओ सब जराकऽ थोड़बे देखबैये? आहाँ बड्ड बहुत तऽ चारि-पाँचटा लेब। हम तऽ दर्जनक-दर्जन आनै छी। विश्वासे पर संसार चलइ छइ।`

दोकानदारक शालीन व्यवहार पर मोन होइये जे एकटा पैकेट लऽ ली मुदा, कटि जेबाक एकटा चलाकी सुझि जइत अछि -`सत्ते, `रोज` नञि भेटतै अइसब मे कत्तौ?`

`बजारे छइ, देखियौ` अतेक कहैत दोकानदार पैकेट सभ समेटिकऽ `रैक` मे सैंतऽ लगैत अछि।

हम एहने मौका देखिकऽ चोर जकाँ घसकि जाइ छी।

थोड़ेक दूर आगू चलिकऽ एकटा गाछ लग ठाढ़ भऽ जाइ छी। एत्तऽ चाह-बिस्कुटक दोकान छइ। मोन होइये चाह पीबाक। पुछइ छिअइ -`कय फुटक चाह छह?`

`पी लिअ तऽ अपने बूझि जेबइ` - चाहबला बिहुँसैत कहैत अछि। सिकोरा मे चाह सुरकैत ओहि पारक दोकान सभ पर धेआन जाइत अछि। चाहबला कें पूछि दइ छिअइ -`अयँ हओ, ई `रोज धुपबत्ती नहि भेटि रहल अछि। कतऽ भेटतै, तों कहि सकइ छह?`

`हद भऽ गेल ! कत्तेक लेब?` - ओ सगर्व कहैत अछि। हम चुप्पे रहइ छी तऽ ओ अपने सँ कहैये -`टी.भी मे एखन एकर बड्ड प्रचार भऽ रहल छइ। फेर हाथ सँ ओइ पार देखबैत कहैये -`देखइ छिअइ दोकान ! माय-बाप छोड़िकऽ सबटा भेटत ओतऽ।

`विश्वास तऽ नहि होइत अछि जे भेटिये जाएत, तैयो ओइ कात पार भऽ जाइ छी जौं किंसाइत !

देकानबला` मुस्तफा अगरबत्ती` तऽ दैत अछि, संग-संग दोसरो ब्राण्डक गुलाब सुगंधिबला अगरबत्ती दैत अछि। नाओं ठीक सऽ पढ़इ छिअइ। लिखल छइ -`आह गुलाब !` तकरा ठीक बगल मे एकटा लगभग नग्न किशोरी गुलाबक फूल सुंघैत अगरबत्तीक नाओंक सदृश भाव-भंगिमा देखा रहल छइ।

पता नहि कियेक, हमर मोन नहि मानैत अछि। दोकानदार कें पुछइ छिअइ `- एकटा काठी जराकऽ देखा सकइ छी?`

संयोग एहन जे एखन एकटा हमहीं छिऐ गहिंकी। ओ एकटा काठी गौं सँ निकालैत अछि। एकटा लाइटर सँ काठी जरबैत अछि। पहिने अपने सूंघिकऽ - `आह कत्तेक मधुर सेंट` छइ !` - कहैत हमरा नाक लग भिड़ा दैत अछि।

हम कने जोर सँ साँस उपर भरे सोंटइ छी।

अगबे धुआँ, गंध-बिहीन धुआँ नाक द्वारा मगज पर पहुँच जाइत अछि से फराक, कण्ठ मे कुचकुची उत्पन्न करैत पेट मे से ढूकि जाइत अछि। हमरा ओकासी उपरि जाइत अछि। खोंखैत-खोंखैत हमर आँखि नोरा जाइत अछि। दम धरऽ लेल छाती पकड़िकऽ हम बैस जाइ छी।

रुमाल सँ आँखि पोछैत बिदा होइत छी कि दोकानदारक शब्द सुनऽ मे अबैत अछि -`यो सरकार ! अपन धुपकाठी ने लऽ जाउ !`

`छुच्छे धुँआ पेट मे सन्हिया गेल` - हम काउनटर पर अबिते कहइ छियइ।

`अमरीतो` जान सँ उपछिकऽ पी लेबइ तऽ बिक्खे के काज ने करत?` दोकानदार शोखेशाखी बजैत अछि। आगु फेर जोड़ैत अछि -`अहाँ तऽ चिलम सोंटऽ लगलियै।`

तामे दू-तीन टा गहिंकी आबि गेल छइ। दोकानदार ओकरा सबके जरैत धुपकाठी सुंघबैत पुछि छइ -`की अओ, केहेन छइ?

`आह, केहन बढ़ियाँ तऽ छइ !` - एगोटे निधोख बाजि जाइत अछि।

हम पुछि दइ छिअइ -`कोन फूलक गंध छइ?`

ओकरा सऽ पहिनहि दोकानदार बाजि उठैत अछि -`पढ़ऽ अबैये कि नञि? साफ लिखल छइ फोटो सहित ! लऽ जाउ। हम ओहिना दऽ दइ छी !

मोन तऽ होइये जे कहिऐ -`गंधक पता नाक सऽ लगइ छइ, आँखि सऽ नञि। मुदा, बात बढ़ि जयबाक भय सँ चुप्पे रहि जाइ छी।

तखने एकटा गंहिकी जरैत धुपकाठी सुंघैत सुभ्यस्त जकाँ बजैत अछि` केहन बढ़ियाँ तऽ गंध छइ ! आन्हरो लोक से बुझतइ।`

आब एकर जबाब की दियौ ! आन्हर लोकक सभ ज्ञानेन्द्रिय आँखिये टा होइ छइ, से तऽ अतेकटा जिनगी मे आइये सुनै छी। हमर पित्त लहरि जाइत अछि। मोन तऽ होइये जे ओकरा कान तका तेहन ने तबड़ाक दिअइ जे कनगोजर झरि जाइ, आ दिमागि ठेकान लागि जाइ। मुदा...

...मुदा, ओकर भरल जुआनीक गस्सल-गस्सल बाँहि आ मुँह पर पसरल रोआबक समक्ष हमर ढील-ढाल चाम आर घोकचि जाइत अछि। मोन कहऽ लगैत अछि, मानि ले तों ओकरा सऽ बीस रहितएँ, तऽ कि किछु कएल पार लगितउ ! तोहर सोभाव सेसब तऽ जुआनी मे करहे नञि देलकउ। रहलएँतऽ तों सभदिनक डेरबूह। एकोटा चुट्टियो पिचने छएँ तों आइ तक !

वास्तव मे तहन हमर अपने दिमागि ठेकान पर आबि जाइत अछि। मानि लेबऽ पड़ैत अछि जे ठीके मे हम बिसरभोर भेल जा रहल छी। जमाना हमरा की चिन्हत। हमरा जमाना कें चिन्हबाक चाही। बदलैत अर्थ कें जानबाक चेष्टा करबाक चाही। तैयो ओकरा देखैत मोनेमोन कहइ छिअइ -`बाउ, आइ जौं अपन बाप रहितउ एतऽ हमरा स्थान पर तऽ बुझितही असल गंध आ गंधक महिरम !

फेर तखने मोन फटकारि दैत अछि - आइ-काल्हि कत्तेक धियापूता माय-बापक कहल मे छइ ! नियामक भ`कऽ कहि सकइ छीही जे तोहर बेटा एना नञि करैत हेतौ !

सामने मे अपन बयस आ चालिस बर्खक एतुक्का परिचय ठाढ़ भऽ जाइत अछि। दिमागि मे चमकि उठैत अछि एतुक्का हमर सामाजिक गरिमा। ओ अवसर आ दृश्य जहिया विभिन्न प्रतियोगी सभ मे सँ दू टा कें हमरा हाथ सँ पुरस्कार देआओल गेल रहइ।

`की सोचऽ लगलिऐ ! लऽ जाउ आँखि मुनिक। सब लऽ जाइ छइ` - दोकानदारक बाजब मे कने नरमी आबि गेल छइ।

ओतऽ उपस्थित लोक सभकें हम ठिकिया कऽ देखइ छी। लगइये जेना सभक नजरि हमरे पर ठहरल छइ। नाओं सँ अपरिचित रहितहुँ एक-दोसरक चेहरा सँ परिचित लगइ छी। चालिस बर्खक एतुक्का हमर समय आसपासक सभ

लोक सँ अपरोक्ष तादात्म्य स्थापित कऽ देने अछि। लगैये, कत्तौ-ने-कत्तौ हमर भूल अबस्स अछि। की, बेटीक प्रति ई हमर दुर्बलता नहि अछि? की बेटी कें हम बुझा नञि सकइ छिअइ ?.... अपन दुर्बलता साफ-साफ झलकि रहल अछि।

हम चुपचाप पाँच टकाक सिक्का दोकानदार कें दऽ सामने मे खुजल राखल पैकेट ल`कऽ बाहर होइ छी।

बाहर होइते छी की अझक्के सुनऽ मे अबैत अछि -`हमरा दोकान सँ सौदा कीनैत तऽ मरौवति करितिऐ।` आगू आर सुनऽ लेल हमर पएर अपने आप ठमकि जाइत अछि। `'ठीके कहै छिअइ। दुनियाँ बेवहारे पर छइ` - ई कोनो गहिंकीक शब्द छइ। हमर उत्सुकता आर बढ़ि जाइत अछि। हम ओम्हरे कान पथने उपरका जेब मे सँ कागत निकालिकऽ कोनो तेहन कागत ताकबाक बहन्ना बना लइ छी। तखने दोसर गहिंकीक बाजब कान मे ठेकैत अछि- `सत्ते, अहाँ लेल कोन छलए। दोकाने मे कतेक जरबै छी। ईहो जरा लितौं।`

दोकानदार कने जोर सँ पुछइ छइ - `हे यौ, हम की पुछइ छी? खाता मे लिख तऽ दइ छी अइबेर। अगिला बेर मुदा किछु-ने-किछु जमा करबै !`

दोकानदारक जोर द` कऽ विशेष ढंग मे बाजब सँ हमरा लगैत अछि जे ओ हमरा बाहर समीपे मे ठाढ़ देखि सतर्क भ` गेल अछि। गहिंकीक पीठ तऽ छइ हमरा दिस। आ तें दोकानदार ओकरा बात कें दबबैत प्रसंग बदलबाक चेष्टा कऽ रहल अछि। तहन ओहि गहिंकी पर दया आबि जाइत अछि जे अपना स्वाभिमान कें बेचिकऽ अविवेकी बात बाजऽ लेल हमरा सँ अपरिचित ई निर्दोष अछि, कियेक तऽ अपन अति सीमित आय मे परिवारक अल्पतम जरूरतिक आपूर्ति हेतु खुशामदी प्रवृत्ति अपनाबऽ लेल ई बाध्य अछि।

हम लजा जाइ छी। हमर डेग आगुक धाप नापऽ लेल बाध्य भऽ जाइत अछि, से एकटा आर बोझ लदने जे एना क`कऽ हम अपना आत्मा कें कलुषित कएल अछि।

हमरे गाम दिसका रामसरूप मोड़ पर पानक दोकान कयने अछि। हम ओकरे कठघराक अओत मे ठाढ़ भऽ जाइ छी। कनिके काल बाद कोना-ने-कोना ओ हमरा देख लैत अछि।

`पंडीजी, एना मन्हुआएल किये ठाढ़ छिऐ? घर मे पूजा अइ, आ अहाँ एतऽ

छिअइ?` - गहिंकी लेल पान लगबैत ओ पुछैत अछि।

हम ब्राह्मण छी तें ओ हमरा पंडीजी कहैत अछि। हम ओकरा सभ बात साफ-साफ कहइ छिअइ। सभ दोकानक खेढ़ा कहइ छिअइ।

ओ बिहुसैत कहैत अछि - `अहाँ जानि बूझिकऽ चमरछोंच मे पड़ि गेलौहएँ। आइकाल्हि `रोज` धुपबत्तीक प्रचार टी.भी मे खुब्बे भऽ रहल छइ। हमरो बेटी दू-तीन दिन पहिने प्लासटर मोड़ सँ चारि-पाँचटा लऽ एलइ। हमहूँ चलइ छी संगे। कने बेटा गेलए घर। अबिते हेतइ।`

- केहन होइ छइ हओ एकर गंध?

- `धुर, सबटा प्रचार हइ। दामो बड्ड हइ। दस टाका।

- `मुस्तफा` स`तऽ बढ़ियाँ हेबे करतै?

- हँ, उनैस-बीसक फर्क हइ।

-`मुस्तफा` मे तऽ हमरा कोनो गन्हे नञि बुझाइये।

- कोना बुझबै? नाओं लेल कने टुनगी पर असली मसाला लगा दइ हइ।

तकरा बाद अगबे छाउर। लोक तँ बुझै हइ जे सुघैंत-सुघैंत अभ्यास भ` गेल हय। टुनगीक गंध जे घुरिआइत रहइ हइ घर मे।`

रामसरूपक बात सुनि हमरा जेना दिव्यज्ञान भऽ जाइत अछि। ओ पानक सड़लाहा हिस्सा कतरि-कतरिकऽ फेक रहल अछि। ओ फेर बजैत अछि - `बात एकतरफा थोड़बे होइ हइ?` पइसा फेको, तमाशा देखो,`- बात हइ से। ओतेक दामक कतेक लोक किनतै? हँ, मौका मुनासिब लोक खोजइ हइ।`

रामसरुप बाजिकऽ चुप भऽ जाइत अछि। हम चुपचाप ओकरा हाथक दक्षता देख रहल छी। ओ बड़ संयत भ`कऽ पान कतरि-कतरि राखि रहल अछि।

`पंडीजी, की सोचै छिअइ? मनुख देह सँ कतेक खटतै। खटइ तऽ हइ बुद्धि। नञि तऽ अरब-खरब ओहिनती पचा लइ हइ?

पूजा आरंभ होबऽ पर छइ। घर मे बाँचल `मुस्तफा` जरा देल गेल छइ।

`बुझले अइ, `अहाँ थान भरि हारब, मुदा गज भरि नञि फारब।` भिनसर सँ कयबेर कहैत रहि गेलौं। मुदा, अहाँक जे सोभाव अछि `भोज बेर कुम्हर रोपब`, से कहाँ जाएत !, - ई हमर स्त्री छथि।

बेटी हमरा सभकें देखिकऽ चुपचाप टहल-टिकोरा मे लागल रहैत अछि। हम सुकुर मनबै छी जे रामसरूप संगे अछि।

रामसरूप स्थिति के अटकारि लैत अछि, आ बजैत अछि - `भार हमहीं लऽ लेने रहियनि। गेट पर नञि भेटलै तऽ प्लास्टर मोड़ जाय पड़ल हमरा।`

हमरा बेटीक कान धरि एम्हरे छइ। रामसरूप कुर्ताक जेब सऽ रोजक पैकेट निकालिकऽ हमरा पत्नी कें दैत पुछइ छइ - `दू टा सऽ भऽ जाएत ने?`

हमर बेटी सत्वर आबि कऽ मायक हाथ सँ पैकेट झपटि लैत अछि, आ जाकऽ बड़ उत्साहक संग काठी जरबऽ लगैत अछि।

ओकर प्रफुल्ल मुँह देखि लगैत अछि, सत्ते `रोजक` सुगंध घर मे पसरि रहल छइ। निश्चय आब भगवानो खुश हेबे करताह।

रामसरूप हमरा देखैत अछि। हमहूँ ओकरा देखइ छिअइ। स्पष्ट बूझऽ मे आबि रहल अछि जेना ओ कहैत होअय - `पंडीजी, ई प्रचार-प्रसारक जुग हइ।`



मस्जिद

गामक लोक परसूए सँ बेराबेरी मकबूल कें देखऽ आबि रहल अछि। परसू ईदक नमाज पढ़ऽ मकबूल लाठी टेकैत चलल रहय। अहल भोरे चुपचाप बिदा भऽ गेल रहय ओ। क्यो नहि जाय दीतै तें झलफले मे चलि देने रहय। एक बर्ख सँ बेसिये भेल हेतै जे ओ पड़ोसक गामक मस्जिद मे नमाज पढऽ नहि जाइत अछि। सर-समाज बुझौने रहै। परिवारक लोक मनौने रहै। ओकरा जिद्द पर परिवार अड़ि गेल रहइ। बात बुझि गेल रहै जे सभ ओकरे लेल कहै छै।

परसू दिन मुदा ओकरा मोनक बान्ह टुटि गेलै। लोकक संग ईदक नमाज पढ़बाक लोभ नहि थम्हि सकलै। तें चलि पड़ल रहय चुपचाप एकपेरिया धंगैत आ आरि-धुर कें नंघैत। ओकरा अपना मोन मे हुब्बा बुझेलै। ओकरा अपन लाठी पर विश्वास रहै। एकटा बच्चो सँ आलय भऽ गेल रहय तहन। ओ धड़फड़ायले चलल रहय। क्यो, परिवारक कोनो लोक कि गामक लोक देखि लितै तँ टोकि दीतै। जाय नहि दीतै।

मात्र मोनक हुब्बा सँ की होइतै? ओकरा हाथक शोभा, चानी सँ मढ़ाएल ओकरा लाठीक मुठ आ गिरह सभ, गांडीव सन ओकरा हाथ मे शोभइ। ई लाठी ओकरा अपना समयक छइ, जहिया ओ चौकीदारी करैत रहय। जिला स्तरक विराट दंगल मे ओ जीतल रहय तऽ इनाम मे ई लाठीयो भेटल रहइ। अपने अतेकटा लाठियो छइ ओकर। सभ कहइ छइ गाममे `मकबूलक गांडीब।`

थोड़बे दूरक बाद से भारी लागऽ लागल रहै। ओकर लाठी एकटा मजगूत हाथक सहारा माँगऽ लगलै। ओ तैयो झटकारिकऽ डेग बढ़बैत गेल छल, से ई सोचैत जे बहुत दिनक बाद ओ एना चलल अछि तें टाँग लटर-पटर कऽ रहल छै। चलबाक अभ्यास छुटि गेल छै, तें लड़खड़ा रहल अछि। चलला सँ से ठीक भऽ जेतै।

मुदा, तखने ओकरा सामने मे झलफल होब` लगलै। ओकरा भेलै, भोरक झलफल छै। लगले तकरा बाद अन्हार पसर` लगलै। कतेक साल सँ तेल पिआएल लाल-करिओन लाठी नहि सम्हरलै। मकबूल ओंघरा गेल धूर पर सँ। अपने खसल अइ कात, आ लाठी फेका गेलै धूरक ओइ कात।

अबैत-जाइत लोक, नदी फीरैत लोक दौड़ल छल। मकबूल कें उठाकऽ अनने छल।

जीगेसा करऽ लेल लोकक आबाजाही लागल छै। गाम आ परिवारक लोक जे जेना सुनैत अछि, मकबूल कें देखऽ आबि रहल अछि।

मकबूल एतराफ मे नीक पहलवान रहल अछि। परोपट्टा मे ओकर नाओं छै, ओकर इज्जति छै। एखनो ओकर दर्जनभरि चेला हेतै चारूकातक गाममे। आसपासक कतेक गाम मे पंचैती कयने अछि, आ प्रतिष्ठा ल`कऽ आएल अछि।

लोक अबैत अछि, कनेकाल बैसैत अछि। आत्मीयता देखबैत अछि चलि जाइत अछि। मकबूल आँखि मूनि लैत अछि, से भरिसक ग्लानिवश। आँखि खोलि लैत अछि, से प्रायःनव आगंतुकक स्वर चिन्हिक`।

देवकान्त सेहो अछि। कोना ने एतै? मकबूलक औवल चेला आ मजीदक लंगोटिया यार देवकान्त अर्थात देबू, आ कतेक लेल देबन, कोना नइ ऐतै? ओ सुनैत देरी दौगि पड़ल रहै सोझे अखाड़ा पर सँ, ओहिना कच्छा बन्हने आ धुरायल देह नेने।

ओ परसूए सँ अबैत अछि। गुरुक पाँजर लागल बैसल रहैत अछि। किछु नहि बजैत अछि। ओ लोकक बात पीबि जाइत अछि। बकर-बकर कर` ओकरा नहि अबै छै।

आइ तेसर दिन छै। मकबूल कने होसगर भ` गेल अछि। उठ`बैस` मे ततेक दिक्कति नहि भऽ रहल छै। लोकक अबरजात पतरा गेल छै।

आइ मजीद तरंगि जाइत अछि। ओकर सुसुप्त भावना बाहर आबि जाइ छइ। -`कतऽ कें रहिती हमसब ! मरऽ मे कोनो भाङठ रहै? हमसब ककर मुँह रोकबै? सब तऽ कहतै जे हमसब चाहइ रहिऐ जे बुढ़बा वलाय हइ। मरि जेतैतऽ बलू निम्मन हेतै परिवार लेल !` मजीदक आँखि पनिया जाइ छै।

देवकान्त ओकरा शांत करै छै - `मनुक्खक सोभाव छै बेसी अलाय-बलाय सोचब। तहूँ अंट-शंट सोचिक` अपन मोन नहि खराप करऽ। हमर गुरू आ तोहर बाप गामक तऽ छोड़, अइ परोपट्टाक इज्जति छथिन। चल बाहर सँ कने घुमि आबी।`

कनेकाल लेल चुप्पी व्याप्त रहै छै।

स्तब्धता कें चीरैत मकबूलक नापल-जोखल आ धीरे-गंभीर शब्द दुनूक धेआन आकर्षित करै छै - `कृष्ण के चलि गेला पर अरजुन बुते धनुख नञि सम्हरलै।` लाठी दिस तकैत बजैछ - `ई हमर लाठी, जिनगी भरिक सहारा नञि सम्हरल रहय तखनी ! जहिना कृष्ण के बिना अरजुन, तहिना हमर शरीर हो गेल हइ ताकति कें बिना !... निम्मन रहितै ईदक दिन मरिती त` । मोन साफ हइ त` सभ ठीयाँ महजीदे हइ। से नञि सोचलिऐ !`

देवकान्त बकर-बकर अपना गुरुक मुँह देखि रहल अछि। मजीदक नजरि मकबूल पर सँ हटि देवकान्त पर अटकि जाइ छै।

देवकान्त उठिक` मजीद कें कहै छै - `कोनो काज तऽ ने छौ एखन? नञि छौ, त` चल कने घुमि आउ अखाड़ा पर सऽ।`

आगू-आगू देवकान्त आ पाछू-पाछू मजीद जा रहल अछि। गामक रस्ता नहि धऽ, दुनू गाछिये-गाछिये बिदा होइत अछि। साँझोखनक` अखाड़ा पर जुटान रहै छै। सरओं खेलनहार सभ तँ जुमल रहिते अछि।

दुनू चुपचाप ससरि रहल अछि।

मजीद, बर्तमान मे गामक चौकीदार मजीदक मोन मे बहुत दिन सँ एकटा बात औना रहल छै। ओ बात मन मे उठै छै, आ दबि जाइ छै। असल मे बात दबा लेबऽ पड़ै छै। जे ओ सोचैत अछि, सोचले रहि जाइ छै। ओहि मादे कल्पनो करब अनर्गल बुझाइ छै। मोन मे से आनि कऽ ओ भीतरे-भीतरे काँपि जाइत अछि। ओकर साधंस साफे डोलि जाइ छै।

गाम छइ एकछेहा हिन्दूक। एहन-एहन लोक छै गाम मे जे अधिकार सहित पूछि सकै छइ, - `अँय रौ, गाम महाराजी आ बाँट करय बक्खो, नञि?`

ओ चुपे रहि जाइत अछि। ओ गाम मे उधबा नहि उठबऽ चाहैत अछि। ओ फसादक जड़ि नहि बन` चाहैत अछि। ओ ओहि मादे नहि सोचबाक ठानि लैत अछि। ओ ककरो नहि कहतै। देवकांतो कें नहि कहतै फेर सँ। एकबेर घुमा-फिराकऽ कहने छै। किछु सोचियेकऽ तँ ओहो चुप छइ। मुदा, मोन तऽ मोने छै। मोनक माने छै किछु सोचब। सभ चीजक बन्हेज संभव छै। बन्हेजक अर्थ भेलै कोनो वस्तु कें नापि लेब। हवा, पानि, इजोत बन्हा जाइत अछि। एतऽ धरि जे बालुक बान्ह बनि जाइ छइ। बालू अपने नन्हन बनि जाइत अछि। इंट कें बान्हिकऽ

गगनचुंबी महल ठाढ़ कऽ दैत अछि। मनुक्ख उपरका मोन सँ बन्हन मानैत अछि। ओकर मोन तें सुनितो नहि छै फेर सँ देबू के कहबाक।

मजीद एकटा मनुख अछि - साधारण लोक। ओकरो मोन नहि सुति सकै छै। जौं-जौं अवस्था बढ़ि रहल छै, ओ धर्म-कर्म दिस बेसी झुकि रहल अछि। परंपराक परिवेश सँ ओ फराक नहि भ` सकैत अछि। नेमत रहि-रहि कऽ मोन पड़ै छै।

हुजुरे - दरवार मे पाक-साफ हाजिर होयबाक इच्छा बढ़ि रहल छै। मीलाद मे सरीक होयबाक आवश्यकता बुझना जाइ छै। परंपराक अनुसार ओकर रुहानियत मस्जिद मे नमाज नहि पढ़ने पूर्ण नहि भ` सकै छै। ओत` सुकून बेसी भेटै छै।

मजीद अपने सँ अपना भाय सभक स्थिति बुझैत अछि। एकटा फर्मावरदार अर्थात आज्ञाकारी भायक जे लक्षण होयबाक चाही, सभटा छै मात्र ओकरे मे।

ठिठुरैत जाड़ मे, बरिसातक हेंक आ झट्टक मे, तहिना उसनैत आ उलबैत बैसाख-जेठक रौद मे ओकरा सभ कें तीन-जोड़-तीन कोस बराबर छह कोस आरि धूर के नघैत, एकपेरिया रेंगकऽ नाप` पड़ै छै। अभ्यास भ` आ अइ बयस मे सामंजस नहि भऽ सकै छै ने ! कोनो वस्तुक एकटा सीमा होइ छै ने !

मकबूलक तऽ कोनो कथे नहि। माझिल भाय मंजूर सेहो बीमारी कें चलते बुढ़ा गेल छइ। ओ अपने पचास पार कऽ गेल अछि। गाम मे पहरा देबऽ मे असकता जाइत अछि।

क्यो-क्यो हँसी-ठट्ठा मे कहि दै छै, `मजीद, आब तऽ रातिक` तोहर ठहकब बन्ने भऽ गेल छह। सरकारियो पाइ गामेक पाइ होइ छै हओ मरदे !`

एहन ठट्ठा-मिश्रित अपमान के मजीद मुस्कियाइत घोंटि जाइत अछि। की जबाब देतै ओ? बेसी लोक के बूझल छै जे ओहो बीमरियाह भऽ गेल अछि। मुदा, के ककर दुख बाँटि लै छै ? हँसिकऽ एहन बात सभकें बहटा देब ओकर आदति भऽ गेल छै। ओ जनैत अछि, समाजिक बनऽ लेल, समाजक भ`कऽ रहऽ लेल बहुत किछु सहऽ पड़ै छै। सहमीलू बनऽ पड़ै छै।

तकरा बाद लोकक बात पर मजीद फेर किछु दिन पहरा दैत अछि, आ फेर किछु दिन लेल असकता जाइत अछि। ई क्रम लगले रहै छै। गाम अपन छै, तें निमहि जाइ छै। गौआँ सँ, तेहन भय नहि रहै छै। आखिर प्रेमो तँ कम नहि भेटै छै

ओकरा। ओ सोचैत अछि... एखन हवा उनटा बहि रहल छइ। राम मंदिर सेरा नहि रहल छइ। गुजरात जरि रहल छइ। आतंकबादी देश कें तोड़ऽ मे लागल छइ। कुर्सी हथियाबऽ लेल नेता सभ तिकड़म लगा रहल छइ। लोक कें लोक सँ लड़ा रहल छइ। लोककें कि नइ सूझि रहल छइ? तैयो मात्र नेता आ नेताक बातक पाछू हफाँइ-हफाँइ क` रहल अछि।

...नइँ, ओ अपने घर मे अपन लोकक बीच विदेशी भ`कऽ नहि रहत। एकटा चटकुनी ओछाक` नमाज पढ़त। अल्लातालाक तँ साफ-सफ्फाक मोन होइ हइ। ई गाम ओकर गाम हइ। गाम हइ तँ सब हइ। परिवार हइ ! अल्लातालाक बखान मनुक्ख करै हइ, तें मनुक्खे हइ सभ सऽ पैघ। मनुक्ख अल्लाक अस्तित्व चिन्हने हइ !

लोक आइयो ओकर बाप लियाकत अली कें नहि बिसरलैए। ब्रिटिश अमलदारीक चौकीदार लियाकत अली एहि गामक चौकीदार नियुक्त भेल रहय। गाम ओकरा मोन मे रचि-बसि गेलै। ओ अही ठामक भ`कऽ रहि गेल। ओ काज करै छल गामक। अपना भरि गामक इज्जति बचबैत रहल। थाना कें किछु तेहने बात आन माध्यम सँ पता लागियो जाइ छलै तँ लियाकत झूठ बाजि जाइत छल। गाम ओकर रहै। गामक आबरू ओकर अप्पन रहै, तकर ओ कोना उधार होब` दीतै?

एकबेर दरोगा डँटने रहै - `स्साला तुम झूठ बोलता है ! तुम घूस खाता है !` लियाकत कान पकड़िकऽ कहने रहै, `हुजूर, हम दोनों बखत नेमाज पढ़ता है। हम मुसलमान है हुजूर !`

लियाकत झूठ बाजि गेल छल। गाम लेल नमाज उसगरि देने छल से आवेश मे नहि। ओ हृदय सँ बाजल छल। गाम मे लोक पुछै तऽ कहै, `मनुक्खे ल`कऽ भगवान हइ। आनो जीव कें देखै छहक पूजापाठ करैत?`

एगोटेक शंकाक समाधान ओ एना कयने रहय, `मर, तऽ गौरमेंट हमरा दैते कते हइ? कोनो कि ओकरे पाइ पर हमर गुजारा होइ हय? हौ, हमरा तऽ गाम रहल ताकय।`

लियाकतक एहन-एहन कत्तेक घटना सभ लोक जखन-तखन चर्च करैत रहै छै।

देवकांत सेहो चुप आ गंभीर भेल बढ़ि रहल अछि। निश्चय कोनो तेहन बात ओकरा दिमागि के ओझरौने छै। की सोचि सकैत अछि ओ ! गुरु महाराजक बात ! मस्जिद आ नमाजक बात ! ओ गुरु महाराजक बात सुनिकऽ उठल अछि। आर तहन भैये की सकै छै !

आइ ओकरा मजीदक बात मोन पड़लैए। मजीद तहिया घुमा-फिराकऽ कहने रहइ। आरो लोक पहिने सऽ रहइ अखाड़ा पर। देवकांत तहिया बातक गंभीरता कें नहि बूझि सकल रहै। समय काट` कालक गप्प-शप्प मे कतेक बात एलै आ गेलै। तकर महत्व तखने तक रहै छै ने।

देवकांत तकर महत्व आइ बूझि रहल छइ।

अखाड़ा आब लग मे आबि गेल छै। देवकांत रुकि जाइत अछि आ मजीद कें कहै छै, `तों खाली सुनैत रहिहें। ठीक छै तऽ?`

चान-सुरूज एम्हर-ओम्हर भऽ सकैत अछि। किंतु देवकांतक प्रति मजीददक विश्वास डगमगा नहि सकै छै। ओ संगे-संग कहि दै छै, -`हँ-हँ, ठीके हइ। जत` तों छहक, ततऽ बेठीक की होतै?`

अखाड़ा पर जुटल लोग देवकांतक ईशारा पर लग मे चलि अबैत अछि।

`गुरु महाराजक बारे मे सभ कें बुझले छह. ई घटनाक आरंभ छै। ओना घटना कहिक` नहि अबै छै। मुदा अतेक नियामक, जौं आइ गाम मे मस्जिद रहितै तँ गुरुमहाराजक संग एहेन दुर्योग नहि घटितै। कहियो मजीद सभक बीच धखाइत बाजल रहय। हम सभ ओकर बात उड़ा देने रहियै`` - देवकांत एके बेर मे कने धखाइते बाजल रहय।

सभ चुप अछि। देवकांत पुछै छइ, `की मस्जिद बनक चाही गाम मे?`

`हँ-हँ, किएक नञि? आइये शुरु भऽ जेबाक चाही -`सभक समवेत स्वर उठै छै।

देवकांत आगू बढ़िकऽ अखाड़ा पर सँ एक बाकुट माटि उठा लैत अछि। देखादेखी सरओं खेलनहार सभ उठबैत अछि। देवकांत बजैत अछि, `जकरा सभ कें कनिको दोच छह मोन मे, माटि फेक दहक अखाड़ा पर।`

सभक मुँह चमकि रहल छै।

देवकांतक विश्वास अडिग भ` जाइ छै। ओ दिल खोलिक` बजैत अछि,

`मजीद सभ एहन स्थिति मे नइ अछि जे मस्जिद शुरु करतै आ बनि जेतै। जौं ई सभ चाहै तऽ आनठाम सँ सहायता भेटि जेतै। एहन प्रयास बाहर सँ भेलैए। ओना ई सभ से नहि चाहैत अछि। हमरा सब लेल से गौरवक बात अछि। ई गामक इज्जतिक सबाल छै। दुर्गापूजा मे ई सभ चन्दा दै छै, आ हम सभ लै छियै। मंदिर बनलै तऽ ई सब अपनो मे बेहरी कऽ ओकाति सँ बेसी उपछिकऽ देने रहै।`

`हमहूँ सब देवै !` - समवेत स्वर गनगना उठै छै।

देवकान्त कने सोचिक` बजैत अछि, `हमसभ तत्पर रहबै जाधरि मस्जिद बनि नहि जाइ छै। की मंजूर?`

`हँ हँ मंजूरे मंजूर !` - सभ उत्साह सँ भरल अछि।

बस, बात खतम होइ छइ। जकरा जत` जाय कें, तत` जाइत अछि। जकरा बात लेबाक छै, रहैत अछि। देवकान्त आ मजीद गाम द` घुरैत अछि। देवकान्त कहै छै, `धेआन रखिहें, तोरा सभ कें साफे नहि बाज के छौ।`

मजीद चुपचाप सुनि लैत अछि।

मस्जिद बनतै से बात गाम मे गुलगुला जाइ छै। हवाक सिहकी पर रातिये भरि मे घर-घर मे बात परसा जाइ छै। परात भेने रौदक संगे-संगे गामक बाहर तक पसर` लगै छै। नव बात छै, तें सुनबाक इच्छा सभ कें छै। कनेमने कि बेसी, क्यो-क्यो जिज्ञासा करैत अछि। लोक जिज्ञासा धरि सीमित अछि। हँ-नहि मे सभ फँसल अछि।

मुदा, असल जिज्ञासा, जकरा छोट-पैघ सभ बातक खोद-भेद रहै छइ, आदति सँ नचार अछि से सभ संचमंच कोना बैसि सकैत अछि? बिना लारने-चारने पेटक अन्न कोना पचतै? ओ सभ अपनाभरि टेमी कें उसका रहल अछि। लोकक बात मे मोड़ आनि सभक धेआन अपना दिस मोड़ि रहल अछि.... सुनि रहल छिऐ, मस्जिद बनै छै गाम मे? सएह बुझियौ एकटा लिकायत अली सँ टोल बसि गेल। ओकर जरौह सभ आब अजान पढ़तै तीनू पहर मस्जिद मे, सेहो माइक लगाकऽ। सत्ते ! अपन गाम आब उन्नति कऽ रहल अछि।

लोक सुनि लैत अछि। क्यो-क्यो किछु-किछु पुछियो लै छै। बस भऽ गेलै। सभ अपना ओझराहटि मे लागि जाइत अछि। मुदा, सभ चुप्पे रहबला तऽ नहि अछि ! अनसोहाँत लगै छै, तें बजैत अछि। लोक तऽ सोझ बात बुझैत अछि। ...

बनियाँ कें घेघ आ गहिंकी कें उद्वेग। मर, मस्जिद बनै छै तऽ हर्जे की छै? जकरा नञि अरघै छे से चन्दा नञि देतै। आर की? झुट्ठे के नावो पर सँ गर्दा उड़ियबै छथि! ओकरा सभ कें ओतेक दूर आन गाम जाय पड़ै छै, से नञि सुझै छनि! देखही, गामक पूब मे भगवती छथि। उत्तर मे महादेव आ पश्चिम मे राम मंदिर। ओ कोन्ह खाली छलैऐ। आब मस्जिद भ` जेतै। आब चारू भर सऽ गाम सुरक्षित रहतै ! अएँ हो, कोन काज मे ओ सभ पयर पाछु केलकैये? तकर यैह निसाफ होइ जे हमसब चन्दा नहि दिऐ? हौ, हमसभ सभ खर्च उठा लिऐ, से उचित छै। ...सोझ लोक सभ बिना लाइ-लपटाइ कें बाजि जाइत अछि।

कोनो-कोनो ठाम गर्म-गर्म बहस छिड़िया जाइ छै। बहस मे देश, अमेरिका, कश्मीर, गोधरा, पाकिस्तान आ लादेन आबि जाइ छै। मुदा लियाकत अली आ ओकर परिवारक चर्चा होइते सभ कें अपने मुँह मे थप्पड़ लागि जाइ छै। सभ सहमि जाइत अछि। एक-दोसर कें पुछऽ लगै छइ -`एतऽ अनेरे बहरिया बात किएक ऐलै !... गामक मंदिर मे लाउडस्पीकर लागल छै। रामायण, कीर्त्तन, नबाह, अष्टयाम होइते रहै छै। ओ सब परसाद लेल ठाढ़ रहैत अछि। हमसभ खुशी-खुशी दै छिऐ। दाहा बनब` लेल हसन-हुसैन के नाओं पर बाँस मंगनिएँ मे दै छिऐ। चंदा दै छिऐ। दाहा दरबज्जे-दरबज्जे घुमै छै। स्त्रीगण सभ हसन-हुसैन के पानि पीअबैत अछि। चाउर दै छै, पाइ दै छै। मनता मानैत अछि। सभ वर्णक धीया-पुता दाहाक पछू-पाछू घुमैत अछि। समूचा गाम मे उत्सवक वातावरण रहै छै।..., सभ सोचैत अछि, सभ कें गाम सऽ मतलब छै, गामक लोक सँ मतलब छै।

मस्जिद लेल बेहरी लगै छै। बहुत लोक बेहरी सँ बेसी दै छै। लोक मजीद सभ कें कत्तौ, ककरो ओहिठाम बेहरी लेल नहि जाय दै छै। किछु गोटे घर बनब` लेल ईंटा-सीमेंट रखने अछि। शुभ काज मे देरी नहि होइ, तें तत्काल द` दै छै।

एकटा छोटछीन मस्जिद एक मास के भीतर बनिकऽ तैयार भऽ जाइ छै।

नव मे जेना होइ छै, साँझखनकऽ किछु लोक मस्जिदक अँगनै मे जुटि जाइत अछि। देवकांत बेसीकाल अबैत अछि। एकदिन एकटा पत्रकार कैमरा लटकेने आबि जाइत अछि। देवकांत बेसी काल अबैत अछि।

एकदिन एकटा पत्रकार देवकांतक खोज करै छै। ओकरा सँ पत्रकार पुछै छै, `अहाँकें एहन प्रेरणा कत्त` सऽ भेटल?`

देवकांत हँसैत कहै छै, `हमसभ एकठाम दिन-राति रहै छीं। एक-दोसरक सुख-दुखक भागी छी। बस एतबे जनै छी हम।`

पत्रकार फेर पुछै छै, `अपना मोन सँ किछु कहियौ।`

`की कहब? कहियौ नेता सभ कें। अयोध्याक राम मंदिर ओतुक्का लोक पर छोड़ि देतै। मुदा छोड़तै नञि, से जानि लिअऽ। देवकांत अंतिम बात मुस्कियाक कहै छै।

किछु फोटो लेल जाइ छै। पत्रकार मकबूल, मजीद आ गामक किछु लोक सभ सँ किछु-किछु पुछै छै।

पत्रकार जाए लेल मोटरसाइकिल पर बैसेत अछि तँ देवकांत कहै छै `एकबार मे छपि जेतै, सएह एक लाख। एहन तँ कतेक उदाहरण भेल हेतै देस मे। कोनो फर्क पड़ै छै?`

पत्रकारक मुस्कियाइत मुँह गंभीर भऽ जाइ छै। ओ मोटर साइकिल स्टार्ट कऽ लैत अछि।



हड़ताल

आइ जेनरल स्टाइक छैक। आजुक हड़ताल वर्तमान सरकारक विरोधमे छैक। आजुक हड़तालक सङोर विरोधी दल कयने छैक।

तें बेसी ठाम जमिकऽ बझि जयबाक सम्भावना छैक।

ओना एहि शहरके जुलूस, पोस्टर आ हड़तालक शहर कहबामे अतिशयोक्ति नहि बुझा रहल छैक। एहि शहरक पुश्तैनी बासी भेने भोलाकें तकर अनुभव नीक जकाँ छैक। एतुक्का वातावरणक नस कें ओ नीक जकाँ टोबने अछि। हड़ताल तऽ रेहल-खेहल बात छैक एतुक्का लोक लेल़। मुदा, तैयो हड़ताल-हड़तालमे नहि बेसी, तऽ कने-मने फर्क पड़िये जाइत छैक।। से सोचि भोला निर्णय लैत अछि जे ओ आइ अपन दोकान बन्न राखत।

ई निर्णय भोला परिस्थितिक गहमा-गहमीकें थाहि कऽ लैत अछि। दू हप्ता पहिनहि अपना दोकानक देबालपर पोस्टर सटाइत देखि ओ चौंकल रहय। पछिला साल ठीक ओकरे दोकानक सामनेमे बम फुटल रहैक। ओना आर कतेक बम नगरक आन्-आन मार्गमे बोमकार छोड़ने रहैक, आ कतेक लोक लुल्ह-नाङर भेल रहय। किछुके तऽ प्राण गमबऽ पड़ल रहैक।

हड़तालक विराट स्वरूपक आभास लोकक गप्प, अखबारक रुखि एवं बातवरणक सनसनी सँ भोलाकें लागि गेल छैक। ओकरा लेल आर कोनो विकल्प नहि छैक। किएक तऽ हड़तालक मोकबिला करबाक लेल सरकारक कड़गर इंतजामक ओकरा थाह लागि गेल छैक। एहि बेर जहाँ-तहाँ उधबा होयबाक सम्भावना अधिक छैक।

आन किछु दोकानदार जकाँ भोला सेहो जानक खतरा मोल नहि लेबऽ चाहैत अछि। ओ सोचैत अछि, मात्र एक दिनक बात छैक। `आएल पानि, गेल पानि, बाटे बिलाएल पानि`। एक दिनक कमाइ नहियों भेने कोनो तेहन खास फर्क नहि पड़तै।

राति भोला निश्चिन्त भ`कऽ सूतल छल जे आइ कोनो ततेक सबेरे ओकरा उठबाक नहि छैक। मुदा, अभ्यासवश ओकर निन्न चारिये बजे टुटि जाइत छैक। ओकर `टाइम पीस घड़ी` ट्राम गाड़ी ठीक साढ़े तीन-चारिमे अपन हड़हड़ाहटि सँ ओकर निन्न तोड़ि दैत छैक।

ओ घड़ीपर नजरि दैत अछि। ठीक चारि बाजऽ मे एखन किछुए मिनट बाँकी छैक। मुदा, ओ आइ पड़ले रहैत अछि। एक निन्न आर मारि लेबाक मोन होइत छैक। पोख भरि सुतबाक अवसर एहने-एहने समय पर भेटैत छैक ओकरा। आ एतबा सोचैत भोरका आलसमे ओकर आँखि मुना जाइत छैक।

आध कि पौन घंटाक बाद ओकर निन्न उचटि जाइत छैक। ओ सपना रहल छल। ओ धड़फड़ा कऽ उठऽ लगैत अछि, मुदा फेर तखने हड़ताल मोन पड़िते पड़ि रहैत अछि। आ पड़ले-पड़ले ओ अतीतमे बहकि जाइत अछि।

भोला कहुना कऽ मैट्रिक पास तऽ कयलक, मुदा तकरा बाद आगू ससरबाक हिम्मति नहि भेलै। नोकरीक फिराक मे कतेक दुआरि छूलक। जकरा ओतऽ जाइत छल, सभक अपने समाङ कि लगुआ-भगुआ ठाढ़ रहैत छलैक। सभ कहैत छलैक - `चेष्टा तऽ हमर अवस्स रहत ! तखन जेहन अहाँक भाग।` आरम्भ मे, चिक्कन-चुनमुन बातपर भोलाकें विश्वास भऽ जाइक। ओकरा होइ जेना नोकरी ओकरा लेल रखले छैक कत्तौ।

मुदा, किछुए दिनक बाद ओकरा पता लागि गेलैक जेओ कतेक भूल मे छल। आ तकरा बाद जे ओकरा अनुभव भेलैक, ओहि लोक सभसँ फेर ओ घुरिकऽ भेंट कर` नहि गेल। किन्तु संगे-संगे ओकरा जे शुरुएमे ठाँइ-पठाँइ जबाब दऽ देने रहैक, ओकरा प्रति श्रद्धा होमऽ लगलैक जे कम-सँ-कम ओकरा नाहकमे हरान तऽ नहि होबऽ पड़लैक। झूठ दिलासामे लटकल तऽ नहि रहऽ पड़लैक।

किछु दिन धरि एम्हर-ओम्हर ढहनाइत रहल। तकरा बाद किछु दिन अड्डाबाजी करैत रहल।

... ओह, ताश, जूआ, शराब आ आर किदन-किदन सभ। .... ओ सोचैत-सोचैत सिहरि उठैत अछि।... अड्डाबाजी कएला सँ कोनो-ने-कोनो दल, संगठन कि पार्टीक - आसरा लेबऽ पड़ैत छैक। आ तखन फेर राति कऽ जागू, आ दिनमे सुतू। आह, ओहि रातिक दृश्य केहन अमानुषिक रहैक !

ओहि रातिक बाद घुरिकऽ अड्डा पर नहि गेल। पार्टी के तिलांजलि दऽ देलक।

ओकर मकान पुश्तैनी छैक। परिवार अमलदारी सँ बहुत प्रतिष्ठित छैक। मुदा आब ने ओ राम, ने ओ अयोध्या।

घरक मुख्य बहरानक दुनू कात टूटल कोठरीमे, जे कि ओकरा दुनू भायक

हिस्सामे छैक, पहिनेसँ दोकान छैक। दुनू दोकान चलल-बनल छैक। तीनू भाइमे सभ सँ लचरल एकरे हालति छैक। ईहो चाहैत रहय, बढ़ियाँ दोकान खोलबाक। मुदा तकरा लेल चाही पाइ। किछु पाइ जमा क`कऽ स्टैंडर्ड दोकान खोलऽ चाहैत रहय। मुदा, अपना मोनमे किछु, आ साँइक मोनमे किछु आर।

`प्यास ने मानय धोबी घाट। भूख ने मानय जूठन पात` से परि। राधाक एक टारा घीक प्रतीक्षा आ प्रयास ओ छोड़ि देलक। मात्र साहस करबाक बात छैक - ओ सएह सोचलक आ धैर्य आ निष्ठा सँ दोकान मे लागल रहल।

आ पूर्वक प्रतिष्ठाकें ताख पर राखि ठानि लेलक एकटा चाहक दोकान। ओहीपर अपन नून-रोटी चला रहल अछि।

बाहरसँ केबाड़ पर क्यो ठक्-ठक् मारैत छैक। संग-संग किछू लोकक गुलगुल से सुनबामे अबैत छैक। घड़ी देखैत अछि तऽ दुनू सूइ पाँच आ छह के बीच मे छैक।

ओ डेराइत केबाड़ खोलऽ बढ़ैत अछि। एना तऽ साइते-संयोग क्यो उठबैत छैक ओकरा ! आशंकासँ ओकर देह सिहरि जाइत छैक। काल्हि किछु लोक कहि गेल रहैक दोकान खोलऽ लेल।

तथापि ओ सम्हरैत केबाड़ खोलैत अछि।

-`की आइ दोकान नहि खुजतैक?` एक गोटे जे सभसँ आगू छैक, जोरसँ पुछैत छैक।

`हँ-हँ, एखने खोलै छिऐ। रातिमे देर धरि दोकान खुजल रहलै, ते उठऽ मे देर भऽ गेलै।` भोला पढ़ाओल सूगा जेकाँ बकि जाइत अछि।`

ओ सभ चलि जाइत छैक। भोलाओकरा सभके जाइत एना टुकुर-टुकुर देखि रहल अछि जेना आत्मीय लोक सभ सऽ बिछुड़ि रहल होअय़। पम्ह निकलैत छँड़ा सभ पर दया उमड़ि पड़ै छइ। तखने साढ़े पाँचक बम्मा बोमिया उठैत छैक। ओकर ध्यान टुटैत छैक।

बाहर फुटपाथ पर ठाढ़ भऽ दुनू कात नजरि खिरबैत अछि। दू-चारि ठाम चुल्हि सऽ धुआँ चक्कर काटि-काटि उठि रहल छैक। कने आगू जा कऽ ओ सभ एकटा आर दोकानदारके उठा रहल छैक। ओ सभ मात्र चाह-घर आ होटल सभ खोलबा रहल छैक। ओ सोचैत अछि, आर तरहक दोकान सभक बेर तऽ आठ-नौक बादे होयतैक ने।

अधिक मीन-मेष नहि कऽ ओ हाँहि-हाँहि कोइला ल`कऽ चूल्हिमे बोझ` लगैत अछि।

आ कोइला बोझि दिशा-फरागत लेल जाइत अछि।

शौचादि क्रिया सँ निबटि चाहक पानि चढ़ा दइ छइ। ओ दोसर केबाड़ खोलहे लेल जाइत अछि, मुदा किछु सोचि, आबिकऽ टूलपर बैस रहैत अछि।

चाहक पानि खदकऽ लागल छैक। ओ उठिकऽ ओहि मे चाहक पत्ती दैत छैक। तखने किछु लोक फेर धमकैत छैक। बज्र सन शब्द ओकरा कानमे कड़कि उठैत छैक -`आइ, हड़ताल छैक, से बूझल नहि छौक?`

केतलीक ढाकन हाथ सँ छुटैत-छुटैत सम्हरि जाइत छैक। पलटिक` देखैत अछि तऽ किछु लोक ओकरा दोकानक मुँह पर ठाढ़ छैक। माजरा बूझऽ मे ओकरा भाङठ नहि होइत छैक।

ओकरा मुँहसऽ अनायास निकलैत छैक - ई तऽ अपना सब लेल बनबै छिऐ। देखै ने छिऐ, तें एकटा पट बन्ने रखने छिऐ?`

एगोटे मुड़ियारी दऽ भीतर देखैत छैक। कोनो तेहन नहि देखि चुपचाप सभ क्यो चलि जाइत अछि।

भोलाके जानमे जान अबैत छैक। मुदा, एखन तऽ शुरुए भेलैए, ओ सोचैत अछि। एकटा पट जे ओ खोलने अछि, तकरा कने टेढ़ कऽ दैत छैक।

दोकानक पट फराक-फराक देखि लग-पासक किछु लोक चलि अबइ छइ, आ चाहक आग्रह करैत छैक।

ओकर मोन लहरि जाइत छैक, मुदा तैयो सेप घोंटैत सभकें घरमे ढुकाकऽ पट सटा लैत अछि।

एक गोटे टीपैत छैक -`भोला, एखन तऽ कय बेर ओ सभ एतौ?`

`सएह देखियौ ने ! पराभव भऽ गेल अछि। किछु नहि फुराइत अछि।`

`जल्दी-जल्दी दऽ दे हमरा सभके, आ भीतरसँ बन्न क`कऽ चुपचाप निसबद्द भऽ जो।`

`एक दिनक बात रहै तखन ने !` भोला आर कातर भऽ जाइत अछि।

`से तऽ अपने सोचबही एहि पार कि ओहि पार। से निर्णय तऽ तोहीं करबही।`

एहि बेर भोला चुप्पे रहैत अछि। ओ चुपचाप सभ लेल चाह बनबऽ लगैत

अछि।

सभकें चाह द`कऽ एक बेर बाहर हुलकी मारैत अछि। किछु लोक एम्हरे अबैत देखाइ दैत छैक। झंडासँ बुझाइत छैक जे ओ सभ सरकारी पार्टीक लोक छैक।

ओ हाँहि-हाँहि एक टा पट पूरा खोलिकऽ अपनो चाह पीबऽ लगैत अछि।

ताबत मे ओहो सभ दोकानमे सर्र दऽ पैसि जाइत छैक। एक गोटे दोसरो पट खोलैत कहैत छैक - `देखहक, एकरा कहै छइ दोकान खोलब।`

एहि शिक्षापर भोला मोने-मोने खौंझाइत अछि, मुदा दोसरे क्षण भय सँ आतंकित सेहो। सम्हरैत कहैत छैक -`एखने ओ सभ आयल रहै, दोकान बन्न क`कऽ चलि गेलैए।`

`अच्छा, कने मजगर चाह बनाउ। ओकरो सभकें आइए मजा चिखा दै छिऐ। देखै छिऐ, ककर कते सड्डा छै !` ओ सभ जमि कऽ बेंच पर बैसि जाइत छैक।

पहिलुका लोक सभ चाह पीबिकऽ चुपचाप भोलाकें पाइ थम्हा निकलि जाइत अछि।

पुलिसक वाहन दोकानक सामने मे रूकइ छइ।

भोला एकरा सभ लेल चाह बनबऽ हेतु केतलीमे खदकैत पानि मे चाह दैत छैक, आ थूक फेकऽ बहन्ने बाहर आबि सड़कक दुनू कात देखि लैत अछि। विरोधी ग्रुपक कतहु पता नहि छैक।

ओकर मोन कने थिर होइत छैक।

मुदा, पुनः वैह चंचलता आ शंका। पुलिसक गाड़ी बीच-बीचमे हड़हड़ाइत निकलि जाइत छैक - एम्हरसऽ-ओम्हर। ओकरा मोनमे कने साहसक संचार होइत छैक। ओ एकरा सभ लेल आर बेसी तत्परतासँ चाह बनबऽ लगैत अछि। चाह पिआ कऽ जल्दीसँ सभकें भगयबाक छैक। ओकर आजुक फुर्ती देखऽबला छैक। आन दिनक तत्परता पाइ लेल रहैत छलैक, आ आजुक छैक ओही गहिंकी सभकें भगयबाक लेल।

पुलिस सभ पाइ नहि दइ छइ। तकर ओकरा परबाहियो नहि छइ। ओ सभकें चाह द`कऽ लग्घीक बहन्ने बाहर अबैत अछि। अपने मकानक कतबइ मे ठाढ़ भऽ जाइत अछि। दूर-दूर धरि नजरि फेकैत अछि। बीच-बीचमे कत्तौ-कतौ एक-आध दोकान खुजल बुझाइत छैक। सभसँ बेसी चहल -पहल चौक पर

बुझाइत छैक। ओतऽ पुलिसक जत्थाक पहरा छैक।

भोला दोकानमे अबैत अछि। ओ सभ एखन धरि अधो नहि निंघटा सकलैए। जौं दोसर ग्रुप एखने धमकि पड़लै तऽ बाप रे ! लाहेब भऽ जेतै ! ओ धुरबन्हू छागर जकाँ सिहरि उठैत अछि।

ओ सभ निश्चिन्त भ`कऽ चाहक चुस्की लैत आजुक स्थितिक बखान अंदाजि-अंदाजि कऽ रहल अछि। भोलाके लगै छै जेना जानि-बूझिकऽ ओ सभ देर कऽ रह छैक। ओकर शक बढ़ि जाइ छइ।

भोला एक बेर आर थूक फेकऽ बहन्ने बाहर जाइत अछि। क्यो कत्तौ नहि छैक। किछु कौआ आ किछु कुकूर, आ एक-आध टा अनेरूआ गाय फेकलाहा पात पर पीलि पड़ल अछि। एकबार बेचऽबला कागत जुमा-जुमा उपर फेकि पुनः आगू भागि रहल अछि। एक-आधटा लोक लुंगी कि पायजामा पहिरने फुटपाथ पर अखबार देखि रहल अछि।

लोक सभ चाह पीबि कऽ बाहर भऽ जाइत छैक ! भोलाके पाइक ध्यान अबैत छैक, मुदा फेर बिसरि जाइत अछि।

ओ सभ करीब तीन-चारि दोकान टपल हेतइ कि दोसर दल आबिकऽ बमकि पड़ैत छैक, आ भोलाके ललकारि उठइ छइ। उपर-नीचा खिड़की-केबाड़ फट-फट बन्न होबऽ लगैत छैक।

भोला सेहो हाँइ-हाँइ केबाड़ बन्न करऽ लगैत अछि।

मुदा, ताहिसँ पहिनहि पाइप गनक एकटा गोली मुर्गी जकाँ छटपटयबा लेल भोला कें बाध्य कऽ दैत छैक।

आब दुनू दल मे सँ ककरो अतापता नहि छैक। पुलिस गाड़ी अबैत छैक, आ ओकरा अस्पताल लऽ जाइत छैक, मुदा से बेकार।

साँझ चारि बजे एकटा मौन जुलूस बहराइत छैक। भोलाक लहास फूलसँ लादल छैक।

चारि-पाँच दिनक बाद एकटा सविस्तार समाचार छपैत छैक जे दुनू दल भोलाकें अपना-अपना दलक होयबाक पक्षमे प्रमाण प्रस्तुत कऽ रहल अछि। दुनू पार्टी कहि रहल छैक जे भोलाक हत्या गणतंत्रक हत्या थिक।

●●●

सड़क

सड़क आब एखन नहि भेलै।

समूचा गाममे ई बात गुलगुला गेलैक अछि। अधालह बात अहिना अगराहीक आगि जकाँ पसरि जाइत छैक ने।

सुकरू सेहो सुनलक। विश्वास नहि भेलै पहिने। मुदा, सभ लोक झूठ नहि ने भऽ सकैत अछि।

ओकर मोन मुदा तैयो खसि पड़लै।

थोड़ेक गोबर पथियामे उठाकऽ रखलक आ पोखरिमे हाथ धो आएल। डाँड़सँ गमछा खोललक आ हाथ-पएर पोछलक।

सोचलक, कने तमाकुल खा ली तखन बाध दिस जायब। सटले ओही ठाम महींसक खुट्टासँ ओङठि कऽ बैसि गेल। डाँड़सँ तमाकुल आ चुनौटी निकाललक। रस्तापर घर बन्हने अछि। कतेक गोटे माङि लेतै। ओ बेसी कऽ तमाकुल खोंटि लेलक। `बीटर माल` - अर्थात बढ़ियाँ तमाकुल रहितैक तँ कने मात्सर्य होइतै। बीटर माल ओकरा सपना भऽ जाइत छैक। आब आरो लोक अहिना अनठा दैत छैक। बीटर माल कहाँ रखैत अछि क्यो !

आर जे किछु होइक, तमाकुलेटा एकटा एहन वस्तु छइ जे, सभसँ-सभ माङि लैत अछि। जौं सभ वस्तु एहने भऽ जाइक तऽ एतेक भेद भाव नहि रहि जयतैक। ओ भावुकतामे बहि गेल।

तखने पाछूसँ समोली टोकलकै -`भाइ हमहूँ छी।`

- `नञि कोनो हर्ज। अहीं सभ लेल रस्तेपर घर बन्हने छी। तहन डर कथीक?` - सुकरू अभ्यस्त नाटकक पात्र जकाँ उत्तर देलकै।

पुनः उत्सुक होइत सुकरू पुछलकै - `किदन-किदन सब सुनै छिए यौ?`

- सड़क मादे तँ? सत्ते बात छै। अबै छी तऽ कहब। समोली कोनो हलतलबीमे छल।

सुकरू के आब विश्वास भऽ गेलैक जे ठीके मे सड़क नञि भेलै आब।

किछु दिनसँ, करीब इएह एक माससँ ओकरा सोचमे बहुत फर्क आबि गेल छलै। तकर कारण छलै सड़क। जहियासँ सड़कक चर्च आरम्भ भेल छलै, ओकरा

मे एकटा नव स्फूर्तिक संचार भऽ गेल छलै।

गाममे सड़क बनतै, माने औंसीसंऽ सड़क गामे औतैक, आ फेर अगिला बेर गामसँ सोझे बेनीपट्टी। ओकर खुशी द्विगुणित भऽ गेल छलै।

जहिया सऽ बात उठलै, तहियासऽ जतेक मुँह ततेक बात। मुख्य बात सुनबामे अयलैक जे सड़क बीच गाम दऽ जेतै। बीच गाम द`कऽ साबिक जे बान्ह छै, सैह सड़क बनतै। मुदा, से बान्ह छै कहाँ? मात्र नक्शा मे छइ। देखऽ मे सबिकाहा बान्ह छैको से धरिया सन छइ आ टेढ़-टूढ़ से फराक। लोकक कहनाम छलैक जे सड़कक पूरा लाभ तखने छै जखन कि गाम द`कऽ बनैक। एकर विपरीत जकर सभक घर सड़कमे पड़ितैक से बिरोध कऽ रहल छलैक।

एहि विवादकें मेटयबाक हेतु इस्कूल पर एकटा बैसारक आयोजन मे निर्णय लेल गेल रहै जे सड़क गामक काते-कात जयबाक चाही। एहि बातक संग-संग ईहो तय भेल रहै जे रब्बी कटनीक उपरान्त सड़कक काज आरम्भ भऽ जेतैक। ठीकेदार महोदय से जल्दी काज शुरू करबाक पक्षमे रहथि। तें आशा बन्हा गेल रहइ।

निर्णय सभकें पसिन्न रहै, सभ खुश छल। तऽ अइ निर्णयक बाद सड़कक बनब एकदम नियामक छलैक। फलस्वरूप कतेक लोक कतेक तरहक बात सोचऽ लागल छल। क्यो रिक्सा कीनत, तऽ क्यो जीप भाड़ा पर चलाओत। स्कूल पर एकटा नीक बस अड्डा भऽ जयतै, तऽ बहुत गोटे दोकान आ चक्कीक बात सोचि रहल छल।

पाइबला लोक सुकरू के बहुत लोभ देखौने रहै। ओकर मोन कने डोलल रहै। मुदा ओ सोचलक - `नहि, बढ़िया होइत जे एकटा टटौ कोल्हकी हमहूँ ठाढ़ कऽ लेब। ओना जरसीमन बहुत भेटैत रहैक - तिगुना। मुदा, पाइ तँ चाटिये लेत। खेत सेहो मङनीमे चलि जयतै।`

ओकर मोन छलैक जे एकटा चाह-पानक दोकान ओ खोलि लेत। आ जखन किछु पाइ-जमा भऽ जयतैक तँ एकटा नीक दोकान खोलि लेत, आ आस्ते-आस्ते एहि जंजाल कें हटा देत। ओ महींस किन्नहु नहि राखत।

महींस राखऽ मे बड़ बइज्जत होबऽ पड़ैत छैक। महींस महींसे थिक निमुँह धन। कतबो नाथ कसू, जजाति लपकिये लै छइ। एकर दूधे-दही खाय मे बढ़ियाँ आ गरीबक लेल जिनगी निमाहबाक एकटा नान्हिटा जोगार। नहि तऽ क्यो नहि महींस पोसैत। एकर सभ चालि खराबे। एकरा पोसऽमे बड़ तरद्दुत। दिन-राति एकरे पाछा लागल रहू। कहबी कोनो अधलाह नहि छैक जे महींस राखब तऽ महींस बनऽ पड़त। एकरा छोड़ि कोनो गाम-गमाइत गेनाइ मोश्किल। सर-कुटुम तऽ छुटिये जायत। ताहिमे एकहत्थू महींस तऽ आर जानक जपाल। अपन महींस तऽ एकहत्थू भइये जाइ छइ। गारि-मारि लेल बहीर बनऽ पड़त। पीठ ओरऽ पड़त।

जाहि महींससँ ओकर संसार चलैत छैक, नव योजनाक परिकल्पना मात्रसँ ओकरा जंजाल लागऽ लागल रहै।

सुकरूक महींस एक राति खूजि गेल रहैक। महारुद्रक समूचा बाड़ी तहस-नहस कऽ देने रहैक। सभटा लत्ती-फत्ती कें नोचि-पटकि देने रहैक। रातिये मे महारुद्रक पएर पकड़ि लेने रहैक सुकरू। बरी होयबाक आर कोनो बाट नहि सूझल रहैक।

निमुँहधन पर कोन विश्वास? कखन ककर विद्दति कऽ देतै तकर कोनो ठेकान नहि। आर तँ जे-से, महींस रखने लोक घास-पातक चोर भ` जाइते अछि। एक-आध कें सत् भेनहुँ लोककें विश्वास नहि भऽ सकैत छैक।

ओकरा मोन छैक ओकरो पहिने एहिना कोनो महींसवार पर विश्वास नहि होइक। ओ अपने महींस नहि रखने छल तहिया।

ओकरा बाँस नहि छैक ताहिसँ की? मास्टर साहेबक बँसबिट्टी करची पर लऽ लैत अछि। कते लोकक बाँसक पात जकरा कि क्यो देखनिहार नहि छैक, बाँस ठुट्ठ कऽ दैत छैक। घास करऽकाल एक-दू आहुल जजात नोचिये लैत अछि! मोन लोभी होइत छैक, बड़ पापी ! मोनकें संयत राखब बड़मोस्किल छैक। पेट जे ने करबै।

ओकरा अपना पर बड़ ग्लानि भेलैक। भेलै, एहि जिनगीसँ मरिये गेनाइ बढ़ियाँ। एक बीतक पेट सभ कर्म करा दैत छैक, सभ नतीजा ठेका दैत छैक। सभक अन्त छैक, मुदा एकर नहि। समुद्र भरा सकै छइ। मुदा, ई पेट नहि। कैय बेर ओ सोचलक घर-द्वारि छोड़ि देअय। मुदा...

मुदा, एकरा सभक की हेतै? जनमौने छैक ओ तऽ....।

ओकरा छाबामे एकटा डाँउस बिन्हि लेलकै। ओकर भावुकता भंग भऽ

गेलैक। ओकरा अपना पर हँसी अयलैक। हबाइ किला बनौने किछु नहि! जाहूमे लागल अछि, सेहो चौपट भऽ जयतैक। पाँच गोटाक संसार छैक ओकर। वास्तविकतार्के कखनो नकारल नहि जा सकैत छैक। ओकर अस्तित्व छैक। ओकर परिवारक अस्तित्व वास्तविकता छैक। जिनगी छैक तऽ पेटक अस्तित्व छैक। ओकर समस्या पेट छैक। समस्याक समाधान ओकरा करहि पड़तैक।

ओ सोचलक, ओकर जिनगी एकटा लड़ाइ छैक, आ ओ एकटा सिपाही। ओकरा लड़ाइ लड़ऽ पड़तैक चाहे जेना होइक।

आसाम आ कलकत्ता सँ कए बेर घूरि आयल अछि। जँ शेषकाल कलकत्ताक एकटा रबड़ कारखानामे गोरी बैसबो केलै तऽ एक सालक बाद रोगी भऽ गाम चलि आयल। फेर बाहर जयबाक नाओं नहि लेलक ओ। संसार चलयबाक लेल किछु करबाक छलैक। किछु दिन तक भक्तिनाथ बाबूक मकानमे मजूरी सेहो कयलक। आठ कट्ठा खेत सँ की होउक? हारिकऽ बहुक बाँचल गहना बेचि लेलक। आर किछु टाका कल बलासँ ल`कऽ एकटा लगहरि महींस किनलक। की महींस रखनाइ कोनो अन्याय छैक? ओ मोन मे तर्क करऽ लागल। आर कतेक गोटे तँ महींस रखने अछि। हमर कोन गिनती। कतेक बड़का बाबू-भैया सभ रखने छथि। हुनको सभक चरबाह कएक बेर चोरि करैत पकड़ेलैये। मुदा, बड़काक बात बड़के तक। सभटा झाँपल-तोपल। बात उघरियो गेल तऽ किछु नञि। धड़-पकड़ गरीबेक होइत छैक, से सबकिछु मे।

सभ बातक दू टा पक्ष होइते छैक - अधलाहो आ नीको। ओकरा एकटा आर तर्क सुझलै जे ओहो तऽ समाज सेवी अछि। समय पर लोकक भरमा रखैत अछि। कतेकर्के बेर-कुबेर निमाहि देने छनि ओ। महींस तऽ सभ नहि रखने अछि, मुदा पाहुन-परक सभर्के अबिते छैक। दूध-दही सबके चाहबे करी।

ओ सोचैत-सोचैत बहुत गंभीर भऽ गेल। ...ओकरा भेलैक जे गुणग्राही बहुत कम लोक अछि ! गरीबक उपकारक कोनो मोजर नहि ! बहुत शीघ्र लोक उपकार बिसरि जाइत अछि ! मुदा एकटा अपराधक बदला लेब नहि छोड़ैत अछि! जौं हमर एकटा छोट-स-छोट उपकार कऽ देत तऽ घसैत रहत ! बेर परहक क्यो नहि !

कतेक मारि मारने छल ओ अपना बेटार्के। सुकरुक बेटा एकदिन लम्बोदर

बाबूक खेत मे एक-कि-दू आहुल खेसारी उखाड़ि लेने रहनि। आ धपायल रहबे करथि। कियेक तँ सुकरुके बेज्जति करबाक रहनि। ओ एक दिन दूध नहि देने रहनि। सुकरु कहने रहनि- `अनकेसँ लऽ लियऽ। कल लगातर तीन दिनसँ कामहि भऽ रहल छैक।`

लम्बोदर बाबू चोट्टे चुप्पे घुरि गेल रहथि। घुरितीकाल सुकरुक कोनटा लग समोली भेटल रहनि। पुछने रहनि - `दूध भेल की?`

- `ओह, कहाँ भेल ! कऽल बला बड़ तंग करै छनि। जाइ छी कतहु अंतहि देखऽ लेल।`

- `हँ हँ, रुपैया हाथे दूध के पूछैए। महींस जेना अपने जिरातमे चरबैए। ककरो आँखि मे पानि छै से? गाम मे ककर उपकार नहि भेल होयतनि अहाँ सऽ? कम-सँ-कम मनुक्ख कें चीन्हक चाही।`

सुकरुक बेटार्के पकड़ने आएल रहथिन गाम पर। गामक लोकक बीच सुकरु बेज्जति भेल रहय। लोक बीच बचाव कयने रहैक - `नेना छैक। एक आध आहुल उखाड़ि लेलकइ।` लोक छँड़ार्के हाटन-डाटन द`कऽ रहि गेल रहैक। मुदा, सुकरु तत्पश्चात् आँगनमे बेटार्के बड मारि मारने रहय। बेज्जतिक तामस बेटापर झाड़ने रहय।

सभ बात, जोखैत-तौलैत ओ निर्णय कऽ लेने छल जे बस अड्डापर एकटा चाह-पानक दोकान खोलत आ आस्ते-आस्ते एहि निमुँहधन कें नहिएं राखत।

ताबतमे समोली घूरिकऽ चल अयलै आ टोकलकै - `आइ, एखन तक लगाएलो नहि भेलय? की सोचै छी?`

सुकरू किछु विस्मृत जेकाँ तथापि सम्हरैत जबाब देलकै - `अहीं लेल अटकल छी।`

आ, हाथ पर थपड़ी मारि चून बेराकऽ समोलीर्के एकजूम देलकै। अपनो ठोर मे ठुसलक आ पुछलकै - `अयँ यो भाइ, सड़क के की भेलै से?`

`बुझलिऐ नहि ! लम्बोदर बाबूक गोरहा खेत सड़क मे चलि जाइ छनि। वास्तवमे सोनक टुकड़ी छै खेत। `स्टे ऑडर करा देलथिन पटना सऽ।

- बैसारमे तऽ ओहो रहथि ओहि दिन?

-`आहाँ नइ बुझलिऐ सुकरू भाइ ? लम्बोदर बाबूक सोनक टूकड़ी छनि,

आ अनकर उस्सर। बात छैक, अपना गामपर अफसर साही नाँचि रहल अछि। मोटर गाड़ी चिनमार तक जयबाक चाही ने।

ई छल जोगिया। जोगियाकें देखिते समोली कूच कऽ देलक।

जोगिया सुकरूकें पथिया उठा देलकै आ पुनः कहलकै - `घबराउ जुनि। सड़क हेतै। मुदा, अइबेर देर भऽ गेल। हमरा सन टुटपुजिया लोक एहन महान काज कऽ लेत तकरो आनि-गड़ानि छनि बाबू भैया सबके। कें नञि बान्ह हथियेने छथिन? दलानक आगार जे ओतेक चौड़गर छनि, से ओहिना?`

सुकरु चुपचाप सुनि लेलक। सोचलक, ईहो सएह थिक। जेम्हर देखत खीर, ओम्हरे बैसत फीरि। आब की राखल अछि हमरा जिनगीमे ! आधा तऽ कटिए गेल। मुँह मारओ एहि सड़क-तड़क के। सोचओ गाड़ी-घोड़ावला।

बेर बहुत उठि गेल छलैक। घास-पात करऽ मे अबेर भऽ जइतैक। ओ डेगार दैत बाध दिस बढ़ि गेल।



कतहु नहि

ठक्-ठक्-ठक् !

चलितर ठेंगा टेकैत जा रहल अछि

`अरेबा ! आइ की बात हइ जे बुढ़बा एम्हर टुघरल अबै हइ? आइ भरिसक पच्छिम भर किरिन फुटलैगऽ।`

बुढ़बा, अर्थात चलित्तर कने थम्हि जाइत अछि। बामा तरहत्ती डाँड़ पर रोपि अंदाजिकऽ बजैत अछि - `कें छी? परमेःसर? आँखि अइ कहाँ जे चिन्हबै आ टोकबै ककरो। बोलिये-बनी सँ चीन्ह लइ छिअइ।`

अधनू ओतऽ पहुँचैत चौल करैत बजैत अछि। `केदन बजैत रहइ जे बुढ़बा मरि गेलइ ? देखइ छिअइ, फेहेन टनगर हइ !`

अकाजक लोकतऽ मरले होइ हइ हओ बउआ। पाकल आमक कोन ठेकान। एकटा सिहकी डोललै कि धपाक्` - चलितरक मोन खसि पड़ै छइ।

परमेःस्सर के अधनूक बात अनसोहाँत लगइ छइ - `एना नञि बाजक चाही तोरा।` आ चलित्तरक मान राखऽ लेल पुछइ छइ - `तोरा नाहित हेबै तऽ हमरो अहिना खौंझेतै, नञि हओ? तोहर गनती तऽ देवता मे होइ हऽ।`

`हमरो आउर की बाँकी रहियै ! ...तोरा मजरू कक्का कें ततेक ने खौंझवियै जे... - चलित्तर मुस्किआ उठैत अछि।

`तोरा एम्हर जुग-जमाना पर देखलिय हय। बात तऽ ठीके दुखवला बजा गेलइ। मुदा, कहइ हइ जे अइ सऽ औरदा बढ़इ हइ। एम्हर कतऽ चललऽ हए?

अघनू परोक्ष रूपे क्षमा याचनाक हिसाब सँ एना बजैत अछि।

`दू दिन सऽ डिगडिगिया पिटा रहल हइ से नहि सुनै छहक?`

`हँ-हँ इस्कूल पर, सएह ने?`

`बैठल-बैठल मोन भरिया जाइ हय। सोचलियै, चलऽ हे मोन, कनी बहटा लाबी तोरा।`

`निम्मन केलऽ। अच्छा, आबऽ तों अपना पएरे। हम एकटा हलतलबी मे छी` - अघनू बढ़ि जाइत अछि।

चलित्तर सेहो रस्ता नापऽ लगैत अछि - `ठक् ! ठक् ! ठक् !

बाट थाहैत-थाहैत चलित्तर इस्कूल दिस बढ़ि रहल अछि। बीच-बीच मे ठाढ़ भऽ चकुआ-चकुआ चारुकात देखऽ लगैत अछि। एम्हर प्रायः चारि-पाँच बर्खे बाद आएल अछि। सभ किछु नब लगइ छइ - घर-दुआरि, गाछ-बीरिछ, रस्ता-पैरा आ अँगना-घरक टाट-फड़क।

क्यो बजै छइ - `कोना चकुआइ हइ ई बुढ़बा जेना कोनो नब गाम मे आएल हइ !`

वास्तवमे ओकर अपने गाम नव सन, अनठिया गाम सन लागि रहल छइ। नक्शा बदलल लगइ छइ, खासक सड़क कें चलते जे चाकर कएल गेलैये। तें स्वभावतः घरक नक्शा सेहो बदलि गेल छइ। लोकक मुँह सँ सभटा सुनैत रहैत अछि। से सब आइ अपना आँखिये देखि रहल अछि। ओ पुछइ छइ ककरो सँ जे कोन ककर घर छइ, मुदा तेहन थितगर क्यो नहि भेटइ छइ। धियापुता आ स्त्रीगण-बरगात लेल अपने अनचिन्हार तऽ अछिये, पर्दाक बात सेहो छइ।

एखन एकटा नव उजाहि जकाँ उठल छइ गामे-गाम। जाहि गाम मे हाइ इस्कूल नहि छइ, आ संस्कृतक परिपाटी एखनो तक छइ, जाहि गाम मे साकांक्ष आ बुधियार लोक अछि, अर्थात जुग-जमाना कें चिन्हबला धखगर लोक अछि, ओहि गाम सभ मे इस्कूलक नाओं पर कम-सऽ-कम एकटा एकचारी अबस्स ठाढ़ भऽ गेल छइ। संस्कृत विद्यालय तऽ दरबज्जा पर बोर्ड टाँगिकऽ आरंभ कऽ देल गेल छइ। अइ स्कूलक सबके सरकारी अनुदान कतेक आ कहिया धरि भेटतै, तकर अंटकर लोक अपना-अपना ढंग सँ लगा रहल अछि। इस्कूल मुदा ठाढ़ कयनहि अछि। खाता दुरूस्त रखिते अछि। मुदा, छात्रक उपस्थिति नदारद।

सभसँ बेसी अपस्याँत ओ सभ अछि जे अपन उस्सर जमीन आ परती-पराँत कें भूदान सँ बँचबऽ चाहैत अछि। किछु एहनो महानुभाव छथि जे यशस्वी बनबाक धुन मे अपना पुरखाक नाओं जोड़ि उदार आ उपकारी बनऽ सँ परोपट्टा मे भावी शुभचिंतक नेताक रूप मे आबऽ चाहै छथि। मुदा, किछु एहनो गनल-गूथल लोक सुनऽ मे आबि रहल छथि जे अपन नावल्द जिनगी कें अहिना सुधारि लेबऽ चाहै छथि। तें छोटछीन मंदिर से देखऽ मे आबि रहल छइ।

गाम मे एकटा मिडिल इस्कूल अंदाजन पच्चीस बरख सँ चलि रहल छइ। छोटे बाबू अपना समय मे कम प्रयास नहि कयने रहथि। मुदा, पुरखाक नाओं

इस्कूलक नाओंक संग जुड़ि नहि सकल रहनि। तकर, कारण एकेटा रहै पाइक मोह। पाइक मोह, अफरात जगह-जमीनक माश्चर्य यश-प्रतिष्ठाक भागी नहि बनऽ देने रहनि। खिसियाकऽ बाजि गेल रहथि - `जाउ जाउ, हमर धियापुता दरभंगा आ पटना मे पढ़ि लेत। सोचऽ गऽ गौआँ सब !`

तहिया जुआनीक धाह मे अनुभवक बड़ कमी रहनि। अपन ओ भूल सुधारबाक अवसर हुनका भेटि गेल छनि। अपना मोनक ग्लानि सदाक लेल पोछि लेबाक समय आबि गेल छनि। गाम मे एकटा हाइ इस्कूलक जरूरति छइ, से सब बूझि रहल अछि। पटना तक छोटे बाबूक नीक परिचय छनि। तकर उपयोग अबस्स करताह। गामक पंचैती करैत-करैत ओ उबिया गेल छथि। आब ओ एकटा विस्तृत क्षेत्रक खोज मे छथि। से अवसर आबि गेल छनि। अपन उदारताक परिचय ओ इस्कूल खोलिकऽ देलनि अछि।

आइ दू दिन सँ डिगडिगिया पिटा रहल छइ जे नवका इस्कूल पर बड़ धूमधाम सँ पन्द्रह अगस्त मनाएल जेतइ। सभ उत्साहित अछि। ... धुर, मुँह मारो मिडिल इस्कूल के ! ओतऽ चटियो कें नीक जेकाँ नञि भेटइ छइ परसाद। छोटे बाबू अहगरकऽ दइ छथिन सरस्वती पूजा मे। पनरह अगस्त अइबेर बड़ी धूमधाम सँ मनाएल जा रहल छइ। ...लोक उत्साहित अछि। इस्कूल दिस लोकक धरोहि लागि गेल छइ।

चलित्तर सन बूढ़ सेहो अहगर बुनियाक लोभ सँ अपना कें नहि थाम्हि सकल अछि। ओकर पोता कोना ने खेतइ आइ बुनिया?

ओ जिनगी भरि छोटे बाबूक हरबाही केलक। कहऽ लेल तऽ रहय हरबाह, मुदा कोनो काज ओकरा सँ बाँकी नहि रहइ। ओ सभ काज जनैत अछि -हर जोतब सँ ल`कऽ घर छारब, टाट लगायब, आ भार उघब तक। एकरे सन-सन लोक कें देखिकऽ कहबी कहल गेल छैक - `चंडी पाठ सँ ल`कऽ जुत्ता सीबऽ तक।`

चलित्तर एकटा समाङ जकाँ रहनि - आपत्ति बिपत्ति सभ स्थिति मे प्रस्तुत। पानि-बुन्नी मे ठाढ़। गाम-गमाइत, नोत-पता आ दिन मनबऽ आ बिदागरी करबऽ तक मे चलित्तर पर विश्वास रहनि। बस, इएह विश्वास चलित्तर लेल सभ किछु रहइ जाहि ल`कऽ ओ छाटे बाबू आ हुनका परिवार पर मरैत रहल।

आब चलित्तर कें सक नहि छइ, तऽ कत्तहु के नहि अछि। आब तऽ ओकर अपने जान पहाड़ छइ। आबो कहियो काल ओ छोटे बाबूक दरवार मे, हबेली मे चलि जाइत अछि। ओकर स्थान बनले छइ, मुदा मंगनीक दया ओकरा अपनो नहि अरघै छइ। कमी-मे-कमी एकटा ओकरा मे आइकाल्हि भऽ गेलैये। जौं-जौं बयस बढ़ि रहल छइ, ओ जिलाह बेसी भेल जा रहल अछि। गिरहत-गिरहतनी नीक-निकुत मोन सँ दइ छथिन, पठाइयो दइ छथिन। मुदा, बेटा प्रीतमक डरे मोन मारिकऽ रहि जाइत अछि। प्रीतम परोपट्टा मे `लेता` कहबै छइ - कमलिसक कामरेड लेता।

रातिये सँ मेघौन छइ। बीच-बीच मे मेघ बरिसऽ लगै छइ... टीप् टाप् ! टीप् टाप् !

`बरिसऽ कें छऽ तऽ बरिसऽ निम्मन नाहित। नञि तऽ की झुट्ठे कें खिचकाहनि केने छहक !... ओह, आइ ठेंगा नञि रहैत तऽ गोर-पएर टूटि जाइत!` चलित्तर पिच्छड़ सँ बाँचि जाइत अछि। ठाढ़ भऽ अख्यासैत अछि... धुर जो, आब नञि घुरबै ! इएह तऽ छइ इस्कूल। सब बजैत जाइ हइ जे अहगर कऽ भेटतै बुनिया।

ओ पाएर रोपि-रोपि बड़ सम्हरिकऽ आगू बढऽ लगैत अछि।

`आइ हाड़-पाँजर टुटतऽ तोहर ! ईहो बूढ़क नाङरि छथि ! सुख-दुख मे घर सँ बहराइत पारे नञि लगै छनि ! झुट्ठे के एलाहए पिच्छड़ मे मुँह मरबऽ ! हौ, अतेकटा जिनगी मे झंडा फहराइत नञि देखने छहक?` ... बुढ़बा कतेक लोकक मुँह रोकतै ! ओ अपना पक्ष मे एकेबेर बजैत अछि -`कीरिन उगल देखलियै तऽ चलि देलियै। ताइ मे अपना गामक हइ से आर नञि रहल गेल।`

`हौ बुढ़बा, कात भऽ जा हओ ! मास्टर साहेब, बुढ़बा कें कहियौ बगल भऽ जेतै। हमर सबहक पाँती टेढ़ भऽ रहल अइ` - इस्कूल पर पँतियानी मे जाइत चटिया सभक अग्रेस बजैत अछि। सभक हाथ मे काठी मे साटल कागतक तिरंगा छइ। बंदे मातरम् ! बंदे मातरम् ! नारा लगबैत सभ ससरि रहल अछि।

चलित्तर धरफराइत एकटा आँगनक मुँहथरि लग दुबकि जाइत अछि। रंग-बिरंगक फूल ओकरा सामने ससरि रहल छइ।... हमरो पोता घुटरा आइ अहिना जइतै, जौं पढ़ितै ! प्रीतमो तऽ नञि पढ़लकै बेसी !

इस्कूलक सामनेक रमना मे लोक जमा भऽ रहल अछि। बुन्नी सँ बाँचऽ लेल रमनाक कोन्ह पर पीपरक गाछ लग लोक पहिनहि सँ धमगज्जर केने अछि। चलित्तर सेहो ओत्तै ठाढ़ भऽ जाइत अछि।

फूही अबइ छइ आ जाइ छइ। रौद उगै छइ, आ मेघ मे नुका रहइ छइ। लोक पसरि जाइत अछि, आ फेर घर मे कि गाछ तर नुका जाइत अछि।

चलित्तरक टाँग दुखाय लगइ छइ। ओ एकटाँग पीपरक मोटगर सीर पर ठेका लैत अछि। अगिला बेर जहाँ रौद चमकै छइ, लोक छिड़िआइत अछि रमना दिस। किछु लोक तैयो गाछे तर जमल अछि...`धुर जो कतौ सऽ देखक चाही ! मेघक कोन ठेकान ! नञि हौ बुढ़बा?` -क्यो बजइ छइ।

चलित्तर चुप रहैत अछि। ओकर धेआन हुड़हुड़ाइत भिसिल पर चलि जाइ छइ। धियापुताक पतियानी - एकटा, दूटा, तीनटा, चारि, पाँच, छह - ओ ठोर पटपटबैत गनि जाइत अछि। रंग-बिरंगक तितली, किसिम-किसिम कें फूल, फुलायए-सरिसोक फूल, तीसीक फूल, मुरइक उज्जर दप-दप फूल, आ सिमरक लाल लाल फूल। चिड़ै-चुनमुन्नीक हेंज-फुदकैत आ चहचहाइत। झरनाक पानि सन बेलागि खनखनाइत। एकबेर जुआनी मे छोटे बाबूक बाप बड़का मालिक संगे राजगीर दिस हुनकर मोंटा-चोटा ल`कऽ गेल रहय तऽ झरना देखने रहय। से आइतक ओहिना मोने छइ।...हीरा-मोती कोना छिटकै !

.. नेना ककरा अधलाह लगतै ! नेना आँखि कें सेहन्तगर लगै हइ। मोन कें मोहि लइ हइ। आ जहाँतक हृदयक बात हइ, ओकरा तऽ छुबि लइ हइ। ओत्तऽ बैसि जाइ हइ ! हमरो घुटरा तऽ मोने मे रहइ हइ आठो पहर ! हमरो अपने सन नेन्ने बना देने हइ बोली-बानी आ किरिया-दुन्नू सऽ !

भिसिल फेर बजै छइ `हुर्रऽऽ! हुर्रऽऽ! सभ चटिया अपना-अपना पतियानी मे थिर भऽ जाइत अछि। चलित्तर कें मोन पड़ि जाइ छइ। छोटे बाबूक फुलबारी आ घरक ओसारा पर पतियानी मे लगाएल फूलक गमला सभ।

चलित्तर कें पश्चाताप होइ छइ जे घुटरा कें अनितियै तऽ ओहो देखितै ! बड़ कानल रहइ आबऽ लेल ! मुदा, की करितय ओ ! बूढ़ देह, ओ कहित्तै कन्हा पर लेबऽ लेल ! ओकर अपने जान पहाड़ हइ ! ताइ मे आइ पिच्छड़ो भऽ गेलै तेहने ने जे...।

एटेनशन् ! एटेनशन् !... किछु चटिया हीलऽ-डोलऽ लगै छइ तऽ ड्रील मास्टर भिसिल फुकैत अछि, आ सभकें सावधान करैत अछि।

`अयँ हओ बौआ, देरी किये होइ हइ?` मात्र एकटा जिज्ञासा आ आतुरता। धोधरिक टिमटिमाइत रतनजोति सँ दुनू हाथक बन्न भूरकी द`कऽ बाँस मे टाँगल - नुरियाएल झंडा कें देखैत अछि। नहि रहल जाइ छइ तऽ फेर पुछइ छइ - `अयँ हओ बउआ, किये देरी भऽ रहल हइ?`

धुत् ! अकच्छ कऽ देलक बुढ़बा ! हौ, जाकऽ पुछहक ने ओतऽ? तहूँ एतै छऽ ! हमहूँ एतै छी !... नञि नञि, आइ झंडा बुढ़बे फहरेतै !... सत्ते रौ ! बुढ़बा सँ नम्हर तऽ एखन गाम मे क्यो नञि हेतै ! रे कने छोटो बाबू कें क्यो कही गऽ ने ?... आ एकटा हँसीक फुहार बरसि पड़ै छै। चलित्तरक मुँह बिधुआ जाइ छइ। एकटा, दूटा, तीनटा, बिढ़नी ओकरा बीन्ह लइ छइ। ओ बूढ़ अछि, तें दूरि भऽ गेल अछि। बिसबिसैनी कें चुपचाप मुँह मे सपटी लगाकऽ सहि लैत अछि। मोन कें मना लैत अछि - `ओहो कि अपने कम अगिमुत्तु रहय अइ उमेर मे !

चोटगर बुन्न बुदबुदाय लगै छइ। सभ हुर्र भऽ जाइत अछि। सभ इस्कूलक घर मे भागैत अछि। चलित्तर ओतहि रहि जाइत अछि। माथ पर गमछा धऽ लैत अछि.. धुत्, एकटा टीकड़ हइ ! एलइ आ गेलइ ! एहन बरखा कें तऽ हम कहियो किछ नञि बुझलियै !

अपन देह हाथ निंघारैत सोचैत अछि... अही रौद-बर्खा मे तऽ बनल हइ ई देह !.

चलित्तर तुरच्छि जाइत अछि। - `ईहो सब जल्दी करतै से नञि `जनिती जे एना होतै तऽ नञि अबिती !`

रौद फेरो उगै छइ। भिसिल हुरहुराइ छइ। सभ बहराइत अछि... बुल्ल! बुल्ल !

एकटा लोक माइक पर बाजऽ लगैत अछि। नजरि सेहो चारूकात खिरा रहल अछि। पता नहि ककरा बजा रहल छइ। चलित्तर कें धोखा भऽ रहल छइ।.. अबाज तऽ हुनके हनि ! हँ-हँ, ओएह तऽ हथिन ! छोटे बाबू कें हम नञि चिन्हबनि तऽ कें चिन्हतनि !... अंतिम बात मे ओ मुखर भऽ जाइत अछि।

`की हौ बुढ़बा, बजा दीअ हुनका? तोरो माइक मे बजबाक मोन होइ छऽ?

ई घसकट्टी आ हरबाही नञि छइ?

छोटे बाबू संकेत सऽ एम्हरे देखबैत, ककरो कान मे किछु कहइ छथिन। सभक नजरि पीपर दिस उठि जाइ छइ।

`चल ! चल` ! छोटे बाबू तोरा पर ढरल छथुन।` - दू गोटे चलित्तर कें उठबैत कहइ छइ।

चलित्तर कें किछु नहि फुराइ छइ। ओकर कोनो बस नहि चलइ छइ। दुनू कात सऽ एकएक गोटे ओकर डेंग धेने मच दिस ल`-जाइ छइ। मंच पर ओकरा झ ण्डा लग ठाढ़ कऽ देल जाइ छइ।

`नञि नञि, एखन नञि। कुर्सी पर बैसाउ हिनका।` - छोटे बाबू कहै छथिन। सभ लोक माइक कें धेआन सऽ सुनैत अछि।

चलित्तर डूबि गेल अछि कुर्सी मे। धसि गेल अछि धसना जकाँ कुर्सीक गद्दी मे। ओकर स्थिति दीनहीन परबा सन छइ जे अपन जब्बहक जोगार अपना आँखि सँ देखैत रहैत अछि। ओकर अवस्था बलि प्रदानक छागर जकाँ छइ जे परीक्षा लेबऽ नहि चाहैत रहैत अछि, मुदा कान पटपटेनहि कुशल। ओकरा आइ फूलक माला, अच्छत आ जल भेंटि रहल छइ। छोटे बाबूक मंत्रोचार-हुनकर भाषण चलि रहल छनि। देशक कर्मठ सुच्चा नागरिक चलित्तरक बड़ाइ भऽ रहल अछि। ... बंदे मातरतम्! बंदे मातरम्! भारत माता की जय!

वातावरण गनगना उठै छइ।

छोटे बाबूक शब्द फेर गनगना उठै छनि। माँजल लोक छथि। लक्ष्मीक कृपा आ बुद्धिक बलबत्ता छनि। विरोधी लोहा मानै छनि। सभ थाकि गेल। सभ हारि गेल। ई मुखिया छथि, आ रहताह अपना इच्छानुसार।

हुनका समय नहि छनि। ओ थोड़बे बजताह, आ सभकिछु बजताह। लोकमान्य सँ ल`कऽ गाँधीजी, नेताजी, नेहरु, जयप्रकाश, लोहिया आ सूरज बाबू तक कें जनै छथि।

आ अन्त मे हुनकर भाषण वर्तमान परिस्थिति मे तिरंगाक महत्व आ बलिदानी सभक गुनगान करैत पुनः `जय जवान, जय किसान` पर समाप्त होइ छनि।

छोटे बाबूक भाषण सुनैत-सुनैत चलित्तरक आँखि चमकि उठै छइ... गाँधीजी

सत्ते देवता रहथिन। बिप्ठीं आ लाठी। चमार-दुसाधक संगे उठब-बैसब। सभतरि पएरे घुमथिन। असल जोगी रहथिन।

चलित्तर के कने मुस्की आबि जाइ छइ। प्रीतम बड्ड नेना रहै तऽ पुछने रहइ `अयँ हौ बाबू गान्हीजी ककरा कहइ हइ?` चलित्तरक सोझ जबाब रहइ। ओकरा फुरा गेल रहइ ! `जकरा पोन पर लत्ता नञि रहइ हइ।`

ई बात मोन पड़ैत देरी चलित्तर कें हँसी लागऽ लगै छइ। तत्काल मुदा ओकरा स्थान आ परिस्थितिक आभास होइ छइ। ओ हँसी दाबऽ लगैत अछि कि खोंखी उठि जाइ छइ। कहुनाकऽ खोंखी कें दबबऽ मे सफल होइत अछि।

`आ लेता जी`? - ओ फेर कतेक ने कतेक साल पाछू चलि जाइत अछि - `अलबत्ता मरद रहथिन। ओहन लेता तऽ आब पिरथी पर नहि जनमथिन। मधबन्नी मे आएल रहथिन। जैपरकास आ लोहिया सबहक गीत रहनि - चलो बसायें नया नगर हम। गरीब का हय यह फाँसी घर।` बीस बीघा एक गाय एकटा परिवार कें भेटतै - सबटा सपना देखाकऽ चलि गेलथिन। सत्ते, ई जिनगीये गरीब लेल सपना देखब हइ !`

माइक मे फेर अपन नाओं सुनि चलित्तर वर्त्तमान मे घुरि अबैत अछि। खढ़िया जकाँ ओकर कान ठाढ़ भऽ जाइ छइ - `आइ हमर सभक भाग्य जे भारत माताक एकटा सपूत द्वारा अर्थात् अपना गामक एकटा बयोवृद्ध द्वारा झंडा फहराएल जा रहल अछि। देशक सुच्चा लोक यैह सब छथि जे सोना-माँटि कें उपजाकऽ देशक भरण-पोषण कऽ रहल छथि। ई लोकनि साक्षात् दधीचि छथि। हिनका सभकें कहियो ककरो सँ शिकाइत नहि रहलनि। हिनका सभके अही मे आनन्द आ गौरवक अनुभव होइ छनि। हिनकर परिचय हम की दी? हिनका संबंध मे हमरा सऽ बेसिये अहाँसब जनै छी।`

वन्दे मातरम् ! वन्दे मातरम् !

रस्सीक छोर चलित्तरक हाथ मे धरा देल जाइ छइ। मूड़ी उठेने उपर झंडा दिस ओ ताकि रहल अछि। छोटे बाबू रस्सी खीचऽ कहइ छथिन तऽ रस्सी खीचैत अछि। फूल भहरऽ लगइ छइ। तिरंगा खुलि कऽ लटकि जाइ छइ। थपड़ीक गड़गड़ाहटिक बीच वन्दे मातरम्! वन्दे मातरम्! भारत माता की जय! भारत माता की जय! गनगनाइते फूल चारूदिस छिड़ियाकऽ शांत भऽ जाइत अछि।

चलित्तर माथ पर दुनू हाथ धएने उपरे ताकि रहल अछि। क्यो पुछइ छइ - `की देखइ छहक उपर? आब भऽ गेलइ।`

`हँ से सत्ते। हमहूँ जखन पर्वा के मारियै तऽ ओहो अहिना शुरू मे फरफराइ आ फेर अहिनती शांत भ`कऽ लटकि जाइ। तेहन ने रस्सी हनि जे छूट के कोनो आशा नञि हनि।`

सभ भभाकऽ हँसि पड़ैत अछि।

एकटा ठोंगा ओकरो देल जाइ छइ। तकरा ओ जुगताकऽ तौनी मे बान्हऽ लगैत अछि कि छोटे बाबू कहइ छथिन - ई तोरा लेल छऽ। एतै खा लए। घर लेल फराक सँ भेटतऽ।`

चलित्तर निश्चित सँ खा लैत अछि तऽ छोटे बाबू पुछइ छथिन - `चलित्तर!`

- हँ मालिक !

- प्रीतम कें नञि देखलियै आइ। ओकरा हम खासकऽ समाद देने रहियै।

- हम अतेक तकतिआन नञि केलियै मालिक।

- आब तऽ एनाइयो-गेनाइ बन्न कऽ देलक ओ। कने बुझबैत रहियहक। नव धाह मे हमहूँ सब अहिना उताहुल रही।

चलित्तर चुप अछि।

दू गोटे चलित्तर कें मंच पर सँ उतारि दइ छइ। छोटे बाबू दलबलक संग गाड़ी तक जाइ छथि। तखने क्यो दौड़ल-दौड़ल आबिकऽ चलित्तर कें खूब पैघ ठोंगा थम्हा दइ छइ जकरा ओ गमछा मे बान्हऽ लगैत अछि। ओ सोचैत अछि - आब ओ पोता कें देतै तऽ बेसी रकन्ना नञि करतै। ओ आब घुटरा कें परतारि सकैये !

गमछा मे बान्हल ठोंगा कें कान्ह पर दऽ पीठ पर लटकेने चलित्तर` ठक्-ठक्, लाठी टेकैत प्रसन्न मोन सँ घरमुँहा जा रहल अछि।

`की हौ बुढ़बा, केहन रहलइ आइ? तोरा पर तऽ ढरि गेलथुन आइ छोटे बाबू? तोहर जिनगी तरि गेलऽ आइ। ओम्हर प्रधानमंत्री दिल्ली मे आ एम्हर गाम मे तों। ... `तोरा नञि बूझल छउ ! बुढ़बा कें तऽ बजेने रहथिन छोटे बाबू।` क्यो कहै छइ।

-`धुर बूड़ि ! प्रीतम रहितै तऽ ओकरे झंडा फहराबऽ`कहितथिन। सभटा लिखलाहा ! जकरा जे फुराइ छइ चलित्तर लग अबैत-अबैत कटाक्ष करैत बढ़ि जाइत अछि।

गाड़ीक आबाज पर चेथरू एकात भऽ जाइत अछि। गाड़ीक पहिया सड़क पर जमकल थाल-पानि मे फच दऽ मारै छइ।

चलित्तरक देह छिटका सऽ भरि जाइ छइ।

क्यो कटाक्ष करै छइ -`हँ, आब भेलऽ!` क्यो दोसर सहानुभूति मिश्रित कटाक्ष करइ छइ -`सएह देखू ! एकरे घर लग द` कऽ तऽ जेता ! कने चढ़ा लितथिन तऽ की होइतनि !`

सभ चलित्तर कें सुनबैत आ ठिठिआइत आगू बढ़ि जाइत अछि।

चलित्तरक मोन मे एकटा भय पइस जाइ छइ - `ठीके दूदिन पहिने छोटे बाबू प्रीतम कें कहने रहथिन पनरह अगस्त दिन रहऽ लेल ! मुदा, ओ तऽ काल्हिये बहन्ना बनाकऽ बहीन ओतऽ चलि गेलइ। एतै तऽ सभ बात बुझबे करतै! एहन बात छपित रहऽबला नहि होइ हइ ! ओ बड़ गंजन करतै ओकरा।

एकटा अवश्यंभावी फज्झति सऽ ओकर हृदय काँपि जाइत छैक। जिनगीभरि फज्झति सुनैत-सुनैत ओ बहीर भऽ गेल अछि। मुदा, आइधरि प्रीतम अवाच कथा नहि कहलकैये। तें बेटा दिस सँ कने आश्वस्त होइत धरती कें ठेंगा सँ ठोकैत, डेग सँ नपैत, आँखि सँ पढ़ैत आ मोन मे हिसाब बैसबैत टुघरल घर दिस जा रहल अछि।



सभटा रेहल-खेहल

सीऽऽऽ! सोऽऽऽ! सर्रऽऽऽ! सीऽऽऽ! सोऽऽऽ! सर्रऽऽऽ! खट खुट् ! घट् घुट् ! भट् भुट् ! केंऽऽ! कीगंऽऽऽ!

गाड़ी अपन चालि पकड़ि लेने छइ। शांत-स्थिर बसातक छाती कें चीरैत ओ बढ़ि रहल अछि। ओकरा बेगक घर्षण सँ उत्पन्न बसातक सरसराहटिक बीच पहिया-पटरीक परस्पर स्पर्शक खंडित शब्द सभ उबडुब कऽ रहल अछि। गाड़ी पटरी कें नहछुह करैत ओकर अनुशरण कऽ रहल अछि। अपन मृदु स्पर्श सँ पटरी कें दुलार-अलाड़ कऽ लैत अछि, से पुचकारिकऽ ई कहऽ लेल - तोरा छोड़िकऽ हम कत्त के रहब ! तोहीं तऽ छएँ हमर आधार, हमरा जीनगीक अस्तित्वक प्रबल प्रमाण - एतऽ सँ ल`कऽ ओतऽ तक। आ फेर ओत्तऽ सऽ ल`कऽ कोम्हरो, कत्तौ धरि। सभटा तऽ अंगा गेल अछि, तोरो आ हमरो। ई सब हम तोरा कहै नहि छियौ, मात्र मोन पाड़ि दइ छियौ बेर अयला पर।

रातुक दस सँ उपर भऽ गेल छइ। प्रायः सभ यात्री खा-पीकऽ या तऽ अपन-अपन बर्थ पकड़ि लेने अछि, अथवा सुतबाक सुरसार मे लागल अछि। नेना-भुटकाक संग परिवार सभ एक-एक बर्थ पर दू-दू गोटे समावेश कऽ लेने अछि। क्यो-क्यो तऽ बर्थ पर पड़िते-पड़िते फोंफ काटऽ लागल अछि। किछु लोकक निन्न उचकि-उचकि जाइ छइ। ओ सब आँखि मुनने निन्न पड़ि जयबाक चेष्टा कऽ रहल अछि। मुदा गाड़ीक, हिचकोला आ पटरी-पहियाक शब्दक चलते मात्र करौट-पर-करौट फेरि रहल अछि। एक आध गोटे पड़ल-पड़ल टुकुर-टुकुर ताकि रहल अछि। ओकरा मुँहक रोहानी सऽ बुझाइ पड़ै छइ जे सुख-दुखक जोड़-घटाव सँ शेष मे बाँचल कुंठा आ संत्रास ओकरा दिशाहीन बना रहल छइ। किछु लोक तऽ जाय लेल बेहाल अछि काज-तिहार लेल। लादि पादिकऽ समान सभ उघने तें जा रहल अछि। एकटा नवयुवक लटकल मुँह नेने अन्यमनस्क भेल बैसल अछि। ओ प्रायः सोचि रहल अछि... की ओ अहिना झिझिरकोना खेलैत रहत ! की ओ अहिना देशक सभ कोन्ह नपैत रहत ! थिर-थम्हन होयबाक आशा-आकांक्षा मिटा गेल छइ ओकर !

एकटा उपरका बर्थबला लोक बत्ती बारिकऽ एकटा पत्रिका उनटा लैत अछि, खाहे समय काटऽ लेल कि पढ़बाक प्रबल इच्छा सँ। भ` सकैये, निन्न कें

परतारिकऽ आनऽ लेल ने पढ़ऽ लागल होअय। मुदा, लगले बुझाइ छइ जे ओ पत्रिका मे डूबि गेल जकाँ अछि।

`यो सरकार, आइये पढ़ि लेब सबटा? गामो पर लेल रहऽ दियौ !` प्रतिवादक एकटा स्वर मुखरित होइ छइ।

`हँ-हँ सत्ते ! बत्ती मे निन्न नञि होइ छइ` - समर्थन मे दोसर गोटे बजै छइ- `बस, सात-आठ घण्टाक मामिला अछि।`

ओकर पढ़बाक तन्मयता भंग होइ छइ। पलभरि सोचैत अछि। निंघुरिकऽ स्वीच ऑफ करैत अछि, आ पत्रिका सिरमा मे दबाकऽ करौट फेरिकऽ निचेन सँ सुतबाक प्रयास करैत अछि। बगल बला नीचाक बर्थ पर किछु लोक बैसल आपस मे गप्प करैत आनन्दित अछि, उत्साहित अछि। जौं गाड़ी आरो लेट भेलइ तऽ बड्ड-बहुत दस घंटा मे दरभंगा अबस्स पहुँच जेतै। आ दरभंगा पहुँच गेलौं तऽ बूझि लिअ जे गाम मे छी। बस, बेसी-सँ-बेसी दस बजे तक गाम मे पुरना गेल रहब।`

सामनेक भितरका बर्थ पर पड़ल लोक एम्हर रस्ता दिस सिरमा रखने अछि। ओकरा नहि रहल जाइ छइ - `हँ यौ बाबू कियेक ने ! घुसकीपट्टी मे गाम हएत तें बुझै छिऐ। हमसब तऽ साँझतक पहुँचबै।`

`घबराउ जुनि। हेऽ लिअ, तमाकुल खाउ। चरिये घंटाक आगू-पाछूने? अपना गाम मे कहियो, कखनो सब पुराने रहैये` - ओ लोक तमाकुल बढ़बैत कहै छइ।

बस भऽ गेलै। ककरो कोनो शिकाइत नहि छइ। क्यो छुट्टी बितबऽ जा रहल अछि। क्यो काज-प्रयोजनक अवसर पर अपन उपस्थिति देखबऽ अथवा भागीदारीक अपन कर्तव्य निमाहऽ जा रहल अछि। किछु लोकक खसल मुँह सऽ किंचित सांकेतिक शब्द - अयँ, हँ, नहि, कहू, - सबहक प्रयोग सं साफ-साफ ओकर परिस्थितिक संकेत भेटि रहल छइ। हठात् नीक-बेजाय खबरि पाबि किछु लोक गाड़ी पकड़ऽ लेल बाध्य भेल अछि। बेसी लोक मुदा चुप अछि। सुनियो रहल अछि, नहियों सुनि रहल अछि।

क्यो अपना मजकिया के टोकइ छइ - `की यो, अहाँ सप्पत खा लेने छिऐ? नहिएँ बजबै? आ कि गिरहतनी मोन पड़ि गेलीहए?`

मुस्कीक संग जवाब भेटै छइ - `हमरा श्रोते मे रहऽ दिअ ! जहाँतक घरबालीक

बात छइ, से तऽ एन्नी-ओन्नी तथैव च।`

`आह, कहू तऽ भला ! जखन श्रोते नञि तऽ वक्ता गेल चुल्हि मे ! दुनूक चौअनिञा मुस्की मे जबाबी लोकक गालक डिंपल ओकरा मुँहक रोहानी कें आर आकर्षक बना दइ छइ। ओतेक दूरक परिवेशक समवेत हास सऽ आलोड़ित भऽ उठैछ।

तीन-चारिटा वेटिंग लिस्टबला लोक ककरो-ककरो निचलाबर्थ पर पौथन दिस पोन रोपि-रोपि बैस रहल अछि। बर्थबला कें असौकर्य नहि बुझाइ छइ। ने तऽ ओकरा सभ पर शंका छइ, ने कोनो तरहक भय। ओकरो सभकें समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर कि दरभंगा तक जेबाक छइ। ओ सभ उड़ैत नजरि सँ टी.टी. कें देखि लैत अछि। समान ओत्तहि छोड़ि टी.टी. सँ गप्प कऽ अबैत अछि। किछुओ काल देह मोड़ि लेने, कनिको सूति रहने फुर्ती बनल रहतै। एहि मे एक-डेढ़ सय अतिरिक्त टाका किछु मोल नहि रखइ छइ। मुदा, पाइ चिन्हनाहर, सक्षम देह दशावला आ पसेनाक कमाइ खायबला एकरातिक जगरना के किछु नहि बूझि रहल अछि। अत्तेक टाका मे खाइत-पीबैत गाम पहुँच जाएत। वेटिंगलिस्ट मे जकर सभक नाओं छइ, निच्चो मे बैसिकऽ चलि जाएत ! बर्थ भेटतै तऽ बड्ड बढ़ियाँ, नहि भेलै तैयो बड्ड बढ़ियाँ।

आर लोक अछि एतऽ-ओतऽ ओंघराएल, बैसल औंघाइत। किछु बेपारी मुँह लग समान गेट देने अछि। तरकारी बाली सभ बोरा मे भँटा, परोड़ आ किदन सभ कात लगा-लगा ओंघरा देने छइ। टी.टी. आ आर.पी.एफक जवान अबै-जाइ छइ। ककरो पर कोनो फर्क नहि पड़ै छइ - ने तऽ एकरे सभ पर, ने तऽ ओकरे सभ पर। रिजर्वेशन बला यात्री सभ सभटा बूझि रहल अछि। यात्राक अनुभव सभ कें बढ़ियाँ छइ। सभकें कोनो-ने-कोनो बेर परिस्थितिवश एहन स्थिति मे यात्रा करऽ पड़ै छइ। तैयो एक-आध गोटे उनमुनाइत अछि। शिकाइत करऽ चाहैत अछि। मुदा, सहमि जाइत अछि। चुप्पे रहि जाइत अछि, से ई सोचिकऽ जे, ने तऽ टी.टी. आ ने आर.पी.एफक जवान आगू एतै रेलवे नियमक रक्षा करऽ लेल। तें मोन कें मना लैत अछि - चल भाइ, एक रातिक बात छइ। ईहो सभ तऽ गामे जा रहल अछि। सभतरि नियम नहि चलि सकै छइ। किछु होइक, ई गाड़ीये छइ मिथिलाक। यात्रियो सभतऽ मैथिले अछि।

गाड़ी ठीक-ठाक अपना चालि मे अगुआ रहल छइ। जौं एना चलैत रहलै

तऽ `टाइम कॉभर` कऽ लेतै। समस्तीपुर तक कि दरभंगा तक कोन-कोन टीसन पर गाड़ी रूकतै से किछु अनुभवी लोक नाओं ल`कऽ गनि जाइत अछि। सभक गंतव्य लगिचा रहल छइ। मुदा किछु लोक लेल जे सभ साल-डेढ़ साल पर गाम जा रहल अछि, गाड़ी कठही गाड़ी भऽ गेल छइ। सभसँ बेसी उद्वेग प्रवास मे एकाकी जिनगी बितबऽबला आ नव विवाहित नोकरिहारा के छइ जे सभ मात्र तीन-चारि दिनक, कि कहुनाकऽ एक हप्ताक छुट्टी मे गाम जा रह अछि। ओकरा सभकें तहन गाड़ीक गति साफे ठहरल बुझाइ छइ। गाड़ी पाछुए मुँहे घुसकैत बुझाइ छै। कोना ने होउ, देह छइ एतऽ गाड़ी मे हिचकोला खाइत, आ मोन-प्राण कल्पनाक संग आलिंगनबद्ध गाम पर।

मोटामोटी तत्काल सभक गन्तव्य अपना-अपना टीशन तक छइ। जहाँ अपना-अपन टीशन एलै कि फुर्र भऽ जाएत.... नमस्कार यौ सरकार बड्ड बढ़ियाँ जतरा रहलै अहाँ कें पाबि कऽ। बुझबे नञि केलियै जे समय कोना बीत गेलै।`... अहाँ तऽ हमरा मुँहक बात छीन लेलौं। हमर अहोभाग्य जे अहाँसन लोक भेटि गेल।

बस, अपना-अपना ढंग सँ मुस्की बिलहैत, युग्म कर-पल्लव सँ कृतज्ञता देखबैत, आधुनिकताक स्वांग -`हेलो ! बाइ-बाइ !` करैत सभ अपना-अपन खोप सँ-एक, दू, तीन, पनरहबीस, पचीस आ कतेक-ने-कतेक डिब्बा सँ उड़ि जाएत फुर्र-फुर्र अपना-अपना गाम दिस। एक रातिक परिचय, बारह चौदह नहि तऽ लेट भेला सऽ पनरह-बीस घंटाक आपकता डिब्बा मे छुटि जेतै। से फेर कहियो ककरो मोन नहि पड़तै। साइत-संयोग कतौ आमने-सामने भेला पर एक-दोसरकें नहि चिन्हतै। कहियो गप्प-सप्पक अभ्यंतर रेल यात्राक एहनेसन परिचयक चर्च हेतै तऽ बस एतबे कि एहनेसन निकलतै मुँह सँ -`सत्ते, कोनो-कोनो बेर बड्ड नीक लोक भेट जाइ छइ जतरा मे।`

गाड़ी एकटा टीशन पर रूकै छइ। सर्र-सर्र खिड़कीक शटर उठऽ लगै छइ। एक मुँह, दू मुँह, तीन मुँह आर कतेक मुँह बाहर हुलकी मारऽ लगैत अछि। ई कोनो छोटका टीशन छइ। गाड़ी के एतऽ रूकऽ के नहि छइ। तथापि रूकि गेल छै। सामने मे कि एम्हर-ओम्हर टीशनक नाओंक बोर्ड देखऽ मे नहि अबै छइ।

गरम चाय ! चाय गरम !

हौ चाहबला, ई कोन टीशन छइ?

तखने अगिला खिड़की सऽ चाहक माँग होइ छइ। चाहबला संगे-संगे ओम्हर बढ़ि जाइत अछि। जिज्ञासुक मुँह बिधुआ जाइ छइ। ओहो खासकऽ चाहे लेल खिड़की खोलने छल। चाह ल`कऽ पुछितै से नहि फुरेलै। भीतरे भीतर खौंझा तऽ जाइत अछि, तथापि मोन कें मना लैत अछि - धुर जो, अतेक छोट-छोट बात लोक सोचिकऽ चलै छइ !

चाहबलाक चाह बिकाय लगै छइ। ओ टीशनक नाओं कहै छइ। लोकक जिज्ञासाक जबाब अपनाभरि दइ छइ। अपनो दिससँ किछु जोड़ि दइ छइ। ओ ओकर धंधाक ढंग छइ। आर्डर-पर आर्डर होबऽलगै छइ। देखाँउस पर ओकरा चाहक बिक्री बढ़ि जाइ छइ... `हेयौ सरकार, एकटा एम्हरो, हमरो दिस दियौ ! हे लिअऽ पाइ, आ कने कष्ट करियौ !` एकटा अनसोहांत खेखनिञा।

उपरका बर्थ सऽ, भीतर सऽ, ओहिकात मे बैसलाहा लोक सभ सऽ, आग्रह-पर-आग्रह होबऽ लगै छइ।

उपर मे बैसल एकटा लोक कहै छइ -`सरकार, कहैत कोनादन लगैये। कने एकटा एम्हरो बढ़बितिऐ तऽ....।`

`एना किये बजलिऐ यौ? फेर कहिया भेंट हयत अहाँ सऽ?` - खिड़ीक कातक लोक बड़ उत्साह मे उठिकऽ ओकरा चाह दइ छइ।

गाड़ी ससरऽ लगै छइ। खिड़की छोड़ैत चाहबला नहुँएँ सँ उपछा मे कहै छइ -`गाड़ी बिहार मे हइ से कनी सम्हरिकऽ।`

की बजलै? किये बजलै? बात एक मुँह सऽ दोसर मुँह होइत तेसर मुँह तक अबैत-अबैत कतेक-ने-कतेक कान ठाढ़ भऽ जाइत अछि। शंका-समाधान होबऽ लगै छइ... एकर सबहक सोभावे छइ, अहिना किछु बाजि देत। ओकर चाह बढ़ियाँ बिकेलैये, तैं अपनापन देखाकऽ गेलय। ओ तऽ अपना भरि सतर्क कऽ देलकए। धुर जाउ, सतर्क करत कप्पार ! इएह सब टाउटक काज करै छइ`... सभ अपन-अपन तर्क दऽ रहल अछि।

उपरका मोने सभ सबल बनल अछि। सभक भीतर मे मुदा आतंक पसरऽ लगै छइ। असुरक्षाक आशंका मोन कें घेरऽ लगै छइ। सूतल लोक जागि जाइत अछि। बैसल लोकक औंघीक भक टूटि जाइ छइ। कखनो किछु भऽ सकइ छइ। सभक दिमागि मे बैसि जाइ छइ बिहार। सभ बिसरि जाइत अछि अपन गाम-घर जतऽ ओ जा रहल अछि। जतऽ ओकर मोन-प्राण बसल छइ। बिहारे मे त` छइ

सभक गाम।

सभकें मोन पड़ि जाइ छइ बिहार मे रेल यात्रा। न्यूज चैनल मे बिहार, अखबारक पन्ना मे बिहार, आ सभक्यो अपने कतेक भुक्तभोगी अछि तकर कोनो लेखा नहि छइ। गाड़ीक बिहार मे प्रवेश करिते शेरे हिंद पंजाबी यात्री सतर्क भऽ जाइत अछि। बुद्धिक बलबत्ताबला बंगालीक बुद्धि हेरा जाइ छइ। मिलनसार दक्षिण भारतीय `आइयो` ! आइयो !` करऽ लगैत अछि। बिहारी बुद्धुक उपाधि उघैत-उघैत पंजाब, हरियाणा, गुजरात, दिल्ली, मुंबइ, असम आ देश मे कत्तऽने-कत्तऽ ठेकल अछि पेटक खातिर। आब सुन पड़ै छइ` अंखि फोड़बा बिहारी। ओ सभ ककरो नहि बुझा सकै छइ जे ओ सभ अपने अपना घर बिहार मे कत्तेक सुरक्षित अछि, अपने घर मे अपने लोक सभसँ केहन उपहासक विषय बनल अछि। अपने लोक लूटि रहल छइ।

गाड़ी फेर अपन तेजी देंखबऽ लागल छइ। किछु लोक दोसर डिब्बा दिस सँ अबै छइ। उपर-नीचा देखैत्ता, चारूकात नजरि खिरबैत सभ जहाँतहाँ ठाढ़ भऽ जाइत अछि। देखऽ मे सभ साफे मोचंड लगै छइ। तीन-चारि मिनट सभ अहिना ठाढ़ रहैत अछि। एगोटे एकटा बर्थ पर पोन रोपि घेंट आगू दिस नमड़ाकऽ बैसि जाइत अछि।

`देखै नञि छिऐ, फैमिली छइ अइ पर?` बर्थबला कें नञि रहल जाइ छइ तऽ मना करै छइ।

`देखहक हौ, बाहरो जाकऽ बिहरीये रहि गेलइ ! हमरा आउरतऽ फेमिली बुझिते नञि छिऐ-बैसनाहर लोक अपना एकटा ठाढ़ संगी कें कहै छइ। ओ कहै छइ - बुझै नञि छहो। ई सब तीनिये-चारि सय मे गाड़िये कीन लइ छइ।` तेसर संगी जे कने पाछू मे ठाढ़ छइ, टीपइ छइ - `जाय दहो। अपने लोक छियै। हमसभ तऽ लगले उतरि जेबै ने ! दरभंगा तक इहे सब ने गाड़ी ले जेतइ !`

एकटा सहयात्री ओहि बर्थबला कें कहैं छइ - `यौ महाराज, कोन चारि घंटा आर छइ। बैसऽ दिअनु ने।`

सभ चुप अछि। चुप कि रहत कप्पार ! सभ सकदम अछि। सभक कान सजग छइ। आँखि खुजल छइ। खोप मे जब्बह लेल राखल मुर्गा-मुर्गी सभ टुकुर-टुकुर ताकि रहल अछि। की हेतै, कोना हेतै, कत्तऽ आ ककरा सँ आंरंभ हेतै।

`बस, सिर्फ पचास टा रुपैया-एकटाकऽ पचसटकिया फटाफट निकालि

लहो तों सब अपना-अपना हाथ मे। कोनो चलाकी नञि ! बाहरक गाड़ी मे अतेक मरौवति नञि देखबै छिऐ हमसब ! बस, माथ पीछू पचास टा !

सभक हाथ मे छूड़ा छइ। दुनू गेट पर ठाढ़ लोकक हाथ मे रिवाल्वर छइ ! जे यात्री बैसऽ लेल अनुरोध कयने छलै, तकरा ओ डकू कहै छइ - `तों छहो समझदार। जल्दी फटाफट निकालहो पचास टा।`

ओ हाँइ-हाँइ पचसटकिया दऽ दइ छइ। फटाफट पचसटिया आ नमड़ी फरफराय लगै छइ। मोश्किल सँ पाँच मिनटक भीतर सभटा भऽ जाइ छइ। गाड़ी मंद गति मे आबि जाइ छइ।

`केऽऽ ! किर्रऽऽ !` - गाड़ी थम्हि जाइ छइ। ओ सभ उतरि जाइत अछि। पता लगै छइ सिगनल नहि छइ, गाड़ी तें रूकलैये।

थोड़बे काल मे गाड़ी ससरऽ लगै छइ।

कंपार्टमेंट मे भनभन आरंभ भऽ जाइ छइ। अपन-अपन बात कहऽ लेल सब हबाउर लूटऽ लगैत अछि। अपना-अपना बुद्धिक बलवत्ता सभके छइ। एगोटे बजैत छइ - `सरबे कें हम तीने गोटेक पाइ देलियनि। हमरा तऽ तहने फुरा गेल जे कोनो कि माथ गनऽ एता सरबे !`

ओकर समाङ डपटि दइ छइ - `चुप रहू ! क्यो अहाँ सँ पूछऽ एलए?`

एकटा लोक जे भयवश अपना लगाकऽ छह गोटेक तीन सय टाका दऽ देलकैये, कोन्ह मे सुटकल मन्हुआएल बैसल अछि। ओ अपना पछता बुद्धि कें कोसऽ लगैत अछि.... दुइये गोटेक पाइ ओहो कियेक नञि देलकै ! देखल जइतै जौं डकूबा सब माथ गनितै तऽ ! किछु लोक एहनो तऽ अछि, जकरा पास मे गनल-गूथल पाइ छलइ हएत, चिंतित भऽ उठल हएत जे घुरिती मे ककरो सामने हाथ पसारऽ पड़तै।

ओकर स्त्री बुझबैत कहै छइ - `बूझि लियौ जे तीन सय टाका हेरा गेल। कम-कि-बेसी, एकटा हमरे थोड़बे गेलए? मोन छोट नञि करू। आगूक सोचू।`

साधारण रुपे बेसी लोकक मुँह पर हर्ष-विषाद किछु नहि छइ। तत्काल पचास टाकाक किछु क्षोभ अबस्स छइ, तथापि से सभ बिसरि जाय चाहैत अछि। सभ सुकुर मनबैत अछि जे डकुबा सभ मरौवति केलकैये।

अगिला टीशन पर गाड़ी रूकै छइ। टी.टी. सहित आर.पी. एफक किछु

जबान सभ धमकि पड़ै छइ। एकरा सभकें देखिते यात्री सभक श्रृंग चढ़ि जाइ छइ। सभक्यो जे-ने-से कहऽ लगै छइ। टी.टी. चुपचाप खसकि जाइत अछि। दूटा लोक कें जवान पकड़ि लइ छइ - `चल, रिपोर्ट लिखबा दही गऽ!`

ओ दुनू यात्री प्रतिवाद करै छइ। ओ सभ जाय लेल तैयार नहि अछि। तैयो रेलवेक जवान दुनू कें लऽ जाय लेल धकियाबऽ लगै छइ।

उपरका बर्थक एकटा यात्री कें नहि रहल जाइ छइ - `की तकै छी अहाँ सब? बेचारे कत्तेक प्रेम सँ चाह आगू बढ़ा-बढ़ाकऽ देलनि से बिसरि गेलियै?`

आ ओ पहिने अपने जवान पर झपटि पड़ैत अछि। देखादेखी आर लोक टूटि पड़ैत अछि। जवान सभ कें परिस्थितिक अँटकर लागि जाइ छइ। ओ सभ धक्का खाइत बाहर भऽ जाइत अछि।

डिब्बाक बेसी लोक बाहर निकलि आएल अछि। देखादेखी आनो-आनो डिब्बाक बहुत यात्री प्लेटफार्म पर थहाथही देने ठाढ़ अछि। सभक धारणा छइ जे पुलिस पूरा दल बलक संग एत्तै। मोकाबिला करऽ लेल सभ तैयार अछि।

मुदा, किछुए काल मे गाड़ीक सिगनल पड़ि जाइ छइ। सभ हाँहिं-हाँहिं गाड़ी मे चढ़ऽ लगैत अछि।

गाड़ीक हार्न जोर सँ चित्कार कऽ उठै छइ। फेर लगले एक्के मिनट मे दोसर बेर डीजिल-इंजिन कुहरि उठै छइ जेनाकि ओ कहैत हो - `तों सब तऽ बर्खमे एक-दू बेर जाइ-अबै छएँ ! हमरा तऽ सभटा रेहल-खेहल भऽ गेल अछि। सभदिन देखैत-देखैत मथसुन्न आ थेथर भऽ गेल छी।`

गाड़ी सरसराएल भागऽ लागल अछि। लगै छइ जेना क्यो ओकरा खिहाड़ि रहल छइ, आ ओ पड़ाएल जा रहल अछि अपना यात्री सभकें उघने सुरक्षित जल्दी-सँ-जल्दी पहुँचाबऽ लेल।

